121362
LBSNAA

राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
ademy of Administration
मसूरी
MUSSOORIE
पुस्तकालय
LIBRARY

अवाप्ति संख्या
13252
वर्ग संख्या
294 551
पुस्तक संख्या

श्रीगणेशाय नमः ।

ख्याल अर्थात्

लावनी ब्रह्मज्ञान ।

जिसमें

वैष्णव शैव शाक्तादिक वेदान्त उपासना भक्ति सब मत हैं ।

जिसको

सर्व लोगोंके आनन्दार्थ

श्रीमत् काशीगिर बनारसी परमहंस

आपके हक्कानीने बनाया सो उनकी आज्ञासे

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" यंत्रालयमें मुद्रित कर

प्रकाशित किया ।

शके १८३२, संवत् १९६७

कल्याण-जि० ठाणा.

सन् १८६७ के ॲक्ट २५ के अनुसार रजिष्टर करके सब हक

यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है.

प्रस्तावना.

ख्याल वा लावनी ब्रह्मज्ञान उपासना ज्ञान भक्ति मार्ग गंगालहरी और सब देवतोंकी स्तुति भाषा बोलीमें यह सब मत वर्णन किये हैं, इसमें वेदांत, वैष्णवमत, शैवमत, शाक्तादि सब मत हैं, और उर्दु बोलीमें इश्क मार्फत अर्थात् खुदाकी इबादत और मतलब तौहीद अर्थात् वेदांत ब्रह्मज्ञान यह सब लोगोंके भलेके वास्ते प्रसिद्ध किया है. इसको जो कोई पढेगा सुनेगा वह बहुत खुश होयगा औरभी लोगोंने लावनी बनायी है कोई कलँगी और कोई तुर्रा कोई दुंडा और कोई छत्तर कोई मुकुट यह सब लोग अपना अपना पंथ चलाते हैं परंतु सब पक्षवादी हैं वो लोग ज्ञान या वेदान्त कुछभी नहीं जानते आपसमें गाते बजाते और लडते भिडते रहते हैं परंतु मेरी इस पुस्तकमें भक्ति निर्गुणके सिवा और कुछ पक्षवाद नहीं है इसके छापनेका हक्क सिवाय गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासके और किसीको नहीं है. क्योंकि हमने दो सौ पुस्तक लेके इनको रजिष्टरी करा दिया है.

और जिस जिसने छापी है नवल किशोरसे आदि लेके और पोथीवालोंने सब अशुद्ध बहुत छापी है इस अशुद्धके छापनेसे मुझको बहुत दुःख हुआ और मैं चार महीने यहां रहके एक एक अक्षर देखके अपनी कुछ पोथीका एक ग्रंथ जिसमें सब आगे पीछेके ख्याल हैं और नवीनभी हैं कुछियात छपवा दिये.

इस अनुपम पुस्तकके पढनेमें यह कहावत बहुतही सच है कि (आँबके आंब और गुठलीके दाम) रसिक जन तो पढतेही रससे तरबतर हो जाते हैं और ज्ञानी लोग ज्ञानमें निमग्न हो अपार ब्रह्मज्ञानका सुख लूटते हैं, इस चतुर्थावृत्तिको औरभी अत्यंत शुद्धतापूर्वक उत्तम रीतिसे छापा है आशा है कि सभी बाल वृद्ध इसकी एक २ प्रति अङ्गीकार कर तनमनसे प्रसन्न हो दोनों लोकमें आनंदपूर्वक अपार सुखके भागी होंगे.

श्रीमत् काशीगिर बनारसी परमहंस.

आइके हक्कानीने ईश्वरकी कृपासे बनाया है.

दोहा–लिखो पढो मैं नाहिं कछु, गुरु प्रसाद मोहिं दीन।
राम कृष्णके नामते, भयो ब्रह्ममें लीन ॥
रुद्ररूप मैं आप हों, शक्ती यह संसार।
यह मेरी माया प्रबल, जाको वार न पार ॥
चौदह विद्या ग्रंथमें, सो मैं लिखो बनाय।
ब्रह्मज्ञान भक्ती सहित, दियो सरल दरशाय ॥
जो कोई याको पढे, प्रेमसहित मन लाय।
भुक्ति मुक्ति पावे वही, जन्म मरण छुट जाय ॥
याको जो कोइ रागमें, गान करेंगे लोग।
वाको या संसारमें, कभी न व्यापे शोग ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण (जि० ठाणा).

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

लावनी ब्रह्मज्ञान।

स्तुति गणेशजीकी—बहर लंगडी।

हाथ जोड दंडवत करूं श्रीगणपति बुद्धि विनायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥
दीनदयालु है नाम तुम्हारा ऋद्धि सिद्धि देनेवाले ॥
भजन आपका है ऐसा कोटि व्याध क्षणमें टाले ॥
मोहनी मूरत सतोगुणी तुम सदाके हो भोले भाले ॥
सदा शारदा आपकी जिह्वापर बोले चाले ॥
विघ्नविनाशन भजन तुम्हारा सदासे शुभदायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ १ ॥

चतुरभुजी मूरत सुंदर तनु शीश चंद्रका उजियाला ॥
तीन नेत्र हैं गलेमें सोहे मुक्तनकी माला ॥
रत्नजडित भूषण अनगिनत मणिमय बने हैं अति आला ॥
जगमग जगमग आपके भवनमें जगती है ज्वाला ॥
प्रथम देवता तुम्हींको पूजे तुम हो सबके नायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ २ ॥

गिरिजानंदन असुरनिकंदन संतनके हो सुखदायी ॥
अनंत तुम्हारे नाम ए महिमा वेदोंने गायी ॥
दूध पिलावे गौरी तुमको जो है त्रिभुवनकी मायी ॥
महादेवने तुम्हें दी तीन लोककी प्रभुतायी ॥

वेद पुराणके ऊपर तुम्हरा नाम है सदा सहायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ ३ ॥
धूप दीप नैवेद्य लगाकर करे आरती पार्वती ॥
पूजे तुमको चढावे चंदन चावल बेलपती ॥
मोदकका सब भोग लगावें ऋषि मुनि और यती सती ॥
कहे देवीसिंह जो तुमको सुमरे उसकी होय गती ॥
बनारसी कहे कष्ट हरो मेरे मैं तुम्हरा पायकजी ॥
मुझ पापीको तार दो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ ४ ॥

स्तुति कृष्णजीकी—बहर लंगडी।

सिवा कृष्ण महाराजके मेरा बाबा भैया कोई नहीं ॥
ओयी प्रभु है मेरा और अपना भैया कोई नहीं ॥
यह संसार अपार है इसका पार करैया कोई नहीं ॥
सिवा कृष्णके जन्म और मरण छुडैया कोई नहीं ॥
लाखों मूरती हैं पर ऐसा कुँवर कन्हैया कोई नहीं ॥
विश्वरूपका जगत्में और दिखैया कोई नहीं ॥ १ ॥
शैर—महाभारतमें उठाया वो रथका पैया है ॥
विना हथियार लडा ऐसा वह लडैया है ॥
बना अर्जुनका सारथी वह रथ हकैया है ॥
मरा मन रातो दिन उसीकी ले बलैया है ॥
बडे बडे पापियोंका ऐसा पाप छुडैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ १ ॥
दारिद्रीको देवे धन ऐसा तो दिवैया कोई नहीं ॥
कहे सुदामा ऐसा भंडार भरैया कोई नहीं ॥
नखपर गिरिवर धारो ऐसा गिरिका उठैया कोई नहीं ॥
बूडत व्रजको राखो ऐसा तो रखैया कोई नहीं ॥

शेर-रमा है सबमें वोही ऐसा वह रमैया है ॥
विना कानोंसे सुने ऐसा वह सुनैया है ॥
फकत वह अपनेही एक नामका रखैया है ॥
यह जगत् रातो दिन उसीकी दे दुहैया है ॥
इंद्रके मानको मारो ऐसा गर्व गिरैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ २ ॥

सब ग्वालोंसे पूछो ऐसा गाय चरैया कोई नहीं ॥
माखन मिसरीका उनके सिवा खवैया कोई नहीं ॥
गोपीभी कहैं मोहन ऐसा दही चुरैया कोई नहीं ॥
मानके मटकीको तोडे ऐसा तुडैया कोई नहीं ॥

शेर-लोग कहते हैं यशोदाभी उसकी मैया है ॥
वह तो अलख है न उसका कोयी लखैया है ॥
वेद वेदांतका वही तो खुद बनैया है ॥
और उसके अर्थका आपी वही लगैया है ॥
मुझे है रटना उसके नामकी ऐसा रटैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ ३ ॥

लूट लियो गोपियोंका जोबन ऐसा लुटैया कोई नहीं ॥
मांग्यो दधिको दान ऐसा तो मँगैया कोई नहीं ॥
देवीसिंह कहे बनारसीसा ख्याल बनैया कोई नहीं ॥
अजब कहन है प्रेमकी ऐसा तो कहैया कोई नहीं ॥

शेर-मेरा दिल साफ किया ऐसा वह धुलैया है ॥
दूयीको भूल गया ऐसा वह भुलैया है ॥
बसा है दिलमें मेरे मनका वह बसैया है ॥
मेरा मन उसके भजनका बना गवैया है ॥

अपनी आत्मा देखूं निशि दिन ऐसा दिखैया कोई नहीं ॥
वही प्रभु है मेरा और जगत्में भैया कोई नहीं ॥ ४ ॥

लावनी पापनाशनी—बहर लंगडी।

राम कृष्णका सुमरन करनेसे पातक सब जाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई रामकृष्णगुण गाते हैं ॥
मैंने पाप किये बहुतेरे जिसका कुछ नहिं आदि और अंत ॥
विषयवासनामें डूबा झूठ मूठ कहलाया संत ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों मेरे बने महंत ॥
इनहींके वशमें रहा सद्गुरुकी कुछ नहिं पढी पढंत ॥
युवा अवस्थामें नाहिं समझे वृद्ध भये पछताते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई रामकृष्णगुण गाते हैं ॥ १ ॥
मात पिताका कहा न माना पढा न पिंगल वेद पुरान ॥
बना कवीश्वर औ मैंने दग्ध छंद किये बहुत बखान ॥
मैंने कहा मैं परमेश्वर हूं ऐसा मुझे व्यापा अभिमान ॥
सत्य न बोला उम्र भर बका बहुतसा झूठ तुफान ॥
धन पाया तो धर्म किया नहिं भीख मांग अब खाते हैं
धन्य वह नर हैं कि जो कोई रामकृष्णगुण गाते हैं ॥ २ ॥
ब्रह्महत्या या बालहत्या या करे जो कोई गोहत्या ॥
रामभजनसे दूर हो जाय नहीं फिर हो हत्या ॥
मैंने जीव बहुतसे मारे लगी जो वह मुझको हत्या ॥
कृष्ण कहेसे भस्म हो गई करी जो जो हत्या ॥
अपना बीता हाल सुनो हम सबको सत्य सुनाते हैं ॥
धन्य वो नर हैं कि जो कोई रामकृष्णगुण गाते हैं ॥ ३ ॥
सब अपराध क्षमा कर मेरे राम कृष्णजी वारंवार ॥
तुम हो दयानिधि दया करके कर दो मेरा उद्धार ॥

अधम पापियोंको तारा अब मुझकोभी तुम दीजे तार ॥
आगे मरजी आपकी जो चाहे करिये करतार ॥
अब मुझसे कुछ बन नहिं पडता आपका भजन बनाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई रामकृष्णगुण गाते हैं ॥ ४ ॥
जो जो पाप किये मैंने प्रभु तुम जानो या जाने हम ॥
और कोई क्या जानता किसके आगे करूं रकम ॥
किये पाप देवीसिंहने तरगये अपने करा करम ॥
श्रीगंगाके तीर तनु त्यागा जाने कुल आलम ॥
बनारसी कहे हमभी तो उनके मुरीद कहलाते हैं ॥
धन्य वह नर हैं कि जो कोई रामकृष्णगुण गाते हैं ॥ ५ ॥

लावनी विभूति योग्य—बहर लंगडी ।

रामकृष्ण महाराज मेरे अब अन्तर्यामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥
कंसा छेदन कौरव मारन पांडव तारन तुम्हीं तो हो ॥
नारसिंह हो दुष्टका उदर विदारन तुम्हीं तो हो ॥
बूडत ब्रजको राख लियो गोवर्धन धारण तुम्हीं तो हो ॥
गजको उबारन ग्राहके मारन कारन तुम्हीं तो हो ॥
शैर—तुम्हीं सर्वज्ञ हो और सबसे तो न्यारे हो तुम्हीं ॥
जो कोई भगत है उसकेभी तो प्यारे हो तुम्हीं ॥
मेरे अपराध क्षमा करके मुझे तारो तुम ॥
मैं हूं सेवक और स्वामी तो हमारे हो तुम्हीं ॥
तुम्हीं तो वृन्दावनके बसैया गोकुलग्रामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ १ ॥
दैत्योंमें प्रहलाद और सिद्धोंमें कपिल मुनि तुम्हीं तो हो ॥
चार वेदमें श्यामकी सुनी अजब ध्वनी तुम्हीं तो हो ॥

अक्षरमें हो मकार और सुन्नोंमें महासुन तुम्हीं तो हो ॥
और पांडवमें धनुषधारी वह अर्जुन तुम्हीं तो हो ॥
शेर–दशों इन्द्रीमें जो देखा तो यह मन आपही हैं ॥
पवित्र करनेमें देखा तो पवन आपही हैं ॥
अधमके तारनेको आप बने परमेश्वर ॥
मैंने जाना कि वह तारन तरन आपही हैं ॥
अनंत हैंगे नाम आपके ऐसे नामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ २ ॥
वीरोंमें श्रीमहावीर रुद्रोंमें शंकर तुम्हीं तो हो ॥
और कवियोंमें वो शुक्राचार्य कवीश्वर तुम्हीं तो हो ॥
ज्योतीमें हो सूर्य अवतारोंमें शशि सुन्दर तुम्हीं तो हो ॥
तांत्रिक मतमें श्रीबलदाऊजी हलधर तुम्हीं तो हो ॥
शेर–ज्ञानवानोंमें तो वह ब्रह्मज्ञान आपही हैं ॥
ध्यान करनेमें वो योगीका ध्यान आपही है ॥
नरोंके बीचमें राजा हो तुम्हीं चक्रवर्ती ॥
पुण्य करनेमें तो वो ज्ञान दान आपही हैं ॥
सबकी कामना पूरण करते ऐसे कामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ३ ॥
देवऋषिमें नारद और गुरुओंमें बृहस्पति तुम्हीं तो हो ॥
वाक् वाणीमें कीर्ती और सरस्वती तुम्हीं तो हो
वृक्षोंमें पीपल हो पत्रोंमें वह बेलपति तुम्हीं तो हो ॥
अधमका करते आप उद्धार वह गति तुम्हीं तो हो ॥
शेर–सकारमें तुम्हें देखा तो विश्वरूप हो तुम ॥
जहां सुन्दर है कोई उसकाभी स्वरूप हो तुम ॥
कहांलौं आपकी महिमाको देवीसिंह कहे ॥

सगुणमें रूप हो निर्गुणमें तो अरूप हो तुम ॥
बनारसी कहे वासुदेव वसुधा अभिरामी तुम्हीं तो हो ॥
विश्वके कर्त्ता और इस जगत्के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ४ ॥

लावनी श्रीअंजनीजीकी स्तुति—बहर लंगडी।

आदि कुँवारी मात अंजनी जो चाहे सो तू कर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥
जो मेरे शत्रु हैं उनका एक पलभरमें क्षय कर दे ॥
तीन लोकमें तू माता साध संतकी जय कर दे ॥
तू है कालिका काल कालका कालसेभी निर्भय कर दे ॥
जो तू ब्रह्म है तो अपने बीचमें मुझको ले कर दे ॥
और न कुछ तुझसे मांगूं तू जो चाहे मुझको वर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ १ ॥
अद्भुत तेरा ध्यान है अब उसको मेरे तनुमें कर दे ॥
सकल वीरका जोर माता मेरे मनमें कर दे ॥
सब दुष्टोंको संहारूं ऐसा तू मुझे रणमें कर दे ॥
कभी न भूलूं मुझे हुशियार तू हरफनमें कर दे ॥
निर्भय होकर विचरूं निशि दिन कभी यहीं मुझको डर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ २ ॥
जो कुछ इस जिह्वासे निकले सिद्धि मेरी वाणी कर दे ॥
शरणागत हूं तेरी अब दया तू महारानी कर दे ॥
जलको तू अग्नी कर दे और अग्नीको पानी कर दे ॥
तू जो चाहे तो एकदम भरमें फनाफानी कर दे ॥
काट काट दुष्टोंके शिरको अपने खप्परमें धर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ ३ ॥
सब कुछ तेरे हाथमें है जो भावे सो मुझको तू दे ॥

चित्तमें तेरे मात जो आवे सो मुझको तू दे ॥
जो वस्तु नहीं मेरे हाथसे जावे सो मुझको तू दे ॥
ये जिह्वा जो तेरा गुण गावे सो मुझको तू दे ॥
कभी न खाली हाथ रहूं माता मुझको इतना जर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ ४ ॥
जो तू अपनी कृपा करे माता मुझको ऐसा यश दे ॥
ब्रह्मज्ञानका मेरी इस रसनाके ऊपर रस दे ॥
देवीसिंहके सब वशमें होवें उनको ऐसा वश दे ॥
गाय औ कुत्ते जो कोई हने उनें तू अपयश दे ॥
बनारसीको श्रीमाता दरबार तू वह अमृतसर दे ॥
जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ ५ ॥

लावनी बहरजीकी शापमोचन ।

दुर्वासाजीका तो शाप हो गया वह उन्हें अशीश ॥ तर गये यादव विश्वे बीस जी ॥ तीर्थके ऊपर आये यादव करनको स्नान ॥ वहां मच गया युद्ध घमसानजी ॥ आपसमें सब लडे कटे देखते रहे भगवान ॥ आया फिर सबके लिये विमानजी ॥ अपनाभी तनु त्यागा हरिने किया न कुछ अरमान ॥ धरो तुम श्रीकृष्णका ध्यानजी ॥ सारे कुलको तार दिया कोई करे क्या उनकी रीस ॥ तर गये यादव विश्वे बास जी ॥ १ ॥ यादव तो सब स्वर्ग गये गये परम धाम हरि आप ॥ वोही सर्वज्ञ रहे है व्यापजी ॥ भार उतारा पृथ्वीका सब दूर किया संताप ॥ न उनको पुण्य न उनको पाप जी ॥ अशीश करके माना प्रभुने दुर्वासाका शाप ॥ जपो सब नारायणका जाप जी ॥ वेद शास्त्र यह कहे वही थे नारायण जगदीश ॥ तर गये यादव विश्वे बीस जी ॥ २ ॥ युद्धमें मरना बडा धर्म है यह क्षत्रीका काम ॥ इसीसे मचा वहां संग्राम जी ॥ मर्त्यलोकको तजा मिला वह

स्वर्गका उत्तम धाम ॥ यहांसे वहां है बडा आराम जी ॥ मौतसे जो सब मरते तो फिर हो जाते बदनाम ॥ युद्धमें मरे तो पाया नाम जी ॥ इस कारण श्रीकृष्णने अपने कुलका कटाया शीश ॥ तर गये यादव विश्वे बीस जी ॥ ३ ॥ अब तो भार बडा पृथ्वीपर चारों तरफ है काल ॥ सूख गये नदी नाले ताल जी ॥ कोयलोंकी है खान बहुतसी गुप्त हो गये लाल ॥ लोटने लूट लिया धन माल जी ॥ देवीसिंह कहे बनारसीसे जपो नाम गोपाल ॥ देखिये कब प्रकटें नंदलालजी ॥ दुर्वासा और श्रीकृष्ण यह दोनों एक थे ईश ॥ तर गये यादव विश्वे बीस जी ॥ ४ ॥

वन कायामें मन मृग चारों तरफ चौकडी भरता है ॥ विना पैरसे दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ विना नेत्रसे देखे सबको विना दांत दाना खावे ॥ सब कहीं जावे और यह कहीं नहीं आवे जावे ॥ विन जिह्वासे बात करे और विना कंठ गाना गावे ॥ विना सींगसे लडे और बडे बडे दल हटावे ॥ बहुत सिंह डरते इससे ये किसीसेभी नहीं डरता है ॥ विना पैरसे दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ १ ॥ विन खुर खोदे सकल जगत्को ऐसा यह मदमाता है ॥ विन इन्द्रीसे भोग करता है यही यती कहलाता है ॥ नहीं इसके कोई तात मात नहीं कुटुम्ब कबीला नाता है ॥ आपी पैदा होय वो आपीमें आप समाता है ॥ सब रंगोंसे न्यारा है और हर एक रूपको धरता है ॥ विना पैरसे दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ २ ॥ विना जीवका मांस खाय ये किसीकोभी नहिं मारे है ॥ जिसको मारे एक पलभरमें उसे सुधारे है ॥ विना कानसे सुनता सबकी जो कोई उसे पुकारे है ॥ ऐसे ज्ञानकी कोईभी साधूसन्त विचारे है ॥ तीनों लोकमें फिरता यह मृग भवसागरमें तिरता है ॥ विना पैरसे दौडता विन मुख चारा चरता है ॥ ३ ॥ विना नासिका लेवे वासना हर एक चीजकी खुश-

कोई ॥ आपी आप है अकेला और न इसके संग कोई ॥ देवीसिंह यह कहे कि जिसने बुद्धि निर्मल कर धोई ॥ अपनी आत्मा जानता इस मृगको जाने सोई ॥ बनारसीने देखा यह मृग नहिं जनमें नहिं मरता है ॥ बिना पैरसे दौडता बिन मुख चारा चरता है ॥ ४ ॥

रहसमंडल निर्गुण—बहर लंगडी।

इस तनुमें आत्मा कृष्ण है और गोपी ग्वालोंका दल ॥ सुनो कान दे बना है तनमें मेरे रहस मण्डल ॥ विश्वकर्माने आज्ञा पाकर शीश महल तैयार किया ॥ अनहद बाजोंका उसमें सम्पूरण विस्तार किया ॥ चारों खंभे लगाये उसमें ऐसा सुन्दर कार किया ॥ खुशी हुये हम तो मैंने रहसका वहीं विचार किया ॥ सबको साथ ले आया मैं दिखलाया उन्हें भवन उज्ज्वल ॥ सुनो कान दे बना है तनमें मेरे रहस मण्डल ॥ १ ॥ मन ऊधोजी मित्र हमारे सदासे हैं आज्ञाकारी ॥ बुद्धि राधिका सो मेरे प्राणोंको है अति प्यारी ॥ नेत्र करन मुख दन्त कण्ठ सब सखा हमारे हितकारी ॥ लग्न है ललिता बहुत सुन्दर शोभा सबसे न्यारी ॥ बल है सो बलभद्र हमारे भ्राता जिनका अटूटत बल ॥ सुनो कान दे बना है तनमें मेरे रहस मण्डल ॥ २ ॥ हजार इक्कीस छःसौ श्वासा सो सब सखियां संग आई ॥ वो तो समझो हमें ये कृष्ण हमारे हैं साई ॥ गलेसे मेरे लपट लपट क्या क्याही तान सुन्दर गाई ॥ बजाई वंशी जो मैंने अनहद तो सब बिलमाई ॥ प्रेममें मगन भई व्रज-वनिता कामने किया बहुत व्याकुल ॥ सुनो कान दे बना है तनमें मेरे रहस मण्डल ॥ ३ ॥ नौ नारी थीं पतिव्रता सोभी आई सब पास मेरे ॥ रूम रूमको सखा समझो या समझो दास मेरे ॥ मेरी लीला देख देख नहिं होते मित्र उदास मेरे ॥ वर्णन करते हैं गुणको जगत्में वेद व्यास मेरे ॥ मैं तो हों आत्मा कृष्ण ये शरीर मेरा है मंदल ॥ सुनो कान दे बना है तनमें मेरे रहस मण्डल ॥ ४ ॥

आये वहां गोपिका बनके ज्ञानरूप श्रीगोपेश्वर ॥ मैंने उनको लखा औ गोपी नहीं है शिवशंकर ॥ बूजन करके पास बिठाया रहस दिखाया अतिसुंदर ॥ कहांलों वर्णन करूं इस कायामें है चराचर ॥ बनारसी सच्चिदानंद चैतन्यरूप निर्गुण निर्मल ॥ सुनो कान दे बना है तनमें मेरे रहसमंडल ॥ ५ ॥

लावनी सुदामाचरित्र-बहर छोटी।

श्रीकृष्णने देखा आये मित्र सुदामा ॥ कर जोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ नंगे पैरों तनु दुर्बल वस्त्र मलीना ॥ कुछ शोच न कियो लगाय कंठसे लीना ॥ अँसुवन जलसे प्रभु सींचत चरण प्रवीना ॥ विनती करके हरि बोले वचन अधीना ॥ इतने दिन तुम कहां रहे कहो क्या कीना ॥ दुखको सुख समझे धन्य तुमारा जीना ॥ तुमने पवित्र यह कियो मेरो सब ग्रामा ॥ कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ १ ॥

उबटन करके गंगाजलसे नहलाया ॥ फिर रत्नसिंहासनपर उनको बिठलाया ॥ षट्रस भोजन अतिप्रेमसे उन्हें जिमाया ॥ फिर कहा मुझे भावजने क्या भिजवाया ॥ लिये खोल वह तंदुल रुचि रुचि भोग लगाया । दो फंके मारे दिखाई अपनी माया ॥ तिसरी वार रुक्मिणीने करको थामा ॥ कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ २ ॥

फिर लडकैयांकी सारी कही कहानी ॥ वह करें बात और सुने रुक्मिणी रानी ॥ कहे रुक्मिणी यह हैं सखा तुम्हारे ज्ञानी ॥ यह त्यागीभी हैं और हैं निरअभिमानी ॥ इनके प्रतापसे मिली तुम्हें रजधानी ॥ सारी वसुधा मैंने इनहीकी जानी । कहें कृष्ण रुक्मिणी धन्य है उनको जामा ॥ कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ३ ॥

कहे कृष्ण सखा तुम थके बाटके हारे ॥ अब शयन करो यह बिछे

हैं पलँग तुम्हारे ॥ फूलोंकी सेज फूलोंके तकिये न्यारे ॥ भये मगन सुदामा उसपर आप पधारे ॥ श्रीकृष्णने उनके चरण दबाये सारे ॥ और अंग अंग सब मला वह ऐसे प्यारे ॥ दिनभर उनकी सेवा की और सब कामा ॥ कर जोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ ४ ॥

जब सांझ भयी तब मेवा और मिठाई ॥ वह रत्नजडित थालीमें आप लगाई ॥ लेगये सुदामाके आगे यदुरायी ॥ जो रुची होय तो खाव हमारे भाई ॥ मैं कहांतलकसे आपकी करूं बडाई ॥ जिसने तुम्हें जाया धन्य तुम्हारी माई ॥ मैं आठ पहर भूलो नहीं तुमरो नामा ॥ कर जोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ ५ ॥

फिर बुलायके गंधर्व सुनाया गाना ॥ वहीं डोल मेघमलार और राग शहाना ॥ कहे कृष्ण कोईसे तुमभी वीन बजाना ॥ यह मित्र हमारे इनको खूब रिझाना ॥ बजी सारंगी सरनायी और रबाना ॥ कोई मूरख नहीं था सबी लोग थे दाना ॥ कहे कृष्ण सुदामासे तुम हो निष्कामा ॥ कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ६ ॥

फिर सोये सुदामा सुखसे रैन गुजारी ॥ भया भोर तो लाये हरी कंचनकी झारी ॥ मुख धोय सुदामाने यह बात विचारी ॥ जो मुझे कृष्ण कुछ दें तो लज्जा भारी ॥ वह अंतर्यामी आप श्रीगिरिधारी ॥ पहिलेही उनके घर भेज दी माया सारी ॥ चलती विरिया तो दियो न एको दामा ॥ कर जोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ ७ ॥

फिर चले सुदामा घरको नंगे पैयां ॥ वह भयो सगुन मिलगयी राहमें गैयां ॥ पानीभी बरसा और बादलकी छैयां ॥ करें याद कृष्ण-की और अपनी लडकैयां ॥ जो मुझे कृष्ण कुछ देते मेरे सैयां ॥ तो बडी शर्म मुझे होती मेरे गुसैयां ॥ सब कुछ दियो कियो मुझे पर-नामा ॥ कर जोर खडे होगये वसुधा अभिरामा ॥ ८ ॥

फिर जाय सुदामा पहुँचे अपने घरको ॥ नहीं मिली कुटी देखा

कंचन मंदरको ॥ नारीने उनकी देखा अपने वरको ॥ कहा डरो नहिं तुम आजावो भीतरको ॥ वह आप उतर आई और पकड लिया करको ॥ कहा सुनो पति तुम देख आये गिरिधरको ॥ फिर कही द्वारकाकी सब बात सुदामा ॥ कर जोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ ९ ॥

जो इस चरित्रको सुने और कोई गावे ॥ वह भुक्ति मुक्ति संपूर्ण पदारथ पावे ॥ जो प्रेमसहित भक्तिके छंद बनावे ॥ वह अंतकालमें अमरलोक पुर पावे ॥ कह देवीसिंह श्रीकृष्णसे जो लव लावे ॥ सुन बनारसी वह आपमें आप समावे ॥ संपूर्ण सुदामाके हरिने किये कामा ॥ कर जोर खडे हो गये वसुधा अभिरामा ॥ १० ॥

होली कृष्णवियोगकी विरहन नायका—बहर छोटी ।

गये कृष्ण द्वारका अब मत होली गावो ॥ सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ अँसुवनसे भरकर नयननकी पिचकारी ॥ अब इसी रंगसे भिजो लो चूनर सारी ॥ रोरोंके पुकारो कहां गये गिरिधारी ॥ सब देखें अँखियां लाल गुलाल तिहारी ॥ छातीको पीटकर बाजन वही बजावो ॥ सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ जिस विधिसे सुलगें होलीमें अंगारे ॥ उस विधिसे छाती जले विरहके मारे ॥ ऊधो माधोको लेकर कहां पधारे ॥ और नंदभी आये पलट वो अपने द्वारे ॥ फेंको अबीर अब शिरपर धूल उडावो ॥ सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ बिन कृष्ण सखीको अपनी गाली खावें ॥ मोहन बिन सबको कंठसे कौन लगावें ॥ हैं फूटे अपने भाग्य न फाग सुहावे ॥ वो बेहया बेशरम जो होली गावे ॥ ऐसी होली जल गईको और जलावो ॥ सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ जो विधनाने कुछ लिखा सो होनी होली ॥ गये कृष्ण द्वारका मार विरहकी गोली ॥ मोहन बिन अब हम किससे करें ठठोली ॥ किस विधि मनको समझावें बालीभोली ॥ कहैं बनारसी अब ब्रजसे फाग उडावो ॥ सुन सखी चलो होलीमें आग लगावो ॥ १ ॥

लावनी रामकृत रामायण-बहर लंगडी।

इंद्रजीतको कौन जीतता जो पे लषण नाहिं होते वीर ॥
महावीरसे कहें यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥
रावणके घरमें तो कोई नहीं इंद्रजीतसा था बलवान ॥
त्रैलोकीमें कोईको मिला नहीं ऐसा वरदान ॥
बारा बरस नहीं शयन करे नहीं करे जगतमें खानोपान ॥
रहे जितेंद्रिय कहें यह रामचंद्र सुन ल्यो हनुमान ॥
शेर-लषण नहीं साथमें होते तो वह मारा नहीं जाता ॥
तो लंकासे मैं सीताको अवधमें किस विधि लाता ॥
बडी प्रारब्धसे मुझको मिले ऐसे मेरे भ्राता ॥
यह जिनकी कोखमें जन्मे वह इनकी धन्य हैं माता ॥
इंद्रजीतको छेदन कर दिया श्रीलक्ष्मणके ऐसे तीर ॥
महावीरसे कहें यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ १ ॥
इंद्रने रावणको बांधा तो इंद्रजीत ले गया छुडाय ॥
बडा बली था वह जिसके तेजसे त्रैलोकी थर्राय ॥
शक्तीबाण था पासमें उससे काल देख जिसको भय खाय ॥
धन्य यह लक्ष्मणके ऐसी चोट किसीसे सही न जाय ॥
शेर-यह मेरे प्राणपर बीती जो इनको मूर्च्छा आई ॥
कहा मैंने मिलेंगे किस विधि मुझको मेरे भाई ॥
मरेगा किस विधि रावणका सुत निश्चर वह दुखदाई ॥
मैं इनके सोगमें भूला जो कुछ थी मेरी प्रभुताई ॥
हाथ पांव सब शिथिल हो गये थमे नहीं नयनोंसे नीर ॥
महावीरसे कहें यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ २ ॥
कुंभकर्ण रावणका मारना तुच्छ था सो मैंने मारा ॥
मेघनादके मारनेमें न चला मेरा चारा ॥

ऐसा कोई नहीं बली था वह जिस जिसको मैंने संहारा ॥
इंद्रजीतसे इंद्रभी लडा तो एक पलमें हारा ॥
शेर–भरोसा था फक्त रावणको अपने सुतके तीरोंका ॥
मरा जिस वक्त वह बल घट गया सबके शरीरोंका ॥
हुवा तप क्षीण एक क्षणमें वह सब रावणके वीरोंका ॥
मुकुटभी गिरपडा रावणके शिरसे था जो हीरोंका ॥
पडा सोग रावणकी लंकमें कोई धरे नहीं मनमें धीर ॥
महावीरसे कहें वह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ ३ ॥
रामचंद्र यह कथा कहें और हनूमान सुनते चितलाय ॥
रोम रोममें वह उनके नाम रामका रहा समाय ॥
श्रीलक्ष्मणके प्रतापसे रावणको जीते श्रीरघुराय ॥
कहे देवीसिंह अब इसके अर्थ कोई क्या सके लगाय ॥
शेर–यह शोभा लक्ष्मणजीकी बखानी रामने आपी ॥
और जो सामर्थ्य थी उनमें वह जानी रामने आपी ॥
करी स्तुति कही सुंदर वह बानी रामने आपी ॥
वह जो थी बात लक्ष्मणकी वह मानी रामने आपी ॥
बनारसी कहे इंद्रजीतको हना लषण ऐसे रणधीर ॥
महावीरसे कहें यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ ४ ॥

होली निर्गुणकी–बहर लंगडी ।

साधु संत खेलें होली निशि दिन अपनी आत्माके संग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥
प्रेमकी पिचकारी जिसको मारें उसको रंग लाल करें ॥
एकदम भरमें वह तो कंगालको मालामाल करें ॥
ज्ञान गुलालसे भर दे झोरी सब जगकी प्रतिपाल करें ॥
जन्म मरणका दूर इस दुनियासे जंजाल करें ॥

शेर–उन्हें कुछ काम न दुनयाकी इस लडाईसे ॥
बुराईसेभी न मतलब न कुछ भलाईसे ॥
उन्हें कुछ लाख गालियां दे तो ओ कुछ न कहें ॥
सदा वह हँसते रहें जगत्की हँसाईसे ॥
उनके साथमें खेले होली श्रीगंगाजीकी ओ तरंग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ १ ॥
संत तो हैं वे लोग किसीसे कभी नहीं रखते वह लाग ॥
धन्य वह नर हैं जो कोई खेलें वह सतगुरूसे फाग ॥
कभी नहीं सोवे निशि दिन वह ज्ञान रात्रीमें रहे जाग ॥
जिनके मनमें प्रेम और प्रीतिका है पूरण वैराग ॥
शेर–सदा वह रामकृष्णजीका भजन गाते हैं ॥
दुरंगी छोडदी एक रंगमें रंगराते हैं ॥
उन्हें कुछ इंद्रके पदवीसे सरोकार नहीं ॥
वह अपनी मस्तीमें हैं मस्त और मदमाते हैं ॥
काम क्रोधका मार कुमकुमा करें वो अपने मनमें जंग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेलेके अबीर ॥
खेलें होली वह निर्गुण संग साधु संतनकी भीर ॥
ज्ञानमें हैं मदमाते और रंगराते उनके शुद्ध शरीर ॥
कबीर देखें वह होली कबीरभी फिर कहे कबीर ॥
शेर–पहेनके भक्तीके भूषणका वह शृंगार करें ॥
गले निर्गुणके लगें ब्रह्मका विचार करें ॥
ज्ञानकी आगमें वह कर्मकी होली दें जला ॥
न पुण्य पापसे मतलब वह यह पुकार करें ॥
जब जब जन्म धरें पृथ्वीपर तब तब उनको यही उमंग ॥

भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ ३ ॥
दया धर्मकी खेल धुरेहरी होलीका उद्धार करे ॥
ऐसे साधू जो हैं वह कभी न मारमार करें ॥
प्रह्लादने खेली होली यह देवीसिंह पुकार करें ॥
पूरे साधू जो हैं वह परमेश्वरको यार करें ॥
शेर—जो कोई योगसे करता है भोग होलीमें ॥
उसे होता न कभी कष्ट रोग होलीमें ॥
जो कोई मेरी यह होलीके अर्थ जानेगा ॥
उसे होगा न कभी यारो सोग होलीमें ॥
बनारसीने ऐसी होली कहीं होलका होयगी दंग ॥
भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुणके रंग ॥ ४ ॥

ख्याल गौकी रक्षा श्रीकृष्ण करें—बहर छोटी।

गोपाल हो तो सब गोवोंको पालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ यह तृण चुग लेवे अमृत दूधको देवे ॥ यह सबको देवे कोई-से कुछ नहिं लेवें ॥ हैं धन्य वह उनके भाग्य जो इनकों सेवें ॥ उनकी नैया भवसागरमें हरि खेवें ॥ सारे कसाइयोंको अब घरको घालो ॥ दुष्टों-को मारो तनिक न देखो भालो ॥ १ ॥

गये कितनेहि युग बीत इन्हें दुःख भारी ॥ यह विना गुन्हा तक-सीर हैं जाती मारी ॥ निश्चय कर देखो यह सबकी भेदेतारी ॥ यह अर्ज मेरी अब सुन लीजे गिरिधारी ॥ सारी पृथ्वी परसे यह पाप उठा लो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ २ ॥

हो कोई जात जो मांस गायका खावे ॥ तो उसे यह मालिक दोजकमें पहुँचावे ॥ नहीं कहींपर ऐसा लिखा जो मुझे दिखावे ॥ वह बेईमान बदजात जो इन्हें सतावे ॥ जो इनको उसे कतल करडालो ॥ दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥३ ॥

हैं बडे वह उनके सींग न तनिक चलावें ॥ जो जराभी घुरको बहु-
तसी यह डर जावें ॥ माता मर जाय फिर यही तो दूध पिलावें ॥
यह देवीसिंह और बनारसी सच गावें ॥ गौवोंके द्रोहीको श्रीकालिका
खालो ॥ दूष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ॥ ४ ॥

बहर लंगडी।

उधर राधिका सखियोंके सँग इधर ग्वाल ले कृष्णमुरार ॥
खेले होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ॥
उधर तो केसरका रंग बरसे और वह सुन्दर पडे फुहार ॥
इधरसे चलते कुमकुमे दोऊ तरफों मारामार ॥
उधरसे राधा दौडके आवें संग लिये सब ब्रजकी नार ॥
इधरसे झपटे कृष्ण संग ग्वाल बालके करें बहार ॥
शेर–उधरसे राधिका श्रीकृष्णजीको प्यार करें ॥
इधरसे कृष्णभी राधाके संग विहार करें ॥
वह होली हो रही दोनों तरफसे रंग भरें ॥
गगनमें देवते देखें तो ये विचार करें ॥
इनकी महिमा लखी न जावे ये दोऊ है अपरंपार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ॥
उधर राधिका अद्भुत तन पर किये वह मणियोंके शृंगार ॥
इधर कृष्णके शीशपर मोर मुकुटकी लटक अपार ॥
उधर भीज रही कुसुंम सारी गलेमें वह मोतियनके हार
इधर पीतपट वह तर और वनमाला शोभित गुलजार ॥
शेर–उधरसे राधिका श्रीकृष्णसे पुकार करें ॥
इधरसे कृष्णभी ग्वालोंके संग गोहार करें ॥
वह होली मधुवनमें जिसका अंत नहीं ॥
और ऐसी होलीकी महिमाभी वेद चार करें ॥

थकित हो गई शेषकी जिह्वा हजार मुखसे व दो हजार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ॥
उधरसे राधा गुलाल फेंके भरभर मुट्ठी बिना सुमार ॥
इधरसे मोहन वह मारे तक तक पिचकारीनकी धार ॥
उधरसे राधा दें सीठनी और सखियनकी खडी कतार ॥
इधरसे गावें वह गाली गोविंद और सब उनके यार ॥
शेर—उधरसे राधिका श्रीरागका उच्चार करें ॥
इधरसे कृष्णभी वंशीकी वह झणकार करें ॥
उधर तो बज रहे डफ ढोल इस धडाकेसे ॥
इधरसे ग्वालभी शंखोंकी धुधुकार करें ॥
उधरसे तो गावें हिंडोल मिलके उधरसे गावें मेघ मल्हार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥
उधर नाचती सखी तथैथै देंदें ताली बारंबार ॥
इधर थिरकते ग्वाल सब लिये हाथमें बीन सितार ॥
उधर राधिका देख कृष्णको अपना तन मन धन दे वार ॥
इधर कृष्णभी वह मोहित श्रीराधाको रहे निहार ॥
शेर—उधर क्या राधिका श्रीकृष्णसे करार करें ॥
इधरका भेद बतावो तो बेडा पार करें ॥
उधरसे राधिकाजीकी जो भजे भक्ति मिले ॥
उधरसे कृष्णभी भक्तोंका वह उद्धार करें ॥
देवीसिंह कहे बनारसी हरि अब पृथ्वीका उतारो भार ॥
खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ॥

होली बहर बहुत छोटी अद्भुत।

खेलते होली ब्रजमें नंदलाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
चलें वह हँसहँसके लटपट चाल ॥ हाथमें लिये गुलाल ॥

बजावें बनसी दे देके ताल ॥ गावें ध्रुपद ख्याल ॥

शेर–कृष्ण तो हाथमें लेकर बहुत अबीर चले ॥
गुलाल भरके वह झोली सुनो बलबीर चले ॥
उधरसे राधिका सखियोंको साथ ले धाई ॥
इधरसे साथमें इनके बहुत अहीर चले ॥
गालियां गावें हँस हँस गोपाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
बहुतसा राधा रंग दीनो डाल ॥ बने कृष्णजी लाल ॥
मलें मुख रोरी और चूमे गाल ॥ सखियां भयी निहाल ॥

शेर–कोईको होशभी मुतलक न रहा होलीमें ॥
गलीमें कुंजनकी औ रंग बहा होलीमें ॥
कोई लपटे कोई झपटे व कोई शोर करें ॥
कोई बेहोश हुई कुछ न कहा होलीमें ॥
हाल कोईका हो गया बेहाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
कोईके मुखडेपर बिखरे बाल ॥ पडा हो जैसे जाल ॥
कोईके माथेपर केशर भाल ॥ कोईके बिंदी लाल ॥

शेर–कोई गाते और बजाते वह लिये ढोल चले ॥
हरेक साथमें अपना वह लिये गोल चले ॥
किसीके हाथमें केसरकी भरी पिचकारी ॥
कोई तो रंगभी टेसूका बहुत घोल चले ॥
सुनो तुम ब्रजका सारा अहवाल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥
कोई दौलत वर कोई कंगाल ॥ सबका रूप विशाल ॥
कहे यह देवीसिंह अद्भुत ख्याल ॥ बजा चंग करताल ॥

शेर–यह ढंग सबसे निराला बनारसीका सुनो ॥
ख्यालभी सबसे हैं आला बनारसीका सुनो ॥

किसीकी शायरीमें लुत्फ कहां होता है ॥
सखुन यह सबसे है बालाबनारसीका सुनो ॥
मगन भये सुनके यह तीनों ताल ॥ मचो वह खूब धमाल ॥

योगाभ्यास।

सुख मनमें तो तब होवें जब प्राणायाम परायन हो ॥
ऊर्ध्वमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो ॥
षटचक्करके ऊपर उत्तम सप्तम चक्र सुदरशन है ॥
निराकार अव्यय अविनाशी ज्योतिरूपका दरशन है ॥
द्वैत नहीं उसमें किंचित् अद्वैत वह दरशन परशन है ॥
और काम है सहज कठिन यक वोही तो आकरशन है ॥
अनहद बाजे बजें वहांपर दीपक रागका गायन हो ॥
ऊर्ध्वमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो ॥ १ ॥
नाभिकमलमें ब्रह्मा और हिरदेमें विष्णू भोग करें ॥
मस्तकमें शिव करे तपस्या तपें और पूरन योग करें ॥
जो प्राणी तीनों गुणसे हो रहित और सदा वियोग करें ॥
परमहंसके दरशन तो इस जगमें वोही लोग करें ॥
चाहे स्त्री पुरुष होय या योगी यती गोसांयन हो ॥
ऊर्ध्वमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो ॥ २ ॥
जहां अग्नि नहिं पवन न पानी और नहिं नदी नाला है ॥
चले न चन्दा सूर्य वहांपर आपी आप उजाला है ॥
सत्त चित्त आनंदरूप वह गोरा नहीं न काला है ॥
हर रंगमें हर झलक रहा पर सबसे रहे निराला है ॥
जब प्राणी यह जन्म लेय तो पैदा उलटे पांयन हो ॥
ऊर्ध्वमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो ॥ ३ ॥
खुले आंख जब भीतरकी तब दिव्य दृष्टि हो जाय उसे ॥

महाकाल वह आप बने और काल नहीं फिर खाय उसे ॥
देवीसिंह यह कहे देख तो ब्रह्मको ध्यान लगाय उसे ॥
बनारसी तू वोही तो है सद्गुरुने दिया लखाय उसे ॥
लख चौराशीसे छुट जावें भूत प्रेत नहिं डायन हो ॥
ऊर्ध्वमूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायन हो ॥ ४ ॥

त्याग देह अभिमानका—बहर खडी।

नहीं मिले हर धन त्यागे नहीं मिले रामजी जान तजे ॥
नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥
सुत दारा या कुटुंब त्यागे या अपना घरवार तजे ॥
नहीं मिलें प्रभु कदापि जगत्का सब व्यवहार तजे ॥
कन्द मूल फल खाय रहे और अन्नकाभी आहार तजे ॥
वस्त्रको त्यागे नग्न हो रहे पराई नारि तजे ॥
तोभी हर नहीं मिले यह त्यागे चाहे अपने प्राण तजे ॥
नारायण तो मिले उसको जो देह अभिमान तजे ॥
तजे पलंग फूलोंका और चाहे हीरे मोती लाल तजे ॥
जातको अपनी तजे और कुलकी सारी चाल तजे ॥
वनमें निशि दिन विचरें और इस दुनियाका जंजाल तजे ॥
देहको अपनी जलावे शरीरकीभी खाल तजे ॥
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तोभी चाहे वो अपनी सान तजे ॥
नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥
रहे मौन बोले नहिं मुखसे अपनी सारी बात तजे ॥
बालपनेसे योग ले तात तजे या मात तजे ॥
शिखा सूत्र त्यागन कर दे और उत्तम अपनी जात तजे ॥
कभी जीवको न मारे घात तजे अपघात तजे ॥
इतना तजे तो क्या होवे जो देहका नहीं गुमान तजे ॥

नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥
रहे रात दिन खडा न सोवे पृथ्वीकीभी शयन तजे ॥
कष्ट उठावे रहे बेचैन औ सारी चैन तजे ॥
मीठा होकर बोले सबसे कडुये अपने बयन तजे ॥
इतना त्यागे औ देह अभिमान नहीं दिन रयन तजे ॥
बनारसी कहे उसे मिलें नहीं हरि चाहे सकल जहान तजे ॥
नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजे ॥

होली संतमार्गी निर्गुण-बहर लंगडी।

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
ज्ञान गुलालके बादल छाये प्रेम रंग नित बरसामें ॥
ब्रह्मवादसे लडें औ भरम धूलको लडामें ॥
धीरजका डफ बाजे सङ्गसे नाम नारायणका गामें ॥
क्रोध कुमकुमा मारके काम शत्रको हटामें ॥
दयाकी दौलत देते सबको सङ्गमें सबी समाज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
अमर अबीरको साध लगावें मुक्त रूप पहने माला ॥
भस्मके भूषण झलकते तनपर मनमें उजिआला ॥
मन्त्र मिठाई सन्त पावते बहुत खूब सबसे आला ॥
अमृत रसको पियें और खोल देंइ घटका ताला ॥
नेह नाचको देखें हरिजन सत्त साजको साज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
लोकी लकडी लूट ले आये आतमकी अगनी धरते ॥
हरहर होली जगावें वहीं नहीं जनमें मरते ॥
विज्ञानक गाली देते हैं सन्त किसीसे नाहिं डरते ॥

कष्टके कपडे पहिनकर कायाको निर्मल करते ॥
शील सितार सुनावें साधू नाम नक्कारे गाज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
राम नामका शोर चलावें पर स्वारथकी पिचकारी ॥
जिसको मारें उसीके मुखपर लगती है प्यारी ॥
मिलें गले गोविन्दसे चलके जाप जपें गिरिवरधारी ॥
भावभोगको करें हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥
शुद्ध सिंहासन पर चढ बैठे तीन लोकमें राज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥
तीरथकी फेरी फिरते हैं सुमत सामग्री ले जाते ॥
पूजें होली गुणी जन ब्रह्मज्ञानमें मदमाते ॥
देवीसिंह यों कहे कि ऐसी होली जो कोई गाते ॥
भवसागरके पार हो परमधाम पदवी पाते ॥
बनारसीने हरिको पाया किसीके नहीं मौताज रहे ॥
गुणी जनोंके अगाडी अनंद बाजे बाज रहे ॥

ख्याल श्रीदुर्गाजीजीका चारों पदार्थ देनेवाला—बहर लंगडी।

सरस्वती विद्या देवे और अन्नपूरणा अन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
यमुना यमसे छुटा दे और गंगा परमगती देवे ॥
नाम नर्मदा दे और सीता सुमत मती देवे ॥
ब्रह्मानी दे ब्रह्मविद्या रुद्रानी बडी रती देवे ॥
कमला देवे कामना प्रेम वोह पारवती देवे ॥
मंगल दे मंगलादेवी ललिता मुझे लगन देवे ॥

ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
विन्ध्यवासिनी विन्द दे और योग योगमाया देवे ॥
कृपा कमक्षा दे काली निर्मल काया देवे ॥
ज्वाला दे जिह्वापर यश माता पूरण माया देवे ॥
दया दे दुर्गा भवानी मेरे मन भाया देवे ॥
विद्या दे वेदांतसार भैरवी तो मोहिं भजन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
त्रिकुटा त्रैगुण छुटा देवे और तुलसी परम तत्त्व देवे ॥
अष्टभुजा दे आठ सिद्धी और सती सत्त देवे ॥
वागेश्वरी दे वाक वाणी भगवती तो मोहिं भक्ति देवे ॥
तांत्र दे तारा और जयजंती जीत जगत देवे ॥
कोट कांगडा कोटिन वर दे रमाभि रामचरण देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥
नयना देवी नयनमें सुख दे नारायणी नीत देवे ॥
कहे देवीसिंह मुझे तो पुण्यागिरी प्रीत देवे ॥
बनारसीको जयजयवंती तीनों लोक जीत देवे ॥
गायत्री दे सकल गुण गोदावरी गीत देवे ॥
हिरदेमें श्रीहिंगलाज हितसे अपना दर्शन देवे ॥
ज्ञान दे गौरी और धवलागढवाली धन देवे ॥

ख्याल भगवतीका—बहर लंगडी ।

नाम तुम्हारा गौरी है पर काहे रूप धरा काली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
तीनों गुणसे रहित है तू पर त्रयगुण तेरे हैं आधीन ॥
इस कारणते भगवती धरे रूप ये तुमने तीन ॥
सद्गुणसे पालना करे और रजसे राज करे परवीन ॥

तमगुणसे तो करे संहार तू है सबमें लवलीन ॥
भुक्ति मुक्तिकी दाता है तू ऋद्धि सिद्धि देनेवाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब तुझको ध्यावें ॥
अपार माया है तेरी पार न सुर नर मुनि पावें ॥
धन्य धन्य वह पुरुष हैं जो हिरदेसे तेरा गुण गावें ॥
नंगे चरणों तेरे दरबारमें इंद्रादिक आवें ॥
सप्तद्वीप नवखंड और चवदो भवनमें तेरी उजियाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
ब्रह्मा तेरी गोदमें खेलें विष्णुको दूध पिलावे तू ॥
शिवशंकरको तांडव नृतका नाच नचावे तू ॥
बडे बडे असुरोंको मारकर मुंडकी माल बनावे तू ॥
कोटिन तेरी भुजा और असंख्य शस्त्र चलावे तू ॥
रक्तबीजका रक्त पिया एक बुंद न पृथ्वी पर डाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥
जिसको तूने चक्रसे मारा चक्रवती वह कहलाया ॥
पार न जिसका कोई पावे वह है तेरी माया ॥
त्रिशूलसे छेदा जिसको त्रिभुवनका राज्य उसने पाया ॥
कहे देवीसिंह तूने वैरियोंकोभी सुख दिखलाया ॥
बनारसी कहे दयावंत श्रीदुर्गे तू भोली भाली ॥
रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली ॥ १ ॥

ख्याल निर्गुण कालीजीका—बहर लंगडी ।

यह काया कलका कलकत्ता इसीमें है कृष्णाकाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
मन मंदिरमें आप विराजे खुशी खड्ग खप्पर धारे ॥

सप्तसिंह पर आनकर बैठी पद्मासन मारे ॥
मंत्र मधुर मधुपान करे त्रिलोकमें हो रहे जयकारे ॥
झपट झपटके काम और क्रोध दैत्य सब संहारे ॥
समताका शृंगार सजे तनुपर मनमें रहे खुशियाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
चमत्कारकी चार भुजा और रचना रुंडोंकी माला ॥
तेज और तपका खडा त्रिशूल जगतसे निरियाला ॥
चित्तका चक्र वह घूमें चारों तरफ मेरी जय जय ज्वाला ॥
दुर्बुद्धीको मारकर टुकडे २ कर डाला ॥
दृढताका डमरू बाजे और सप्त ताल बजती ताली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
बोधके वस्त्रको पहिने तनुपर प्रीतिपुष्पके हार गले ॥
बुद्धि वेदको पढे और दया धर्मकी चाल चले ॥
लोभ मोह दो चंड मुंड हैं इन दोनोंके दल दले ॥
ऐसी काली बसे कायामें अगमकी लाट बले ॥
जगमग जगमग जगे ज्योति यश कीरतकी है उजियाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥
करे भलाईके भोजन और ज्ञान गंगजल नित्त पिये ॥
जोगकी जोगन भावके भूत और भैरव संग लिये ॥
विद्याके बीडे चाभे और तिलसमातके तिलक दिये ॥
कहे देवीसिंह हैं उनके बडे भाग्य जिन दरश किये ॥
बनारसी यह कहे मेरे वह घटमें करती रखवाली ॥
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बडी शोभावाली ॥ १ ॥

ख्याल शरीरकी रक्षा—बहर लंगडी ।

हिरदेमें है हिंगलाज करें काज लाज रखनेवाली ॥

नयना देवी नयनमें वसे हँसे दे दे ताली ॥
शीशमें सीता सती विराजे सावित्री संकटा रानी ॥
मस्तकमें रहे आप श्रीमहाविद्या और महारानी ॥
भ्रुकुटीमें करे वास भैरवी भय माने सब अभिमानी ॥
ब्रह्ममें अपने विराजे विन्ध्याचल और ब्रह्मानी ॥
वसें नाशिकामें नवदुर्ग नगर कोट लाटोंवाली ॥
नयनादेवी नयनमें वसे हँसे दे दे ताली ॥
मुखमें वसे मंगला देवी सब कारज कर दे मंगल ॥
होठमें हेमावती रहे क्षणमें काट देवे कलमल ॥
जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती सबसे निर्मल ॥
गलेमें गौरी और गायत्रीका जप नाम अटल ॥
कंठमें वसे कालिका देवी कंकालि और महाकाली ॥
नयनादेवी नयनमें वसे हँसे दे दे ताली ॥
करणमें कमला और कात्यायनी कृपारूप अद्भुत माया ॥
दोनों भुजामें भवानी वसे बडा सुख दिखलाया ॥
उरमें वसे उमा उत्तरायणी उग्रतेज उनका छाया ॥
कहांलग वर्णू लखी नहीं जाती है अपनी काया ॥
बुद्धिमें वसे विधाता माता बडी बुद्धि देनेवाली ॥
नयना देवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥
रोमरोममें रमी रमा और नाभिकमलमें निर्वानी ॥
कहे देवासिंह इसे कोई पहिचाने चातुर ज्ञानी ॥
श्वास श्वासमें शक्ती बोले ध्यान धरें पूरे ध्यानी ॥
बनारसी कहे मुझे भगवतीकी भक्ति मन मानी ॥
मेवा और मिष्टान हार फूलोंकी नित्य चढती डाली ॥
नयना देवी नयनमें बसे हँसे दे दे ताली ॥ १ ॥

रामचंद्रके स्वरूपका वर्णन—बहर लंगडी।

निर्गुण ब्रह्म श्रीरामचंद्र भये सगुण ब्रह्म और श्याम वरण ॥
आननपरते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरण ॥
घूंघरवाली अलकनपर मैं श्याम घटा वारूं और घण ॥
शेषनागकीभी जिह्वा वारूं और कालीका फण ॥
मस्तकपर शशि वारूं केशर मुश्क और मलयागिरि चंदन ॥
भ्रुकुटीपरसे धनुष वारूं और करूं फिर मैं धन धन ॥
शेर—रामके नामपै वारूं मैं सैकडों रावण ॥
फिर वारूं इंद्रजीत और वह बली कुंभकरण ॥
और उनके ध्यानपै वारूं मैं योगियोंकी यतन ॥
बडे हैं सबमें वही जिनकी है प्रभुसे लगन ॥
पलकोंपर मैं बाण वारूं और चितवनपर वारूं खंजन ॥
आननपरते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरण ॥
नेत्रपर उनके कमलको वारूं और जंगलके काले हरिण ॥
अमृत वारूं हलाहल वारूं और मदिराकी फबन ॥
खांडा बिछुवा खंजर वारूं और बांकका वारूं बांकपन ॥
अपने नेत्रभी मैं वारूं स्वामीका करके दर्शन ॥
शेर—रामके रूपपर वारूं मैं सोलहों लक्षण ॥
औ उनके तेजपै वारूं मैं विश्वभरकी अगन ॥
बातपर उनकी बनाकर मैं वारूं कोट भजन ॥
दयापै रामकी वारूं कुबेरका सब धन ॥
वारूं नासिकाके ऊपर मैं बुला बुलाकर हीरामन ॥
आननपरते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरण ॥
करननपै वारूं सुरजके कुंडल ओठपै वारूं लाली यमन ॥
चमक दांतकी पै दामनी वारूं और चवदहों रतन ॥

दो कपोलपै रवि शशि वारूं जिसका तेज छाया त्रिभुवन ॥
जिह्वापरसे वेद वारूं मैं रामका कर सुमरन ॥
शेर–रामके बाणपै वारूं मैं तीनों लोकका रण ॥
धनुषपै बाण उनके मैं वारूं जो धनुष निकले गगन ॥
औ उनके क्रोधपें वारूं मैं काला रुद्रका मन ॥
राजपै रामके वारूं ओः जो है इंद्रासन ॥
कंठपै वारूं छहो राग औ तीस रागनीकी सब परन ॥
आननपरते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरन ॥
हाथपै वारूं दान पुण्य जो राजा बलिसे अधिक कठिन ॥
हिरदेपरसे मैं उनके वारूं जोबनका जोबन ॥
नाभिकमलपै भँवरको वारूं कटिपै केहरीकी लचकन ॥
जंघापरसे मैं उनके वारूं कजरी थंबके वन ॥
शेर–रामकी चालपै वारूं हरएकका चालो चलन ॥
चरणपर अप्सरा वारूं मैं उनको छूके चरण ॥
वह उनके काव्यपै वारूं कवीश्वरोंकी कथन ॥
मैं उनके विश्वरूपपर ये वारूं चौदो भुवन ॥
देवीसिंह कहे बनारसी तेरी रहे रामसे लगी लगन ॥
आननपरते मैं हरिके वारूं रवीकी कोटि किरन ॥

निर्गुणरामायण–बहर लंगडी।

घटमें शिवके रकार है और मुखमें हरके मकार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारसे दे ऋद्धि सदाशिव मकारसे देते मुक्ती ॥
ऐसे भोले हैं जिनके पासमें दोनों जुगती ॥
रकार रक्षा करे सदा औ मकारसे ममता रुक्ती ॥
शिवशंकरके पास नाना प्रकारकी है उक्ती ॥

अष्ट प्रहर दिन रैन सदा दोनों अक्षरका विचार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारसे हर हरें रोग और मकारसे देते माया
विश्वनाथके हिरदेमें रामनाम है समाया ॥
रकार रम रहा रोमरोममें मकार मेरे मन भाया ॥
दो अक्षरका आदो और अंत किसीने नहिं पाया
रकार रचना करे औ महिमा मकारकीभी अपार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
मकारमें है रकारका रस रकारका है मकार मन ॥
विश्वनाथजी इसीसे रामनामका करें भजन ॥
रकारने राक्षस संहारे मकारने मारे दुर्जन ॥
रामनामके रटेसे नीलकंठ रहे सदा मगन ॥
विचार करके देखा मैंने चार वेदका ये सार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥
रकारके हैं रंग सबी और मकारका मत ज्ञानी है
रामकी लीला शिवा शिवके नहीं किसीने जानी है ॥
रामके नामका अंत नहीं है थकी शेषकी वानी है ॥
बनारसीने कीर्ति रामकी सदा बखानी है ॥
पल पल छिन छिन निशि दिन मुझको दो अक्षरकी पुकार है ॥
रामनामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ॥

श्रीकृष्णके अंगुलीकी स्तुति—बहर लंगडी।

श्रीकृष्णके हाथमें क्या नाजुक है भोली भाली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे है रंगवाली अँगुली॥
कभी अँगुठी पहेर लालकी दिखलाती लाली अँगुली ॥
कभी विरोजोंसे हो जाती है जंगाली अँगुली ॥

जबके जमरुदके छल्लोंमें हरीने वो डाली अँगुली ॥
हरी हो गई दिखाने लगी व हरिआली अँगुली ॥
जितने रंग है इस पृथ्वीपर किसीसे नहिं खाली अँगुली ॥
रंग रंगके जवाहरसे औ रंगवाली अँगुली ॥
एक तो बोले कृष्ण एक उनसे उनकी वाली अँगुली ॥
दूजी दूधसे यशोदाने उनकी पाली अँगुली ॥
तीजी त्रय गुणरहित औ चौथी चौथे पदवाली अँगुली ॥
चार पदारथ चारोंमें एकसे एक आली अँगुली ॥
अर्थ धर्म और काम मोक्ष सबके देनेवाली अँगुली ॥
रंग रंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥
कभी पहने हीरोंके छल्ले हरिने चमकाली अँगुली ॥
किरण सूर्यकी देखकर हो गई मतवाली अँगुली ॥
चित्र विचित्रके लक्षण जिसमें ऐसी कर डाली अँगुली ॥
धन्य वह विधना के जिसने सांचेमें ढाली अँगुली ॥
चंद्रकला नखमें जिनके शोभित है वोः आली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥
एक समय राधाने कृष्णकी अँगुलीमें डाली अँगुली ॥
गंगा यमुना मिल गई वह गोरी काली अँगुली ॥
श्याम कहें श्यामासे तुम्हारी चंद्रसे उजिआली अँगुली ॥
श्यामा बोलें आपकी अद्भुत वनमाली अँगुली ॥
देवीसिंह कहे बनारसीने वह देखी भाली अँगुली ॥
रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली ॥

गंगा लहेरी—बहर खडी।

ब्रह्मा रचते सृष्टि पालना विष्णु करें शिव संहारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥

गणेशजी विद्याका वर दें बुद्धि बुद्धिका दान करें ॥
सूर्य तेज दें शरीरमें इस जगत्में सब सन्मान करें ॥
शीतलतायी देय चन्द्रमा सतगुणको परधान करें ॥
हनूमानजी चाहें तो एक पलभरमें बलवान करें ॥
भैरवजी भय हरें डरें नहिं दुरजनको पलमें मारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
इन्द्रका सुमरण करे तो पावे सुंदरसी अबला नारी ॥
दुर्वासाजी पवन अहारी कामीको करें ब्रह्मचारी ॥
कुबेरके जो भक्त हैं वह तो बडे बडे मायाधारी ॥
धर्मराजजी धर्म बतावें जो हैं इनके हितकारी ॥
शेषजी अपने सहस्र मुखसे नये नाम नित उच्चारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
तनुका रोग दूर कर देते बडे वैद्य अश्विनीकुमार ॥
वेदव्यास पुराणके मुनि हैं वेदका निशि दिन करें विचार ॥
बालपनेसे त्याग बतावें सनक सनंदन सनत्कुमार ॥
करो शनिश्चरकी पूजन तो सकल विपतको देवें टार ॥
जितने देवते हैंगे सो सब गुरू बृहस्पतिको धारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥
तेतिस कोटि देवते सब अपना अपना देते हैं फल ॥
अति प्रसन्न होते हैं इनपर चढता है जब गंगाजल ॥
देवीसिंह ये कहै न भूलों मैं श्रीगंगाको यक पल ॥
सबसे ऊंचे शिवजी उनके शीशके ऊपर गंग अचल ॥
बनारसीके अधम पापको धोवें गंगाकी धारें ॥
धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें ॥

गंगालहरी—बहर खडी।

पापी एक मरा गंगापर हुई वोः उसकी तैयारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
आयो कंचनको विमान सुंदर और वामें रत्न जडे ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेनेको खडे ॥
उधरसे आये यमके दूत वोः ले ले हाथमें शस्त्र बडे ॥
देखतही दल श्रीगंगाका भागे यमके पांव पडे ॥
वह जो पापी था सो तनु त्यागके बन गया त्रिपुरारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
अद्भुत भूषण कुबेरजी झटपट सो आपी ले आये ॥
पीत वस्त्र नख शिखलौं उत्तम उसके तनमें पहिराये ॥
चोवा चंदन इतर अरगजा सबी देवते ले धाये ॥
पत्र पुष्पसे पूजन कर कर मगन भये मंगल गाये ॥
तीन लोक चौदहों भुवनकी पाई उसने सरदारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गलेमें वैजयंती माला ॥
शीश छत्र सोवरका झूमें जयजय शब्दकि ध्वनि आला ॥
कंठ कौस्तुभ मणिहार गज मुक्ताका उरमें डाला ॥
बाजूबंद नवरत्न और करमें कंगनका उजियाला ॥
भरे अटल भंडार उसे गंगाने माया दी सारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
जब वह बैठा विमानमें तब ब्रह्माजी मुरछल लाये ॥
इंद्र डुलावें पंखा सब देवतोंने पुष्प अति वरसाये ॥
शिव और विष्णुने करी शंख ध्वनि ऐसे फल उसने पाये ॥
धन्य भाग्य हैं उनके जो कलिकालमें गंगाजी न्हाये ॥

करें नृत्य गन्धर्व सकल मिल बाजे बजन लगे भारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि सभी कर जोर जोर आई आगे ॥
जिन त्यागे गंगाके तीर तनु उनके भाग्य ऐसे जागे ॥
जब वह उठा विमान तो गोले अनहदके दगने लागे ॥
नंदीगण और गरुड सिंह गज विमानके नीचे लागे ॥
और सकल वाहन कांधा देने लागे वारी वारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
हनूमानजी खवास बन गये भैरव बन गये अगमानी ॥
गणेशजी डंका ले आगे चले महा योगी ध्यानी ॥
छप्पन कोटि मेघने मिलके रस्तेमें छिडका पानी ॥
चन्द्र सूर्यने करी रोशनी सब देवतोंके मन मानी ॥
तेतिस कोटि फौज सब संगमें चली और छबि न्यारी न्यारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ॥
जब वह पहुँचा अमर लोकपुर सब फिर आये अपने धाम ॥
मिला ज्योतिमें ज्योतिरूप होय श्रीगंगाको करो प्रणाम ॥
याहीते मैं कहत जात हौं जपो सकल गंगाको नाम ॥
और कोई नहीं अंत समयमें आवेगो अब तुमरे काम ॥
बनारसी यह कहे कभी तो आवेगी मेरी बारी ॥
महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाको असवारी ॥

गंगालहरी—बहर खडी ।

भोजन कर या सूखा रहु या वस्त्र पहन या फिर नंगा ॥
जौलों जिये तू कहू इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
नेम धर्म और कर्म अकर्मसे योग भोगमें कहो गंगा ॥
दुखमें सुखमें भले बुरेमें रोग अरोगमें कहो गंगा ॥

सोवत जागत राह बाटमें हर्ष सोगमें कहो गंगा ॥
मात पिता दारा सुत बिछुटे तौ वियोगमें कहो गंगा ॥
धन दौलत या राजपाट हो या फिर बन जाय भिखमंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
रोवत हँसत नगर और वनमें जहां रहे तू कहो गंगा ॥
संपति विपति कुपति और पति नर सबी सहे तू कहो गंगा ॥
डूबत तीरत मरत या जीवत मेरे कहे तू कहो गंगा ॥
यह मन मूढ समझ अब झट मेरो मन चहे तू कहो गंगा ॥
जो तेरे मन वसे कार्य यह लगे तेरे चित्तमें चंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
खेलत कूदत उछलत फांदत अपने मनमें कहो गंगा ॥
बाल जवानी और बुढापा तीनों पनमें कहो गंगा ॥
नाचत गावत गाल बजावत हर रागनमें कहो गंगा ॥
सात द्वीप नव खंड और चवदहो भुवनमें कहो गंगा ॥
अंधा हो या बहिरा हो या लूला हो या यकटंगा ॥
जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥
घटी नफेमें दिवस रात्रिमें आदि अंतमें कहो गंगा ॥
संग कुसंगमें रंग कुरंगमें साधु सन्तमें कहो गंगा ॥
चराचर चैतन और जडमें तू अनन्तमें कहो गंगा ॥
चाहे सबमें बैठके कहो चाहे एकांतमें कहो गंगा ॥
बनारसी यह कहे चाहे तू गरीब बन या कर दंगा ॥
जौलों जिये तू कहो इस मुखसे जय गंगा श्रीजय गंगा ॥

गंगा लहेर—बहर खडी ।

और सकल देवतोंसे फल जो मांगोगे तो पावोगे ॥
बिन मांगे देइ हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥

शिवजीकी जो करो तपस्या मनमें ध्यान लगावोगे ॥
और वह श्रीगंगाका जल जब उनके शीश चढावोगे ॥
बेल पत्र और आक धतूरा मंदिरमें ले जावोगे ॥
तब वह होइ हैं प्रसन्न जब तुम दोनों गाल बजावोगे ॥
वह कहि है कुछ मांगो तब तुम उनसे मांगके लावोगे ॥
बिन मांगे दे है गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
ठाकुरद्वारे जाय जाय जब विष्णुको शीश झुकावोगे ॥
पत्र पुष्पसे पूजन कर कर मालाको पहिरावोगे ॥
धूप दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे ॥
तब वह रीझेंगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे ॥
वह कहि हैं कुछ हमसे लेव तब तुम करको फैलावोगे ॥
बिन मांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
ब्रह्माजीका स्मरण कर कर लाखन बरस बितावोगे ॥
कंद मूल फल खाय खायके बहुतहि कष्ट उठावोगे ॥
यह काया कंचन तनु अपनी इसको खूब सुखावोगे ॥
तब वह दरशन देइहैं पैहो फल जो कुछ तुम चाहोगे ॥
वह कहि हैं कुछ मांगो तब तुम मांगोगे शरमावोगे ॥
बिन मांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
करी हो पृथ्वी पैकर्मा और चारों धाम फिर आवोगे ॥
जगन्नाथ और रामेश्वरमें जायके पांव थकावोगे ॥
और द्वारकामें छापे खाखाके बदन जलावोगे ॥
जैहो बद्रीकेदार तब तुम क्यों कर सीत बचावोगे ॥
वहां तो तुम आपै मंगि हो मांगनमें बहुत लजावोगे ॥
बिन मांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥
और कहीं जो पाप कर्म करि हो तो पाप उठावोगे ॥

गंगाजीमें देहभी धोई हो तोभी नहीं पछतावोगे ॥
लात लगावो कूदो फांदो बहुते धूम मचावोगे ॥
तौभी माता प्रसन्न होइ हैं वाके पुत्र कहावोगे ॥
बनारसी कहे अंतमें मुक्ति आपीसे तुम पावोगे ॥
विन मांगे दे हैं गंगा जो एक वार तुम न्हावोगे ॥

गंगालहरी—बहर खडी ।

आज युद्धकी करो तयारी श्रीगंगाजी तुम हमसे ॥
मैं पापी तुम तारनहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
मेरा पाप है पहाडके सम समर करनमें वीर बडो ॥
देखों मैं अब आयके कैसो हैगो तुम्हरो तीर बडो ॥
रणमें लडे हटे नहीं कबहूं मेरो पाप रणधीर बडो ॥
तुम तो येही कहत हो मुखसे मेरी रेणुका नीर बडो ॥
देखों उनको पुरुषारथ जो लडि हैं आय मेरे तमसे ॥
मैं पापी तुम तारनहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
जबसे जन्म भयो पृथ्वीपर कभी न हरिको नाम लियो ॥
सेवा की नाहिं मात पिताकी साधनको नाहिं काम कियो ॥
हरो बहुत धन ठगठगके नाहिं हाथसे एको दाम दियो ॥
लियो बहुत विषपान न अमृतकोभी एको जाम पियो ॥
कैसे बचि हौं कालसे मैं अब कौन छुटै है मोहिं यमसे ॥
मैं पापी तुम तारनहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
वेद पुराण बखानत निशि दिन अधम पापियोंको तारा ॥
किया बहुत संग्राम कालते और यमदूतोंको मारा ॥
सुनी बात यह श्रवणसे मैंने किये पाप अपरम्पारा ॥
करिहौं और बहुतसे अघ देखों कैसे हो निस्तारा ॥
अब तो येही लडाई ठानी है गंगाजी मैं तुमसे ॥

मैं पापी तुम तारणहारी बनि है पाप बहुत हमसे ॥
अइहैं जब यमदूत लेनको बडे बडे योधा भारी ॥
तब तुम मोहिं बचैहो तब मैं जैहौं तुम्हारी बलहारी ॥
तुम्हरे गण हैं पुष्प लिये औ यमके दूत शस्त्रधारी ॥
इसका उत्तर देवकि सेना किस विधि यमकी हारी ॥
कहो मुसे समझायके झटपट छुट जाऊं मैं इस भ्रमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥
फिर गंगाजी बोली मेरी एक रेणुका असंखवान ॥
भगिहैं सब यमदूत बुलैहौं तुमको भेजके विमान ॥
एक बिन्दु गङ्गाजलसे जल जाँय पाप नाहिं रहे निसान ॥
किये पाप देवीसिंहने वोः पापभी हो गये पुष्प समान ॥
बारंबार ये कहत जा हो क्यों बनारसी तुम हमसे ॥
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥

गंगालहरी—बहर खडी।

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सबने किया भजन ॥
तब आई ब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
ब्रह्मरूप निर्भय निर्वानी अखंड गंगाकी धारा ॥
विष्णुसे ब्रह्माके पास आई तब शिवजीने धारा ॥
जटाको उनके शोभा दियो रूपभी सुन्दर सुधारा ॥
आगे कहूंगा वृत्तान्त जिस विधि तीन लोकको उद्धारा ॥
स्तुति करके आप ईशने शीश चढाई भये मगन ॥
तब आई ब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
भगीरथने करी तपस्या मगन भये शंकर भोला ॥
कहा मांग कुछ हमसे तब भगीरथ ये मुखसे बोला ॥
गंगा देव नाथजी मुझको शुद्ध करो कुलका चोला ॥

तब फिर अपनी जटाको शिवने अपने हाथनसे खोला ॥
एक बिंदु गंगाजल निकला जटासे जब अति किया जतन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगङ्गाजी तारन तरन ॥
एक बिंदुकी तीन धार भई धारा एक गई पाताल ॥
शेषनागने दर्शन पाये जीवन मुक्त भये सब ख्याल ॥
एक धार अकाश गई सब देवते देख भये खुशहाल ॥
हाथ जोड दंडवत करी गंगाने उन्हें तारा तत्काल ॥
एक धार भगीरथ लाये मृत्युलोक तारन कारन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥
मृत्युलोकमें चली वेगसे तब समुद्रने किया विचार ॥
हाथ जोड गंगासे कहा तुम्हारे बलका नहिं पारावार ॥
ये मुझसे नहिं जाय सम्हारा बहुत सिंधुने करी पुकार ॥
तब गंगाने प्रसन्न होकर धारा अपनी करी हजार ॥
नाम पडा गंगासागर कहे बनारसी नित कर दर्शन ॥
तब आई ब्रह्ममंडलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥

लावनी।

श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
था बडा व विषधरनाग भाग्य कछु वा दिन वाके जागे ॥
जब जल पीने वो लगा तो मेंढक देख देखकर भागे ॥
इतनेमें आये गरुड चोंचसे पकडके खाने लागे ॥
झटपट वाको गये निगल प्राण तत्काल वाने त्यागे ॥
मरतहीविष्णुतनुधारा॥चढगरुडपैयहीपुकारा॥अबवाहनमिलाइमारा॥
धन धन गंगाको बिंदु मुझे गोविंदे आप बनाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
शिर मौर मुकुटकी लटक कानमें कुंडल अधिक विराजैं ॥

गले वैजन्तीमाल पीत पीतांबर तनुपर साजैं ॥
वो शंख चक्र और गदा पद्मकी सम्पूरण छबि छाजै ॥
यह चरित्र वाके देख देखकर गरुडजी मनमें लाजै ॥
कुछ कहतनहीं बनआवे॥गंगा जोचाहे बनावे ॥चाहे शिवको रूपधरावे॥
है महिमा अपरंपार पार नाहिं सुर नर मुनिने पाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
फिर श्रीगंगाकी आप स्तुती करी गरुडने मुखसे ॥
भई प्रसन्न गंगामात तो वाणी बोली यक सर मुखसे ॥
था बहुत कष्टमें नाग छुटाया मैंने इसको दुखसे ॥
अब तुम इसको वैकुंठ पहुँचावो बसे जाय यह सुखसे ॥
ये गरुडने आज्ञा मानी॥तब उडे बडे बलवानी॥गंगाकी महिमाजानी॥
झटपट पहुँचे उड धाय उसे वैकुंठके बीच बिठाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥
जो ये स्तुती गंगाकी कान दे सुनै औ मुखसे गावे ॥
वो मुक्ति मुक्ति सम्पूर्ण पदारथ मन मांगे फल पावे ॥
गंगासे बडा नहिं और देव कोई दृष्टमें आवे ॥
है धन धन वाके भाग जो दर्शन करे और गंग नहावे ॥
कहै देवीसिंह भज गंगा ॥ तब तेरो मन होय चंगा ॥ मन बनारसीनेरंगा ॥
गंगाजीमें तन बोर बोर झकझोरके पाप बहाया ॥
श्रीगंगाजीके तीर नीर पीनेको नाग यक आया ॥

गंगालहरी अधर-बहर छोटी।

सागरकी गिनी जाँय लहर गिने जाँय तारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
षट् शास्त्र गिने जाँय गिने जाँय नर नारी ॥
दश दिशा गिनी जाँय सृष्टि गिनी जाय सारी ॥

सिध साध गिने जाँय गिने जाँय आचारी ॥
राजा रानी गिने जाँय गिनी खलक सरकारी ॥
गिने जाँय शाह शाहानी गिने हलकारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
गिने जाँय नदी नद सिंधु गिने जाँय नाले ॥
गिने जाँय सेतरंग लाल गिने जाँय काले ॥
दरखत डाली जाँय गिनी गिने जाँय डाले ॥
छत्तीस रागिनी राग सकल गिन डाले ॥
गिनते गिनते कई हजार सायर हारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
खग चरिंद जाते गिने गिने जाँय चातर ॥
हरजात गिनी जाय नगर गिने जाँय घर घर ॥
कागज स्याही जाय गिनी गिने जाँय अक्षर ॥
सरदार गिने जाँय गिने जाँय सागर सर ॥
क्या जाने गंगाने कितने शठ विस्तारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥
दिन रात गिनें जाँय गिनी जाँय तिथी घडी ॥
शायरी गिनी जाय गिनी छन्दकी लडी ॥
शायर कायर जाँय गिने गिने जाँय कडी ॥
जंगल खेडा गिना जाय गिनी जाँय जडी ॥
यह सत्य सत्य छंद काशीगिरी ललकारे ॥
नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजीके तारे ॥

यमराजका विष्णुसे श्रीगंगापर फिरयाद करना।

अब विष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥

लाखों पापी पृथ्वीपे रोज मरते हैं ॥
क्या कहों मैं वो यक क्षण भरमें तरते हैं ॥
मेरे भयसेभी जरा नहीं डरते हैं ॥
गंगाके गण उनकी रक्षा करते हैं ॥
विन भजन किये होता उनका निस्तारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई ॥
भंगी धोबी हडफोड या होवे नाई ॥
गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई ॥
फिर अंतसमयमें उसने मुक्ती पाई ॥
दर्शन करतेही तरा महा हत्यारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
जो मेरे दूत पापियोंको जाँय पकडने ॥
तो गंगाके गण आवें उनसे लडने ॥
वो देख देख दूतोंको लगे अकडने ॥
और मारे बाण तन बीच लगे वो गडने ॥
मैं लडलडके कई लडाई हारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
गंगासे सौ योजन पर एक नगर था ॥
उस नगरमें यक पापीका ऊंचा घर था ॥
वह पाप कर्म कर करता रोज गुजरथा ॥
मर गया तो उसपर पडा एक बस्तर था ॥
गंगाका धोया उसीने उसको तारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले ॥

गंगाकी महिमा कहां लो कोई खोले ॥
इस नेत्रसे दरशन श्रीगंगाके जो ले ॥
वैकुंठमें वह फिर झूले सदा हिंडोले ॥
कुछ बस नहीं मेरा चले न चले तुम्हारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
जब मृत्युलोकसे गंगा आप सिधारि हैं ॥
तब वह पापी फिर कौन विधी कर तरि हैं ॥
उस कालमें जो कोई पाप कर्म कर मरि हैं ॥
वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरि हैं ॥
यमराजजी अब थोडे दिन करो गुजारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥
येह सुनी बात यमराजने घर फिर आये ॥
कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये ॥
मन मारके यह गंगाको वचन सुनाये ॥
अब तो तुम्हरे थोडे दिन रहने पाये ॥
कहे बनारसी कुछ यमका चला न चारा ॥
गंगाने बंद कर दिया नरकका द्वारा ॥

बहर छोटी।

जौलौं पृथ्वीपर है गंगाकी धारा ॥
तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ॥
मत डरो कोई यमदूतसे मेरे भाई ॥
रक्षा करनेको है श्रीगंगा माई ॥
जबसे शंकरने अपने शीश चढाई ॥
तब ईश और जगदीशाकि पदवी पाई ॥
शिव बना वोही जिसने यक गोता मारा ॥

तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
कुछ जोर न यमको चाले पाप नाहिं लागे ॥
औ कालभी देखे दूरसे तो वह भागे ॥
जो गंगाके दर्शन कर काया त्यागे ॥
औ अमरलोक पुर वसे अलख हो जागे ॥
ये निश्चय करके मानो वचन हमारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले ॥
कुछ कर्म अकर्म न उसके देखे भाले ॥
जो एक वार प्राणी गंगामें न्हाले ॥
तो जन्म मरणके सकल पापको टाले ॥
गंगाके वलसे दल सब यमका हारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥
मत चलो हमारे मित्र किसीसे डरके ॥
निर्भय हो दर्शन श्रीगंगाके करके ॥
कहै देवीसिंह गंगाका ध्यान में धरके ॥
जैहो भवसागर सहजै आप उतरके ॥
गंगाकी महिमा जगमें अपरंपारा ॥
तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥

स्तुति श्रीकृष्णकी बांसुरीकी—बहर तवील।

हरि प्रथम बजाई जब बँसुरी राधावर कुंजविहारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
पडी भनक श्रवण मुरलीकी जब तब सखियां उठ धाय चलीं ॥
कोउ एक दृगमें सुरमा देकर कोउ यक कर मेहदी लाय चलीं ॥
कोइके आधे दांतन मिस्सी कोउ आधा शीश गुँधाय चलीं ॥

कोउ आधी सारी तन ढांके कोउ जोवन खोल देखाय चलीं ॥
कोऊ लट छिटकाय चलीं झटपट लज्जा तज सकल विचारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
कोउ पावनसे बांधे पहुँची कोउ हाथन पायल डाल चलीं ॥
कोउ कंठमें धारे किंकिणिको और कोउ कटि पहने माल चलीं ॥
कोउके कानन नथुनी लटकन कोउ खोले शिरके बाल चलीं ॥
कोउके नाकन बाली झुमके जो चलीं तो सब बेहाल चलीं ॥
जब पहुँची कृष्णनिकट सखियां तबहिं लखा गिरिवरधारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
फिर बोले कृष्ण कौन हो तुम कैसे तुमने शृंगार किये ॥
पांयन पहुँची हाथन पायल क्यों कटि मुक्ताके हार किये ॥
काननमें नथुनी औ लटकन ये भूषण विना विचार किये ॥
नाकनमें बाली और झुमके काहे तुमने ब्रजनार किये ॥
ये सुनत वचन तब दिया ज्वाब ब्रजकी युवती दो चारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
जब तनकी सुध कछु नाह रही तब भूषण कौन सुधार चले ॥
मन तो अटका इस बँसुरीमें दृगसे अँशुवनकी धार चले ॥
तुम राग बजाओ राग करो ऐसा नहिं कोउ विहार करे ॥
मँझधारमें नांव पडी हमरी तुम बिन को बेडा पार करे ॥
तुम पति हमरे हम दासी सब ये दिया ज्वाब दुखयारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥
लख प्रेम सकल ब्रजवनिताका फिर कृष्णने मुरली अधर धरी ॥
मोहनभी वा दिन मोह गये वोः तान जो निकली राग भरी ॥
तन मनकी सुध कछु नहीं रही जब श्रीराधापर दृष्टि परी ॥
कहे बनारसी बोलो संतो जय कृष्ण राधिका हरी हरी ॥

ऐसी लीला नहिं करी कोउ जैसी करी हरि अवतारीने ॥
ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं तज काज सकल ब्रजनारीने ॥

स्तुति श्रीकृष्णकी बांसुरीकी—बहर तवील।

हरि बँसुरीकी ध्वनि सुन ब्रजयुवती चलीं झुंडके झुंड मगन मन कर॥
धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बँसुरी तनमन लियो हर ॥
मनप्रेम प्रबल अति तनु सुंदर सब वेद सुराति अस गुण गावें ॥
तज लाज सकल गृह काज छोड चलीं हरिपद पंकज मन भावें ॥
हरि आनन चन्द्र चकोर सखी छवि निरखि निरखि कर सकुचावें ॥
कुछ कहि न सकें हितकी बतियां अति लज्जित मनमें मुसकावें ॥
अति व्याकुल गात मदन मद कर सखि चाहत मिलें मनोहर वर ॥
धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बँसुरी तन मन लिगो हर॥
मनकी वांछा लख मुरलीधर ब्रजयुवतिन संग विहार करें ॥
यक यक हरी यक एक सखी यकयकके कर यकयक पकरें ॥
यकयक मुरली दै गोपियनको हरि कहत बजाओ तबहिं बरें ॥
ये प्रेमकथा सुन हँस हँसकर मुख धरत न बजत प्राण विखरें ॥
कहें ब्रजयुवतिन हम कीन्ह कहा अब तुमहिं बजाओ नट नागर ॥
धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बँसुरी तन मन लियो हर ॥
यक यक तरुवरतर यकयक हरि यकयक युवतिन संग बात हरें ॥
इत घर आवें यशुदाके पास उत गोपियन बीच प्रभात करें ॥
हरि ढीठ पकडकर मुख चूमें और बात सखी सकुचात करें ॥
यह मांगत वर विनती कर कर विधना नित ऐसी रात करें ॥
जब तिनके जो पति आवत सब गृह पावत अपनी पत्नी घर घर ॥
धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बँसुरी तन मन लियो हर ॥
शिव नारद आदि सकल ऋषि मुनि सब देखत गगन विमान धरे ॥
कौतुक गिरिधरके लख न परें तनु मानुष ब्रह्म अखंड हरे ॥

युवतीतनुनारी वेद सुरति रवि लीला ब्रजमें खेल करे ॥
हरि पुण्य न पाप दुःख न सुख कछु वेदान्तके कर्ता खेदपरे ॥
रचि छंद यह काशीगिरि स्तुति करि मांगत भक्ति पदारथवर ॥
धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन बँसुरी तन मन लियो हर ॥

निर्गुण पलँग-बहर खडी।

चलो आज हिलमिलके सोवें पीतम प्यारेके अब संग ॥
सात द्वीप नव खंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
पंचतत्त्वसे अलग है वो और तीनों गुणसे न्यारा है ॥
दिव्य रूप सुंदरसे सुंदर अपना पीतम प्यारा है ॥
दरवाजेपर चौकी देता जिसके कुतुब सितारा है ॥
जहां न चंदा सूर्य अग्नि और पवनका तनिक गुजारा है ॥
सो मेरे इस शरीरमें हैं उसीसे है अपना सत्संग ॥
सात द्वीप नव खंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
सदैव एक रंग बना रहे नहिं वृद्ध होय नहिं बाला है ॥
उसीसे चंदा सूर्य अग्निमें प्रकाश और उजियाला है ॥
उसीसे तूं कर नेह अरी बुद्धी वो भोला भाला है ॥
इस शरीरकी सेजमें है वो पर इससे निरियाला है ॥
गले उसीसे लगके सोऊं अपने मनमें यही उमंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥
नेह निवारसे विना है वो और कंचनके चारों पाये ॥
लगे हैं जिसमें पंचरंग तकिये तहां सजन वो दरशाये ॥
योग युक्तिसे शीश महलमें जो प्राणी आये जाये ॥
अपने पतिसे वही मिलें जो प्राणायामसे लवलाये ॥
सोवत जागत चित्त उसीमें लगारहे सुख पावें अंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥

पतिव्रता है वही जो कोई ऐसे पतिसे भोग करे ॥
दोनों सुख पावे उससे मिल भोग करे और योग करे ॥
जन्म मरणके दुःखसे छूटे दूर जगत्का रोग करे ॥
देवीसिंह कहे आवागमन मिट जाय न मनमें शोक करे ॥
बनारसी सोवे अपने साईके संग और नहावे गंग ॥
सात द्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ॥

निर्गुण वर्षा—बहर खडी ।

निरआसरे है निरंकार जहँ अमृतकी वर्षा बरसे ॥
निरआसरे पीवें योगी जन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे अनहद घन गरजे नाद बीन बोले चाले ॥
निरआसरे अपनी हरियाली आपीवो देखे भाले ॥
निरआसरे उलटे बहते हैं ब्रह्मांडमें नदी नाले ॥
निरआसरे दामिन दमके चले निरआसरे बादल काले ॥
निरआसरे वर्षे आपाढ सावन भादों उसके घरसे ॥
निरआसरे पीवें योगी जन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे स्वातीकी बून्द जब प्राण पपैहा पान करे ॥
तभी मिटे तृष्णा उसकी जब नारायणका ध्यान करे ॥
निरआसरे हो मुक्त उसीसे वह मुक्ताकी खान करे ॥
निरआसरे हैं असोज जो सारी वर्षामें पान करे ॥
निरआसरे हो गजमुक्ता स्वातीकी बूंद जब गज परसे ॥
निरआसरे पीवें योगी जन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे ब्रह्मा विष्णु औ वो महेश उसमें नहाते हैं ॥
निरआसरे श्रीसूर्य किरणोंसे अमृत जल बरसाते हैं ॥
निरआसरे हैं नक्षत्र जो सब वर्ष वर्ष सुख पाते हैं ॥
निरआसरे हैं चन्द्र जडीको सदा पियूष पिलाते हैं ॥

निरआसरे गंगाजल बरसे शिव जो जटा खोलें करसे ॥
निरआसरे पीवें योगी जन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥
निरआसरे दक्षिणमें कंचन गायत्रीने बरसाया ॥
निरआसरे हैं शक्ति और है निरआसरे उसकी माया ॥
निरआसरे हैं आदि ब्रह्म ये देवीसिंहने छन्द गाया ॥
निरआसरे हैं बनारसी जिसने घटमें दर्शन पाया ॥
निरआसरे वो चिरंजीव जिस जिसकी लगन लागी हरिसे ॥
निरआसरे पीवें योगी जन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ॥

लोकालोककी वर्षा—बहर खडी ।

चन्द्रलोकसे अमृत बरसे सूर्यलोकसे बरसे ज्ञान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
इन्द्रलोकसे वर्षा बरसे सकल सृष्टिका हो कल्यान ॥
कुबेरके घरसे धन बरसे पावे तो होवे धनवान ॥
अषाढ सावन भादों कुवांर ये चार महीने दो ऋतु जान ॥
स्वातीसे बरसे मुक्ता और अनेक ओषधिकी हो खान ॥
विष्णुलोकसे भक्ती बरसे पूजा जप तीरथ और दान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
सत्यलोकसे धर्म बरसता सत्य बात बोलें गुणवान ॥
स्वर्गलोकसे स्वरूप बरसे सुंदरताई तनमें जान ॥
शिवके लोकसे तप बरसे जो करे सो होवे भानु समान ॥
वेदसे बरसे गायत्री निशि दिन जपते हैं संत सुजान ॥
गऊलोकसे गोरस बरसे लूटें ब्रजमें श्रीभगवान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
सात स्वर्गते गंगा बरसे जिसमें सब करते स्नान ॥
यमके लोकसे यमुना बरसे वेद शास्त्र ये कहे पुरान ॥

…केलोकसे सरस्वती बरसे उत्तम जिसका स्थान ॥
सो मेरी जिह्वापै बैठके भाषामें करें वेद बखान ॥
गुणबरसे गणपति लोकसे और विद्याका हो सन्मान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥
बरसे राग गंधर्वलोकसे करें अप्सरा सुन्दर गान ॥
सदा वो गावें भगवत्के गुण सुनेसे होवें पवित्र कान ॥
देवीसिंह कहे बनारसीके ख्यालसे बरसे मीठी तान ॥
कही ये मैंने निर्गुण वर्षा सुनो लगावो ब्रह्ममें ध्यान ॥
सर्व लोक मेरे शरीरमें मुझे दिखावे कृपानिधान ॥
आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ॥

धर्म संन्यास वेदान्तगोपिनी प्रश्न —बहर खडी ।

सर्व धर्मसे परे वेदमें लिखा है सुन संन्यासक धर्म ॥
क्या कोई जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥
ग्रहण करें तो बने नहीं और त्याग करें तो क्या त्यागें ॥
सोवें तो निद्रा नहिं आवे जागे तो सोवत जागें ॥
युद्ध करे तो धर्म घटे और पाप लगे रणसे भागे ॥
त्रयलोकीके दाता हैं फिर क्यों भिक्षा घर घर मांगे ॥
उनकी गती वही जाने नहिं मिले किसीको जिनका मर्म ॥
क्या कोई जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥
मौन रहे पर बोलें सबसे बरत करें और सब खावें ॥
आसन दृढ होय बाट चलें जित चाहें वो उतही जावें ॥
पढे नहीं एको अक्षर और वेदशास्त्र निशि दिन गावें ॥
आंख मूंद देखें सबको पर आप दृष्टिमें नहिं आवें ॥
वो क्या देखेंगे उनको जिनकी दृष्टिमें लगा है चर्म ॥
क्या कोइ जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥

योग विषे वो भोग करें और रोग विषे साधें वो योग ॥
शोक विषे वो हर्ष करें और रोग विषे रहें सदा निरोग ॥
वियोगमें संयोग करें संयोग विषे रहे बना वियोग ॥
लोक विषे परलोक सुधारें इसको समझें ज्ञानी लोग ॥
जिनकी मायासे सृष्टीमें व्याप रहाहै सबको भर्म ॥
क्या कोई जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥
देह विषे वो रहें विदेही मायामें रहें निर्माया ॥
देवीसिंह ए कहे कि उनका पार किसीने नहिं पाया ॥
चार वेद षट शास्त्र अठारा पुराणने योंही गाया ॥
सर्व धर्मसे बडा धर्म संन्यास मेरे मनमें भाया ॥
बनारसी तीनों गुणसे है रहित न समझे धर्म अधर्म ॥
क्या कोई जाने पण्डित कि संन्यासीका कौन है कर्म ॥

बहर खडी (उत्तर) ।

कर्म करें और फल नाहिं चाहै यही तो है संन्यासका कर्म ॥
धर्म अधर्मको सम कर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
करें आत्माको वो ग्रहण और शरीरका त्यागें अभिमान ॥
सोवत जागत सुमरणमें रहें सदा रूप देखें निर्वान ॥
निर्बलसे नहिं लडें लडें उससे जो कोई होवे बलवान ॥
कुबेर उनकी आज्ञामें रहें भिक्षासे करते गुजरान ॥
जीव ब्रह्मको एक समझते तनिक न उनके मनमें भर्म ॥
धर्म अधर्मको सम कर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
गुह्य ज्ञानकी बात करें अज्ञानी नहिं समझन पावें ॥
येही बोलनेमें हैं मौन सब अर्थ तुम्हें हम समझावें ॥
भोजन तो ये क्षुधा करे हम कुछ नहिं खांय और सब खावें ॥

बैठे रहैं एक आसनपर योगमार्गसे फिर आवैं ॥
लोहेसे है कडा और मन मोमसेभी है जिनका नर्म ॥
धर्म अधर्मको सम कर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
इंद्रीका जो धर्म है वह अपना अपना करती हैं भोग ॥
अपनेको कर्त्ता नहिं माने योग विषे है येही भोग ॥
शरीरको दुख सुख है आत्मा सदा अवध्य है सदा निरोग ॥
जिनका ऐसा ज्ञान है उनको एकहि है संयोग वियोग ॥
ब्रह्मज्ञानकी बातका कोई ब्रह्मज्ञानी पावे मर्म ॥
धर्म अधर्मको सम कर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥
शरीरको धारे हैं पर वो आप नहीं बनते काया ॥
मायासे हैं वोही रहित हैं जिनके बीच योगमाया ॥
देवीसिंह ये कहे कि जिसने श्रीकृष्णका गुण गाया ॥
बनारसी सुन उस प्राणीने सहजहि परमधाम पाया ॥
जिनके मनमें द्वैत नहीं है वो क्या जाने धर्म अधर्म ॥
धर्म अधर्मको सम कर देखें इससे परे न कोई धर्म ॥

योगाभ्यास-बहर नई।

मैं सत्य सत्य कहूं हाल सुनो अहेवाल तनका बयान ॥
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान सो यम भगवान॥
जहँ महातत्त्व है पवन करो तुम श्रवन सोई है शक्त ॥
रहे पारब्रह्मके संग वोः है अर्द्धंग बात कहूं सत ॥
हैं शीशमें श्रीमहादेव उन्हींको सेव करो तुम भक्त ॥
हैं वहीं ब्रह्मके खवास हाजिर रहैं वहां हरवक्त ॥
सुन प्यारे जहँ तरह तरहके राग रंग होते हैं ॥
सुन प्यारे उस बादशाहके सभी संग होते हैं ॥

दोहा–हैं चार वो उसके वजीर उनका जुदा जुदा सुन नाम ॥
ब्रह्मा और विष्णु वोः रुद्र करें श्रीगणेश पूरणकाम ॥
ये अगम अगोचर छंद हरफ कडी वंद ज्ञान विज्ञान ॥
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान सो यम भगवान॥
दो नयन है चौकीदार बडे हुशियार फिरें दिन रात ॥
हैं खबरदार दो कान इधर धर ध्यान खबर ले जात ॥
नासिका मालनी दोई लिये खुशवोई पुष्प अरु पात ॥
वोः ब्रह्म करे सब भोग कही ये महायोगकी बात ॥
तोडा–सुन प्यारे ये जिह्वा पढके सबी वो हाल सुनावे ॥
सुन प्यारे और कंठ गंधरव राग रागिनी गावे ॥
दोहा–हैं मुखमें बत्तीस दांत सोई हैं हीरे मोती लाल ॥
वोः ब्रह्म पहेनके भूषण सुंदर सदा रहे खुशहाल ॥
दिल दलेल रहता संग करे वोः जंग युद्ध घमसान ॥
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान सो यम भगवान॥
पढ मुखसे चारों वेद खोल दिया भेद सो चारों धाम ॥
ऋग्वेद है बद्रीनाथ और श्रीजगन्नाथ हैं श्याम ॥
तीसरा अथर्वण वेद न कर निषेध भजो हरनाम ॥
सोई रामनाथ रमिरहे गुणीजन लहें सिद्ध हो काम ॥
तोडा–सुन प्यारे है यजुर्वेदमें बनी द्वारका पुरी ॥
सुन प्यारे कहो अलख निरंजन छोडो बातें बुरी ॥
दोहा–मन घोडे पर असवारी करता ब्रह्म बादशाह राजा ॥
हिरदे हाथीको पारब्रह्मने खूब तरहसे साजा ॥
दमदिवान दफ्तरदार बडा पुरकार ज्ञानकी खान ॥
है ब्रह्माण्डमें बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान सो यम भगवान ॥
हैं तरह तरहके महल औ सुंदर पहल हीरोंसे जडे ॥

ओ सत्तर दो बहत्तर खाने नव दरवाजे खडे ॥
दशमी खिरकीमें आप रहा वो व्याप शब्द ध्वनि झडे ॥
बाजे नाद बीन और शंख आपनी संग रहे निम छडे ॥
तोडा—सुन प्यारे है शीशमहलमें आदि ब्रह्मका बासा ॥
सुन प्यारे अपनी इच्छा कर उसने जगत प्रकाशा ॥
दोहा—वो परात्पर है आप और नहिं कोई उससे परे ॥
ओ अव्यय अविनाशी संन्यासी नाहिं जन्में नहिं मरे ॥
है मुक्ति उसीके युक्ति उक्तिसे किया नाम नीसान ॥
है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान सो यम भगवान ॥
है पांच तत्त्वका तख्त बना शुभ बख्त तीन गुण भरा ॥
सब है मायाका खेल उसीमें मेल निरंजन करा ॥
ले तेज ताजको ईश आप जगदीश शीशपर धरा ॥
जो धरता उसका ध्यान ज्ञानसे ओ भवसागर तरा ॥
तोडा—सुन प्यारे रही कलाकी कलगी झलकफलकसे दूनी ॥
सुन प्यारे उस पारब्रह्मकी अगम ज्योति है धूनी ॥
दोहा—तन तख्तके ऊपर बैठ बादशाह करे अदल इंसाफ ॥
चाहे जिसको दे सजा करे वोः चाहे जिसको माफ ॥
हर निराकार निराधार वो है अपरंपार उसे पहेचान ॥
है ब्रह्माण्डमें बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान सो यम भगवान ॥
सब रोम रोम है फौज कररही मौज कटे और बढे ॥
कोई पीछेको हटजाय कोई बढजाय कोई जा चढे ॥
हैं दोनो हाथ हथियार करें सबकार हरीने गढे ॥
और शब्द नकार चोपदार चित नाम नकीब पढे ॥
तोडा—सुन प्यारे ये फक्र फकीरां पारब्रह्मसे मांगे ॥
सुन प्यारे नाभीमें सर है भरा कमल सब लागे ॥

दोहा–विन लिंग भग पैदा करै सकल संसार ब्रह्म ब्रह्मचारी ॥
औ आपी आप है एक नहीं वो पुरुष नहीं वो नारी ॥
हैं हलकारे दो पांव कहे सब नांव देवीसिंह जवान ॥
है ब्रह्माण्डमें बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान सो यम भगवान ॥

योगाभ्यास गोपिनी–बहर छोटी।

है ऊपर कुआं आ नीचे जिसके डोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ डोरीके ऊपर फिरनी चक्कर खावे ॥ वो मधुर मधुर ध्वनि बोले मोहिं सुहावे ॥ जब तलक वो डोरी कुयेंमें आवै जावै ॥ तबतलक कुआं वो नहिं सूखने पावे ॥ उस कुयेंके ऊपर खडी हजारों गोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ मुख बंद कुयेंका रहै और पानी दरसे ॥ वोह देखे जिसकी डोर लगी रहे हरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम न राखै घरसे ॥ तब अमृत जलको छके छुटे सब डरसे ॥ वोः नित उठ गागर भरे बनी रहै कोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ जब उलटा डोल वह जाय तो पानी आवे ॥ फिर सींचे अपना बाग अमर फल पावे ॥ है काहेका वोह डोल औ कौन बनावे ॥ जो पूरा योगी होय तो मोहिं बतावे ॥ उस कुयेंके ऊपर नाहिं चले बरजोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ उस कुयेंपै गंगा यमुना सरस्वती हैं औ महादेव अविनाशी पारवती हैं ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्ध और बाल यति हैं ॥ नाना प्रकारकी उसमें बेलपती हैं ॥ राह वहांकी बहुते साकर खोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥ लाखौ पनिहारिन एक है वहां पनिहारा ॥ उस पनिहारेने सबको भरदी धारा ॥ जिसने पाया वह नीर तो जन्म सुधारा ॥ कहै बनारसी उसकी गति अपरंपारा ॥ वो न्हावे उसमें जिसका पंथ अघोरी ॥ पानी भरती पनिहारिन चोरा चोरी ॥

उत्तर-बहर छोटी।

ब्रह्माण्ड कुआं और श्वासा जिसकी डोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ जो गुरु देवे उपदेश कानमें आप ॥ तो जिह्वा उसका करती गुपचुप जाप ॥ सुमरन करनेसे दूर होय संताप ॥ ये वो चोरी है जिसमें कुछ नाहिं पाप ॥ मन मगन रहे गुण गावे नंदकिशोरी॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ कर प्राणायाम जब उलटा प्राण चढावे ॥ तब वोः अमृत फिर उसी डोलमें आवे ॥ मुँह उलटा उसका रहे बुंद टपकावे ॥ हो जन्म मरणसे रहित अमर होजावे ॥ मैं सत्य सत्य कहूं हाल बात सुन मोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ है नव दरवाजे खुले औ दशवां बंद ॥ जहां आदि-ज्योति है पूरण परमानंद ॥ जो देह भावको छोडरहे निर्द्वंद ॥ वोह देखे उसको कटे जगत्का फंद ॥ निशि दिन खेले फिर आप ब्रह्मसंग होरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ अनहद बाजोंके बीचमें घिरनी डोले ॥ हर श्वास श्वास पर मधुर मधुर ध्वनि बोले ॥ जो ज्ञान गंगते अपनी आत्मा धोले ॥ वह देखे जो भीतरकी आंखें खोले ॥ ज्ञानीसे कालभी नहीं करे बरजोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥ सब सृष्टि है पनिहारि औ ब्रह्म पनिहारा ॥ है सबके बीचमें उसीका देख पसारा ॥ कहै देवीसिंह वो सबमें सबसे न्यारा ॥ जिस जिसने उसको लखा वो उसका प्यारा ॥ उस नीरमें काया बनारसीने बोरी ॥ जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी ॥

दवा नारायणके नामकी-बहर खडी।

हर एक ढूंढते हैं जंगलमें दवा रसायणकी बूटी ॥
नारायण हैं सरजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई ढूंढता उस बूटीको जिसमें पारा तुरत मरे ॥

कोई खोजता जडीको जो कोई तन कायाका दुःख हरे ॥
बहुत लोग खोदें पृथ्वीको वृक्ष काटते हरे भरे ॥
उनकोभी फिर यम काटेगा कहे शब्द ये खरे खरे ॥
हरी हरी बूटी है समझो हरीनाम है सबसे परे ॥
उस बूटीको जिसने पाया वोः भवसागर सहज तरे ॥
राम रसायण पाई हमने और रसायण सब छूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥
कोई कहे हम सिंगरफ मारें और काढें गंधकका तेल ॥
कोई देखते जडी विरंगी कोई ढूंढते अम्मरबेल ॥
हमने सबको देखा यारो ये तो हैं सब झूठे खेल ॥
अमर नाम है दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल ॥
मनको मारके बना ले कुस्ता जो गुजरे वह दिलपर झेल ॥
तनको सोधके शुद्ध करो तुम तजो झूठ और तजो झमेल ॥
जौन शख्स फूंके धातूको उनके हिये कि हैं फूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते अबरख तांबा कोई फूंकते हैं हरताल ॥
हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गोपाल ॥
कोई कहैं हम चांदी मारें जिससे हो कुछ धन और माल ॥
इन कर्मोंको जो कोई करता उसका होता हाल बेहाल ॥
कोई कहे हम सोना मारें और करें पैसोंको लाल ॥
ठग ठगके लूटें दुनियाको उनको एक दिन ठगेगा काल ॥
बहुत घोटते खरलमें धातु संतोंने काया कूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥
कोई मारते हैं कलईको जिसमें होवे पुष्ट शरीर ॥
घरको फूंककके तबाह किया वो अमीरसे होगये फकीर ॥

साधूका नहीं धर्म जो कि मारें धातू करके तदवीर ॥
कहै देवीसिंह हरी हरी कहो यह जिह्वा हेगी अकसीर ॥
खाक सारकी जवां रसायन इसमें है हरे एक तासीर ॥
जबांसे वोः मुर्देको जिलादे जबांसें देडाले जागीर ॥
बनारसी ये कहैं हमारी रामनाम हेगी घूटी ॥
नारायण हे सरजीवन भाई वोः बूटी हमने लूटी ॥

कामधेनु—बहर लंगडी।

यह काया है कामधेनू कर प्रेम प्रीति हमने पाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥
मगन रूप मस्तक झलके संतोष सुमतके सींग खडे ॥
नहीं वो मारें किसीसे नहीं मरे और नहीं लडे ॥
हीरे मोती लाल और हर एक रतन रसनामें जडे ॥
कृपा और करुणाके दोनों कान नहीं छोटे न बडे ॥
त्रय गुणके हैं तीन चिह्न कहिं श्वेत श्याम कहि है लाली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥
दया धरमके दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला ॥
बनी नासिका नाम निश्चय रूपी सबसे आला ॥
अपार महिमाका मुख उसमें मंत्ररूप फिरती माला ॥
अपनी कायाको हमने कामधेनु करके पाला ॥
जस जिह्वा और दिव्य दंत कल्याण कंठ रेखा काली ॥
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥
परमतत्त्वकी बनी पीठ और उग्रतेजका उद्र भला ॥
परमारथकी पूंछ हिलरही करे हर एक कला ॥
चतुराईके चारों थनमें सम दृष्टी दूध ढला ॥
चरचारूपी चरण चारों सुंदर सबसे अबला ॥

जगमगात हिरदेमें जगमग ब्रह्मज्योतिकी उजिआली ॥
सबी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥
हमने यार दुही धीरजकी अब अपना उद्धार करा ॥
छान छानके दूधको हिरदेकी हांडीमें भरा ॥
ज्ञानसे गरम किया इसको सारजीवन जामन बीच धरा ॥
जमा दहीको मथा छल छिद्र छाछ नहिं रही जरा ॥
मुक्तिरूप माखन पाया हुई पूरी मनशा मनवाली ॥
सबी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥
जो मांगे सो पावे इससे ऐसी काया कामधयन ॥
विश्वरूप है जो देखे इसको उसको होय चयन ॥
बनारसी कहे इसे देखकर खुशी हमारे हुये नयन ॥
रंग रंगकी पढे बाणी और बोलें मधुर बयन ॥
सबकी मनशा पूरण करती कोईको नहीं फेरे खाली ॥
सबी पदारथ हैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ॥

ख्याल वेदांत-बहर जीकी।

सबके बीचमें है और देखाई नहीं दे गोविंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

भीतरकी गई फूट देय बाहरसे देखलाई, कहें ये बाप हैं ये माईजी ॥ मरजावें तो कोई साथ नहिं चले बहन भाई, ना चाचा हो या हो ताईजी ॥

झूठ बात नहिं बोले बोलें सत्य बचन येरिंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

गोदिमें लडका औ ढिंढोरा शहेरमें फिरवाते, मसल जो है वोही हम गाते जी ॥ इसी तरहसे घटमें हर बाहर खोजन जाते मिले नहिं उलटे फिर आते जी ॥

मुसलमान मक्के भटके हिन्दू भटके हिंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

अरे मूढ अज्ञान तू क्यों भटके हे चारों धाम, तेरे हैं घटमें आत्मारामजी ॥ उन्हें तू क्यों नहिं देख जो हिरदेमें करे विश्राम, नाम जप तो तेरा हो नामजी ॥

घटमें आत्मा सूझपडे नहिं योंहि गंवाई जिन्द ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

जगन्नाथ औ बद्रीनाथ सब हमभी फिर आयें, कृष्ण इस हिरदेमें पायेजी ॥ देवीसिंहने ज्ञान ध्यानके सदा छंद गाये, रामके चरणों चितलायेजी ॥

बनारसीने ज्ञानदृष्टिसे दिया जगतको निंद ॥
हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दजी ॥

शुद्ध वेदांत-बहर जीकी ।

नहीं करों में ग्रहण और कुछ त्याग न हमसे होय ॥
न पाया कुछ न दीना खोय जी ॥

नहीं रैनको सोवे हम और दिनमें नहीं जागें, लडाई लडें न हम भागेंजी ॥ ज्ञान अग्निमें दग्ध करें हम कर्म न तन दागें, न देवें दान न कुछ मांगेजी ॥

सुख पावें तो हँसे नहीं नहिं दुखमें देवें रोय ॥
न पाया कछु न दीना खोयजी ॥

नहीं रैन वहां होय और जहां जिनका नहीं प्रकाश, हमारा निशिदिन वहीं निवासजी ॥ नहीं किसीसे दूर बसे हम नहीं कोईके पास न स्वामी बने न कोईके दासजी ॥

अनहोनी होनीसे परे हम सोहं पद है सोय ॥
न पाया कछु न दीना खोयजी ॥

नहीं शत्रुसे विरोध अपना मित्रसे नहीं सनेह, नहीं हम देह हैं नहीं विदेहजी ॥ वनमें अपना वास नहीं और नहीं हमारे गेह, न चाहें धूप न चाहें मेहजी ॥

मात पिता दारा सुत भगिनी सब हैं और नाहिं कोय ॥
न पाया कछु न दीना खोयजी ॥

धर्ममें हम नाहिं पुन्य चाहें और अधर्ममें नाहिं पाप, न दें वरदान कोईको शापजी ॥ जिधरको देखें एक ब्रह्म सर्वज्ञ रहाहै व्याप, अलखको लखा अलख भये आपजी ॥

बनारसी कहै एक है वोः मन समझो उसको दोय ॥
न पाया कछु न दीना खोयजी ॥

श्रीकृष्ण और शिवजीका स्वरूप वर्णन—बहर जीकी।

शिव गौराको सब कोई कहते ये दोऊ येकी अंग ॥
कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धंग भला ॥
आधे शीश पर जटा औ आधे लटके लटकाली ॥
आधे शिव आधे वनमाली जी भला ॥
आधे मुख वेदांत और आधे वेदकी ध्वनि आली ॥
करें आपसमें बोलाचाली जी भला ॥

दोहरा—कहें गौवरजा सुनो लक्ष्मी देखो पतीका रूप ॥
ऐसा रूप नहीं देखाथा सो देखो आज स्वरूप ॥
आधे शिर मुकुट आधे शिर गंग भला ॥
आधे शीशपर चन्द्र और आधे चंदनका है खौर ॥
इधर मुरछर और उधर हो चौर भला ॥
आधे मुख माखन और आधे धतूरेका है कौर ॥
आधा अंग श्याम आधा अंग गौर भला ॥

दोहरा—आधे अंगमें भस्म लगी आधे अंग लगी सुगंध ॥

आधा अंग है क्रोधवंत और आधा अंग आनंद ॥
आधे अंग वस्त्र आधा अंग नंग भला ॥
आधे मुख मुरली बाजे आधे मुख बाजे नाद ॥
न उनका अन्त न उनका आदि भला ॥
आधे मुख अमृत और आधे हलाहलका है स्वाद ॥
दूर करें क्षणमें विघ्न विषाद भला ॥
दोहरा–आधे अंगमें सर्प और आधे अंगमें भूषण हेम ॥
आधा अंग है कर्म रहित और आधे अंगमें नेम ॥
आधा ब्रह्मचर्य आधा सरभंग भला ॥
आधे कमरमें लंगोटा आधे कटकछनी कसे ॥
दोनों अंग एक अंगमें बसे भला ॥
आधा आसन गरुडपर आधा नंदीगणपर लसे ॥
ये शोभा देख मेरा मन हँसे भला ॥
दोहरा–अर्ध स्वरूप है महाकाल और आधा पालनहार ॥
काशिगिरि ये कहे है उनकी महिमा अगम अपार ॥
देख सुर नर मुनि होयगे दंग भला ॥

एकरूपमें चार रूप–बहर लंगडी।

आधे अंगमें कृष्ण लक्ष्मी आधेमें शिव पारवती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
एक समय मैंने भक्ति कर कहा हरीहरसे भाई ॥
एक अंगमें मुझे तुम चार रूप दिखलाई ॥
शिवके बायें गौरी दाहिने श्री लक्ष्मी यदुराई ॥
भक्तके वश हैं प्रभु यह महिमा वेदोंने गाई ॥
ऐसाई रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीवर और गवरपती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥

श्रीकृष्णके मोर मुकुट शिवका जूडा बँध विशाल ॥
गौरको सोहे हार फूलोंके रमाके मुक्तामाल ॥
शिव धारें भस्मी माथेपर श्रीकृष्णके केसर भाल ॥
रमाको सोहें वह भूषण दिव्य गवरके लपटे व्याल ॥
चारवेद चारोंकी स्तुती करे न पावें पाव रती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्रीकृष्णके शंख हाथमें शिवजी करमें लिये कपाल ॥
रमा बजावें वो चुटकी गौरा दो करसे दें ताल ॥
मनमोहनकी मुरली बाजे शिवका डमरू बजे धमाल ॥
गौरके माथेपे चंदन रक्त रमाके बिंदीलाल ॥
शिव योगी हरि ब्रह्मचारी लक्ष्मी कुँवारी और गौर सती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्रीकृष्णके चक्र सुदर्शन शिवजी करमें लिये त्रिशूल ॥
पार्वतीके हाथमें खड्ग रमाके कमलका फूल ॥
देवीसिंहने कहा ख्याल यह वेद पुराणोंके अनुकूल ॥
बनारसीके छन्दमें कभी न हरगिज निकले भूल ॥
जो इस पदको सुने औ गावे उसकी होजाय तुर्त गती ॥
एक अंगमें रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥

हरिहरात्मक मूर्ति—बहर जीकी।

श्रीकृष्ण शिव एक रूप हैं रहते एकी संग, हरि हर दोनों हैं अर्द्धांग भला ॥ आधा अंग है श्रीकृष्णका आधा शिवका जान, कहां ये परम पुरातन ज्ञान भला ॥ कृष्ण करें शिवका स्मरण शिव धरें कृष्णका ध्यान, आत्मा एक एक स्थान भला ॥

दोहा—शिवजी साधें योग कृष्णजी करते भोग विलास ॥ योग भोग दोनों एकी दोनोंका ब्रह्ममें वास ॥ वह पहेने भूषण वह रहें नंग

भला ॥ कृष्ण पढें गीता और शिवजी पढें ओप वेदांत, वो करते क्रोध वो रहते शांत भला ॥ कृष्ण करें क्रीडा ब्रजमें शिव रहें सदा एकान्त दोनोंकी सुंदर शोभा कान्त भला ॥

दोहा–शिवका सुमरण करते करते कृष्णजी होगये श्याम ॥ शिवजी होगये श्वेत जपा करते हैं कृष्णका नाम ॥ ऐसा नहीं कोईका सत्संग भला ॥ कृष्ण बजावें मुरली मुख धर शिवजी गाते गान, निकलें दोनोंमें एकी तान भला ॥ कृष्ण भरें भंडार जगतके शिव देते वरदान, करें दोनों जनका कल्याण भला ॥

दोहा–कृष्ण करें वैराग तीव्र और शिव धारें संन्यास ॥ वो उनको सेवक हैं और वो हैंगे उनके दास ॥ करें राक्षसोंको दोनों दंग भला ॥ कृष्ण सोवते शेषकी सेज्या पर करके आराम, करें शिव मशानमें विश्राम भला ॥ कृष्ण करें शिवकी सेवा शिव करें कृष्णका काम, रटो दोनोंको आठों याम भला ॥

दोहा–शिव पूजें विष्णुके चरण करें कृष्ण लिंग पूजा ॥ हरी हरातम है यक मुरती और नहीं दूजा ॥ उनके शिर मुकुट उनके शिर गंग भला ॥ त्रयी गुणसे शिव रहित कृष्ण हैं तीन लोकसे परे, भजो चाहे हरि भजो चाहे हरे भला ॥ शिवने त्रिपुरासुरको मारा कृष्णसे कौरव मरे, ये दोनों कोऊसे नहीं डरें भला ॥

दोहा–शिवके संग रहें सदा योगिनी और भूत वेताला ॥ कृष्ण लिये ग्वालनी संगमें ब्रजके सारे ग्वाला ॥ वो पीती दूध वो पीते भंग भला ॥ कृष्ण बने गौराजी शिवजी बने लक्ष्मी आप, न उनको पुण्य न उनको पाप भला ॥ कृष्ण हरे बाधा तनकी शिव दूर करें संताप, मेरा मन दोनोंमें रहा व्याप भला ॥

दोहा–कृष्ण बने नंदीगण शिवजी गरुडरूप लें धार ॥ वो उनपर बैठें और ओ होते उनपर असवार ॥ ये दोनों एक हैं और बहुरंग

भला ॥ कृष्ण पारथी पूजें शिवजी पूजें शालिग्राम, बना दोनोंका सुंदर धाम भला ॥ शिवजी काशी बनी बना श्रीकृष्णका गोकुल ग्राम, देवीसिंह दोनोंका ले नाम भला ॥

दोहा–शिवका शिवाला बना कृष्णका हैं ठाकुरद्वारा ॥ बनारसी ये कहैं मुझे दोनोंका नाम प्यारा ॥ उठे है मनमें येही तरंग भला ॥

लक्ष्मी गौराका अभेद छंद ।

वोही लक्ष्मी वही गौराजी चार वेदमें देख ॥ शक्ति है एक जुदे दो भेष भला ॥ विष्णुके संग रहैं सदा लक्ष्मी शिवके संग पार्वती ॥ लखी नहिं जाय दोनोंकी गती भला ॥ लक्ष्मीके पति इन्द्रजीत है गौराके पति यती ॥ लक्ष्मी कुआंरी गौरा सती भला ॥

दोहा–लक्ष्मीको चढें पुष्प और गौराको चढें बेलपती ॥ उनकी बुद्धी निर्मल है और है उनकी मती सुमती ॥ रूप दोनोंका अलख अलेख भला ॥ लक्ष्मीके मस्तकपर सोहै सुंदर बेंदी भाल ॥ गौरके मस्तक चन्द्रविशाल भला ॥ लक्ष्मीके उर पडा हार है जिसमें मोती लाल ॥ गौरिके कंठ मुंडकी माल भला ॥

दोहा–लक्ष्मीके दोनों करमें है कडे जडाऊ पडे ॥ गौरके कर सोहैं कंगन दोनोंके भाग हैं बडे ॥ लिखी विधनाने ऐसी रेख भला ॥ लक्ष्मीके सेवक हैं सो सब करते सुंदर भोग ॥ गौरिके सेवक साधें योग भला ॥ लक्ष्मीको जो सुमरे उसको कभी न व्यापे सोग ॥ गौरिको भजे सो रहे निरोग भला ॥

दोहा–क्षीरसिंधुमें वसे लक्ष्मी नारायणके पास ॥ गौर बसे शिव संग जहां सुंदर पर्वत कैलास ॥ भक्तजन लेते उन्हें परेख भला ॥ लक्ष्मीका शीतल स्वभाव है जल और चन्द्रमा जान ॥ गौरिको समझो अग्नि भानु भला ॥ लक्ष्मीके हैं पासमें हीरे लाल मोतिनकी खान ॥ गौरिकी विभूती है धनवान भला ॥

दोहा–लक्ष्मीमें वसे गवर गवरमें करें लक्ष्मी वास ॥ सुनो इधर धर ध्यान तुम हमसे इनकी उनकी रास ॥ है उनकी कुंभ और उनकी मेष भला ॥ श्री लक्ष्मी पहने तनुके ऊपर वस्तर लाल ॥ गवरजा ओढ रही मृगछाल भला ॥ कहीं भार्या वनी कहीं जननी हो करें प्रतिपाल ॥ बनी कहीं अंत कालका काल भला ॥

दोहा–ब्रह्मा लिखते थके शेषजीने नहिं पाया पार ॥ बनारसी ये कहे कहूं मैं कहां तलक विस्तार ॥ मुझे दोनोंकी भक्ति विशेष भला ॥

ख्याल अद्भुत–बहर जीकी।

जो चाहे सो करे प्रभू उसकी गति लखी न जाय ॥ कर्मके लिखे-को देय मिटाय जी ॥ कितनेही मरगये तो उनको पलमें दिया जिलाय ॥ कालको देखो काले खाय जी ॥ लूला चढे पहाडके ऊपर विना पौरुषसे धाय ॥ एक तृणमें त्रय लोक समाय जी ॥ सेतुबांधके समुद्रमें हरि पत्थर दिये तराय ॥ कर्मके लिखेको देय मिटायजी ॥ मूर्ख चातुरको देता एकपलमें वेद पढाय ॥ जिये ओ सदा जो विषको खायजी ॥ मीन धूपमें मगन रहे नहिं पानी उसे सुहाय ॥ कहो कोई इसके अर्थ लगायजी ॥ लोहा कंचन बने जो उसको पारस देव छुवाय ॥ कर्मके लिखेको देय मिटायजी ॥ विधवा होय सुहागिन उपजे पुत्र तो करे सहाय ॥ आगको पानी दे जलायजी ॥ भूखा भोजन नहीं करे और पेट भरा सब खाय ॥ शेरको भेडी देय भगाय-जी ॥ भृंगी कीडेको अपने सम लेता आप बनाय ॥ कर्मके लिखेको देय पिटाय जी ॥ मार्कंडेजी बारा बरसकी आये उमर लिखाय ॥ लिखी विधनाने बहुत चितलायजी ॥ सोतो होयगे निरंजीव मैं सत्य सत्य कहूं गाय ॥ प्रभूके आगे कर्म लजाय जी ॥ बनारसी कहे नरसे प्राणी नारायण होजाय ॥ कर्मके लिखेको देय मिटायजी ॥

सिद्धांत-बहर जीकी।

चार फरिस्ते हुकुममें हाजिर रहैं मेरे दरबार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ जिधर इशारा करूं उधर दलके दल डारें मार करें वो दुष्टोंको मिसमारजी ॥ आंखे उनकी लाल बनी रहें उतरे नहीं खुमार ॥ है ताकत उनमें बिना सुमारजी ॥ कोई न पापी बचे जडें जिस सक्त वो कातिलवार ॥ लिये वो चार चार तरवारजी ॥ कोई अगर छेडे औ करै कुछ मुझसे दारो मदार ॥ दिखावें उसीको वोः फिर दार जी ॥ हत्यारोंका तनुसे शिर करदें दम्में नादार ॥ हुकुम ये है दावर दादारजी ॥ मशारिगसे मगरिबतक घूमें चारों तरफ वोः चार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ कोई नहीं जीते उनसे जो लडे सो जावे हार ॥ करें वो चारों तरफ गोहार जी ॥ जिस जिसको वो मारें उसका कर डालें आहार ॥ चोट उनकी क्या सकें सहार जी ॥ एक हाथसे काटैं वह काफिरकी लाख कतार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ नाम एकका सुनो शनिश्चर दूजे मंगलाचार ॥ तीसरेको समझो एतवार जी ॥ एक बृहस्पती सदा सुखी रहैं मेरे चारों यार ॥ उतारे कुल पृथ्वीका भारजी ॥ मेरे कहेसे दुर्बुद्धीका कर डालें संहार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥ कांप उठे आसमां जिस घडी मारें वोः किलकार ॥ मरें सब दुनियाके मक्कारजी ॥ बनारसी कहे तीन लोकमें मचे वो जयजयकार ॥ बचे नहिं कोईभी बदकार जी ॥ सतयुगको दे राज और कलियुगको डारे फटकार ॥ लिये वो चार चार तलवार जी ॥

श्रीकृष्णके लटकी स्तुति।

श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥
अति विचित्र लटकी लटक लटककर अमृत रसको चाखें ॥
जो सर्प ओस जिह्वासे चाटके प्राणको अपने राखें ॥

शशिमंडलकीसी शोभा उपमा वेदभी ऐसी भाखें ॥
राधे सखियनसे कहें घूमके मनको मेरे सुलाखें ॥
तोडा–मोहनी अलकनमें बसी । छबि भांत भांतकी फसी ॥
मानो बने कृष्ण महेश पहेन कर नागनकीसी माला ॥
श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥
कोई बांबीमेंसे लपक चले कोइ गिडली मारके बैठे ॥
कोई उगलके मनको खडे और कोई संग नारके बैठे ॥
कोई फनसे फुफकारें और कोई केंचली उतारके बैठे ॥
मानो विष भरे भुजंग वो मलयागिरि विचारके बैठे ॥
तोडा–कोई श्वेत लाल कोइ पीले । रंग रंगके सर्प रंगीले ॥
रोली केसर चंदनसे चर्चके अद्भुत रंग निकाला ॥
श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥
उपमा एक और कहूं जो सुनो कोउ कविसे कही न जावे ॥
मानो कजलीवनसे सुगंध नाना प्रकारकी आवे ॥
एक तो मन उलझा काव्यमें दूजे कृष्णकी लट उलझावे ॥
जो कुंज कुंजमें परदेशी भूला नहिं रस्ता पावे ॥
तोडा–हरिके लट भूलनी वारी । भूले ब्रजके नरनारी ॥
जो प्रेम जालमें फँसा वही वो वसा न गया निकाला ॥
श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥
अति उत्तम छबि अलकनकी सुंदर श्याम घटासी दरशे ॥
जब कृष्ण करें स्नान तो मोती झूम झूमके बरसे ॥
वो घुंघरवारे केश छाये चहुं देश बसे अंबरसे ॥
स्तुति कर करके थके शेष और महिमाको जी तरसे ॥
तोडा–जो इस पदको कोइ गावे । वो भुक्ति मुक्ति सब पावे ॥
कहे बनारसी भजराम कृष्ण गोविंद और श्रीगोपाला ॥

श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ॥

ख्याल अधर ।

कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥
श्रीकृष्णकी अलकें अलख केशसे शेष लजत धरणीधर ॥
घन घटा देखकर घटत निशा अति छकत कहत धरणीधर ॥
काली काली लट कला करै चित हरत तकत धरणीधर ॥
रसना सहस्रसे रटत रटत दिन रात थकत धरणीधर ॥

तोडा–करसे गहकर छिटकाई । नागिना देख लहराई ॥ कालीने शंका खाई ॥ लेखनी लेखना लिखत अलक जद दिखत कृष्णकी आला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ दृग चंचल चतुर हरिके नेत्र लागत खंजनते नीके ॥ करैं लहर लकीरें लाल लगत कारे अंजनते नीके ॥ गडगये कलेजे आय धायके चन्द्र-किरणते नीके ॥ रस सागरते अति सरस हरन चित लगत हरिनते नीके ॥

तोडा–शर चलत नेत्रते तीखे । जद लडत दृगनते दीखे ॥ हरि चरित्र कैसे सीखे ॥ कसकत हिरदे दिन रैन नयनने ऐन कलेजा शाला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ आननकी षटदश कला दिव्रते हीरे लाल लजाये ॥ दर्शन कारण षट दर्शन आसन त्याग त्यागकर आये ॥ शंकर इन्द्रादिक सहित चरण नंगे कर करके धाये ॥ श्रीकृष्णकी लीला देख छंद आनंदसे कथ कथ गाये ॥

तोडा–तन चंदन हार चढाये अक्षत । ले शीश लगाये ॥ हिरदे चरणन चित लाये ॥ नंदलाल कंसके काल काट दिया अंधकारका ताला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥ हर निराकार निरधार चार कर त्रयी तालके करता ॥ षट राग तीस रागिनी

नारायण तीन तालके करता ॥ सच्चिदानंद आनंद कालके काल का-
लके करता ॥ हैं आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकालके करता ॥
तोडा—कहै काशी गिरि हरिहर। हर दिन रैन ध्यान हिरदे धर ॥
रज चरणनकी अंजन कर ॥ कहा अधर छंद धर ध्यान ज्ञान दे दान
नन्दके लाला ॥ कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नया निकाला ॥

श्रीकृष्णके विश्वरूपकी मूर्ति ।

नंदनँदन ब्रजराज कि छवि अब कोटिन भानु प्रकाश करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु न कोटिन कर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन हैं नासिका हरीकी कोटिन वर्ण हरीके हैं ॥
कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शरण हरीके हैं ॥
कोटिन भुजा उदर कोटिन न अरु कोटिन चरण हरीके हैं ॥

शैर—कोटिन हरीके मुकुट हैं कोटिन हैं तिलक भाल ॥
कोटिन हरीके कंठ हैं कोटिन मुक्तामाल ॥
कोटिन मणी हरीकी हैं कोटिन हरीके लाल ॥
कोटिन हरीके भाव हैं कोटिन हरीकी चाल ॥
कोटिन पग पाताल छुवे अरु कोटिन आश आकाश करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन रूप हरीके हैं और कोटिन नाम हरीके हैं ॥
कोटिन कर्म हरीके हैं और कोटिन काम हरीके हैं ॥
कोटिन ग्राम हरीके हैं और कोटिन धाम हरीके हैं ॥
कोटिन शैव हरीके हैं और कोटिन वाम हरीके हैं ॥

शैर—कोटिन हरीके वेद हैं कोटिन हरीके मंत्र ॥
कोटिन हरीके शास्त्र हैं कोटिन हरीके तंत्र ॥

कोटिन हरीकी पूजा हैं कोटिन हरीके यंत्र ॥
कोटिनसे हरि अंत्र हैं कोटिनसे हैं निरंत्र ॥
कोटिनको सुख देंय हरी कोटिनके मनमें त्रास करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन इन्द्र हरीके हैं और कोटिन राज्य हरीके हैं ॥
कोटिन हैं गंधर्व हरीके कोटिन साज हरीके हैं ॥
कोटिन माया हरीकी हैं कोटिन समाज हरीके हैं ॥
कोटिन मित्र हरीके हैं कोटिन मुहताज हरीके हैं ॥
शैर—कोटिन हरीके गज हैं और कोटिन खडे तुरंग ॥
कोटिन हरीके रथ हैं और कोटिन हैं रथके संग ॥
कोटिन हरिके वेष हैं कोटिन हरीके रंग ॥
कोटिन हरीकी लहर हैं कोटिन उठे तरंग ॥
कोटिन हरी वैकुंठ करें चाहे कोटिन कैलास करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥
कोटिन हैं गोपिका हरीकी कोटिन ग्वाल हरीके हैं ॥
कोटिन धेनु हरीकी हैं कोटिन गोपाल हरीके हैं ॥
कोटिन सिंधु हरीके हैं और कोटिन ताल हरीके हैं ॥
कोटिन रत्न हरीके हैं और कोटिन थाल हरीके हैं ॥
शैर—कोटिन हरीके दैत्य हैं कोटिन हैं देवते ॥
कोटिन हरीके नामको हैं मुखसे लेवते ॥
कोटिन हरीके नांव हैं कोटिन हैं खेवते ॥
कोटिन हरीके चरणको हैं करसे सेवते ॥
देवीसिंह कहे बनारसीके घटमें हरी निवास करें ॥
उदित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाश करें ॥

श्रीसीताजीके वियोगमें-बहर लंगडी।

श्रीसीताजीके वियोगमें भये राम दुर्बल तनु छीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
उठें तो कांपें चरण खडे होवें तो लरजे सकल शरीर ॥
धनुष वो ताने तो छुटे चुटकीसे धीरजमें तीर ॥
क्रोधसे कांपे तीन लोक और जरे राक्षसनकी सब भीर ॥
रावण मनमें डरे देखे जो क्रोधित श्रीरघुवीर ॥
शेर-प्रथम तो उनका राज पाट योगमें छुटा ॥
औ खानो पान सियाके वियोगमें छूटा ॥
अवधका वास गया तात स्वर्गको पहुँचे ॥
भरतका साथ भी देखो वो शोकमें छूटा ॥
शरीर तो पींजर सब बन गया मन रहे सीतामें लवलीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
दिवसको होय संग्राम निशाको करें कहो किसविधि हरिशीन ॥
मुख ढांपें तो झरें झरनासे प्रभुके वो दोउ नैन ॥
करें जो मुखसे बात तो निकले जिह्वासे कुछके कुछ बैन ॥
लषण सुनें तो लख प्रभु वियोगमें हैं अति बेचैन ॥
शेर-ये कष्ट देखके लक्ष्मणने वो विचार किया ॥
मरेगा कल वो रावण मिलेगी आन सिया ॥
कालके वश है वोही जो कि प्रभुसे झगडा ॥
हमारे रामसे लडके ये जगमें कौन जिया ॥
दुर्बल भये तो मन नाहिं हारा याहीते लेहैं सब छीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
भोर होत मुख धोय किया जब रामचन्द्रजीने स्नान ॥
पूजन विधिसे करी फिर उठा लिया वह धनुष औ बान ॥

चले साथ देखने युद्ध लछमन भ्राता और श्री हनुमान ॥
पहुँचे रणमें जहां रथपर बैठा रावण बलवान ॥
शैर–रामको देखके रावणने धनुषको ताना ॥
औ मारे पांच बाण तब ये रामने जाना ॥
है इसकी आज मौत कालने इसको घेरा ॥
तो रामजीनेभी अपनाय धनुष संधाना ॥
अंग तो दुर्बल थाही पर सीताकी शक्ति थी परवीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
असोजका था मास और वोह शुक्लपक्ष दशमीका दिन ॥
राम औ रावणके उस दिन चले बान कोटिन गिन गिन ॥
रावणके बाणोंको राम काटे तृणवत पल पल छिन छिन ॥
रावणके शिर कटें उपजें इतनेमें छिप गया दिन ॥
शैर–हृदयमें अपने वो रखताथा ध्यान सीताका ॥
सो उसके मनसे गया पलमें ज्ञान सीताका ॥
उसी समयमें वोह मारे जो बाण दश प्रभुने ॥
रहा इस जगत्में देखो वहमान सीताका ॥
काटके उसके दशों शीश फिर अपनेहीमें करलिया लीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥
गिरा वह रथसे पृथ्वीपर तो कहा कहां है कहां है राम ॥
इस कारणसे मिला वह अंत समयमें उत्तम धाम ॥
किसी बहाने अंत समयमें राम रामका कहें जो नाम ॥
कहे देवीसिंह मिले वो राममें और पावे आराम ॥
शैर–ये छंद रामका अपने जो मुखसे गावेगा ॥
तरेगा वोभी इसे जो सुने सुनावेगा ॥
ये पूरी होगई रावणके मारनेकी कथा ॥

वोही समझेगा इसे जो के लव लगावेगा ॥
रामचन्द्रने लेके सीता लंक बिभीषणको देदीन ॥
निर्बल होयके लडे रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ॥

स्तुति शिवजीके त्यागकी-बहर खडी।

धन धन भोलानाथ तुम्हारे कौडी नहीं खजानेमें ॥
तीन लोक वस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥
जटाजूटका मुकुट शीशपर गलेमें मुडोंकी माला ॥
माथेपर फूटासा चद्रमा कपालका करमें प्याला ॥
जिसे देखके भय व्यापे सो गले बीच लपटा काला ॥
और तीसरे नेत्रमें तुम्हारे महाप्रलयकी है ज्वाला ॥
पीनेको हरवक्त भांग और आक धतूरा खानेमें ॥
तीन लोक वस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥
चर्म शेरका वस्त्र पुराना बूढा बैल सवारीको ॥
तिसपर तुम्हरी सेवा करती धन धन गौर विचारीको ॥
वो तो राजाकी पुत्री और व्याही गई भिखारीको ॥
क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सर्दारीको ॥
सुनी तुम्हारे व्याहकी लीला भिखमंगोंके गानेमें ॥
तीन लोक वस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥
नाम तुम्हरे अनेक है पर सबसे उत्तम है नंगा ॥
याहीते शोभा पाई जो विराजती शिरपर गंगा ॥
भूत प्रेत वेताल साथमें ये लश्कर सबसे चंगा ॥
तीन लोकके दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा ॥
अलख मुझे बतला ओ मिले क्या तुमको अलख जगानेमें ॥
तीन लोक वस्तीमें बसाये आप बसे वीरानमें ॥

ये तो सगुणको स्वरूप है निर्गुणमें निर्गुण हो आप ॥
पलमें प्रलय करो छिनमें रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य न पाप ॥
किसीका सुमिरन ध्यान न तुमको अपनाही करते हो जाप ॥
अपने बीचमें आप समाये आपी आपमें रहे हो व्याप ॥
हुआ मेरा मन मगन ये सिठनी ऐसी नाथ बनानेमें ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे बीरानेमें ॥
कुबेरको धन दिया और तुमने दिया इन्द्रको इन्द्रासन ॥
अपने तनपर खाक रमाई नागोंके पहने भूषण ॥
भुक्ति मुक्तिके दाता हो मुक्तीभी तुम्हारे गहें चरण ॥
देवीसिंह कहे दास तुम्हारा हित चितसे नित करे भजन ॥
बनारसीको सब कुछ बख्शा अपनी जबां हिलानेमें ॥
तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे बीरानेमें ॥

ख्याल शिवजीका—निर्गुण खडी।

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धनको धरें खजानेमें ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है यही जमानेमें ॥
राई भर चांदी नहिं सोना हीरे मोती लाल नहीं ॥
जिह्वासे सब कुछ देदें जिसको वह हो कंगाल नहीं ॥
विभूतीमें जो कुछ उनके वह कुबेरके घर माल नहीं ॥
दीनके ऊपर दया करें कोई ऐसा दीनदयालु नहीं ॥
भागीरथको गंगा देदी मुक्ति मिले नहानेमें ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है यही जमानेमें ॥ १ ॥
वेद न जाने भेद कुछ उनका पुराण पावे पार नहीं ॥
शास्त्र न जाने गती कुछ उनकी शिवसा कोई अपार नहीं ॥
जहांपर है उनका आसन वहां किसीका है विस्तार नहीं ॥
रवि शशि अग्नि पवनभी तो कोई उनके पहुँचे द्वार नहीं ॥

निर्गुणमें तो ब्रह्म वोही हैं सर्गुण हैं लिंग पुजानेमें ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है येही जमानेमें ॥ २ ॥
तीन लोकके बीचमें कोई नहीं है ऐसा वरदानी ॥
कोई नहीं योगी ऐसा और कोई नहीं ऐसा ध्यानी ॥
भिक्षुक भेष न देखो उनका वह स्वरूप हैं निरवानी ॥
सर्प न लिपटे जानो तनमें वह तो भक्त सब हैं ज्ञानी ॥
खुलें आंख जब भीतरकी तब आवे दरशन पानेमें ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है येही जमानेमें ॥ ३ ॥
निंदामें स्तुती करे तो इसीमें वह होते हैं मगन ॥
रूप अमंगल मंगलदायक उनका तो उलटा है चलन ॥
प्रेमसे उनको गाली दो तो उसीको वह समझे हैं भजन ॥
जो कोइ उनको जहर चढाये उसीको वह देते अन धन ॥
और कुछ उनको ख्वाहिश नहिं वह मगन हों गाल बजानेमें ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है येही जमानेमें ॥ ४ ॥
शेशि न उनके लिंग न उनके और चूर्ण न उनके सब है ॥
ऐसा कोई विरला जन जाने उसे नहीं व्यापे फिर भय ॥
देवीसिंह यह कहे अरे नर कहु तू मुखसे जै शिव जय ॥
बनारसी जय जय करनेसे शिव स्वरूपमें होगया लय ॥
राजा हिमनचल दंग होगये पारवतीके व्याहनेमें ॥
सारी वसुधा बांट दई मशहूर है येही जमानेमें ॥ ५ ॥

शिवजीका बांटना—बहर खडी।

धन धन भोलानाथ बांट दिये तीन लोक इक पल भरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
प्रथम दिया ब्रह्माको वेद वो बना वेदका अधिकारी ॥
विष्णुको देदिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मीसी सुंदर नारी ॥

इन्द्रको देदी कामधेनु और ऐरावतसा बलकारी ॥
कुबेरको सारी वसुधाका कर दिया तुमने भंडारी ॥
अपने पास पात्र नहिं रक्खा रक्खा तो खप्पर करमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
अमृत तो देवतोंको दिया और आप हलाहल पान किया ॥
ब्रह्मज्ञान देदिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया ॥
भागीरथको गंगा देदी सब जगने स्नान किया ॥
बडे बडे पापियोंको तुमने एक पलमें कल्यान किया ॥
आप नशेमें चूर रहो और पियो भांग नित खप्परमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
रावणको लंका देदी और बीसभुजा दशशीश दिये ॥
रामचन्द्रको धनुष बाण वो तुमही तो जगदीश दिये ॥
मनमोहनको मोहनी देदी मोर मुकुट तुम ईश दिये ॥
मुक्ति हेतु काशीमें वास भक्तोंको विश्वावीस दिये ॥
अपने तनुपर वस्त्र न राखो मगन रहो वाघम्बरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥
नारदको दई बीन और गंधर्वोको राग दिया ॥
ब्राह्मणको दिया करमकांड और संन्यासीको त्याग दिया ॥
जिसपर तुम्हरी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया ॥
देवीसिंह कहे बनारसीको सबसे उत्तम भाग दिया ॥
जिसने पाया उसीने पाया महादेव तुम्हरे वरमें ॥
ऐसे दीनदयालु हो दाता कौडी नहीं रखी घरमें ॥

ख्याल श्रीहनुमान्‌जीका पंचमुखी कवचका माहात्म्य इसके पढनेसे होगा ॥

बहर खडी तीन तीन मिसरेका चौक।

महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम कुम्कुम् अगरम् ॥

ज्ञानवान अभिमानरहित निरअहंकार हर योगी ॥
इंद्री जीत कामना त्यागी नच कामी नच भोगी ॥
रूप आनंदम् परमानंदम् महावीरमस्तकम् ॥

प्रथम मुखकी स्तुति ॥ १ ॥

दशकंधर अभिमान हनन लंका दाहन बजरंगी ॥
पूरणब्रह्म अखंडसच्चिदानंद साध सत्संगी ॥
नाम उचारत नित गोविंदम् ॥
महावीरमस्तकम् ललित सेंदूरम् कुम्कुम् अगरम् ॥

द्वितीय मुखकी स्तुति ॥ २ ॥

रक्तम् चीर गदा कर शोभित पुष्पमाल उरधारन ॥
दैत्यन दलन हनन दुष्टन दल सकल शत्रु संहारन ॥
शब्द ध्वनि गर्जत हरि हरि बम् बम् ॥
महावीरमस्तकम् ललित सेंदूरम् कुम्कुम् अगरम् ॥

तृतीय मुखकी स्तुति ॥ ३ ॥

शिवशंकर सर्वज्ञ स्वरूपम् विश्वेश्वरम् विशालम् ॥
परम वैष्णव शुद्ध आत्मा कालं काल अकालम् ॥
बहु विस्तारम् मम किम् वर्णम् ॥
महावीरमस्तकम् ललित सेंदूरम् कुम्कुम् अगरम् ॥

चतुर्थ मुखकी स्तुति ॥ ४ ॥

जटा जूट मकराकृत कुंडल रत्न जडित तनुभूषण ॥
पंच मुख सुखदायक दाता देओ पति निर्दूषण ॥
छंद काशीगिरि शास्तर कथितम् ॥
महावीरमस्तकम् ललित सेंदूरम् कुम्कुम् अगरम् ॥

इति पांचों मुखकी स्तुति सम्पूर्ण ॥ ५ ॥

विश्वरूपी बाग।

विश्वरूप खिल रहा बाग जिसमें आदमकी गुलजारी ॥
रंग रंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी ॥
हरेक तरफसे नदियोंकी हैं छूटी नहेर घनी ॥
सात सिंधु सोइ तलाव सातों सबका मालिक वही धनी ॥
चाहे बनावे चाहे एक पलमें करदे फनाफनी ॥
विश्व बागके भीतर उसके कुदरतकी फैली क्यारी ॥
रंग रंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
नवखंडोंके महल बनाये दशों दिशाके दश द्वारे ॥
त्यार किये हैं बागमें चौदा भुवन न्यारे न्यारे ॥
आसमानकी छात लगाई जिसमें जड दिये हैं तारे ॥
गरज गरज घन करैं छिडकाव छोडते फौवारे ॥
चांद औ सूर्य चारों तरफकी करते हैं चौकीदारी ॥
रंग रंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
चमत्कारका चमन लगाया पारब्रह्मने आपी पाप ॥
हर चरैमें झलकता हरशयमें वो रहा है व्याप ॥
इसी बागके भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप ॥
कोई गावते भजन और कोई रहे पंच अग्नि ताप ॥
साधु संत करैं शैर बागमें परमहंस या ब्रह्मचारी ॥
रंग रंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥
कल्पवृक्ष औ मलयागिरि वो फलेहैं उसमें अमृत फल ॥
कभी न सूखे कि जिसमें ज्ञान रूप है गंगाजल ॥
देवीसिंह कहै हरिकृपासे जिसकी हो बुद्धी निर्मल ॥
ऐसे बागमें अमर वोः होय न आवे उसे अजल ॥

विश्व बागको मालिक है वोही श्रीकृष्ण गिरिवरधारी ॥
रंग रंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ॥

भक्तियोग-बहर जीकी।

भोजन हरिके प्यारे वो तो हैंगे कालके काल, कालको क्या समझे मालजी ॥ निरंकार जो भजे उसे नहिं व्यापे भवजंजाल, उसीकी रचना तीनों कालजी ॥ आठ याम ले नाम उसीका शेषनाग पाताल, चतुरपद पक्षी जपते व्याल जी ॥ भीड पडी जहँ जहँ संतो पर हुये आप रछपाल, बचाये ब्रजमें गोपी ग्वालजी ॥

दोहा-सदा भक्तके काजको, उठ धाये तत्काल ॥
ग्राहसे गजको छुटादिया, ऐसे नन्दके लाल ॥
जो कोइ उनको सुमरे उनका होय न बांका बाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

पूंछा तेरा राम कहां जब गिर्द अग्नि दी बाल, दिखाया त्रास वो खड्ग निकालजी ॥ उसने कहा है मुझमें तुझमें सबमें श्रीगोपाल, करे वो सब जगकी प्रतिपालजी ॥

दोहा-खंभ फाड प्रगटे ऐसे और, धरा रूप विकाल ॥
हरिणाकश्यपु दैत्यको, मार किया पैमाल ॥
उसकी यादमें जो रहते वो सदा बजावें गाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

श्रीकृष्णके मित्र सुदामा ज्ञानी द्विज कंगाल, पढेथे दोनों एकी शालजी ॥ शरण गये वो हरिके होगये एक पलमें निहाल, मिला निर्द्धनको वो धन मालजी ॥ उसकी याद विन प्राणी जैसे सूखा जल विन ताल, नाम जप साईंका रहु लालजी ॥

दोहा-विना भक्ति नाहिं मुक्ति है, कहांतक कहूं अहवाल ॥
नाम लियेसे तरगये, कई पापी चंडाल ॥

लाख चोटले रोक जो रक्खे उससे नामकी ढाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

उसकी यादमें मीरा नाची देदे दोऊ ताल, गावती फिर प्रभुके ख्यालजी ॥ उसकी यादमें वोह ताकत है कोटि व्याध दे टाल, कभी नहिं आवे उसे वबाल जी ॥ देवीसिंह कहै बनारसीको उसका हुआ विशाल, देखता दिलमें वही जमालजी ॥

दोहा–निरहुरके चलना जहांके अंदर, यह है बडा कमाल ॥
जिस दरख्त मेवा होवे, झुकें उसीकी डाल ॥
नाम प्रभूको प्यारा भक्तोंको नहीं होय जवाल ॥
कालको क्या समझे वो मालजी ॥

परमेश्वरके मिलनेका मार्ग–बहर खडी ।

नरतन पाय जतन करे ऐसे जिस्में वोः करतार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नाहिं वारंवार मिले ॥
बने हैं पूरव कर्म कुछ ऐसे उसीकी यह प्रभुताई ॥
जो तूने संसारमें हैं यह सुंदर नर देही पाई ॥
पायके ऐसी कंचन काया भजन करो हरको भाई ॥
जन्म जन्मकी बिगडी बात सब इसी जन्ममें बनजाई ॥
सुख दुख भोग पिता और माता और सकल संसार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नाहिं वारंवार मिले ॥
मिला तुझे अनमोल रत्न ये अब उपाय तू ऐसा कर ॥
त्याग सकल कामना जगत्की हित चितसे हरनाम सुमर ॥
वासुदेव भज नारायण तू कृष्ण कृष्ण और कहो हर हर ॥
गाते ये भव सिंधु जगतसे क्षणमें जाये पार उतार ॥
जन्म मरण नाहिं हो तेरा नाहिं जगमें फिर अवतार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नाहिं वारंवार मिले ॥

कर विचार मनमें अपने तू किस कारण जगमें आया ॥
किस कारण संसारमें तुझको मिली है यह कंचन काया ॥
जिसने कुछ नाहिं भजन किया नाहिं मुखसे गुण गोविंद गाया ॥
सुंदर जन्म गँवाय वृथा वो अंतकाल फिर पछताया ॥
लख चौरासी पडे भरमता यमदूतोंकी मार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नाहिं वारंवार मिले ॥
दुर्लभ ये जामा नरका है मिला बडे संयोगोंसे ॥
देवीसिंह कहता है सदा समझायके ये सब लोगोंसे ॥
भजन करो आनंद रहो और छूटो दुख सुख भोगोंसे ॥
हर्ष सदा मनमें व्यापें और शुद्ध चित्त रहों सोगोंसे ॥
बनारसी कहैं और जन्ममें नाहिं उसका दीदार मिले ॥
ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नाहिं वारंवार मिले ॥

ज्ञाननौका-बहर खडी ।

भवसागर हैं कठिन कि इसमें और नहीं कोई खेवैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करैं तो पार लगे मेरी नैया ॥ १ ॥
गहरी नदिया थाह मिले नाहिं चारों तरफसे उठे बयार ॥
माया मोहका जाल पडा उसमें किस विधिसे उतरे पार ॥
चारों तरफ जो देखो तो कुछ नजर न आवे वारापार ॥
कितनेही गये डूब इसीमें गोते खाखाके मँझधार ॥
भवसागरके पार उतारे कोई नहीं ऐसा भैया ॥
दीनदयालु जो दया करैं तो पार लगे मेरी नैया ॥
चले जो आंधी भवसागरमें तब उसमें वोह उठे तरंग ॥
लोक कुटुंबके सब रोवें और कोई न देवे उसका संग ॥
काल बली जब आकर घेरै कोई न जीते उससे जंग ॥
जो कोई हरिका भजन करै तो मौतभी उससे हो जाय दंग ॥

सब कोई हैं अपने स्वारथी क्या बाबा और क्या मैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करें तो पार लगे मेरी नैया ॥ २ ॥
भयके इसमें भंवर पडे और चिंताकी चादर न्यारी ॥
काम क्रोध और लोभ मोहके मगर मच्छ करके ख्वारी ॥
सातों समुद्र जरासे हैं औ भवसागर सबसे भारी ॥
उससे पार वोही उतरे जो नाम जपे गिरिवरधारी ॥
अंतकालमें पापी रोवे करें आह दैया दैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करें तो पार लगे मेरी नैया ॥ ३ ॥
सौ होवे तो हजार मांगे हजार हो तो हुंडे लाख ॥
लाख होयँ तो करोड चाहे कहें बडे कछु उसमें साख ॥
दया धर्म नहिं हिरदेमें तो अंतमें जलके होजाय राख ॥
बनारसी कहे खुन्नीलाल तू नाम सुधारस मनमें चाख ॥
राम नामका सुमिरण कर मन मुखसे कहु तू कान्हैया ॥
दीनदयालु जो कृपा करें तो पार लगे मेरी नैया ॥ ४ ॥

शरीरका भेद—बहर लंगडी।

आज तलक नहिं कहा किसीने और न कोई कह सकेगा अब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
अगर तुम्हें मालूम होय तो कहो मायने इसके सब ॥
आईनेमें शकल नजर नहिं आये इसका कौन सबब ॥
और बात मैं कहूं आपसे इसके तईं सुनना साहब ॥
उलटा दरिया चले कहां पर इसका ज्वाब दीजियेगा कब ॥
अचरज ये मैं रोज देखता हूं इन आंखोंसे बेढब ॥
आसन हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
ऐसी बात बतलाये ओही जिसको देखलाई देहैरब ॥
अव्वल माया मायामें जोरू जोरूमें माकी छब ॥

आगे इसके एक बात है येही मुझे है बडा अजब ॥
आजुरदा ओ कभी न होवे जिसके ऊपर पडे गजब ॥
इमानसे देखा मैंने तो मुझे नजर आया जब तब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
नीचेको ऊंचा समझे औ जीसे इल्मका होवे कसब ॥
आदम होके याद न भूले आपको पहिचाने तब ॥
आपेको जो पहचाने ओ आपी आप है अब और जब ॥
अल्ला अकबर आदम ईसम मशरिक मगरिब अरब खरब ॥
अंदर दिलके देख अरे नादान तुझे गरहो कुछ ढब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥
अगर्चे जो तुम सुनो तो मैं सच कहताहूं उसका करतब ॥
आदि कुँवारी बनीरहै और कुल जहानसे करे कसब ॥
आनके अपने खसमको मारा बनी सोहागिन लाल ओ लब ॥
उसे नहीं कोइ कहे रांड सुन बनारसी ओ बडी चरब ॥
इसके मायने वोही बताये जो कोइ प्रभुका करे अदब ॥
आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्या मतलब ॥

होली निर्गुण–बहर छोटी ।

होलीमें इज्जत रहे तो खेलो होली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ पांचों भूतोंको मारके तू पिचकारी ॥ रंग हरीके रंगमें इन्हें तो हो हुसियारी ॥ सरबोर उसीमें करदे काया सारी ॥ हरवक्त नाच और गाव तू गुण गिरिधारी ॥ तू ज्ञान गुलालसे भरले अपनी झोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ तुम काम क्रोध कुमकुमेको अपने मारो ॥ वोः लडो लडाई कालसेभी नहिं हारो ॥ दो प्रेमकि गाली प्रभुको उसे पुकारो ॥ औ कबीरके संग आत्मज्ञान विचारो ॥ जो ज्ञानी हो तो पहिचानो ये खोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय

ठठोली ॥ तुम ज्ञान अग्निमें लोभ औ मोह जलाओ ॥ लौ उस मालिकसे अपनी आप लगाओ ॥ तुम तत्त्व ताल दे मृदंग बीन बजाओ ॥ अनहद बाजेको सुनो तो उसको पाओ ॥ मत कीचडमें तुम गिरो जो आवे डोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥ जल गइ हुलका प्रह्लादको आंच न आई ॥ ऐसी होली खेलो तो होय बडाई ॥ कहे देवीसिंह तुम सुनो हमारे भाई ॥ है बनारसीकी सब अद्भुत कविताई ॥ सुन मिनोचेहरकी बात रँगीला भोली ॥ ओ होली मत खेलो जो होय ठठोली ॥

लावनी वाल्मीकजीकी-बहर जीकी।

चाहे जपो तुम मरा मरा चाहे तुम भजलो राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥ त्रेतायुगमें एक पुरुष करता था बटमारी ॥ कितनेहूंको मारा उसने पाप किये भारीजी ॥ हत्या करके उसकी सूरत होगई हत्यारी ॥ बहुत किये अपराध बोझसे पृथ्वीतक हारी ॥

तोडा-धर्मरायभी जीमें डरे यह पातक कोई कहां धरे ॥
अब यह पापी कैसे तरे ॥

दोहा-कभी न सुमिरा रामको ना दया करी नाहिं दान ॥ कितनोंहीका धन हरा मारी कितनोंकी जान ॥ कौन पुण्यसे होगा इसका वाल्मीकिसा नाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ १ ॥ एक समय नारदमुनिजीने किया उधर फेरा ॥ वाल्मीकिने आकर नारदमुनिकोभी घेराजी ॥ नारदमुनिने कहा वचन सुनले तू यह मेरा ॥ क्यों मुझको मारे है मैंने किया है क्या तेराजी ॥

तोडा-जब पापी बोला ललकार मेरा तो है एहीकार ॥
कितनोंहीको डाला मार ॥

दोहा-नहीं कोई मेरी वृत्त है करता मैं खेती ॥ कुटुंब अपना पाल

ताहूं लूठ मारसेती ॥ क्या जाने कितनोंसे मैंने किया यहां संग्राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥ २ ॥ वाल्मीकिको फिर नारदमुनिने यह समझाया ॥ तैंने धन लूटा सो तेरे कुटुंबने खायाजी ॥ दौलतका हिस्सा तेरे सब घर भरने पाया ॥ पाप जो तैंने किया उसे नहीं किसीने बटवायाजी ॥ दारा सुत भगिनी भाई सबसे तू यह जाई ॥ पाप यह मेरा लो बटवाई ॥

दोहा—जो वो तेरे पापको लेवें सब बटवाई ॥ तो तू मुझको मारियो अपने गृहसे आई ॥ इतना सुनके वाल्मीकि उठधाया अपने धाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ३ ॥ चलते चलते वाल्मीकि पहुँचा अपने डेरों ॥ भाई बंधु अरु लोग वहांके सब उसने टेरेजो ॥ सुनसुनके सब उठ ठाढे भये आ बैठे चौफेरे ॥ वाल्मीकिने कहा वचन यह सुन लो सब मेराजी ॥ जो जो धन मैं हर लाया सो सो सब तुमने खाया ॥ पाप मेरा नाहिं बटवाया ॥

दोहा—अब तुम मेरे पापको सब कोई बटवावो ॥ मैं लाऊं धन लूटके तुम घर बैठे खावो ॥ जितनी दौलत हरूंगा मैं सब तुम्हींको दूंगा दाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ४ ॥ वाल्मीकिका सुना वचन सब बोले नर नारी ॥ क्या जाने हम तैंने है कितनोंकी जान मारीजी ॥ हमें पापसे काम नहीं है तुही पापधारी ॥ पाप कियेसे अंतसमयमें होती है ख्वारीजी ॥ वाल्मीकि होके लाचार ॥ छोड दिया अपना घरबार ॥ मनमें करता शोच विचार ॥

दोहा—भाई बिरादर त्यागके अब चलूं गुरूके पास ॥ वो चाहे तो पापका एक पलमें करदे नाश ॥ अब घरसे कुछ काम नहीं बसूंगा मैं इस ग्राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ५ ॥ नारायणने करी कृपा जब हुआ उसे वैराग ॥ जितने खोटे कर्म थे उनको छिनमें दीना त्यागजी ॥ नारदमुनिके पास आया और जागे उसके

भाग दिया शीश उनके चरणों किया बहुत अनुरागजी ॥ कहा गुरूजी सुनो वचन ॥

दोहा–भाई बिरादर कुटुंबके कोई नहीं बाटे पाप ॥ तुम आपनी कृपा करो काटो मेरे संताप ॥ तुम हो गुरु मैं हूं चेला शिर झुकाकिया परनाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥ ६ ॥ फिर नारदमुनिने देखा अब हुआ इसे कुछ ज्ञान ॥ रामनाम रटनेसे होवेगा इसका कल्याणजी ॥ वोही मंत्र उपदेश दिया और बताय उसको ध्यान ॥ इसी नामसे पाप तेरे होवेंगे पुण्यसमानजी ॥ अब तेरा होगया भला किसीका मत काटियो गला ॥ पाप तेरे सब दिये जला ॥

दोहा–वाल्मीकिने रामनामका मनमें जाप करा ॥ रामरामके नाममें निकले मरामरा ॥ बडे शोचमें वह आया पग लिये गुरूके धाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥ ७ ॥ वाल्मीकिने कहा गुरूजी रामनाम गया खोय मैं कहताहूं रामराम जी तो मरामरा मुख होयजी ॥ नारदमुनिने कहा जपे हैं यही नाम सब कोय ॥ मरा मरा कहनेसे रामजी सब दुख डालै धोयजी ॥ वाल्मीकि निश्चयकरके बैठ गया आसन भरके ॥ उलटा नाम हिरदे धरके ॥

दोहा–नारदमुनि तौ चलदिये वो बैठा ध्यान लगाय ॥ मरा मरा रटने लगा गई भूख प्यास बिसराय ॥ वर्षाऋतु जाडा झेला गरमीमें सह अतिघाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ॥ ८ ॥ शरीरकी सुधि नहीं रही और तनपै जमगइ घास ॥ और आश सब छोड लगाई मरामराकी आसजी ॥ जब तौ रामने करी कृपा आपहुँचो उसके पास ॥ वाल्मीकिके घटमें अपना किया रामने वासजी ॥ ब्रह्मज्ञान देदिया उसे अपनी आत्मा किया उसे ॥ लगा कंठसे लिया उसे ॥

दोहा–जब तो ताडी खुलगई भये वाल्मीकि चैतन ॥ कंचनसा तन

बनगया पायो निर्गुणदरशन ॥ वाल्मीकिके घटमें रामने किया आप विश्राम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ९ ॥ मरामरा कहनेसे होगये वाल्मीकि ज्ञानी ॥ रामनाम रामायणकी कथा कही ह्वैगई सिद्धवानी ॥ दसहजार वर्षोंकी बात आगे सब पहचानी ॥ भूत भविष्यत वर्त्तमान ये तीनों राह जानी ॥ उलटा नाम जपा भाई ॥ तिसपर यह पदवी पाई ॥ वाल्मीकिकी कविताई ॥

दोहा–विष्णुसहस्रनाममें श्रीरामनाम है सार ॥ जो कोइ सुमिरै रामको उनका होता उद्धार ॥ सकल कामना मिले उसे जो जपै नाम निष्काम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता काम जी ॥ १० ॥ मरा मरा कहनेसे हैं ऐसे पापी तरते ॥ रामनाम जो रटैंहै वो क्या जाने क्या करतेजी ॥ रामनामते समुद्रमें अबतक पहाड तरते ॥ वो-भी होजाय रामनामको जो हिरदे धरतेजी ॥ रामनामकी सब माया ॥ पार किसीने नहीं पाया ॥ यही नाम चहुँ दिशि छाया ॥

दोहा–जो कोई ऐसे छंदको गावे सुनै दे कान ॥ मुक्ति मुक्ति पावे वही और हो उसका कल्यान ॥ कहै देवीसिंह बनारसी है रामनाम सरनाम ॥ उलटा सीधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी ॥ ११ ॥

लावनी अहंकारनाशनी।

जो कहता हम करते वो दुख भरता है ॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ जो कहता हमने वेद पढे हैं चारी ॥ उसको कहते हरि इसकी मति है मारी ॥ कोइ कहता हम क्षत्री हैं हम ब्रह्मचारी ॥ सब अहंकारमें फँसेहुये नर नारी ॥ जहां बुद्धीको तजे करैं ना चारी ॥ उसको मिलते यक पलभरमें गिरिधारी ॥ जो निष्फल पूजा करै वही तरताहै ॥ जो करता जगके कार वही करताहै ॥ १ ॥ जो कहता हम तो नित्य दान करतेहैं ॥ उसका परमेश्वर नहीं मान करते हैं ॥ जो देते वस्तु मनमें गुमान करतेहैं ॥ वो स्वर्ग छोड फिर नरक पान करतेहैं ॥

जो अहंकार तजि हरिका ध्यान करतेहैं ॥ उसका स्वामी आदर अरु मान करतेहैं ॥ जो करताहै सो वोही वोही धरताहै ॥ जो करता जगके कार वोही करताहै ॥ २ ॥ जो कहता हम हैं बडे कवीश्वर ज्ञानी ॥ उसको हरि कहते इसकी मिथ्या वानी ॥ कोइ कहता हम हैं बडे वीर बलवानी ॥ उसको हम कहते यह तो है दहकानी ॥ कोइ बनके बैठे राजा और कोइ रानी ॥ इस पृथ्वीपर हैं बडे बडे अभिमानी ॥ इस अहंकारसे अपना दिल डरताहै ॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ ३ ॥ जो कहता मैंने बडा जंग जीताहै ॥ वह मरताहै फिर कभी नहीं जीता है ॥ जिस जिसने मनमें अहंकार जीताहै ॥ वह दो दिनमें दुनियासे हो बीताहै ॥ अब देवीसिंह दिल फटाहुआ सीता है ॥ जो कर्म किया प्रभुके अर्पन दीताहै ॥ कहे बनारसी हरिभक्त नहीं मरताहै ॥ जो करता जगके कार वही करताहै ॥

वचन पलटनेवालेका जो हाल होताहै वह सही लिखा बहर छोटी ।

जो जबांसे कहिके सखुन पलट जातेहैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कट जातेहैं ॥ जो कहतेहैं वो करते हैं पूरे नर ॥ चाहें इसमें होजाय कलम धडसे सर ॥ मैं कहूं तू झूंठा कौल किसीसे मत कर ॥ जो कहिके सखुनको नहीं करै वो हैं खर ॥ जो झूंठ बोलते हैं फिरते दरदर ॥ कहैं सत्य वचन बलि विक्रम राजा गये तर ॥ जो कायर हैं वीरनते हट जाते हैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कट जातेहैं ॥ १ ॥ जो कलामपै अपने रहतेहैं साकर ॥ तो लाकलाम वोह खालक मिलता आकर ॥ मत झूंठ किसीसे बोल यह नरतन पाकर ॥ सब बुरा कहैं कहूं तुझे समुझाकर ॥ जो करे दगा अपने घरमें बुलवाकर ॥ ले उसका बदला सांई उससे आकर ॥ नाहिं मिलै हशरतकजब दिल फट जातेहैं ॥ शिर दगाबाजके

अकसर कटजातेहैं ॥२॥ पूरोंका सखुन नहिं लाखोंमें टलताहैं ॥ सर सखुनके आगे शूरोंको चलता है॥ जो सच्चा है वह कुटुंबसे फलताहै॥ उसका चिराग उसके आगे बलता है ॥ जो करके दगा यारोंके तईं छलताहै ॥ वो नरककुंडली आतशमें जलताहै ॥ सच्चोंके आगे झूंठे घटजातेहैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कटजातेहैं ॥ ३ ॥ जो कलामको झूंठा मुखसे फरमाते ॥ वो अंतसमय दोजखमें डालेजाते ॥ कहे देवी सिंह जे साईंसे लौलाते॥ वह भवसागर यक लहजामें तर जाते॥ छंद बनायके तो सच्चा मिसरा गाते॥ हरनाम सुमिरके सभामें चंग बजाते॥ कहै बनारसी हम सखुनमें डटजाते हैं ॥ शिर दगाबाजके अकसर कट जाते हैं ॥ ४ ॥

भगवान्से विनय-बहर छोटी।

कर दया दासके कष्ट हरो गिरिधारी॥ करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तिहारी ॥ सब संकट मेरे दूर करो अब स्वामी ॥ ऋधिसिधिसे मुझे भरपूर करो अब स्वामी॥ अपने अब मुझे हुजूर करो तुम स्वामी॥ चरणोंकी मुझे तुम धूर करो अब स्वामी ॥ यह काम तो मेरा जरूर करो अब स्वामी ॥ भक्तोंमें मुझे मशहूर करो अब स्वामी॥ हो निर्भय पूरणब्रह्म आप अवतारी ॥ करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ १ ॥ सब संतोंको आपी तुमने तारा है ॥ ग्रहसे यह गजको तुम्हींने उबारा है ॥ प्रहलादकि खातिर नरसिंह तनु धारा है ॥ नखसे नाभीको चीर असुर मारा है ॥ मुझको तो नाम श्रीनारायण प्यारा है ॥ प्रभु तेरे बिन अब कोई न हमारा है॥ क्यों मेरे वास्ते करी देर बनवारी॥ करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी॥२॥ पांचों पंडाका संग कियाहै तुमने ॥ ब्रजमें सखियनसे रंग कियाहै तुमने ॥ कालीको नाथके तंग कियाहै तुमने ॥ कंसासे जाय फिर जंग कियाहै तुमने॥ हरएक राक्षसको तंग कियाहै तुमने ॥ सब असुरोंका चौरंग कियाहै तुमने ॥ अब

मेरे पांच भूतोंको मार मुरारी ॥ करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥३॥ सब कुसूर मेरा माफ आप अब कीजे ॥ शिर चरणोंमें अपने मेरा धरलीजे ॥ यह उम्र सदा दिन रात हर घडी छीजे ॥ कर मेहर प्रभू कछु भक्ति आपनी दीजे ॥ एक अरजी मेरी गरीबकी सुनलीजे ॥ दिल भक्तिमें तुमरी सदा हमारा भीजे ॥ हरि हरलो तनकी पीर हुवा दुख भारी ॥ करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ ४ ॥ तुम जो चाहो सो करो आप यदुराई ॥ राईसे गिरि करदेते गिरिसे राई ॥ है सत्य सत्य सांची तेरी प्रभुताई ॥ तरगये वोही जिसने तुमसे लौलाई ॥ कहे देवीसिंह जिन तुम्हारी महिमा गाई ॥ वह भवसागरके पार उतर गया भाई ॥ कहे बनारसी यह राखो लाज हमारी ॥ करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ ५ ॥

ख्याल निर्गुण चौकड-बहर शिकस्ता।

बहुत दिनोंपर बिछीहै चौसर सम्हलके खेलो ये चाल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ मैं हूं जुवारी सुघड खिलाडी हमेशह जीतूं कभी न हारूं ॥ सदा पडै पो दुई दूर हो चौरासी यों घर घरकी नरद मारूं ॥ पडे अगरचे जो तीन काने तो अपने दिलमें मैं यह विचारूं ॥ ये तीन गुण हैं सभीके तनमें इनसे चलके अलग सिधारूं ॥ हैं चार काणें वो चौथा पद है मिला अब हमको मलाल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ १ ॥ है इसमें पंजडी सो पांच तत्त्व मैं इनसे गोटी चलावचाके ॥ और फेकूं छकडी ले आऊं सत्ता सतको सद्गुरुके पास जाके ॥ है दांव अट्ठा सो आठ सिद्धी नव ऋद्धी मैं रक्खूं मनाके ॥ पडें अगर छः चहार दश तो दशों द्वार देखूं दिल लगाके ॥ न रंग अपना मरे किसीसे मैं अब समझताहूं काल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटें छक्के

नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ २ ॥ आये हमारे वो दश पौ ग्यारा सो ग्यारहो रुद्र हैं वदनमें ॥ और बारह राशें सो दोनों बारह समझ शोच तू कुछ तू अपने तनमें ॥ बडे हैं इनमें वो दोनों तेरा मैं तेरा तेरा कहूहूं मनमें ॥ तू चौधरी है जहांका मालिक नजर पडे चौदहों भुवनमें ॥ करूं भजन मैं ये पंद्रहों दिन माया मोहका वो जाल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ ३ ॥ है आतमा सोलहों कलायें सो पांसे में सोलहों बनाये ॥ वो आये सत्रह ये सतरहा अब हरी हरीके गुण गाये ॥ पढे अठारह पुराण हमने और अर्थ उसके ये दिलमें पाये ॥ उठे रंग बदरंगभी उठगये वो सारी मायाको जीत लाये ॥ बनारसीका सदा बनारस बना हुआहै बवाल क्या है ॥ जो फेकूं पांसे तो छूटें छक्के नलोदमनकी मजाल क्या है ॥ ४ ॥

ख्याल जीकी लयका।

नहीं मेरे ये शरीर हैं नहीं है मुझको दुख द्वन्द ॥ मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ नहीं लाभ नहीं मोह नहीं बुद्धि नहीं अहंकार ॥ नहीं आचार औ नहीं विचारजी ॥ नहीं रात नहीं दिन नहीं तिथि घडी लग्न नहीं वार ॥ नहीं है अपना पारावार जी ॥ नहीं उजड नहीं जंगल बस्ती नहीं कुटुंब घरवार ॥ नहीं दारा सुत नहीं परिवारजी ॥

दोहा—नहीं शीश नहिं मुख नहीं जिह्वा नहिं वाणी नहिं हाथ ॥ नहीं उद्र नहीं लिंग चरण नहिं नहीं वर्ण नहिं जात ॥ नहीं वेद नहीं शास्त्र नहीं श्लोक नहीं पदछंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानंदजी ॥ १ ॥ नहीं काम नहीं क्रोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान ॥ नहीं कोई मंत्र तंत्र नहीं ध्यानजी ॥ नहीं नेम नहिं संयम पूजा नाहिं तीरथ स्नान ॥ नाहिं व्रत होम यज्ञ नहीं दानजी ॥ नहीं योग नाहिं भोग नहीं संयोग मान अपमान ॥ नहीं वनवासी नहीं स्थानजी ॥

दोहा—नहिं सीधा नाहिं गोल नहिं दुबला औ नहिं मोटा ॥

नहीं टेढा नाहिं वेडा बहुत नाहिं बडा नहीं छोटा ॥ नहीं तुर्श नहीं लौन अलौना नाहिं कडुवा नहीं कंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ २ ॥ नहीं सुखी नहीं दुखी नहीं धनवान नहीं कंगाल ॥ नहीं मंत्री और नहीं भूपालजी ॥ नहीं सिंधु नहीं नदी नहीं है कूप बावडी ताल ॥ नहीं है आकाश नहीं पातालजी ॥ नहीं श्वेत नाहिं पीत नहीं है कपोत नीला लाल ॥ नहीं है वृक्ष फूल फल डालजी ॥

दोहा–नाहिं हीरा नाहिं मोती मानिक नहीं रत्नकी खान ॥ नहीं खड्ग नाहिं चक्र नहीं त्रिशूल धनुष नहीं बान ॥ नहीं जाग्रत नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहीं बंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ ३ ॥ नहीं त्रिदंडी नहीं वनखंडी नहीं ब्रह्मचारी ॥ नहीं मुंडित न जटाधारीजी ॥ नहीं अग्नि नाहिं पवन न पानी नाहिं मीठा खारी ॥ पशु नाहिं पुरुष नहीं नारीजी ॥ नहीं शैव नहीं शाक्त नहीं वैष्णव नहीं आचारी ॥ नहीं हलका और नहीं भारीजी ॥

दोहा–नहीं मीमांसक नहीं जैनी नहीं उदासीन मतवाद नहीं ॥ देव गंधर्व यक्ष नाहिं नाहिं विघ्न विखाद ॥ नाहिं बिजली नाहिं घन नाहिं तारे नाहिं सूरज नहीं चंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानंदजी ॥ ४ ॥ नहीं शिष्य नाहिं गुरू न माता पिता नहीं भ्राता ॥ नाहिं रिस्ता और नाहिं नाताजी ॥ नाहिं बैठा नाहिं खडा नहीं आता है नहीं जाता ॥ नाहिं भूखा है नहीं खाताजी ॥ नहीं लेय नाहिं धरे नहीं देता नाहिं दिलवाता ॥ सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥

दोहा–नहीं कर्मकी रेख लेख नाहिं नहीं पढाजाता ॥ नहीं मौन हो रहे नहीं बोले नाहिं बुलवाता ॥ नाहिं पक्षी नाहिं फंद कहे नाहिं जाल नाहिं फरफंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ॥ ५ ॥ नाहिं हिन्दू नाहिं मुसलमान याहूदी नहीं फिरंग ॥ नहीं कोई रूप नहीं कोई रंग

जी ॥ नहीं बीन बांसुरी नहीं करताल ताल मृदंग ॥ नाहिं जलतरंग नहीं उपंगजी ॥ नहीं कलँगी नाहिं तुरी नहीं अनघँडडुडी नाहिं चंग ॥ नहीं कोई संग है नहीं असंगजी ॥

दोहा—आपी आपमें आप है रहा आपमें व्याप ॥ नहीं स्वर्ग नहिं नरक है नहीं पुण्य नहिं पाप ॥ बनारसी कहे रूप हमारा अखंड परमानंद ॥ मेरा है रूप सच्चिदानंदजी ॥ ६ ॥

मथनी श्रीकृष्णके खेलकी—बहर छोटी।

यह नंदलाल यशुदाका दुलारो कनियां ॥ लेगया सखी री मेरी दधिकी मथनियां ॥ सुन सखी एक दिन कान्ह मेरे घर आया ॥ दधिगारस दी ढरकाय औ माखन खाया ॥ दधिकी माथनिया हाथमें लेकर धाया ॥ मैं देखा चोरी करत पकड बिठलाया ॥ उन फाडो मेरो चीर मैं तोरी तनियां ॥ ले गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ वोः कुस्तंकुस्ता मुस्ती करने लागा ॥ मथनीभी ले गया हाथ छुडाकर भागा ॥ उतनेमें होगया भोर ससुर घर जागा ॥ पतिने मुझको अकलंक लगाकर त्यागा ॥ डर सास ननदका हमसे लडे जेठनियां ॥ लैगयो सखी री मेरी दधिकी मथनियां ॥ सुन सखी श्यामसे मथनी क्योंकर पाऊं ॥ मोहिं मांगत आवे लाज बहुत सकुचाऊं ॥ है नया नेह समीते सन्मुख जाऊं ॥ दूरीसे नटवर वेष देख ललचाऊं ॥ मुख धर बांसुरी बजावे तान रसभिनियां ॥ ले गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ वोह सुंदर सांवरा मेरी नजर जब आवे ॥ पलकोंसे मारे सैन नैन मटकावे ॥ बंशीमें मोहनी डाल मुझे बिलमावे ॥ एक नजर दिखाकर तन मन हर ले जावे ॥ है ब्रजमें प्रगटो बडो वो छैल चिकनियां ॥ ले गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ माथेपर चंदन मोर मुकुट शिर साजे ॥ कानोंमें कुंडल कर मुरली विराजे ॥ एक पडी वो नाक बुलाक अधिक छबि छाजे ॥ सांवरी सुरतपर

पीत पितांबर राजे ॥ कटि किंकिणी बाजे पग म्याने पैजनियां ॥ ले गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥ भोला मुख भोली बतियां लगती प्यारी ॥ मन चाहे चितसे प्रेम राह रस न्यारी ॥ ग्वालनकी लगनसे मगन हुये गिरिधारी ॥ कहे देवीसिंह मैं कृष्ण तेरी बलिहारी ॥ दिन रात तुम्हारा ध्यान धरें ये दुनियां ॥ लेगयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियां ॥

ख्याल तवहीर—बहर तवीर।

मैं देखूं हूं सबके है सर पर वही पर अपना तो रखता वो सरही नहीं ॥ ये सितम है कि उसके हैं चश्म कहांपर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ है दैरो हरममें वो जलवे कुनापर अपना तो रखता वो घरही नहीं ॥ वोः मकीं है अजबके मकांहीं नहीं वो मक्का है अजीबके दरही नहीं ॥ है उसका वह मसकन पाक जहां वहां वहमो गुमाका गुजरही नहीं ॥ न तो दिन है वहां न तो शब है वहां वहां देखो तो शम्सोकमर ही नहीं ॥ है नूरका उसके जहूर खिला पर है वो कहां ये खबरही नहीं ॥ ये सितम है के उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ वो जलवा है उसका तमाम जगह कोइ और तो जलवागरही नहीं ॥ कहीं मिस्ले नूर अयां है वोही कहीं मफी है मुजहर ही नहीं ॥ ये जमीनो फलकका है उसके सिवा कोई मालक जेरोजवरही नहीं ॥ सरदार है कुल आलमका वोही कोई उसपे तो है अपसरही नहीं ॥ जो चाहे सो करता है आप वही कुछ उसको किसीका खतरही नहीं ॥ ये सितम है के उसके हैं चश्म कहां पर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥ वोः अजीब है नखले मुरादे चमन कहीं हस्तीमें ऐसा सजरही नहीं ॥ तरोताज निहाल लतीफ है वोः कोई उससे तो है बेतरही नहीं ॥ कहीं नखलमें शाख हैं बर्ग नहीं कहीं गुलमें तो लगता समरही नहीं ॥ उसे जाके चमनमें जो घुडे अगर तो ओ पाये नसीमो सहर ही नहीं ॥

वोह सजर है बहार जिसे है सिदा कभी बादे खिजांसे नजरही नहीं ॥
ये सितम है के उसके हैं चश्म कहांपर ऐसी किसीकी नजर ही नहीं ॥
जिसे इश्क खदान जहांमें हुआ कोई उससे तो है बरही नहीं ॥
बादिलही हुये कुछ अकलो कहे मगर येभी नहीं तो वशरही नहीं ॥
कहे काशीगिर लापरवा है वोह कुछ ख्वाहिशे सीमोजरही नहीं ॥ वो
रुतवा है उसका के शाहाकाभी कुछ आगे तो उसके बकरही नहीं ॥
जो फकीरोंके फैजे सखुनमें है वोह जबांमें किसीके असर ही नहीं ॥
ये सितम है के उसके हैं चश्म कहांपर ऐसी किसीकी नजरही नहीं ॥

ख्याल तौहीद बंदा खुदाय-बहर नबीर।

जिसे जिस्मका अपने गुरूर न हो उसे मौतका खौफो खतरही नहीं ॥ न तो ख्वाहिश उसको बहिस्तकी है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥ वो मकाँ है मेरा तनहाई में जहाँ शम्शो कमरका गुजरही॥ नहीं नतो आबो हवा न तो आतिश वाँ कोई मेरे सिवा तो वशर ही नहीं ॥ जिसके परदा दुईका वो दूर हुआ तो फिर उसमें खुदामें कसरही नहीं ॥ जहाँ देखे वहाँपे है नूरे खुदा कोई और तो आता नजर ही नहीं ॥ कोई लाख तरेसे जो मारे उसे पर उसका तो कटता वो शरही नहीं ॥ न तो ख्वाहिश उसको बहिस्तकी है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥ १ ॥ जिसकी एक निगह है तमाम जगह उसके आगे तो जेरो जबर ही नहीं ॥ जिसके अक्ल फैहममें है दखल बडा उसके आगे तो इल्मो हुनरही नहीं ॥ जिसके कबजेमें गंज है बदतका कोई उस्सा तो दौलतवर ही नहीं ॥ जो कुछ आया वो उसने लुटाही दिया कुछ पासमें रखता वो जरही नहीं ॥ हर हालमें जो के खुशी है वशर ऐसा होता किसीका गुजर ही नहीं ॥ नतो ख्वाहिश उस्को बहिस्तकी है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥ २ ॥ उसके जर्रेसे नूर हजार बने उसके आगे तो शम्शोकमरही नहीं ॥ जिसने देखा उसे वह उसीमें मिला

कोई और तो उसका है घर ही नहीं ॥ मैंने दोनों जहांमें जो देखा तो क्या कोई और तो मेरा जिगरही नहीं ॥ सिवा उसके न कोई रफीक मेरा मुझे और किसीका फिकर ही नहीं ॥ जो है बन्दा उसीका न गन्दा हुआ कोई गैरका उसपै असरही नहीं ॥ नतो ख्वाहिश उसको बहिस्तकी है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥३॥ मुझे ख्याल उसीका है आठों पहर मैंने याद किसीकी तो करही नहीं ॥ जबसे देखा उसे तो मैं भूला सभी पर भूला मैं उसका तो दरही नहीं ॥ वो दिलहीमें मुझको दिखाई दिया कहीं करना पडा कुछ सफर ही नहीं ॥ दरिया है ये देवीसिंहका सखुन कहीं ऐसी तो लहरो बहरही नहीं ॥ है नाम वो तेरा काशीगिर कोई और तो ऐसा नसर ही नहीं ॥ न तो ख्वाहिश उसको बहिस्तकी है कुछ दोजखकाभी तो डरही नहीं ॥ ४ ॥

फकीरके चार हुरूफ यही दुरुस्त हैं चहारदर्वेश गलत–बहर खडी।

फेसे फख्र और काफसे कुदरत रेसे रहम और येसे याद ॥
चार हर्फ हैं फकीरीके जो पढे तो हो दिल शाद ॥
फकीर होना बहुत कठिन है जिसमें फख्रकी हो नहीं बू ॥
और कुदरत भी नहो तो ऐसी फकीरी पर है थू ॥
रहम न हो दिलमें तो दुनिया छोड न होना फकीर तू ॥
यादे इलाही जो कोई करे तू उसके कदमको छू ॥
शेर–यह चारों बात हों जिसमें वह फकीरीको करे ॥
नहीं तो क्यों जटा बढाके बोझ सिरपे धरे ॥
इस्से बेहतर है कि दुनियामें तू रह और कुछ दे ॥
मैं यह करताहूं फकीरी तो है परे से परे ॥
ऐसी फकीरी मत करना जो चारों बात होवें बरबाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरीके जो पढे हो तो दिल शाद ॥ १ ॥

फख्र वह कुदरत रहम और यादे इलाहीभी हैं बहुत कठन ॥
वह फकीर है के जिसकी आठ पहर उससे है लगन ॥
फिर उसको क्या ख्वाहिश है दुनियाकी और क्या करना धन ॥
फकत गुजारा यहां करना है इसीमें रहे मगन ॥
शैर—आगया माल तो दममें लुटा दिया उसने ॥
किसीको देदिया कोईसे लेलिया उसने ॥
न तो लेनेकी खुशी कुछभी न गम देनेका ॥
काम नेकीका जो कुछ बन पडा किया उसने ॥
इसके मायने वह समझे जिस्के दिलमें पूरा एतक्राद ॥
चार हर्फ हैं फकीरीके जो पढे तो हो दिलशाद ॥ २ ॥
और काम सब सहल है पर मुशकिल है फकीरीका करना ॥
वह फकीर है के जो कोई जीते जी समझे मरना ॥
जीते जी जो मरे तो उसको मौतसेभी नहीं हो डरना ॥
अगर मरे तो खुदामें मिले नहीं हो दुख भरना ॥
शैर—खौफ दोजखका न कुछ और न खुशी जिन्नतकी ॥
किया दोनोंको तर्क वसये उसकी मिन्नत की ॥
दीनो दुनियाको छोडकर मैं उसकी जात हुआ ॥
न तो हिन्दू ही रहा मैं न मैंने सुन्नत की ॥
चार हर्फ ये पढे और गुने तो वह कहलाये आजाद ॥
चार हर्फ हैं फकीरीके जो पढे तो हो दिलशाद ॥ ३ ॥
चार किताबें पढे तो क्या और सुने अगरचे चारों वेद ॥
पर नहिं उसको गुने तो कभी न हो पूरी उम्मेद ॥
और इल्म कितने सीखे इस दिलपर आपने उठाके खेद ॥
पर मुशकिल है जहांमें सुनो फकीरीका कुछ भेद ॥
शैर—मैंने देखा के फकीरोंके हैं मौताज सभी ॥

फकीरी मुझको मिले और न मिले राज कभी ॥
खुदाने अपनी जुबां फखसे मिलाई है ॥
हुक्ममें उसके है वो साज और सामाज सभी ॥
बनारसीभी फकीर है और देवीसिंह मेरे उस्ताद ॥
चार हर्फ हैं फकीरीके जो पढे तो हो दिलशाद ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद—बहर लंगडी।

खुदासे जो कोई मिला तो वह फिर खुदा हुआ नाहिं जुदा हुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हर गया दुवा ॥
यकताईके आलममें हर वक्त चूर रहता हूं मैं ॥
दुईवालोंसे तो लाखों कोस दूर रहता हूं मैं ॥
अन—अल—हक जो कहे तो उसके संग जरूर रहता हूं मैं ॥
पेशानीमें तो उसकी बनके नूर रहता हूं मैं ॥
शेर—अगर वह खाकमें लोटें तो गिल अक्सीर बनजाये ॥
करे मिसको तिला उस गिलकी वह तासीर बनजाये ॥
जबाँसे जिसको कुछ कहदें तो वह फिर पीर बनजाये ॥
खुदासे गर कहें तु बन तो वह तसवीर बनजाये ॥
कभी नहिं हारे दुनियामें उन्होंने वह जीता है जुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हरगया दुवा ॥ १ ॥
आबका कतरा मिले जो दरियामें तो वह दरिया बनजाये ॥
खुदासे जो कोई मिले तो बेशक वह मौला बनजाये ॥
नूरमें जिसका मिले नूर कुल जहांका वह जलवा बनजाये ॥
दुईको करदे दूर तो आलममें यकता बनजाये ॥
शेर—मिला चाहे तो उससे मिल तू अब अपनीही हस्तीमें ॥
हमेशां मस्त झूमा कर सदा रहो अपनी मस्तीमें ॥
कभी शहेरामें घूमा कर कभी जा बैठ बस्तीमें ॥

कभी रहो बुत परस्तीमें कभी रहो हक परस्तीमें ॥
जिसने समझा एक वह तो फिर मौतको जीता नहिं मुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हर गया दुवा ॥ २ ॥
हमदश अव्वल खानम वाहेद यकता उसमें दुई नहीं ॥
वारे मेरे दिलके इसमें दुई तो मुतलक हुई नहीं ॥
जो के जिनस मैंने पकडी वह चीज किसीकी हुई नहीं ॥
बात खुदासे तो मेरे सिवा किसीकी हुई नहीं ॥
शेर-कलामें मारफत मेरी जवांसे हरघडी निकले ॥
कि जैसे सिफ्त मौलाकी कुरआंसे हरघडी निकले ॥
गिरेवां फाडकर हम इस जहांसे हरघडी निकले ॥
बयां तोहीद तो मेरे बयांसे हरघडी निकले ॥
जिसने खेल खेला है खुदासे जुवा फिर उसने कहां छुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हर गया दुवा ॥ ३ ॥
नेक जो है वह एक समझते एक नामसे काम मुझे ॥
मुफ्त मिला वह खर्च नहीं करनी पडी छः दाम मुझे ॥
उस मालिकका नाम लियेसे मिला बहुत आराम मुझे ॥
अब तो यहीं लौ लगी रहती है आठों जाम मुझे ॥
शेर-दुईका उठगया परदा तो एकताई नजर आई ॥
न फिर बाबा नजर आया न वह माई नजर आई ॥
अगर रुसवा हुए हम तो न रुसवाई नजर आई ॥
जब अपने आपको देखा तो जेबाई नजर आई ॥
बनारसी नहिं थका अब उसके कांधेका उठगया जुवा ॥
नक्की उसको मिली और दुईका तो हरगया दुवा ॥ ४ ॥

लावनी तौहीद-बहर लंगडी।

पास न कौडी रही तो मैंने मुफ्त खुदाको मोल लिया ॥

ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥
पाया खजाना गैबका मैंने कभी नहीं घटनेका है ॥
चाहे जितना मैं बांटूं कभी नहीं बटनेका है ॥
खर्च न कौडी होय फकत यह जबांहीसे रटनेका है ॥
ऐसा सौदा तो कोई फकीरसे पटनेका है ॥
शैर—न रही पासमें मेरे जो एक लंगोटी ॥
मुडाया उसकोभी शिरपर मेरे जो थी चोटी ॥
किया सवाल तो सबकी सही खरी खोटी ॥
लगी जो भूख तो खाई वह मांगकर रोटी ॥
पियास लगी तो पानी भी जैसाही मिला वैसाही पिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ १ ॥
यह बाजार निरगुनका है मैं खरीदार मालिकका हूं ॥
मालिकभी हूं और मैं तावेदार मालिकका हूं ॥
वह मेरा है दोस्त और मैंभी तो यार मालिकका हूं ॥
जो चाहे सो करूं मैं मुखतियार मालिकका हूं ॥
शैर—यह हाटमें जो गया उसका वह हुआ सौदा ॥
न खर्च कुछभी पडा मुफ्तमें मिला सौदा ॥
हम हाथ उसके बिके जिसे यह किया सौदा ॥
न कोई देख सकेहै मेरा छुपा सौदा ॥
कभी नहीं घाटा होवेगा अब मेरा खुल गया हिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ २ ॥
रोजगार करना होवे तो ऐसा रोजगारी तू बन ॥
खर्च न जिसमें पडे तो ऐसा बेपारी तू बन ॥
लूट खजाना खुदाके घरका ऐसा वटमारी तू बन ॥
तूभी लुटादे जहांमें कुछ तो उपकारी तू बन ॥

शैर–यह हाथ जिसके लगा माल वह निहाल हुआ ॥
निहाल वहभी हुआ इसमें जो पामाल हुआ ॥
खुदाकी राहमें गरचे कोई कंगाल हुआ ॥
तो आखिरशको फिर वह पूरा कोटीवाल हुआ ॥
हिन्दू मुसलमांसे मैं कहता क्या सुन्नी या होवे शिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ ३ ॥
यह है रम्ज फकीरोंकी इस सौदेका कुछ मोल नहीं ॥
छपाले इसको हर एकके आगे यह तो खोल नहीं ॥
खामोशीका आलम है इस जापर निकले बोल नहीं ॥
कहे देवीसिंह अरे तू अमृतमें विष घोल नहीं ॥
शैर–बुरा न मान मेरी बात सुन भला होगा ॥
इसे खरीद करे वह जो दिल जला होगा ॥
यह राह सख्त है इसमें जो कोई चला होगा ॥
तो उसके पाको हरएक दूरने मला होगा ॥
बनारसीने सबको छोडालिया वासुदेव और राम सिया ॥
ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ॥ ४ ॥

पंथ प्रेमका–बहर लंगडी ।

दुनियामें लाखोंई पंथको हमने देखा भाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई बदनपर खाक मले और सेली कफनी डाले हैं ॥
कोई रंगावे वस्त्रको अपना भेप संभाले हैं ॥
कोई मौन होकर बैठे नहीं किसीसे बोले चाले हैं ॥
कोई फडाये कानको पियें वो मदके प्याले हैं ॥
कोईने लम्बा तिलक दिया और पहने तुलसीमाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥

कोई रात दिन खडे रहैं और कोई हाथ उठाये हैं ॥
किसीको देखा तो वह बैठे और ध्यान लगाये हैं ॥
किसीने अपने बदनको दागा तनुपर छापे खाये हैं ॥
किसीने अपने शीशपर लंबे बाल बढाये हैं ॥
किसीके तनुपर वस्त्र नहीं और कोई ओढे मृगछाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई सेवडा बना और कोई कहै कि हम तो दंडी हैं ॥
कोई तपस्या करें और कोइ बने वनखंडी हैं ॥
किसी के मठपर ध्वजा उडे और कहीं फरकती झंडी हैं ॥
बिना इश्कके हुवे जो फकीर वो पाखंडी हैं ॥
किसीने मसजिद बनवाई और कोईने रचा शिवाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥
कोई कहैं हम यती हैं और कोई बना जगत्में वैरागी ॥
बिना इश्कके किसीकी लौ नहिं सद्गुरुसे लागी ॥
बनारसीने इश्कमें अपनी जीते जी काया त्यागी ॥
दुई न मुतलक रही और दुबधाभी सुनके भागी ॥
रामकृष्णका सखुन यही समझो तुम सबपर वाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ आशकोंका पन्थ निराला है ॥

तथा—दुनियामें कहते हैं सबी आशिकका दरजा आला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥
आशक था मजनू पर वह लैलाका ताबेदार रहा ॥
गमें इश्कमें हमेशा लैलाके बीमार रहा ॥
गया तन बदन सूख पर अपने दिलसे ताकददार रहा ॥
दिलहीमें अपने वह करता लैलाका दीदार रहा ॥

शैर—जबांपर हर घडी उसके कलामें बिर्द लैला था ॥

कुर्रा था हाथमें तिसपरभी वह लैलापै शैदा था ॥
बताओ इश्क क्या है इसकी सूरत किसने देखी है ॥
बलाये नागहानी थीं हुआ जिस दिन यह पैदा था ॥
आशक भी है मस्त वही जो वहदतमें मतवाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥
तख्त सल्तनत तर्क किया वह आशके रांझा हीर हुआ ॥
खाक बदनपर मली और शाहसे बडा फकीर हुआ ॥
काली कामर ओढ चराई गाय नहीं दिलगीर हुआ ॥
हुकुम हीरका जो माना तो वोः औलियापीर हुआ ॥
शैर–पकडकर शेरको जंगलमें क्याही घातसे मारा ॥
वह ताकत हीरकी उसमें थी जिसको जातसे मारा ॥
सुनो दुनियामें माशूकोंका चरचा तुम जरा मुझसे ॥
जिसे मारा उसीको यक जरासी बातसे मारा ॥
वोः आशिक पक्का है जिसने अपनाही घर घाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥
शीरींके ऊपर आशक फरहाद एक मजदूर हुआ ॥
गजब इश्क है जिसे यह लगा वोः चकनाचूर हुआ ॥
शीरींके रुतबेसे कुछ फरहादकोभी मखदूर हुआ ॥
बाद मर्गके वोः दोनों मिले नाम मशहूर हुआ ॥
शैर–जिसे माशूक चाहे क्यों न उस आशककी इज्जत हो ॥
बनाये या बिगाडे यह तो सब अख्तियार है उसको ॥
कहां वह शाहजादी और कहां फरहादकी इज्जत ॥
बनाई बस वह शीरींने इसे आशक हो तो समझो ॥
आशकने सर दिया तो क्या माशूकने उसे सम्हाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥

हम जिसके आशिक हैं उसका हुकुम बजाया करते हैं ॥
जो जो कहे वो काम उसका करलाया करते हैं ॥
लाख तरहके सदमें अपने दिलपै उठाया करते हैं ॥
सितमगारका सितम नहीं जबांपर लाया करते हैं ॥
शैर-फलक पर वोह है और हम इस जहांके बीच रहते हैं ॥
वोः तो है लामकां हम हर मकांके बीच रहते हैं ॥
तबक चोंदाके ऊपरसे सदा आती है कानोंमें ॥
वहां उसकी जबां ह्यां हम कुरांके बीच रहते हैं ॥
देवीसिंह कहे बनारसीभी आशक भोलाभाला है ॥
पर जो देखा तो कुछ माशूकका रुतबा बाला है ॥

खुदाके नूरकी तारीफ सिरसे पैरतक।

कहरना जो अन्दाज गजब है अजब हुस्न दमके दम् दम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ गरचे हुस्न तेरेकी सिफत कोई लाख तरहसे करे रकम् ॥ क्या ताकत है जो उसके हाथमें ठहरे लोहे कलम् ॥ जाये ताज्जुब है जलवा तेरा जलवे गर बना सनम् ॥ तेरे नूरसे हुआ कोहतूरमें वह मूसा बेदम् ॥ हाथ मला यक मलें हूर हैरत खा खाके छुये कदम् ॥ जिनो बसर सब तेरी ताबेदारी करते हरदम् ॥ सरतापा तस्वीर खिची कुदरतकी तेरी विना कलम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ १ ॥ सर तेरा है हर सरका सरदार तू है शाहे आलम् ॥ उसके ऊपर ताज कलगी औ छत्र झलके झम् झम् ॥ जुल्फ मुशल शिलमे वह पचे हैं और तेरे हर बालमें खम् ॥ गोया नागिनी माहपर आई चाटनेको शबनम् ॥ या मैं जुल्फको अब कहूं या लाम अलिफ या नसर नजम् ॥ या मैं उनको कहूं जुलमात याके जा दुये सितम् ॥ आगे लाखो तिलिस्म हैं जुल्फोंमें तेरे तेरी कसम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ २ ॥ देख

तेरे माथेको फलकपर आफताब खाता है शरम् ॥ चीने जबीसे किरन खुरशेदकी कांपे होके वहम् ॥ सिफत करूं अबरूओंकी तो शमशीर पर हो शमशीरे अलम् ॥ याके कमां है बनी मुलतान्की या है तेगे दुदम् ॥ मिजें तीर पैकां हैं या नशतर है या बरछीबल्लम् ॥ यक पलमें वह करें कतलाम करें एक पलमें रहम् ॥ तेरी नजर गर फिरे तो फिर होजायँ कतल लाखों रुस्तम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ ३ ॥ चेहरा गोल अनमोलके जिससे रश्क कमरको होवे गम् ॥ चश्म वह नरगिश कँवलसे खिले हैं गोया बाग इरम् ॥ देखके बीनीकी तेजीको हरयकका हो नाकमें दम् ॥ गजब फडक है तेरे नथुनोंकी कहें किस तौरसे हम् ॥ रुखसारोंपर छुटा पसीना जैसे दो दीर याये अगम् ॥ बात बातमें दिल्लगी शीरीं सखुन औ जबां नरम् ॥ हरयक आनमें जान निकाले अदा अजायब हुस्न यम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ ४ ॥ और जो करूं तारीफ तेरे दंदाँकी ऐ दिलजाने दिलम् ॥ या वह गौहर हैं बेश कीमत याने हीरोंकी किसम् ॥ देख लबों पर पानकी लाली लालोंका रुतबा हो कम् ॥ खाले जकन पर आनतर उगद सुरैया हुआ खतम् ॥ चाहे जनखदां देखके तेरी चाहमें डूबा कुल आलम् ॥ कद वह कयामतकी जिससे सर्व सिहीको हो मातम् ॥ गला सुराहीदार औ सीना साफ आईनासा उत्तम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ ५ ॥ दस्त वह नाजुक गोल कलाई हिना हथेलीमें रही रम् ॥ देख वह सुर्खी खूने दिल कितनोंका हो दममें दम् ॥ नाखूं वो गोयाहि लाल औ मखमली मुलायम बना शिकम् ॥ नाफ वह सागर कमर चीतेसी वह जानूं नूरके थम् ॥ देख झलक कदमोंकी तेरे पैरोंमें आनकर पडा पदम् ॥ बनारसी कहै मैं आशिक तेरे नामका हूं हमदम् ॥ नारंगीसी एडी तलुवे मलै तेरे बाबा आदम् ॥ चालमें छलबल इशारे नहिं तेरे आफतसे कम् ॥ ६ ॥

ख्याल इश्क मार्फत-बहर लंगडी।

कूंचे जानाको दिलपर गर जरा किसीके हवा लगी॥ रहा नीमजां न उसको तावे उम्रतक दवा लगी॥ अदा हुआ जो जानसे जिसको प्यारी तेरी अदा लगी॥ गदा हुआ वह इश्ककी जिसके दिलपर गदा लगी॥ सदा अनलहक कहूं जवांसे मुझे वह प्यारी सदा लगी॥ खुदी मिटगई खुदाकी याद दिलपर अब खुदा लगी॥ चोट इश्ककी जिसके दिल पर जरा लगी या सिवा लगी॥ रहा नीमजां न उसको तावे उम्रतक दवा लगी॥ १॥ तिला कर दिया मिसको खाक पा तेरी उसे यकतिला लगी॥ दिलादे अपना दीद तबीयत तुझसे ऐ दिला लगी॥ सिलाय क्यों कर जखम जिगरके जिसको इश्ककी शिला लगी॥ मिला खाकमें खाक सारी जिसको कामिला लगी॥ इश्कके बीमारोंको और कोई दवा न तेरे सिवा लगी॥ रहा नीमजां न उसको तावे उम्र तक दवा लगी॥ २॥ बला करें दिन रात इश्ककी जिसके पीछे बला लगी॥ भला हो क्योंकर वह जिसको तेग इश्ककी भला लगी॥ मला करूं तलुवे तेरे मुझको यह चाह बरमला लगी॥ चला लामकां चाल कदमोंमें मेरे चंचला लगी॥ तू है शमा मैं परवाना मुझको तो तेरी वह हवा लगी॥ रहा नीमजां न उसको तावे उम्रतक दवा लगी॥ ३॥ अथाह है दरिया ये इश्कका कहो इसकी किसको था लगी॥ न था जो इसमें वह डूबा हरगिज इसकी न था लगी॥ कथा छंद देवीसिंहने उन्हें इश्ककी प्यारी कथा लगी॥ जथावाले हैं जो शायर उन्हें बात यह यथा लगी॥ बनारसीको सिवा इश्कके और बात नहिं रवा लगी॥ रहा नीमजां न उसको तावे उम्रतक दवा लगी॥ ४॥

परमेश्वर भजनमें रोनेकी तारीफ-बहर लंगडी।

रहे उम्रभर दरियामें निकले तो खुश्क गौहर निकले॥ सद आफरीं है जो मेरी चश्मसे मोती तर निकले॥ मिजैकी नोकोंपर जिस दम

वह अश्क हमारे तुल निकले ॥ अर्की ये हुवा के जैसे खारके ऊपर गुल निकले ॥ चश्म हमारे उन्हें देखनेको जो यह खुलखुल निकले ॥ अश्क जो गुलरू बने तो दीदेभी बुलबुल निकले ॥ गर निकले इल्माप तो क्या वहभी सूखे कंकर निकले ॥ सद आफरीं है जो मेरी चश्मसे मोती तर निकले ॥ १ ॥ कहों मैं क्या क्या तशभीदूं जो बनबनके आंशू निकले ॥ मैं वहदतके गोया कतरे वहिश्तसे चूं निकले ॥ मैंने कहा ऐ अश्क मेरी चश्मोंसे जिस तरह तू निकले ॥ क्या ताकत है जो ऐसी लडी बनके लूलू निकले ॥ कहीं जवाहर निकले तो वहभी स्वा मिल पत्थर निकले ॥ सद आफरीं है जो मेरी चश्मसे मोती तर निकले ॥ २ ॥ रोया फिराके यारमें मैं तो क्या क्या अश्क बनबन् निकले ॥ यकीं यह हुआ कि दरिया इसीसे गंगोजमन निकले ॥ औरभी कुछ कहताहूं सुनो इस जवांसे जो कि सखुन निकले ॥ अब्र पुतलियां बनी तो चश्मभी दो सावन निकले ॥ अश्क मेरे पुरआब हैं गौहर खाली खुश्क जिगर निकले ॥ सद आफरीं है जो मेरी चश्मसे मोती तर निकले ॥ ३ ॥ फुरकते जानामें जो कभी हम रोते जारजार निकले ॥ तार न टूटा हारसे तोफा गुथे हार निकले ॥ क्या ताकत इस दरियाके गर वारसे कोई पार निकले ॥ बनारसी कहै जो निकले मगर तो हमीं यार निकले ॥ और जो निकले रत्न वहभी अश्कोंसे मेरे बदतर निकले ॥ सद आफरीं है जो मेरी चश्मसे मोती तर निकले ॥ ४ ॥

खुदाके नूरकी आखोंकी तारीफ-बहर लंगडी।

तेग लगे तलवार लगे और तीर लगे तो चैन पडे ॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैन पडे ॥ एक झलक मूसाको नजर गर पडी तो वह लग गई नजर ॥ गिरा कोहपर न उसको तनोबदनकी रही खबर ॥ जिसे इशारे रोज करै वह क्योंकर उसका होवे गुजर ॥ जिये किस तरह और फिर मरे भला वह कहो किसपर ॥ दिलका हाल दिलही जाने

जो जखम जिगरपर ऐन पडे ॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैन पडे ॥ १ ॥ तोप लगे बन्दूक लगे तो इसकीभी हो दवा कहीं ॥ अगर दुगाडे नैनके लगें तो फिर वह बचे नहीं ॥ बरछीसे बचगये कटारीकी चोटें कितनोंने सहीं ॥ नोंक पलकी जराभी चुभी तो वह रोदिये वहीं ॥ नींद कहां आती है जागतेहैं हम तो दिनरैन पडे ॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैन पडे ॥ २ ॥ बांकमें हैं क्या बांकपना और खंजरमें वह आब कहां ॥ चश्मके आगे दिखाई देहै किसीका रुआब कहां ॥ अगर नशेकी कहो तो देखी ऐसी भला शराब कहां ॥ मस्तानोंसेभी गर पूछो तो आये जवाब कहां ॥ लाखो दल कटजायँ मेरे कातिलकी जिधरको सैन पडे ॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैन पडे ॥ ३ ॥ वह हैं चश्म खूंरेज अब इनसे खूनका दावा कौन करे ॥ डारपे चढके बोला मन्सूरके अब हम नहीं मरे ॥ उसे मिले दीदार जो आशक मस्ताने हैं सरसे परे ॥ बनारसी कहे हम हैं सरमदके पीर सुनहरे भरे ॥ शबो रोज हर वक्त जबांसे कहते हैं यही बैन पडे ॥ नैनके मारे तडपते हैं कितने बेचैन पडे ॥ ४ ॥

जीवन्मुक्तका ख्याल ।

मनको मारके बनाया मुर्दा जब यह तन आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ बस्तीको समझे उजाड सहरा औ बन आबाद किया ॥ माल खजाना तर्ककर फखका धन आबाद किया ॥ लौमें शोले नूरके अपना जलाके मन आबाद किया ॥ आहसे अपनी मेहर औ चरखे कोहन आबाद किया ॥ जिसे कहें वीराना सब मैंने वह वतन् आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ १ ॥ गुल खा खा गुलबदनपै मैंने वह गुलशन् आबाद किया ॥ जिस गुलशन्से गुलोंका हुस्न चमन् आबाद किया ॥ कहके जबांसे वह कुमब इज्नी अपना सखुन आबाद किया ॥ जिलाया

मुर्दा हुक्मसे उसका कफन आबाद किया ॥ जीतेजी जो मरा उसीने तो मुर्दन आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ २ ॥ गमखासा इस दिलपर हमने रंजोमहल आबाद किया ॥ दीवानोंको पढके दीवानापन आबाद किया ॥ तख्त सल्तनत छोड आ कबर वह आसन आबाद किया ॥ जिस आसनसे इन्द्रका इन्द्रासन आबाद किया ॥ तर्क किया दुनियाका रास्ता और चलन आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ ३ ॥ अश्कसे अपने दुर्वेशोंने दुरे रतन आबाद किया ॥ इश्कमें पैदा किया गम गममें जशन आबाद किया ॥ जिस जा आशक बैठ रहे उस जा मसकन आबाद किया ॥ कहे देवीसिंह नाम अपना रोशन आबाद किया ॥ बनारसीने करके इश्क आशकीका फन आबाद किया ॥ पहनके कफनी फकीरोंने तो कफन आबाद किया ॥ ४ ॥

आशकके आहकी तारीफ—बहर लंगडी।

मेरी आहका तीर तोड गरदूं को गया लामकां तलक ॥ बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूँ मैं कहांतलक ॥ हुआ इश्कका जोर जब इस दिलमें तो मैंने आह करी ॥ सातों फलकको चीरकर लामकांकी राह करी ॥ वहां जो देखा नूर खुदाका उसने पाक निगाह करी ॥ और जहांमें नहीं फिर किसीकी मैंने चाह करी ॥ आशक सादिक नाम मेरा यह रोशन है कुल जहांतलक ॥ बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूं मैं कहांतलक ॥ १ ॥ अजब मजा पाया है हमने अपनी आह सोजांके बीच ॥ हुस्न खुदाई दिखाई दे है मेरी जांके बीच ॥ नहीं वह जलवा मलकमें देखा और न हूर गिलमाके बीच ॥ नहीं मेहरमें नहीं वह झलक माहेतावांके बीच ॥ मेरी आह रोशन है सातों जमीं औ कुल आसमां तलक ॥ बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूं मैं कहांतलक ॥ २ ॥ इसी आहसे इश्क यह पैदा हुआ और आशक नाम हुआ ॥ इसी आहसे जहांमें सारे मैं बदनाम

हुआ ॥ इसी आहसे हुआ सखुन मस्ताना मस्त कलाम हुआ ॥ इसी आहसे वह पैदा मैं वहदतका जाम हुआ ॥ मेरी आह है लिखी देख लो जाके कलमें कुरांह तलक ॥ बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूं मैं कहांतलक ॥ ३ ॥ इसी आहसे कुफ्र तोडके काफरको मारा हमने ॥ इसी आहसे किया दुश्मन पारा पारा हमने ॥ इसी आहसे पाया वह दिलमें दिलपर प्यारा हमने ॥ इसी आहसे कर दिया फना रंज सारा हमने ॥ बनारसी कहै जहां वह हक है मेरी आह है वहांतलक ॥ बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूं मैं कहांतलक ॥ ४ ॥

जो आशकको छेडे उसका ये हाल हो।

हम आशक हैं हमें न छेडो छेडके पछतावोगे तुम ॥ आहसे गर दूं गिर पडेगा तो दब जावोगे तुम ॥ गर हमको छेडोगे तो निकलेगी इस दिलसे आतिशे आह ॥ आग लगेगी वह जिससे कुल जहान होवेगा तबाह ॥ कहां भागके बचोगे तुम फिर कहीं पावोगे राह ॥ हक्कुलाये बात है इसका है अल्लाही गवाह ॥ जिसने आशकको छेडा वह नहीं बचा हरगिज बल्लाह ॥ कसम खुदाकी बात यह कुल जहाँमें है आगाह ॥

शेर—तुम्हें वाजिब नहीं है आशकोंको जोर दिखलाना ॥
जो होवे नातवां उसको न जोर और शोर दिखलाना ॥
अगर तुम जोर दिखलावो तो फिर मत कोर दिखलाना ॥
जो भागे इश्कके मैदांसे उसको गोर दिखलाना ॥

आशके दिलको कभी सतानेसे न चैन पावोगे तुम ॥ आहसे गर दूं गिर पडेगा तो दब जावोगे तुम ॥ १ ॥ शबो रोज हम आप मरे रहते हैं हिज्र गमके मारे ॥ हमें सताना तुम्हें नहीं वाजिब है मेरे प्यारे ॥ अभी आह गर करूंगा तो बरसेंगे फलकसे अंगारे ॥ कोई बचैगा नहीं मर जायँगे कुल बिन मारे ॥ मेरी आहसे डरें अवलिया पीर पयगम्ब-

रभी सारे ॥ इसीवास्ते नहीं भरता हूं मैं आहोंके नारे ॥

शैर–अभी गर उफ कर दूं कुल जहां पलमें उलट जाये ॥
जमीं ऊपर हो और ये आसमां पलमें उलट जाये ॥
ये मोसम सब उलट जाये समा पलमें उलट जाये ॥
हरेक दरिया उलट जाये तबां पलमें उलट जाये ॥

हम तो आपी जले हैं हमको औरभी जलवावोगे तुम ॥ आहसे गर दूं गिर पडेगा तो दब जावोगे तुम ॥ २ ॥ छेडा शम्स तबरेजको वह मुलतान अबतलक जलती है ॥ वहांसे आतश देख लो अबतक नहीं निकलती है ॥ और छेडा सरमदको दिल्ली इधरसे उधर उछलती है ॥ आशिके सादिकके आगे रुस्तमकी नहीं चलती है ॥ मेरी आहसे समा है रोशन आतश अबतक बलती है ॥ काफरको ये जला देती है औ मुझको फलती है ॥

शैर–निकालूं दिलसे मैं गर या रब अपनी आहसों जांको ॥
जला डालूं हजारोंको सतक जंगल बियाबांको ॥
करूं मैं खाकसा इस आहसे बस्ती और बिरांको ॥
कयामत आहसे कर दूं दिखाऊं मैं वह तूफांको ॥

छेड छाड गर करोगे आशकसे तो पछतावोगे तुम ॥ आहसे गर दूं गिर पडेगा तो दब जावोगे तुम ॥३॥ जिसने आशकको छेडा फिर उसका घर बरबाद हुआ ॥ गया इस्लको नहीं वह दुनियामें आबाद हुआ ॥ दोजख उसको मिली और वह बहिश्तसे बेदाद हुआ ॥ नाम उसीका जहांमें काफर और जल्लाद हुआ ॥ ये है सखुन आशकोंका इसपर जिस जिसको एतकाद हुआ ॥ दोनों जहांमें उसीका भला हुआ दिलशाद हुआ ॥

शैर–सदा ये आशकोंकी है भला होवे भला होवे ॥
अदापर उसकी ये दिल देखिये किस दिन अदा होवे ॥

उसीका नाम रोशन हो जो उल्फतमें जला होवे ॥
कहै ये छन्द देवीसिंह मेरा दिलवर खुदा होवे ॥
बनारसी यह कहे अगर नापाक इश्क गाओगे तुम ॥ आहसे गर दूं गिर पडेगा तो दब जाओगे तुम ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जबाब—बहर लंगडी ।

खुदा तू है बरहक तो मैंभी हक जबांसे करता हूं ॥ आब जो तू है तो मैंभी लहर बहरमें रहता हूं ॥ अगर तू है आतश तो मैंभी उसीका अंगारा हूंगा ॥ तिला जो तू है तो मैं जेवर तेरा प्यारा हूंगा ॥ गर तू है सीमाब तो मैंभी सनम् पारा पारा हूंगा ॥ आहन तू है तो मैंभी बना तेरा आरा हूंगा ॥ जो तू है दरिया तो मैं ह्वां मौज रवां हो बहता हूं ॥ आब जो तू है तो मैंभी लहर बहरमें रहता हूं ॥ १ ॥ तुही तो है दमेंदम तो मैंभी आदम कहलाता हूं ॥ हुस्न जो तू है तो मैं जलवा तेरा दिखलाता हूं ॥ गरचे तू खामोश रहे तो मैं नहीं जबां हिलाता हूं ॥ तुम है मेरा तो मैं प्यारे अब तेरा कहाता हूं ॥ तुही नहीं गम खाय तो फिर मैं जहांमें किसकी सहता हूं ॥ आब जो तू है तो मैंभी लहर बहरमें रहता हूं ॥ २ ॥ तेरा नहीं कोई दीन तो मेरी जातका कौन ठिकाना है ॥ तुझे न जाना तो फिर मुझको किसने पहिचाना है ॥ तू है फख्र तो मेराभी दिल फकीर तेरा दीवाना है ॥ तू है लामकां तो मेरे मकांको किसने जाना है ॥ तू है सांवलियाशाह तो प्यारे मैं नरसीमहेता हूं ॥ आब जो तू है तो मैंभी लहर बहरमें रहता हूं ॥ ३ ॥ तू है शम्स तो मैंभी शम्स तबरेज जहांमें आया हूं ॥ मुझमें तू है और मैं तेरे बीच समाया हूं ॥ गर तू है ना पैद तो मैंभी नहीं किसीका जाया हूं ॥ बनारसी कहे जो तू कुदरत तो मैंभी माया हूं ॥ तूने पकडा हाथ मेरा मैं बाजू तेरा गहता हूं ॥ आब जो तू है तो मैंभी लहर बहरमें रहता हूं ॥ ४ ॥

खुदासे बन्देका सवाल जवाब।

खुदा तू गर है इश्क तो मैं आशक हूं हर नूरानीका ॥ शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानीका ॥ अगर तू राजे निहां है तो मैं पोशीदा इस तन्में हूं ॥ तू है गुलिस्तां तो मैंभी गुंचा उस गुलशन्में हूं ॥ तू है चाह तो मैंभी डूबा प्यारे चाहे जकन्में हूं ॥ भला तू लौ है तो मैंभी हरदम् उसी लगन्में हूं ॥ तेरी नहीं तस्वीर मुझे खींचे यह न रुतबा मानीका ॥ शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानीका ॥ १ ॥ तू है पाक तो मेराभी दिल साफ मिस्ले आईना है ॥ जान जो तू है तो मेरा तेरे हाथमें जीना है ॥ अगर तू दानि शवर है तो दिल मेरा दाना बीना है ॥ बुलंद है तू तो मेरा तेरे बामपर जीना है ॥ तू है मौज दरिया तो मैंभी हूं वह बुलबुला पानीका ॥ शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानीका ॥ २ ॥ तू है खुदा तो मैंभी तेरेसे जुदा नहीं जी जानसे हूं ॥ यकीन तू है तो मैं साबित अपने ईमानसे हूं ॥ तू है दोस्त मेरा तो मैं तेरा यारभी हरएक आनसे हूं ॥ तू है तसव्वर तो मैंभी पूरा अपने ध्यानसे हूं ॥ तू है लिबासे नंग शौक है मुझे तने उरयानीका ॥ शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानीका ॥ ३ ॥ तू है एक तो मुझसा दूसरा और जहांमें कौनसा है ॥ कलमा तू है तो मेरे सिवा कुरांमें कौनसा है ॥ देवीसिंह कहे बगैर तेरे मेरी जांमें कौनसा है ॥ नातवांनीमें और ताकते तमांमें कौनसा है ॥ यही सखुन है विर्द आशक बनारसी हक्कानीका ॥ शान जो तू है तो मैं पुतला हूं तुझ लासानीका ॥ ४ ॥

तारीफ सनमके पान खानेकी—बहर लंगडी।

क्याही झलक दंदांमें हुई प्यारे तेरे मुसुकयानेसे ॥ वर्क तडपने लगी अखतर रहे मुंह दिखलानेसे ॥ अजब तिलस्म हुवा जालिम तेरे उस पान चबानेसे ॥ मर जां गौहर जमुर्रद निकल पडे हर्खानेसे ॥ शफक्का

दम फक हुवा बहुत फूली थी वह सुखी पानेसे ॥ अनारकेभी दाने मौताजी होगये दानेसे ॥ देख तेरे दंदांकी झलक उठि गये लो लाल जमानेसे ॥ बर्क तडपने लगी अखतर रहे मुँह दिखलानेसे ॥ १ ॥ भूल जाय जौहरी परखना रतन और फिरैं दिवानेसे ॥ दन्दां तेरे देख पायें गर किसी बहानेसे ॥ कितनेही गये डूब वह सागरमेंभी गोता खानेसे ॥ पर नहीं वाकिफ हुये वहभी ऐसे दुर्दानेसे ॥ सूख गया वह लहू तेरे दांतोंकी सिफत सुनानेसे ॥ बर्क तडपने लगी अखतर रहे मुँह दिखलानेसे ॥ २ ॥ शरमिन्दा होगये जवाहर दांतोंके चमकानेसे ॥ खून उगलने लगे हीरे क्या हो पछतानेसे ॥ देखें मुरस्से साज तो रह जांय अपना काम बनानेसे ॥ यह वह जडत है जडी बस खुदाके हाथ लगानेसे ॥ आज मुझे मिल गया मजा इस हँसीनें तुम्हें हँसानेसे ॥ बर्क तडपने लगी अखतर रहे मुँह दिखलानेसे ॥ ३ ॥ टुकडे हों याकूत तेरे दांतोंकी रूबरू आनेसे ॥ करें चमेली बात यह अपने और बेगानेसे ॥ पाननेभी पाई लाली उस माहलकांके खानेसे ॥ इसी वास्ते वो बहस्तीमें आये वीरानेसे ॥ यह दन्दां निकले हैं बेबहा खुदाके सुनो खजानेसे ॥ बर्क तडपने लगी अखतर रहे मुँह दिखलानेसे ॥ ४ ॥ बनारसीने कहा हाल यह अपने मन मस्तानेसे ॥ इन दन्दांमें देख ले खुदा मेरे दिखलानेसे ॥ थक जावेगा औ नादां तू लामकानके जानेसे ॥ यहीं देख ले नूर दन्दांमें यारके आनेसे ॥ ऐसी सिफत दांतोंकी किसीसे बनै नहीं मर जानेसे ॥ बर्क तडपने लगी अखतर रहे मुँह दिखलानेसे ॥ ५ ॥

पानके लालीकी तारीफ—बहर लंगडी।

पानकी लालीसे वह झलक दन्दांमें तेरे लालोंकी बनी ॥ लाले बदकशां देखकर जिसे खायँ हीरेकी कनी ॥ आज जो तू हँसके बोला तो दहनमें वह दन्दां चमके ॥ जिगर छिद गया हरएक गौहरका सुनो

मारे गमके ॥ सुनते ही यह सिफत सूखकर होश उड गये शबनमके क्या ताकत है मुकाबिल दन्दांके अखतर दमके ॥ हरएक जवाहरके ऊपर प्यारे तेरे दन्दां हैं गनी ॥ लाले बदक्शां देखकर जिसे खायँ हीरेकी कनी ॥ १ ॥ अगर चमेलीको देखूं तो उसका सुर्ख लिबास कहां ॥ मरजां टुकडे हुआ उसको जीनेकी आस कहां ॥ झूंठ नहीं बोलूंगा सनम् मुझको कोईका पास कहां ॥ सच कहता हूं मुकाबिल दन्दांके इलमास कहां ॥ क्या ताकत गर इनके रूबरू चमक सके कोई और मनी ॥ लाले बदक्शां देखकर जिसे खायँ हीरेके कनी ॥ २ ॥ इन्हें देखकर बर्क तडपती है वह आसमांके ऊपर ॥ सदके कर दूं शफककोभी इन दन्दांके ऊपर ॥ किसीसे निस्बत कभी न दूं नहीं लाऊं इस जबांके ऊपर ॥ दन्दां तेरे झलकते हैं वह लामकांके ऊपर ॥ सायद तू पीसे जो दांत तो दम्में कर दे फनाफनी ॥ लाले बदक्शां देखकर जिसे खायँ हीरेकी कनी ॥ ३ ॥ गर जो कोई याकूत कहै तो जबांको उसकी कटवाऊं ॥ अनारकेभी कहैं दाने तो काटके मैं खाऊं ॥ और जो कहै गौहरकी लडी तो उसकोभी मैं छिदवाऊं ॥ किसीसे निस्बत न दूं नहिं सुनूं न खातिरमें लाऊं ॥ बनारसी गर कहै तो क्या दिलमें उसके अब यही ठनी ॥ लाले बदक्शां देखकर जिसे खायँ हीरेकी कनी ॥ ४ ॥

ख्याल तौहीर अर्थात् वेदांत मतलब उलटा—बहर लंगडी।

बुरा किया तो भला हुआ चोरी करनेसे शाह बने ॥ गदासे होगये बादशाह बंदेसे अल्लाह बने ॥ जातसे हो बेजात जो कोई तो उसका वह दीन बने ॥ सकल शबाहत बिगाडे तब चेहरा रंगीन बने ॥ इमानसे छोडे इमानको पूरा जभी यकीन बने ॥ लौमें शोले नूरके तो वो लौलीन बने ॥ जबाँ कटी तब बोलन लागे फूटे नयन निगाह बने ॥

गदासे हो गये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ १ ॥ करके गौर देखा हमने तो आजाबसे बडा सवाब बने ॥ लाजबाब गर सनम्से हो तो खूब जवाब बने ॥ मय वहदत कहते हैं उसे जो अश्कसे मेरे शराब बने ॥ लज्जते शिरीं मिले जब जलके जिगर कबाब बने ॥ बुतखानेसे बहिश्त और मयखानेसे दरगाह बने ॥ गदासे हो गये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥२॥ सरको काटके अपने दस्तपर रक्खे तो सरदार बने ॥ माल मुल्क सब तर्क कर बैठे तो जरदार बने ॥ तायर दिलको कभी न उडने दे तो वह परदार बने ॥ जिंदा उसको समझते हम जो मुर्दार बने ॥ चलनसे जब बदचलन हुये तो लामकानकी राह बने ॥ गदासे हो गये बादशाह बंदेसे अल्लाह बने ॥३॥ जिसे कहें सब हराम हमने देखा वही हलाल बने ॥ घोलके जिसने लगा ली स्याही वह फिर लाल बने ॥ जो कि हुये पैमाल जहांमें वह साहबे कमाल बने ॥ बनारसीके सखुनपर क्या ताकत कोई ख्याल बने ॥ जमींसे हो गये आसमान और अख्तरसे हम माह बने ॥ गदासे हो गये बादशाह बन्देसे अल्लाह बने ॥ ४ ॥

रंजमें राहत इश्क पूरा—बहर लंगडी ।

मैं आशक हूं रंजो अलमका गर ये मेरे पास न हो ॥ मुझ मरीजको तो फिर यकदम जीनेकी आश न हो ॥ बेचैनीसे उल्फत है बेकलीसे याराना अपना ॥ हिज्र है अपना दोस्त औ वतन है वीरां अपना ॥ आहकी नकदी बासमें है खाना है गमखाना अपना ॥ जीना यही है किसीके ऊपर जी जाना अपना ॥

शेर—फुरकते यार वह क्या क्या मजे दिखाती है ॥
बेकरारीही मेरे दिलको बहुत भाती है ॥
वस्ल होता है तो वो बात चली जाती है ॥
इन्तजारीसे तबीयत नहीं घबराती है ॥

रंग जर्द नहीं हो अपना और चेहरा मेरा उदास न हो ॥ मुझ मरीजको

तो फिर यकदम् जीनेकी आश न हो ॥ १ ॥ जो आशक सादिक हैं उनकी जीस्त जानका खोना है ॥ यही खुशी हैं जो उस दिलबरकी यादमें रोना है ॥ खाकके सोनेसे बत्तरपन्ना और चाँदी सोना है ॥ बाजुसे बेहतर हमें अश्कोंसे मुंहका धोना है ॥

शेर–टपकके आँशू जो रुखसार पर ढलकते हैं ॥
तो मेरी आँखमें गौहर हरएक चमकते हैं ॥
ये मस्त दोनों है और दो जहाँको तकते हैं ॥
दीवाने दीदके हैं अब ये कब झपकते हैं ॥

जोर जुल्म और जफामें अपना दुरुस्त होश हवास न हो ॥ मुझ मरीजको तो फिर यकदम् जीनेकी आश न हो ॥ २ ॥ प्यास हमारी बुझती है इस खूने जिगरके पीनेसे ॥ वाकिफ हुआ हूं मैं अपनी चाहके जरा करीनेसे ॥ काम नहीं काशीसे मुझे नहिं मक्के और मदीनेसे ॥ और न आरजू हमें मरनेकी न मतलब जीनेसे ॥

शेर–आतिशे इश्कसे जलके जिगर तर होता है ॥
जेर सायेसे सनमके ये जबर होता है ॥
औ बेखबरीसे दिल हर्गिज न खबर होता है ॥
नफा है इश्कमें येही जो जरर होता है ॥

गर्चे कत्ल नहीं होवें हम तो काम इश्कका रास न हो ॥ मुझ मरीजको तो फिर यकदम् जीनेकी आश न हो ॥ ३ ॥ दर्द हमारा दिलब रहे हरवक्त इसीसे यारी है ॥ बेदर्दोंसेभी अपनी कुछ नहिं गिले गुजारी है ॥ सूलीपर मन्सूरने वो अनलहक सदा पुकारी है ॥ जान गई तो बलासे नाम तो उसका जारी है ॥

शेर–इश्कबाजीमें अगर जानकी बाजी हो जाय ॥
तो तबीयत यह मेरी खूबसी राजी हो जाय ॥
चाहे हमपर हो जफा या दगाबाजी हो जाय ॥

रजामें राजी हैं उसके जो वह राजी हो जाय ॥
बनारसी कहे अगर्चे मेरा मुरसद देवीदास न हो ॥ मुझ मरीजको तो फिर यकदम् जीनेकी आश न हो ॥ ४ ॥

जो रंज उठावेगा खुदाको पावेगा—बहर लंगडी

कहा ये मुझसे रंजन गर्चे आशक मेरे पास न हो ॥ तौ दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ इश्क है मेरा मकाँ औ मैं रहता हूं उसीके खानेमें ॥ वह नहीं आशक कि जिसके दर्द न होवै शानेमें ॥ तीरमें क्या है लुत्फ मजा मिल जाय जोर हो निशानेमें ॥ बस्तीमें नहीं गुजर आशक हैं मस्त वीरानेमें ॥ सूख गया मजनू औ वह ताकत बनी रही मस्तानेमें ॥ अबतक जिसका नाम रोशन है सुनो जमानेमें ॥

शैर—है कहां तकलीफ व तलुवोंमें जो चुभते हैं खार ॥
हँस पडा मंसूर तो शरमा गई उस जापै दार ॥
रंज ये कहता है आशक वह करै जो जां निसार ॥
हर कदमपर तीरहों पर दिलमें हो वह जिक्रे यार ॥

चोट न आशक सहै और अपना खूँ पीनेकी प्यास न हो ॥ तौ दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ १ ॥ दम्भरका है रंज और फिर राहत है कयामत तक बाबा ॥ उठाले शिरपर अलम तो देखे लुत्फ इसमें क्या क्या ॥ रंज यही कहता है जो आशक पक्का हो तो इधरको आ ॥ जुल्मसे मुतलक न डर और खौफ न अपने दिलमें ला ॥ सरको काटकर सरमदने जिस वक्त हथेलीपर रक्खा ॥ उसी वक्तसे नाम मुतलक न बादशाहका रक्खा ॥

शैर—कर दिया तख्त तबाह देहलीकी अब उडती है धूल ॥
क्या खता सरमदकी थी थी शाहकी मुतलक यह भूल ॥
देखिये अब इस गुलिस्तामें वह कब आयेंगे फूल ॥

गर करे यह अर्ज आशक तो खुदाको हो कबूल ॥

रंजने ये फर्माया आशकको मेरा कुछ पास न हो ॥ तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ २ ॥ आरेसे चिर जाँय नहीं घबराँय जो आशक हैं पक्के ॥ सीना सामने करें दिलवर जो चोट मारे तक्के ॥ कभी न निकाले मकांसे वह घर लाख वजेके दे धक्के ॥ दरे यारको छोड नहीं जायँ वह काबे औ मक्के ॥ जैसे जुवारी जोरू हारके हो जाते हैं भवचक्के ॥ तोभी अपनी जबाँसे कहा करें वह पोछके ॥

शैर—इश्कमें बाजी है सरकी काम दौलतका नहीं ॥
इससे बेहतर खेल हमने और कोई देखा नहीं ॥
जिसने अपना सर न बेचा कुछ मजा जक्खा नहीं ॥
आशकोंने जीतेही जी तन वदन रक्खा नहीं ॥

लाख वजेके सदमोंमें गर दुरुस्त होश हवास न हो ॥ तो दुनियामें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ ३ ॥ खाकमें गर मिल जाय गोरसे गुल होकरके निकलते हैं ॥ अजब है आशक मर्गके बादभी फूले फलते हैं ॥ रोशन हों कुल आलमूमें जो खडे इश्कमें बलते हैं ॥ उन्हें देखकर जो पत्थर हों तो वहभी पिघलते हैं ॥ देवीसिंहके सखुनपर शायर हरेक हाथको मलते हैं ॥ चारों तरफसे वाह वाह करें औ बहुत उछलते हैं ॥

शैर—ये कलामे मारफत हैं रंजसे राहत मिले ॥
जो कि डूबा चाहमें तो फिर उसे चाहत मिले ॥
गम अगर खाये तो उसको रोज फिर न्यामत मिले ॥
दीद उस दिल्बरका जोते जी औ ताकयामत मिले ॥

रंज ये बोला बनारसीसे गर तू मेरा दास न हो ॥ तो दुनियांमें आशकी आशककी फिर रास न हो ॥ ४ ॥

बागे बहिश्तमें खुदाके आनेकी तारीफ–बहर लंगडी।

बाग बाग हुआ बाग आप जब आये बागे इरम्के बीच ॥ फूलफूलके गिर पडे हरयक फूल हरकदमके बीच ॥ जुल्फ मुसल्सिल देख पेंचमें आया सम्बुल चमनके बीच ॥ नैनने तेरे शर्मदी नरगिस काले हिरनके बीच ॥ फूल रही है फुलवारी वो प्यारे तेरी फबनके बीच ॥ कदपर सदके करूं मैं सर्व सिही गुलशनके बीच ॥

शैर–करूं लबपर तसद्दुक लाल गुल्लालेके दो टुकडे ॥
औ दंदां मोतिया देखे तो उसकी आब सब उतरे ॥
अगर्चे मुस्कराके और करे कुछ बात तू हँसके ॥
तो होवे बेकली हरयक कली फूटे खिलें गुंचे ॥
कौन वो है खुशबू जो बसी है नहीं तेरे दम कदमके बीच ॥

फूल फूलके गिर पडे हरयक फूल हरदमके बीच ॥ १ ॥ रुखसारोंको देख गले गुल गुलाब तेरी लगनके बीच ॥ सदा सुने तो धुने सर तूती आग लगे अगनके बीच ॥ भरा हुआ है चाह हुस्नका आपकी चाहे जकनके बीच ॥ डूब गये हम न दहशत करी जरा इस मनके बीच ॥

शैर–फिदा दिल है गुलेराना तेरे ऊपर हरेक गुलका ॥
दिखा बागेबहारी और पिला दे जाम उस मुलका ॥
मचें वो कहकहे और चहचहे गुलहो तजम्मुलका ॥
खुलेंपर बाल कुमारीके कहा ले मान बुलबुलका ॥

शाख शाख हो हरी शजरकी लगे कलम हरकलमके बीच ॥ फूल फूलके गिर पडे हरयक फूल हर कदमके बीच ॥ २ ॥ नजर पडी जिस वक्त गुलिस्तांकी तेरे पैरहनके बीच ॥ चाक गरेबां किया गश खाके गिरे गुल धरनके बीच ॥ वह है नजाकत आपमें ये है कहां जुही या समनके बीच ॥ बन बनके सब फूल फूले हैं तेरे यौवनके बीच ॥

शेर–हुआ मुर्गाने चमानका दिमागतर बूसे ॥
महक आने लगी उल्फतकी वो तुझ गुलरूसे ॥
सिफत मैं किस तरह तेरी करूं कौन मुहसे ॥
खारकी बात न तूने करी कभी मुहसे ॥

लगी चाटने तलवे तेरे आई तरी शबनमके बीच ॥ फूल फूलके गिर पडे हरयक फूल हर कदमके बीच ॥ ३ ॥ मुरझाया दिल हार हुआ हुई गुलजारी गुल बदनके बीच ॥ जिनाका मुतलक नाम नहीं रहा गुलोंके वतनके बीच ॥ झुकझुकके सब करें डालियां सिजदा तेरे चरणके बीच ॥ कहैं देवीसिंह स्याल तौहीद मारफत सखुनके बीच॥

शेर–खिचा नक्शा मेरे दिलपर है वह तेरी सफाईका ॥
बसी तस्वीर आंखोंमें और है जलवा इलाहीका ॥
किसीको ताज बख्शा और किसीको तख्त शाहीका ॥
गदाई हमको दी जिसमें दिया दावा खुदाईका ॥

बनारसी कहे गजब झलक है तेरे कदमके पदमके बीच ॥ फूल फूलके गिर पडे हरयक फूल हरएक कदमके बीच ॥ ४ ॥

दवा इश्कके बीमारीकी किसीने न लिखी सो हमने लिखी बहर लंगडी.

नुस्खा इश्कका लिखतां हूं गर किसीको ये आजारभी हो ॥ जहरे हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥ जख्म जिगरपर कारी हों और भीतर उसके गारभी हो ॥ गुले धतूरा लगे तो गुलशन बाग बहारभी हो ॥ लगें इश्कके तीर और ऊपरसे पडती तलवारभी हो॥ झुका दे सरको तो उससे मौत तलक लाचारभी हो ॥

शेर–यारको मिलनेका तुझसे जो कुछ इनकारभी हो॥
तू आंखें बंद जो कर ले तो ओ दीदारभी हो ॥
बातही बातमें उससे कभी तकरारभी हो ॥

जवाब उसका न तू दे तो फिर वो यारभी हो ॥
मैं तो यही लिखता हूं इश्कका भला कोई बीमारभी हो ॥ जहरे हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥ बेचैनी हो दिलपै बँधा आसुओंका हरदम तारभी हो ॥ दवा है उसकी के कुछ इस दिलको सबरो करारभी हो ॥ शोरोफुगां हो जबांपर हरदम आहे आतिश वार भी हो ॥ जिगर जलाये तो दिल हो रोशन उसे प्यारभी हो ॥
शैर–मिसले मनसूर जो उलफतमें तुझे दारभी हो ॥
तू हो बेखौफ तो फिर दार वो नादारभी हो ॥
किसीके इश्कमें दिल तेरा बेकरारभी हो ॥
मिले वो तुझको जो जाँ उसपैसे निसारभी हो ॥

तडफे मुर्ग बिसमिलकी तरहसे और जीना दुशवारभी हो ॥ जहरे हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥ तेरे मारनेके खातर वो जुल्फ जो उसकी मारभी हो ॥ बलायें उसकी तू सरपर ले तो दिल हुसियारभी हो ॥ रशके चमनकी लगनमें तू गर सूखके निसले खारभी हो ॥ गुलोंके ऊपर जो गुल खायें तो गुले गुलजारभी हो ॥
शैर–सनमकी चाहमें ऐ दिल तू अशके बारभी हो ॥
जो गोता मारके डूबे तो उसके पारभी हो ॥
अश्क गौहरका गलमें किसीके हारभी हो ॥
ओ मालामाल हो जो उसका खरीदारभी हो ॥

दर्दसरी हो इश्ककी और उलफतका चढा बुखारभी हो ॥ जहरे हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥ मिसले कैस सहरामें तो तू दिवाना आशके जारभी हो ॥ खयाले लैलासे तेरा वहीं वस्ल दिलदारभी हो ॥ इश्कके सौदेमें जो किसीका छूट गया घरवारभी हो ॥ लुटा दे सब कुछ मालो असबाब तो फिर जरदारभी हो ॥
शैर–कत्ल करनेको जो वोह इश्क सितंगारभी हो ॥

जान देनेको तू अपनी वहीं तैयारभी हो ॥
दामे काकुलमें तेरा दिल जो गिरफ्तारभी हो ॥
बलासे उसकी न तू डर जो मारामारभी हो ॥
देवीसिंह कहे बनारसी गर इश्कमें कोई मुरदारभी हो ॥ जहरे हलाहल पिये तो जिये औ ताकतदारभी हो ॥

ख्याल सूमोंका कंजूसका बुरा हाल—बहर लंगडी।

इस दुनियामें आये खुदाके हुये न प्यारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ शिकममें जबतक कैद रहे तो कहा खुदाकी करेंगे याद ॥ बाहर आये तो रोने लगे करी मासे फरियाद ॥ दूध पिया माका औ छाती मली किया जोबन बरबाद ॥ लगे मांगने खीलौने खेल कूदमें हो रहे शाद ॥

शैर—लगी हवा जो जमानेकी तो सब भूल गये ॥
पिया जो दूध मुफ्तका तो उसमें फूल गये ॥
कभी सोये जो पालनेमें पाँ पसारके वह ॥
तो नींद ऐसी आई वह आईके उसमें झूल गये ॥

कभी हिंडोलेपर जागे बाबाने उतारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ दौलतवरके घरमें पैदा हुये तो गहने सोनेके ॥ बहुत दिनोंतक उन्होंने बदनपै पहने सोनेके ॥ चांदीके नाहिं पहनूंगा अब लगे वह कहने सोनेके ॥ हमेशा जेवर बदनपर लगे वो रहने सोनेके ॥

शैर—रहे जबतक सबह नादाँ तो सबने प्यार किया ॥
किसीको बोसा दिया और किसीको यार किया ॥
लगे पढनेको इल्म मोलवी पंडितके यहां ॥
तो कुछ दिनोंमें दिलको खूब होशियार किया ॥

इधर उधर आंखोंको लडा मारे नज्जारे चले गये ॥ किसीको कुछ

नहीं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ जिस दिन पैदा हुये ओ तो उस दिनका हाल सब भूल गये ॥ खुदासे वादा किया उसीका खयाल सब भूल गये ॥ किसीसे जो कुछ लिया तो ओ उसकाभी माल सब भूल गये ॥ ये नहीं समझे कभी आयेगा काल सब भूल गये ॥

शैर–नशा चढा जो जवानीका तो मदहोश हुये ॥
किसीने कुछभी जो मांगा तो ओ खामोश हुये ॥
कोई कहने लगा अपनी जो वो तकलीफका हाल ॥
खयाल कुछ न किया और न उधर गोश हुये ॥

लालाजी लेने आये देनेके मारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ खोया लडकपन खेलकूदमें गई जवानी रांडके साथ ॥ हमेशां सोहबत तो उनकी रही वो भडवे भांडके साथ ॥ दांत टूट गये तो फिर रोटी लगे ओ खाने खांडके साथ ॥ बैल जो बुड्ढा हुआ तो कहां मिले फिर सांडके साथ ॥

शैर–जमा जोरी जो उन्होंने तो वो आजार हुआ ॥
उसीमें मालोमताभी बहुतसा ख्वार हुआ ॥
कभी खैरात न की औ न दिया भूखोंको ॥
तो उनके घरमें वह हुकमाओंका दरबार हुआ ॥

कोई लागीर होके मर गये कोई बने करारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥ लाखोंमें कोई हुआ सर्खी और बहुत जहांमें देखे सूम ॥ कहे देवीसिंह तो आखिर सूमोंका फूटा मकसूम ॥ बनारसी कहे मैंने देखा खूब मुझे ये है मालूम ॥ मेरी नसीहत अगर माने तो हो मुलकोंमें धूम ॥

शैर–ये शखुन मैंने कहा कुछभी ज्ञानमें आया ॥
जरा तो मुखसे कहो हांके ध्यानमें आया ॥
के सिर्फ सुननेही आये थे न कुछभी समझे ॥
तुम्हें हमारी कसम कुछभी कानमें आया ॥

सूमोंसे देनेको कहा तो ओ दइ मारे चले गये ॥ किसीको कुछ नहीं दिया तो हाथ पसारे चले गये ॥

खुदाकी राहमें जो चाहे चलता है उसका हाल बहर लंगडी।

कूंचे जानामें गर कोई धरके जरा कदम निकला ॥ फिर वो न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥ ये है रास्ता सख्त गर कोई इसमें नागहां आग पडा ॥ जान बूझके फिर वो देता है इसीमें जान पडा ॥ कहीं तपिशमें तपे कहीं कांटोंका नजर मैदान पडा ॥ कदम कदमपर अब हमको लुत्फ इश्कका जान पडा ॥

शैर—हमें गुलशनसेभी बेहतर हैं इश्कके कांटे ॥
ये फर्श खारके तोफा हैं मुझे मखमलसे ॥
कहूं मैं किससे सुने कौन इश्कके किस्से ॥
जो देखे हाल हमारा तो कैसेभी रो दे ॥

रहा वहांका वहीं देखने जो अपना हम दम निकला ॥ फिर वह न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥ १ ॥ मजा चाहका जिसने देखा होगा वह डूबा होगा ॥ बहरे इश्कमें जो तैरा होगा वह डूबा होगा ॥ अश्क चश्मसे जिसके बहता होगा वह डूबा होगा ॥ चाहे जकनपर जो शैदा होगा वह डूबा होगा ॥

शैर—बहरे उल्फतका किसीकोभी किनारा ना मिला ॥
या खुदा नाखुदाका ह्यांपर इशारा ना मिला ॥
किश्ती हरगिज न मिली कुछभी सहारा ना मिला ॥
थाह मुतलक न मिली दमभी गुजरा ना मिला ॥

लगा न थल बेडा उस जापरसे न कोई आदम निकला ॥ फिर वह न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥ २ ॥ इश्कको जो देखा तो खडा है मेरे शिरपर दार लिये ॥ हुस्नको देखा तो वह

धमकाता है तलवार लिये ॥ जुल्फ यही कहती है कि मैंने कितनेही आशक मार लिये ॥ चश्म इशारे करे हैं जादूके हथियार लिये ॥

शैर–कौन इस कत्लके मैदांसे निकल जायेगा ॥
किस तरह काकुले पेंचांसे निकल जायेगा ॥
कोई न इश्कके तूफांसे निकल जायेगा ॥
न निकल जायेगा गर जांसे निकल जायेगा ॥

तानके अबरू तू जिसपर वह लेके तेगे दूदम् निकला ॥ फिर वह न निकला उसी कूंचेमें उसका दम निकला ॥ ३ ॥ कत्ल हुआ वह जिसने इस मैदांमें आके कदम मारा ॥ गिरा जमींपर न उसने आह करी औ न दम मारा ॥ उसके हुस्नके आलम्ने एक आलम्का आलम् मारा ॥ कहै देवीसिंह गया मैंभी इसमें उस दम् मारा ॥

शैर–इश्कने दारपर मन्सूरको चढाया है ॥
हुस्नने यारके कोहतूरको जलाया है ॥
नूरने जिसके हरयक नूरको बनाया है ॥
शहूर उसमें बेशहूरको बताया है ॥

बनारसीकर तर्क जहांको सीधा राहे अदम् निकला ॥ फिर वह न निकला उसी कुंचेमें उसका दम निकला ॥ ४ ॥

सनम्के जुल्फसे लगाके सब ओर तारीफ–बहर लंगडी ।

जुल्फ सिआसे मार सिआ हैं चश्मसे लाली मुल्में है ॥ नक्श कदका कयामत धूम यह आलम कुलमें है ॥ सरसे हर सरदार बने पेशानीसे जल्वे खुरसीद ॥ चीने दबींको वह है तहरीर न जिसकी दीदो शुनीद ॥ अबरूसे झुकी कमान औ पैदा हुआ फलकपर माह ईद ॥ खंजरे बुर्राने पाई बाढ किया लाखोंको शहीद ॥

शैर–है कुरांमें वह जो बिस्मिल्लाः अवरूसे बनी ॥
औ अलीकी तेगभी बल्लाह अवरूसे बनी ॥
और सिफत क्या क्या करूं मैं कुछ कहाजाता नहीं ॥
जो चला झुकके तो उसकी राह अवरूसे हनी ॥

तुझ गुलका चर्चा गुलेराना यही तो हर बुलबुलमें है ॥ नक्शा कदका कयामत धूम यह आलम कुलमें है ॥ १ ॥ मिजैते पैकां बने औ नश्तर चुभे रगे जांपर आकर ॥ खारभी उस दमू खटकने लगे मेरे वाँपर आकर ॥ निगाहसे वह तलवार चली सो लगी नीमजांपर आकर ॥ आहभी मुतलक न ठहरी मेरी इस जवांपर आकर ॥

शैर–है शरारत वह तेरी चितवनमें ऐ रश्के कमर ॥
हो रहा जीसे जहांके बीचमें जादूसे हर ॥
लड गई जिस शख्सकी वह आँख तेरी आँखसे ॥
फिर उसे तेरे सिवा कुछभी नहीं आता नजर ॥

वही जिक्र मयखानेमें और यही सदा कुलकुलमें है ॥ नक्शा कदका कयामत धूम यह आलम कुलमें है ॥ २ ॥ बीनीसे बना अलिफ तेरे रगसे वह पैदा नूर हुआ ॥ जिसकी झलकसे गिरा मूसा औ खाक कोहतूर हुआ ॥ लबसे लाले यमन बने याकूतभी वहीं जरूर हुआ ॥ औ दंदांसे बने गौहर तो क्याही जहूर हुआ ॥

शैर–है झलक हीरोंमें ऐ प्यारे तेरे दंदानसे ॥
बर्फभी चमकी वही दांतोंमें तेरी शानसे ॥
औ जबाँसे वर्गगुल पैदा हुआ रंगीन वोह ॥
हर सखुन शीरीं तेरा निकले है क्याही आनसे ॥

बादे सबा कहती है यही औ बदी वही जिक्र हरगुलमें है ॥ नक्शा कदका कयामत धूम यह आलम कुलमें है ॥ ३ ॥ चाहे जकनसे आशक सादकके दिलमें वह चाह हुई ॥ लगा झांकने कुए जिस

जिसकी उधर निगाह हुई ॥ गलेसे सीना बना सुराहीभी उसके हमराह हुई ॥ कहै देवीसिंह सिफत किससे तेरी अल्लाह हुई ॥

शैर–थक गये लाखोंहि शायर करके सब तेरा बयाँ ॥
पर न पाया राज तेरा तू तो है राजे निहाँ ॥
किसकी ताकत है जो हो आगाह तेरे हुस्नसे ॥
यक झलकमें गिर पडा मूसाभी होकर नातवाँ ॥

बनारसीने यही लिखा काबे काशी गोकुलमें है ॥ नकशा कदका कयामत धूम ये आलम कुलमें है ॥ ४ ॥

आशक मैंहूं उस गुलका जिस गुलपैर फिदा हैं सारे गुल ॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल ॥ सदा रहै सरसब्ज वह उसकी महकसे मस्तानापन हो ॥ दीद उस गुलकी करे तो दिलमें दीवानापन हो ॥ अदासे उस समशादकी आशकमें तो आशकानापन हो ॥ क्यों नहीं गुंचे खिलें जब उसमें मुसक्यानापन हो ॥

शैर–बनाये क्यों न उस गुलशनमें कुमरी आशियाँ अपना ॥
गुल गुलजार गुलरू और जहाँ हो बागबां अपना ॥
नहीं सैयादका डर कुछ न मुतलक खौफे जाँ अपना ॥
मकां है लामकां अपना निशां है बेनिशां अपना ॥

गुंचेभी यही चटक चटकके करें चमनमें शोरो गुल ॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल ॥ १ ॥ पेंचसें जुल्फे सियः फामके दामें इश्कपेंचां बन जाय ॥ मुश्के खुतनभी महेक जुल्फोंसे वह परेशाँ बन जाय ॥ बालसे आये बवाल संबुल पर जो जुल्फ पेंचां बन जाय ॥ नाफे आहूका मुँह काला हो घास रेहाँ बन जाय ॥

शैर–पडे झूमर वो उसके रुखपर जुल्फोंका जो मुँह खोले ॥
तो अशरतका हिंडोला देखकर खाये वह झकझोले ॥
और काकुल सूंघ ले काला न अपने मुँहसे कुछ बोले ॥
यकीं ए है कि पीनेके लिये अपने जहर घोले ॥

जुल्फ अंबरीं है या सोसने गुल है तेरी काली काकुल॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल॥ २॥ चश्मसे नरगिस शरमिन्दा हो सरको झुकाये खडा रहे॥ आँख उस गुलसे कभी मुतलक न मिलाये खडा रहे॥ कदसें सर्व सनोवर गुलशनमें गड जाये खडा रहे॥ दहनसे गुंचा तंग होकर शर्माये खडा रहे॥

शैर–सफाई देखकर उसकी समन मैला हो गुलशनमें॥
वोः नाजुकपन न जूहीमें जो कुछ है यारके तनमें॥
हिना देखे हथेलीको तो खूं उगला करे मनमें॥
सदा उसकी सुनें तूती तो फिर भागे कोई बनमें॥

शाख शाखपै यहीं चहचहा करता है शैदा बुलबुल॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल॥ ३॥ रश्के चमन गुलबनको गुल देखे तौ गरेबाँ चाक करे॥ हरएक गुलिस्तांका वोः यकदम्भरमें दम् नाक करे॥ गर्चे कोई मुर्गाने चमन जो उससे मुहब्बत पाक करे॥ बहेरे इश्कका खुदा उस आशकको पैराक करे॥

शैर–सबा आई जो गुलशनमें तो उसकी क्या बन आई है॥
नहीं वाकिफ थी जिस बूसे वो सब उसमें समाई है॥
न मुतलक खार गुलशन्में न कुछ गुलकी बुराई है॥
नहीं गिलमें लगावो गुल वहाँ जलवे खुदाई है॥

बनारसीको उस गुलरूने पिला दिया वो जामें मुल॥ बहारमेंभी न जिसके नाम खिजाँका है बिलकुल॥ ४॥

लावनी।

जुल्फको तेरी मार कहे तो मार मारसे कटवाऊं॥ सम्बुले पेंचा कहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं॥ कदसे सर्वकी निस्बत दे तो खोदके उसको गाडूं मैं॥ अगर सनोवर कहे तो चमनसे अभी उजाडूं मैं॥ जालसे निस्बत दे जो फिलकी लातसे उसे लताडूं मैं॥ पंजये मरजाँ

कहे तो दस्तसे अभी उखाडूं मैं ॥ काकुलको गरदाम कहे तो जालमें उसको उलझाऊं मैं ॥ संबुले पेंचा कहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ १ ॥ चश्म तेरे नरगिस जो कहे तो आंखको उसकी फोडूं मैं ॥ दंदा गौहर कहे तो दांत सब उसके तोडूं मैं ॥ दहनको गुंचा कहे तो उसको मुँहको पकड मरोडूं मैं ॥ जानके निस्बत ये दे तो जान न उसकी छोडूं मैं ॥ अगर तेरी काकुल उलझे तो क्योंकर उसको सुलझाऊं ॥ संबुले पेंचा कहे तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ २ ॥ जकनको तेरे चाह कहे तो कुएमें उसे डुबाऊं मैं ॥ पेशानीको कहे खुरशेद तो उसे घुमाऊं मैं ॥ गलेको मीना कहे तो गर्दन उसकी अभी कटाऊं मैं ॥ बीनीको गर अलिफ कोई लिखे तो उसे भुलाऊं मैं ॥ गेसूको कहे वो घटा तो उसका घटाके रुतबा में आऊं ॥ संबुले पेंचा कहें तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ ३ ॥ जबाँको तेरी कहे बर्गगुल उसकी जबां निकालूं हैं ॥ हिलाल अबरू कहे तो उसके टुकडे कर डालूं मैं ॥ सीनेको कहे आईना तो उसे न देखूं भालूं मैं ॥ कमरको तेरी अगर मूं कहे तो उसे छिपालूं मैं ॥ बनारसी कहे तेरे बालकी कहींभी निस्बत सुन पाऊं ॥ संबुले पेंचा कहें तो पेंचमें मैं उसको लाऊं ॥ ४ ॥

लावनी।

मेरी नजरके बीचमें तेरे दो रुखसारे फिरते हैं ॥ जिधरकी देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्कमें फलकके ऊपर लाख सितारे फिरते हैं ॥ शमशो कमरभी इश्कमें मारे मारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्कमें जिसके सरपरभी वोः और फिरते हैं ॥ सरपर उसके हुमा गोया पर पसारे फिरते हैं ॥

शेर—इश्कमें दरों बहर जो तुम्हारे फिरते हैं ॥
कभी तो उनकेभी दिन औ सितारे फिरते हैं ॥
आंखमें जिसकी वोः तेरे नजारे फिरते हैं ॥

रहम होता है उन्हें हम पुकारे फिरते हैं ॥

इधर उधर और जिधर तिधर सब तेरेही प्यारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ फँसे इश्ककी कीचडमें जो पैर उधारे फिरते हैं ॥ कदममें उनकी वोः तो अकसीरके गारे फिरते हैं । जो केतने उरियां होकर उस सनमके द्वारे फिरते हैं ॥ उनके जामेपै कुरबां लिबास सारे फिरते हैं ॥

शैर—जहांमें जो कोई तेरे सहारे फिरते हैं ॥
वोः है आलममें पर इससे किनारे फिराते हैं ॥
मौतका खौफ नहीं सर उतारे फिरते हैं ॥
दुईसे दूर वोः एकी विचारे फिरते हैं ॥

कभी फिरे काबेमें कभी जा ठाकुरद्वारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ कोइ तसावरमें तेरे वोः बलख बुखारे फिरते हैं ॥ कोइ चाहमें आपकी तख्त हजारे फिरते हैं ॥ कोई तो जा जमनापर कोइ गंग किनारे फिरते हैं ॥ मिले तू उनको गरज जो मनको मारे फिरते हैं ॥

शैर—तर्क दुनियाको किये जा विचारे फिरते हैं ॥
मैं जो देखा ओहीं तेरे दुलारे फिरते हैं ॥
मिले जो तुझसे जहांसे वो न्यारे फिरते हैं ॥
यादमें तेरी वोः प्यारे हमारे फिरते हैं ॥

कोई करते खैरात फिरे कोइ बने पिंडारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥ तेरे इश्कमें खाकसार हो हमभी बारे फिरते हैं ॥ सदा अनलहक जबाँसे हम ललकारे फिरते हैं ॥ देवीसिंह भी लिबास तनपर खाकका धारे फिरते हैं ॥ जबांको अपनी नामसे तेरे सुधारे फिरते हैं ॥

शैर–जो तुझको भूले वोः दुनियामें हारे फिरते हैं ॥
कामके कुछभी नहीं वोः नकारे फिरते हैं ॥
तेरी कुदरतसे तो हम बेसहारे फिरते हैं ॥
हम अपने दिलहीमें तुझको निहारे फिरते हैं ॥

बनारसीकी आंखमें हरदम तेरे इशारे फिरते हैं ॥ जिधरको देखूं उधर तेरे रुखसारे फिरते हैं ॥

लावनी।

लाखों वजहके रंजो अमल गम सनम वो दिखलाये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ इश्कमें लैलाके मजनूंने कभी जबांसे आह न की ॥ जिस्मको काटा खुशीसे तिरछी जरा निगाह न की ॥ चाहमें सीरींके कोहकलने और बातकी चाह न की ॥ सरसे तेगा लगाया किसीसे कुछ सल्लाह न की ॥

शैर–जो ऐ दिल आशके जांबाज है वोः इश्क करते हैं ॥
वोः जा देते हैं उलफतमें नहीं मरनेसे डरते हैं ॥
बिसाले यार होता है मसारे बाद मरनेके ॥
इसीसे आशके सादिकभी जीते जीहि मरते हैं ॥

दर्द इश्कसे मिस्ले जरस फुरकतमें चिल्लाये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और जले खानेभी इश्कमें बहोत उठाये रंजो मेहन ॥ कुये झांकती चाह यूसुफमें फिरी हरां बन बन ॥ और इश्कमें शाह बलखनें छोडा तख्त शाही वो वतन ॥ फकीर होकर फिरा सहरामें खुदासे लगी लगन ॥

शैर–खुदा उलफत मिलता है जो अय दिल इश्क कामिल हो ॥
मिले क्योंकर न वोः दिलबर ये दिल जिस जिसपे माइल हो॥
तमन्ना है विसाले यारमें जो जान खोते हैं ॥
तो क्यों उससे न फिरवादी जफना जन्नतमें वासिल है

दिलराम वो मिले ये दिल तकलीफ अगर पाये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ और सुनो एक बात मुझे वोःभी इस दम् है याद पडी ॥ इसी इश्कमें उठाई रांझेने तकलीफ बडी ॥ हुई किसीसे तहन आजतक ये मंजिल है बहुत कडी ॥ इसी इश्कमें मियां मंशूरके फांसी गले पडी ॥

शैर–हजारों जानसे मारे गये इस इश्क उलफतमें ॥
रहा कोई मिजाजी भला कोई हकीकतमें ॥
किसीने जिस्मकी अपने उतारी खाल सरापा ॥
किसीने शौकसे अपना कटाया सर मोहब्बतमें ॥

यादमें उस दिलरुबाकी आफत सरपर गर आये तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥ फँसा रहा वोः हस्र तलक जो दामें इश्कमें हुआ असीर ॥ कभी न छूटा कि जिसका इश्क हुआ फिर दामनगीर ॥ बनारसी कहे अपनी कसम मैं इसी इश्कमें हुवा फकीर ॥ खाकसार हो फिरा सहरामें हमेशां बेतौकीर ॥

शैर–रँगे कपडे जो उल्फतमें तो रंगीनी नजर आई ॥
जो खाक इसतर मली तनपर तो सब कुछ आबरू पाई ॥
पहनके इश्ककी कफनी किया आबाद सहराको ॥
फिरा चारों तरफ बहसतमें बनकर मैं तो सौदाई ॥

उसके इश्कमें सरपर गर आराभी चल जाय तो क्या ॥ नालां इश्कसे न होना जान तलक जाये तो क्या ॥

ब्रह्मज्ञान इश्क मार्फत परमेश्वरके दर्शनमें–बहर खडी ।

सूरत उस माहरूकी हरदम आंखमें अपने बस्ती है ॥ लाख इबादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ क्या होता है वजू किये और क्या मसजिदमें जानेसे ॥ क्या होता है नमाज पढके सरको वहां झुकानेसे ॥ किया न जिसने इश्क जहांमें उठा न हाथ जमानेसे ॥ जीते

जी वो नहीं मिला तो मिलेगा क्या मर जानेसे ॥ अजब मजा पाया है मैंने आंखमें आंख लडानेसे ॥ जिसमें देखा उसीको देखा लगा है तीर निशानेसे ॥ इसी सबबसे दिलमें मेरे आठ पहर यह मस्ती है ॥ लाख इबादतसे ज्यादा दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ १ ॥ गया अगर काबेको तो क्या वहां खुदा मिल जायेगा ॥ हैरां होकर फिर उलटा अपने घरको फिर आयेगा ॥ कोई अगर धन लुटाके अपना बुतखाना बनवायेगा ॥ पासकि दौलत खोकर फिर क्या वहांपै पत्थर पायेगा ॥ जबतक उस माहरूसे अपनी आंखको नहीं लडायेगा ॥ इस दुनियामें आकर फिर क्या देखेगा दिखलायेगा ॥ यही सुना है जहांमें मैंने जहांतलक यह हस्ती है ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ २ ॥ रँगे अगर कपडे और मन नहिं रँगा तो फिर वो रंग है क्या ॥ छोडके वो माहरू बुतोंका संग किया तो संग है क्या ॥ तनसे नंगा रहा जो दिलमें नंग नहीं तो नंग है क्या ॥ नशा चढा नहीं इश्कका पी ली भांग तो फिर वो भंग है क्या ॥ दिलमें आई चली गई तो ऐसी भला तरङ्ग है क्या ॥ तन धोया और मन नहीं धोया उन्हें भला फल गंग है क्या ॥ चश्म मेरी रो रोके यही कहती जिस वक्त बरस्ती है ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ ३ ॥ कुरानकी आयतें पढो और इश्कका दिलमें जिक्र न हो ॥ फिर तुमको क्या खुदा मिले चाहे अपना शिर धुना करो ॥ पेटके खातिर पण्डितके घर जाकर वेद पुराण पढो ॥ दो अक्षर नाहिं पढे प्रेमके मौतसे फिर किस तरह बचो ॥ अ ग बालके तपो अगर चाहे उलटे होकर लटको ॥ बिना इश्क दीदार न उसका मिले मुफ्त काहेको जलो ॥ बनारसीके इसी सखुनपर आशक सारी बस्ती है ॥ लाख इबादतसे बढकर दुनियामें हुस्न परस्ती है ॥ ४ ॥

देख लिया आँखोंने नागहां एक दमभर जोवन तेरां ॥ मेरा क्या रहा हुवा खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ जिसको मैं समझा था

अपना बनाये अब मसकन तेरा ॥ आह क्या करूं लूट गया हुआ ये अब सब धन तेरा ॥ देखतेही वो झलक बना मैं आशके जाने मन तेरा ॥ लगा ये कहने रास्ता सख्त है बहुत कठन तेरा ॥

शैर–तने उरियां है तू और कुछ न पैरहन तेरा ॥
लिबास किसपै करे तू कहा है तन तेरा ॥
जहां नुमाहो मेहर है वहां वतन तेरा ॥
तेरा तो जन्म नहीं और न है मरन तेरा ॥

चला न अपना जोर जो देखा तुझे तो हुआ वदन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ जुल्फ तेरी नागिन है या है ये जङ्गल मुश्के खुतन तेरा ॥ पेंच है तेरा या है कुछ इसीमें नाजुकपन तेरा ॥ या हैं ये अबरे नैसां या संबुली वो है गुलशन तेरा ॥ जाल है तेरा फसा है इसीमें आशके तन तेरा ॥

शैर–तंग गुंचेको करें क्यों न वो दहन तेरा ॥
वर्क तडपे जो ओ देखे कहीं मंजन तेरा ॥
नूर चश्मोंका जो देखें कहीं खंजन तेरा ॥
क्यों न अंजन करे आंखोंमें निरंजन तेरा ॥

आशके बुलबुल कहते हैं गुलजार है तेरा चमन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ चले जिस घडी मैदांमें ऐ कातिल तीरो फिगन तेरा ॥ बचे न कोई जो निकले जबांसे हुकुम बिजन तेरा ॥ राहु चांदसे लडे तो क्या सर कटा है वो दुश्मन तेरा ॥ मेहर मुनौवर रोजो शब फलकपै है रोशन तेरा ॥

शैर–कत्ल दुश्मनको करे चक्र सुदर्शन तेरा ॥
मौतभी कुछ न करे जिसप हो अमन तेरा ॥
षताल पा हैं तेरे और है सर गगन तेरा ॥
तू तो निर्गुण है और गुण है ये सब सखुन तेरा ॥

मशरिकसे मगरिब तक देखा बस्ती वीरांवन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥ कहींपै मक्का बना तेरा और कहींपै वृन्दावन तेरा ॥ कहींपै काशी कहीं दरिया है गङ्गो जमन तेरा ॥ देवीसिंह कहे दुनियामें है अजब वो चालो चलन तेरा ॥ किसीको मुतलक नहीं मालूम जो कुछ है फन तेरा ॥

शैर—जहांमें है ये जहांतकसे अंजुमन तेरा ॥
जो देखे इसको तो बिल्कुल ये है दर्पण तेरा ॥
मेरी आंखोंमें बना क्याही है रौनत तेरा ॥
ये वो दूर्बीन है करती है जो दरशन तेरा ॥

बनारसी कहे किसीका कुछ नहीं सब है नन्दनँदन तेरा ॥ मेरा क्या रहा हुआ खुद बखुद ये अब तन मन तेरा ॥

ब्रह्मज्ञान इश्क मार्फत ।

सर है उसीका धड है उसीका सब है उसीका मेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या ॥ जुल्फ उसीकी नूर उसीका उसीका है यह पेशानी ॥ चीने जबीं हैं उसीकी शान उसीकी लासानी ॥ अबरू हैं खमदार तेगपर जैसे बाढ्यो बुरानी ॥ मिजा तीर हैं चश्म खूनीमें डोरे तूफानी ॥

शैर—अलिफ अल्लाहकी बीनी और रुखसारे ये हैं उसके ॥
तू अपने क्यों बताये देख रुखसारे ये हैं उसके ॥
वही देखे वो दिखलाये औ नजारे ये हैं उसके ॥
तू अपना यार समझा है जिन्हें प्यारे ये हैं उसके ॥

गैरकी चीजें बताये अपनी तू अब बना लुटेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या ॥ लबे लाल याकूत हैं उसके और दंदां गोहर उसके ॥ जबां वर्गगुलमें देखो हैं क्या क्या जौहर उसके ॥ बात बातमें फूल बरसते लिखे हैं वह दफतर उसके ॥ उसीकी सूरत सब हैं जो बशर हैं वो हैं बशर उसके ॥

शैर–अगर तुम चाहसे देखो तो है चाहे जकन उसकी ॥
मिलें सब उसकी चीजें उसको जिसको हो लगन उसकी ॥
बनी गर्दन सुराहीसी और हैं उसमें फबन उसकी ॥
अदा अन्दाज कद उसका और है बाँकी धरन उसकी ॥

उसकी चीज अपनी कर देखे आंखमें हुआ अँधेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बात ये मुझे भला है तेरा क्या ॥ कांधा उसका बाजू उसके हाथ सब उसके हाथमें हैं ॥ पंजे ये मरजां अँगुलियाँ ये अब उसके हाथमें हैं ॥ बनाये नाखूं हिलाल उसने वोः ढब उसके हाथमें हैं ॥ मत कहो अपने अरे ये जब तब उसके हाथमें हैं ॥

शैर–वो सीना साफ है उसका तुझे कुछ है खबर उसकी ॥
शिकम उसका मुलायम है और है नाफे भँवर उसकी ॥
कहां देखी किसीने ऐसी तो वोह है कमर उसकी ॥
नजर आये जिसे वो दिलकोभी कर दें नजर उसकी ॥

ये तन उसका बना अरे नादान तेरा यां डेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या ॥ तू कहता है जानू मेरे चसीके हैं ये दोनों थम् ॥ इसी सबबसे जमीं आसमां सब उसपर रहा है थम् ॥ उसीकी बनी पिंडलियां और पा झूठ नहीं मैं करूं रकम ॥ उसीके तलुवे और एडीको चूमे बाबा आदम ॥

शैर–जिसे कुछ इश्क हो उसका वो समझे मायने इसके ॥
लिखा तो मैं कुरांमें यों कहां हैं हाथो पा उसके ॥
सखुन यह मेरा रिंदाना समझमें आये हैं किसके ॥
नूर उसकाही मैं देखूं हूं चेहरेपर तो जिस तिसके ॥

बनारसी कहे मत कहो अपना तुझे बहमने घेरा क्या ॥ तू कहे मेरा बता ये मुझे भला है तेरा क्या ॥

सिफत खुदाके अबरुवोंकी ।

हुआ तअज्जुब रुखपर मैंने किया तेरे अबरूका दीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहांसे माहे ईद ॥ भूल गये हाफिज बिसमिल्लाह देख तेरे अबरुवोंकी शान ॥ होश न उनको रहा किस तरहसे वो पढ सकें कुरान ॥ जुल्फिकारभी म्यान फेककर गैरतसे बन गई कमान ॥ झुकी इसलिये के जिसमें नजर पडे कुदरते सुभान ॥ खुदाने वोः अबरुवोंमें आयत लिखी जो मतलब तौहीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहांसे माहे ईद ॥ १ ॥ कभी तो वो तलवार बने और कहीपै वो जमधर बन जा ॥ खाडा बिछुआ कहीं वो तेगे अजल सरपर बन जा ॥ रोजे हश्रको हिसाब करनेके खातिर दफ्तर बन जा ॥ मौतभी इनसे डरे जिस वक्त के वे खंजर बन जा ॥ तडपके बोले यही सखुन जो हुये तेरे अबरूके शहीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहाँसे माहे ईद ॥ २ ॥ कांप उठे आसमां अगर्चे जरा तेरा अबरू हिल जाय ॥ करे कयामत उधरको जिधर तेरा कातिल दिल जाय ॥ तानके तू जिस वक्त इने क्या जाने किधर जालिम पिल जाय ॥ लाखों बिस्मिल तडपते फिरें जो ये गोशा मिल जाय ॥ कशीद करके दिलमें अपने यही लगा कहने खुरशीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहांसे माहे ईद ॥ ३ ॥ क्यों जायें काबेको भला उस यारके अबरू छोडके हम ॥ अब काबेसे यहां बैठे हैं भवें सीकोडके हम ॥ यारके रुखपर दो काबे दिल उसीसे अमा जोडके हम ॥ करेंगे सिजदा इने मुह उस काबेसे मोडके हम ॥ पढे ये जिसने दो हरूफ वो हुये तेरे अबरूके मुरीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहांसे माहे ईद ॥ ४ ॥ खुदाने दो खत अर्बीके ये अपने हाथसे लिखे अजीब ॥ ऊपर उनको बनाया नीचे इसके लिखा नसीब ॥ पढे अगर सरनामां ये तो मौला उसका बने हबीब ॥ कहे देवीसिंह फिर उसका बाल न बांका करे रकीब ॥ बनारसी कहे इसके मायने कहो करो कछु गुफ्ते शुनीद ॥ महे चार दहपै पैदा हुआ कहाँसे माहे ईद ॥ ५ ॥

जुल्फ और आखोंकी तारीफ।

लगा जंग दिलमें होने जिस वक्त आंखसे आंख लडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी ॥ इधर तो यह बरछी भाला ले तीर तुपक तैयार हुई ॥ उधर जुल्फके सामने पडे तो मारामार हुई ॥ वहीं खूनकी नदियां वो जिस वक्त चश्म खूँखार हुई ॥ जुल्फभी उसके साथ खम ठोक कातिले वार हुई ॥

शैर—चश्मने करके इशारा कमाँ चढाई है ॥
जुल्फने बल वो दिखाया के घटा छाई है ॥
देख ली हमने के इस वक्त कजा आई है ॥
आँख मैंने जो लडाई तो ये लडाई है ॥

चश्मने घायल किया जुल्फको देखा तो है बला बडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी ॥ चश्मने ले तलवार किया यकवार तो कुछ बोला न गया ॥ जुल्फके आगे तो मुँह मुझसे मुतलक खोला न गया ॥ चश्मने खंजरसे ऐसा काटा कि फेर डोला न गया ॥ जुल्फ देखकर जहेर पीनेको तो घोला न गया ॥

शैर—चश्मने झुकके जो मारा तो मैं वहांही रहा ॥
जुल्फके गिर्द जो घूमा तो परेशांही रहा ॥
निशांने चश्मसे मेरा न कुछ निशांही रहा ॥
जुल्फने ऐसा मरोडा कि नातवांही रहा ॥

चश्मके जो आया मैं रूबरू वहीं सांग सीनेमें गडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी ॥ चश्मने वो दिखलाके बाँकपन मारा और फिर लाल हुई ॥ जुल्फ यारकी तो वो मेरे जीका जञ्जाल हुई ॥ चश्म तो गोली भर औ रञ्जक जमाके गोया दुनाल हुई ॥ जीना मुझको पडा मुश्किलके जुल्फ वो वाल हुई ॥

शेर–चश्मने दूरसे देखा तो लगाई वो नजर ॥
जुल्फने पेंच ओ मारा के रही कुछ न खबर ॥
चश्मने मुझपें किया क्याही वो जादू वो शहर ॥
जुल्फने ऐसा डसा दिलपें है कालेकी लहर ॥

लडी आंख जिस वक्त यारसे क्या जाने थी कौन घडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशकपर मार पडी ॥ खूब हुआ जो इन्होंने मारा दुनियामें तो नाम हुआ ॥ विना इश्कके जहांमें कह कोई सरनाम हुआ ॥ देवीसिंह कहे बनारसी तू आशके सादिक आम हुआ ॥ मरा कहां तू अमर दुनियामें तेरा कलाम हुआ ॥

शेर–जुल्फ बखुल्लेल और चश्म हैं यह नूरे खुदा ॥
मुआ जो इसे वो हरगिज न हुआ उससे जुदा ॥
किया मेरा तो ये दोनोंने दो जहाँमें भला ॥
बलासे मर गया छुटी तो ये दुनियाकी बला ॥

डरे नहीं मुतलक खिलकत सुनती है ये मेरे गिर्द खडी ॥ मार जुल्फसे तो वो क्या क्या आशक पर मार पडी ॥

परमेश्वरसे मिलनेकी मस्ती–बहर लंगडी।

मिला हमें गुलजार वो गुलरू अब गुल खाना नहीं चहिये ॥ मै वहदतमें मस्त मैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥ दिलको रोशन किया तो फिर तन वदन जलाना नहीं चहिये ॥ आहाके आतश बले वहां आग लगाना नहिं चहिये ॥ बहेर इश्कमें बहे उसे दरियामें बहाना नहिं चहिये ॥ डूबा चाहमें उसे फिर कुयें झकाना नहिं चहिये ॥ इश्कका सौदा हुआ हमें होना दीवाना नहिं चहिये ॥ मै वहदतमें मस्त मैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥ १ ॥

जो घायल हैं इश्कके उनपर तेग चलाना नहिं चहिये ॥ सरसे परे हैं जो आशक उन्हें सताना नहिं चहिये ॥ जिस जा तवियत लडी

वहांसे दिलको हटाना नहिं चहिये ॥ बढाके उल्फत यारसे प्यार घटाना नहिं चहिये ॥ चढी इश्ककी लहर हमें अब जहर पिलाना नहिं चहिये ॥ मै वहदतमें मस्त मैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥ २ ॥

अपनी जानमें जानको पाया और जमाना नहिं चहिये ॥ अलग हुये हम हमें अपना और बेगाना नहिं चहिये ॥ दिलमें देंरो हरम बनाया अब बुतखाना नहिं चहिये ॥ लामकानको छोड जन्नतमें जाना नहिं चहिये ॥ पी वो मुहब्बतकी मै मैंने और पैमाना नहिं चहिये ॥ मै वहदतमें मस्त मैं हूं मै खाना नहिं चहिये ॥ ३ ॥

हरेक मकां हैंगे आशकोंके एक ठिकाना नहिं चहिये ॥ आजाद हैं जो उन्हैं फिर जादमें आना नहिं चहिये ॥ इश्कका बाना पहिन कलँगी तुर्रेका बाना नहिं चहिये ॥ पाक इश्कको करो नापाकका गाना नहिं चहिये ॥ देवीसिंह कहे सखुनपर कमती सखुन बनाना नहिं चहिये ॥ मै वहदतमें मस्त मै हूं मै खाना नहिं चहिये ॥ ४ ॥

फिदा हुआ दिल मेरा जिस दिनसे तुझको दिलवर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ तेरे हुस्नके सानी हमने और नहीं सुन्दर देखा ॥ आफतावसे तुझे महतावसेभी बेहतर देखा ॥ तेरी चमक औ दमकके आगे और न जलवेगर देखा ॥ मैंने प्यारे तुझे अपनी नजरोंमें भर देखा ॥ ॥ जैसा देखा तुझको वैसा नहिं परी पैकर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ १ ॥

बयां क्या करूं यार तेरे दंदांका वो जौहर देखा ॥ लाल न देखा नहीं ऐसा कोई गौहर देखा ॥ गजब हैं तेरे नैन न ऐसी तेग नहीं जमधर देखा ॥ खांडा बिछुआ नहीं हमने ऐसा खंजर देखा ॥ हुआ बहुत हैरान शहर सहरा तुझको दर दर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ २ ॥

आशक होकर तुझपर अपने इश्कको हमने कर देखा ॥ जो कुछ

है सो तुही तुझको अपना अपसर देखा ॥ जैसी खुशबू तुझमें वैसा नहीं मुश्क केशर देखा ॥ दिमाग अपना तेरी खुशबूसे मवत्तर देखा ॥ तेरे इश्कमें प्यारे मैंने गली गली घर घर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ ३ ॥

देवीसिंह यों कहे के जिसने तुझे एक पलभर देखा ॥ मस्त रहा हो इश्कका जोर शोर खुशतर देखा ॥ बनारसीने तेरे इश्कमें खाकका वो बिस्तर देखा ॥ शाल दुशाले छोड मृगछाला वाघम्बर देखा ॥ कई दफे देखा था तुझे अब मैंने तुझको फिर देखा ॥ कहीं न देखा तुझे अपने दिलके भीतर देखा ॥ ४ ॥

सनमके पान खानेकी तारीफ–बहर लंगडी।

पानकि लालीसे जो मेरे वह दिलबरके लब लाल हुये ॥ लाले बदक्शांसेभी बेहतर पैदा अब लाल हुये ॥ काकुलसे काले हुये पैदा जुल्फसे अफई मार हुये ॥ पेशानीसे नूर टपका तो फरिश्ते चार हुये ॥ अबरूसे खम् खा खाके खंजर बिछुवे खमदार हुये ॥ और मिजगांसे तीरे पैकां नश्तर पुरकार हुये ॥

शेर–चश्मसे पैदा हुवा नरगिस हरेक गुलजारमें ॥
औ दो बीनासे अलिफ खींचा गया हरकारमें ॥
है वह जलवा कुदरती दोनों तेरे रुखसारमें ॥
जिससे रोशन चांद औ सूरज हैं इस संसारमें ॥

पानकी रंगत पाकर दंदां गोहरसे जब लाल हुये ॥ लाले बदक्शां-सेभी बेहतर० ॥ १ ॥

जबांसे पैदा कुरां हुआ और अक्लसे इल्म हजार हुये ॥ चाहे जकनूसे चाहके दिलमें खुद बखुद गार हुये ॥ गलेसे बनी सुराही गुल सब तेरे गलेके हार हुये ॥ हुस्नसे तेरे परी पैकर बनकर तय्यार हुये ॥

शैर–तेरे सीनेकी सफाईसे सफाई होगई ॥
ताकते बाजूसे अब ताकत सवाई होगई ॥
हाथसे तेरे सखावतकी सखाई होगई ॥
पंजए मरजांसे लग लाले हिनाई होगई ॥

देखके रंगी नाखूनोंको शरमिन्दा तब लाल हुये ॥ लाले बदक्शांसेभी बेहतर० ॥ २ ॥

शिकमसे नर्मी बनी कमरसे पोशीदा सब हाल हुये ॥ और जानूसे तेरे दो नूरके थम्भ कमाल हुये ॥ क़दमसे सिजदा बना और पा छूनेको सात पताल हुये ॥ चालसे तेरी बन गये फील न वो बेचाल हुये ॥

शैर–कदसे तेरे अब तलक सर्वेचमन आबाद है ॥
और अदा तेरीसे आशकका सदा दिलशाद है ॥
नाजसे तेरे बनी अन्दाजकी बुनियाद है ॥
हर सरापेसे सरापा तेराही ईजाद है ॥

जो पत्थर तलवोंसे तेरे लग गये वह तो सब लाल हुये ॥ लाले बदक्शांसेभी बेहतर० ॥ ३ ॥

ठोकरसे तुझ जाना की लाखों मुर्दे उठ खडे हुए ॥ आपके पाये नक्श हैं मेरे दिलपर पडे हुये ॥ तेरी चञ्चलाहटसे सदमें वर्कके दिलपर बडे हुये ॥ कदमबोसीमें तेरी हम दिलो जानसे लडे हुये ॥

शेर–हक्कानीका कहना कुछ नहीं आसान है ॥
यह सखुन समझे वही जो आशके मस्तान है ॥
देवीसिंहकी शायरीपर जीवो जां कुर्बान है ॥
जिसके हर नुकतेके ऊपर हर शख्सका ध्यान है ॥

बनारसोके खूने अश्क सब टपकके यार वे लाल हुये ॥ लाले बदक्शांसेभी बेहतर० ॥ ४ ॥

आपको भूल जाय परमेश्वरको याद रक्खे–बहर लंगडी ।

भूल गये हम अपनेको भूले तेरी तसवीर नहीं ॥ तीर इश्कका लगा वोह तीरके कोई तीर नहीं ॥ तेरे इश्कमें हुआ गदा मुझसा तो कोई फकीर नहीं ॥ वोः रुतबा है गदाके सानी शाह वजीर नहीं ॥ क्या कुसूर है मेरा जो मैं तेरा दामनगीर नहीं ॥ ऐसी प्यारे करी हमने तेरी तकसीर नहीं ॥ सरको झुकाया मैंने क्यों मारी तूने समशीर नहीं ॥ तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥ १ ॥

तेरे हुस्नके रुतबेको कुछ पाती लैला हीर नहीं ॥ गजब है तेरे बोल ऐसी तो शक्कर शीर नहीं ॥ है तो प्याला जहर इश्कका ये कुछ मीठी खीर नहीं ॥ पिये जो इसको रहे फिर उसका दिल दिलगीर नहीं ॥ पडे इश्कके जख्म मेरे दिलसे जाती यः पीर नहीं ॥ तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥ २ ॥

जो आशक हो गया तेरा वो कभी हुआ गमगीर नहीं ॥ इश्क न जिसने किया वो पहुँचा तेरे तीर नहीं ॥ तेरे दरकी मिले खाक मुझको चहिये अकसीर नहीं ॥ अब तो प्यारे तेरे बिन दिलको होता धीर नहीं ॥ हाथ मले जर्राह कर सकें कुछ मेरी तदबीर नहीं ॥ तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥ ३ ॥

सौदाई होगया जहांमें कहीं रही तौकीर नहीं ॥ कहे देवीसिंह तेरे आगे तो मैं फकीर नहीं ॥ कहींपर वोढे शाल दुशाले कहीं बदनपर चीर नहीं ॥ बनारसी यों कहे तुझको पाये वे पीर नहीं ॥ तुही एक है अमीर प्यारे तुझसा कोई मीर नहीं ॥ तीर इश्कका लगा वोः तीर० ॥४॥

खुदाकी जुल्फ और रुख दोनोंकी तारीफ–बहर लंगडी ।

काकुल पुर खम आरिज रोशन दोनोंको क्या यार लिखूं ॥ मार

जुलफको औ रुखको हरदम शोले मार लिखूं ॥ निसबत है ये बेजा गरचे मूजी पुरे शरार लिखूं ॥ दाम हुआ काम जुलफका रुखको हुमा इजहार लिखूं ॥ अच्छी नहीं है येभी तशभी क्या तायर परदार लिखूं ॥ समबुले तर मैं जुलफको बरगे समन रुखसार लिखूं ॥ ये सबजे हैं जमींके इनको होके क्यों लाचार लिखूं ॥ मार जुलफको० ॥ १ ॥

काकुलको मैं काली घटा औ रुखको बर्क आसार लिखूं ॥ घटाके निस्बत न इनसे दूं न बर्क बेकार लिखूं ॥ उसको तो जुलमात लिखूं और है वां उसे हरबार लिखूं ॥ वो तो पुरखम् नहीं औ रवां न यों जिनहार लिखूं ॥ काकुलको मैं लैल लिखूं आरिजके तईं निहार लिखूं ॥ मार जुलफको० ॥ २ ॥

गरदिशमें लैलो निहार है कहां तलक दिलदार लिखूं ॥ उसको रैहां औ उसको सुनिये लाले जार लिखूं ॥ तशभी सब उससे हैरां पुर दाग हैं वो क्या खार लिखूं ॥ रुखको कुरां बिरहमन काकुलको जुन्नार लिखूं ॥ इसमें झगड़ा हिंदू मुसलमां है गा क्या इसरार लिखूं ॥ मार जुलफको० ॥ ३ ॥

रुखको हरदम शमये रोशन काकुलको धुंआंधार लिखूं ॥ येभी गलत है और तशभी इसको यकबार लिखूं ॥ उसको मौजे बहर लिखूं उसे आईना बेदार लिखूं ॥ मौज न यकजा आइना हैरां ये क्या शार लिखूं ॥ जुलफ पुबेदा बनारसी रुख नूरे हक गुलजार लिखूं ॥ मार जुलफको० ॥ ४ ॥

सनमके जुलफकी तारीफ—बहर लंगडी ।

नाजो अदासे चला नाजनीं दो जुलफें लटका लटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ॥ देख तमाशा उन जुलफोंका फँसा दाममें कुल आलम् ॥ पेंचमें उसके पडा है यारो ये बिलकुल आलम् ॥ ऐसा बांधा खैंच जुलफमें मचा रहा है गुल आलम् ॥

उसके फन्दसे कहो अब क्योंकर जाये खुल आलम् ॥ नशेमें है शरशार पीके गेसू ये जहरका मुल आलम् ॥ हुआ दिवाना देखकर उसकी वो काकुल आलम् ॥ फेरमें जुल्फोंके फिरता है कुल जहान भटका भटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥ १ ॥

गदा अम्बिआ शाह औलिया और जो जुल्फ देखे गर दूं ॥ महकसे उसकी होवें सब मस्त और आये दिलमें जुनूं ॥ जुल्फ मो अम्बरी देखके आलम आशक हो गया गूना गूं ॥ लाम कहूं मैं या इनको लामकानका अलिफ लिखूं ॥ जिस दम् उसने बाल मरोडे लाखों अफई-का हुआ खूं ॥ सबके जहरको निचोडा क्या ताकत करै कोई चूं ॥ कालेने सरको पटका जिस दम उसने लटको झटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥ २ ॥

हिला हिलाके जुल्फ दुता कितनोंके तईं हलाल किया ॥ मार मारके मार सदहाको हाल बेहाल किया ॥ मशरकसे मगरिबतक उसने अजब जुल्फका जाल किया ॥ उसके बीचमें डालकर कितनोंका पैमाल किया ॥ जिस दम उसने जुल्फ बनाके टेढा बांका बाल किया ॥ कालभी उसको देखकर डरा औ अपना काल किया ॥ फटकारा जब जुल्फको उसने कोई सामने नहिं फटका ॥ लटका आलम दिखाया० ॥ ३ ॥

दोनों रुखसारोंके ऊपर लट लटकी घुंघरवाली ॥ गोया माहके गिर्द घिर आई घटा काली काली ॥ छिटकाके जब जुल्फ सनमने इधर उधर रुखपर डाली ॥ बयां क्या करूं बनाई अजब वो कुदरतकी जाली ॥ देवीसिंहके छन्द रंगीले और सदा भोली भाली ॥ सुनेसे जिसके हुई हरएक शायरको खुशियाली ॥ मतलब है तौहीद जुल्फमें और मारफतका खटका ॥ लटका आलम दिखाया जब उसने० ॥४॥

दरख्त जवाहिरातका मतलब तौहीद—बहर खडी ।

तुख्म लाल याकूत कि टहनी वर्ग जमुर्रद मोती गुल ॥ फल

लटके मणियोंके जिसमें जो देखे ले ले बिलकुल ॥ शबनम है इल्मास कि उसके वर्ग वर्गपर पडी हुई ॥ हरेक शाख कुन्दन और नीलमसे हैं उसकी जडी हुई ॥ जिसके हाथमें उस दरख्तकी एकभी या रब छडी हुई ॥ साथ बादशाहतसेभी वो कीमत उसकी बडी हुई ॥ उस दरख्तके मेवेसे हरदम टपके तौहीद कि मुल ॥ फल लटके मणियोंके जिस० ॥ १ ॥

बनी मुरस्सेकी जमीन और फोवारे बिल्लूरके हैं ॥ उस दरख्तके ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरके हैं ॥ फुलवी है पारसकी उसमें रखवाले सब हूरके हैं ॥ वो दरख्त नजदीक है उसके खरीदार सब दूरके हैं ॥ सौदा उनसे बने वहांपर करे न जो कोई शोरो गुल ॥ फल लटके मणियोंके जिसमें ० ॥ २ ॥

उस दरख्तको हमने तो आबे हयातसे सींचा है ॥ बडी मशक्कत करी है अपनी करामातसे सींचा है ॥ किसीसे कुछ नहीं काम लिया अपनीही जातसे सींचा है ॥ क्या कोई जानेगा इसको के कौन घातसे सींचा है ॥ हुआ वो जब तैयार तो सैदा बना मेरा ये दिल बुलबुल ॥ फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥ ३ ॥

उस दरख्तकी सायामें हम टांग पसारे सोते हैं ॥ अगरचे जायें कहीं तो फिर हम उसी तुरबको धोते हैं ॥ जहांपर अपना दिल चाहे वैसेही शजर सब होते हैं ॥ बनारसी ये कहेके उसपर कुरान पढते तोते हैं ॥ उस दरख्तकी हवा लगे तो जिगरकी आंखें जायें खुल ॥ फल लटके मणियोंके जिसमें० ॥ ४ ॥

हाल फकीरीका सच्चा—बहर डेवढी, राग सोरठा।

फकीरी खुदाको प्यारी है ॥ अमीरी कौन बिचारी है ॥ बदनपर खाक है सो अकसीर ॥ फकीरोंकी है यही जागीर ॥ हाथ बांधे खडे रहें अमीर ॥ बादशा हो या होय वजीर ॥ सदा ये सच्च हमारी है ॥ गदाकी खुदासे यारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥ १ ॥

हैं इनका नाम सुनो दुरवेश ॥ कोई नहीं पाये इनसे पेश ॥ खुदासे मिले ये रहैं हमेश ॥ कोई नहिं जाने इनका भेश ॥ कभी गिरियां ओ जारी है ॥ कभी चश्मोंमें खुमारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥२॥

है इनका रुतबा बहुत बलन्द ॥ खुदाके तईं यह हुआ पसन्द ॥ पादशासेभी ये बने दुचन्द ॥ इन्हें मत बुरा कहो हरचन्द ॥ इनकी दिलपर असवारी है ॥ ऐसी नहिं कहीं तयारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥ ३ ॥

चौथडे शालसे हैं आला ॥ चश्म हरतालसे हैं आला ॥ चनेभी दालसे हैं आला ॥ चलन हरचालसे है आला ॥ जख्म जो जिगरपर कारी है ॥ वही दिलपर गुलजारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥ ४॥

पांवमें पडा जो है छाला ॥ वोःभी मोतियोंसे है आला ॥ हाथमें फूटासा प्याला ॥ जामें जमशेदसेभी बाला ॥ अगर कोई हफ्त हजारी है ॥ वोःभी इनकाही भिखारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥ ५ ॥

मकां लामकां फकीरोंका ॥ निशां बे निशां फकीरोंका ॥ फख्र है निहां फकीरोंका ॥ खुदा है इमां फकीरोंका ॥ ताकते सब्र वोः भारी है ॥ मौततक जिनसे हारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥ ६ ॥

बढ गये बाल तो क्या परवा ॥ उतर गई खाल तो क्या परवा ॥ आ गया माल तो क्या परवा ॥ हुये कङ्गाल तो क्या परवा ॥ खुदा तू जनावे बारी है ॥ काशीगिरिको यादगारी है ॥ फकीरी खुदाको प्यारी है० ॥ ७ ॥

तीनों अवस्थाका हाल अव्वल दोयम सोयम-बहर लंगडी ।

बहशतने लाखों बातें बेहूदा बकवाई मुझको ॥ माशूकोंमें वहां अब नजर पडा सांई मुझको ॥ अव्वल तो मैं उसके गममें जार जार

रोया यकबार ॥ अश्ककी खाडियां देखकर शरमाया गौहरका हार ॥ बेताबीने किया मुझे बेचैन करी मैं बहुत पुकार ॥ या हकताला देखिये किस दिन यह टूटेगा तार ॥ आंखें भर भरके कहती ये दांई और वाई मुझको ॥ माशूकोंमें वही० ॥ १ ॥

दोयम मुझको हुआ इश्क दिलमें शोचा मैं आशक हूं ॥ अजब है मेरा वही माशूक बना जो गूंना गूं ॥ हरयकसे पूंछा मैंने जो इश्कमें थे आशक वे चूं ॥ कोई न बाकी रहा अब क्या लैला और क्या मजनूं ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें सुनवाई मुझको ॥ माशूकोंमें० ॥ २ ॥

सोयम हमने अपने दिलको समझाया करके हुशियार ॥ तू क्यों गाफिल हुआ चल देख तेरा वह कहां है यार ॥ दिलने मुझसे कहा मुझे क्या देर है तू हो जल्द तयार ॥ मेरा तेरा सङ्ग है चलो देखिये वोः गुलजार ॥ देख पडी उस जापर यार अपनेकी परछांई मुझको ॥ माशूकोंमें वही० ॥ ३ ॥

आखिरको गफलतका परदा खुला मिला अपना महबूब ॥ कहे देवीसिंह मेरा वोः खूबा है खूबोंमें खूब ॥ बनारसी ये कहे इश्कके दरियामें गये लाखों डूब ॥ मैंने उसमें तरकर पाया वह अपना असलूब ॥ होकरके लाचार छोड गई गफलतकी झांई मुझको ॥ माशूकोंमें० ॥४॥

शतरंज इश्क की—बहर खडी।

बाजी खेली इश्ककी हमने जरा किया शहपञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरञ्ज नहीं ॥ अक्लका तो कुछ जोर नहीं जो घोडोंसे चलकर जीते ॥ फीलकी क्या ताकत है जो इस बाजीको बलकर जीते ॥ यह तो इश्कका दल है इसको क्या पैदल दलकर जीते ॥ रुखका रुख फिर जाय न वह इस बाजीको छलकर जीते ॥ मेरे सिवा कोई और जहांमें उठा सके यह रञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई० ॥ १ ॥

वजीरका क्या बकर इश्कमें पादशाह तक हुये गदा ॥ जो के चाल चूका वह मारा गया मेरी है यही सदा ॥ हमने अपने सरकी बाजी लगाके इसमें दांव बदा ॥ जान बेचकर जो खेला वह जीता उसको मिला खुदा ॥ वो क्या करेगा मात के जिससे काबूमें है पञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई० ॥ २ ॥

अरदबमें नहिं आया बादशाहकी अपने ली चोट बचा ॥ उसीने तोडा किला जहांमें कोई न उससे कोट बचा ॥ तिरछे होकर चलोगे तो क्यों करके सकोगे गोट बचा ॥ उसका माल लुट गया रखी थी जिसने जरकी पोट बचा ॥ मुझे किस्त नहिं लगी के मैंने जमा किया कोई गञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई० ॥ ३ ॥

ये शतरञ्ज इश्ककी इसको खेले वही सयाना है ॥ वडे बडे हो गये जिन्न नहीं भेद किसीने जाना है ॥ ये है इश्कका ख्याल सदा आशकोंके मनमें माना है ॥ बनारसी जीते जी अब तो निर्गुण बीच समाना है ॥ रामकृष्णके शीरीं सखुनको पाये शीर बिरञ्ज नहीं ॥ खेल ले हर कोई जिसको यह वोः बाजी शतरंज नहीं ॥ ४ ॥

सिफत खुदाके चेहरेकी जिसमें कुलकुरान—बहर खडी।

कुरानकी आयतें हम उसके रुख नायाबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं ॥ अलिफको हम नहीं लिखेंगे दोनों उस गुलरूकी लिखते हैं ॥ बिसमिल्लाको छोड सिफत उसके अबरूकी लिखते हैं ॥ लामसे कुछ नाहिं काम झलक उसके गेसूकी लिखते हैं ॥ ऐनको करके अलग आंख हम उस महरूकी लिखते हैं ॥ तेको तर्ककर चीने जबीं डिलकी किताबसे लिखते हैं ॥ लाजवाब उसको० ॥ १ ॥

नुक्तोंको कर अलग हम उसके रुखे खालको लिखते हैं ॥ हरेक इस्मसे बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं ॥ कोई लिखें से जीमू

है खे कोई दाल जालको लिखते हैं ॥ हम इनको गये भूल सिर्फ उस के जमालको लिखते हैं ॥ अरबी फारसी हिन्दी तुरकी सब शिताबसे लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको० ॥ २ ॥

कुल कलामुल्लः हम उसके सारे खतको लिखते हैं ॥ और मायने कुरानके उसकी उलफतको लिखते हैं ॥ जेर जबरसे जबरदस्त उसकी ताकतको लिखते हैं ॥ पेशसे बेहतर पेशानी उसकी किसमतको लिखते हैं ॥ रुखे रोशन आला हम उसका महताबसे लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको० ॥ ३ ॥

कलमेसे बढकर अपने दिलबरकी बातको लिखते हैं ॥ मुसलमान हिन्दुओंसे आला उसकी जातको लिखते हैं ॥ वो हैंगे नादार जो उसकी जायदादको लिखते हैं ॥ देवीसिंह दिलपर उसकी हर करामातको लिखते हैं ॥ बनारसी तो हिसाब उसका बे हिसाबसे लिखते हैं ॥ लाजबाब उसको० ॥ ४ ॥

जीवब्रह्मकी एकतार्थी–बहर खडी।

हम हम हममें हम हम दममें दममें जलवा आलमका ॥ आलममें है सनम सनममें आलम है उस जालमका ॥ दिलमें दिलबर दिलबरमें दिल दिलमें उसकी याद रहे ॥ यादमें अशरत अशरतमें मैं मैंमें नशा इजाद रहे ॥ नशेमें मस्ती मस्तीमें वहदत वहदतमें दिलशाद रहे ॥ शादमें शोर औ शोरमें शोहरत शोहरतमें आबाद रहे ॥ आबादीमें आदम आदममें दम दममें दम दमका ॥ आलममें है सनम० ॥ १ ॥

आशकमें है इश्क इश्कमें नूर नूरमें हकताला ॥ हकतालामें रहम रहममें करम करममें उजियाला ॥ उजियालेमें ताब ताबमें माह माहमें है हाला ॥ हालेमें अखतर अखतरमें चमक चमकमें छब आला ॥ आलामें वोः खूब खूबमें रूप रूपमें रंग चमका ॥ आलममें० ॥ २ ॥

शौकमें उसके जौक जौकमें रूह रूहमें रूहानी ॥ रूहानीमें

उन्स उन्समें प्यार प्यारमें जिन्दगानी ॥ जिन्दगानीमें जान जानमें जाना जानामें जानी ॥ जानीमें वोः हुस्न हुस्नमें जेब जेबमें लासानी ॥ लासानीमें सिफत सिफतमें लामकान घर हाकमका ॥ आलम० ॥३॥

चाहमें मन औ मनमें चरचा चरचेमें उसकी कुदरत ॥ कुदरतमें है बाग बागमें चमन चमनमें गुल खिलकत ॥ खिलकतमें खुशबू खुशबूमें खिला खिलेमें है रंगत ॥ रंगतमें रस रसमें अमृत अमृतमें पाई लज्जत ॥ लज्जतमें तौहीद देवीसिंह कहे ख्याल सुन हम दमका ॥ आलममें हैं सनम० ॥ ४ ॥

ख्याल खुदा हममें और हम खुदामें—बहर लंगडी।

दिलमें दिलबर दिलबरमें दिल सनममें हम और हममें सनम ॥ दम हम दममें मेरा इस दममें है मेरा हम दम ॥ जान मेरी जानामें है वोः जाना मेरी जानमें है ॥ प्राण हैं उसमें मेरे वोः प्यारा मेरे प्राणमें है ॥ तनो बदन सब उसमें है वोः इस तनके दरम्यानमें है ॥ हरक आन है यारमें यार मेरा हर आनमें है ॥ मैं उसमें हूं रमा वोः मेरे रूम रूममें रहा है रम ॥ दम हम दममें० ॥ १ ॥

गुल गुलशन सब उसमें है वोः गुल हर गुल गुलशनमें है ॥ फबन है ऐसी फबी उसमें के वोः हर फबनमें है ॥ गुंचे दहन सब उसीमें हैं वोः हरएक गुंचे दहनमें है ॥ चमन हुस्नका है उसमें औ वोः हुस्नके चमनमें है ॥ मेरे मनमें बसा है वोः उसके मनमें बस रहे हैं हम ॥ दम हम दममें० ॥ २ ॥

कुल जहान रोशन उसमें वोः रोशन आलम कुलमें है ॥ भरी मुहब्बतकी मुल उसमें और वोः उस मुलमें है ॥ काकुल लटकी दिलमें मेरे ये दिल उसकी काकुलमें है ॥ आशके बुलबुल हैं उस गुलमें वोः गुल बुलबुलमें है ॥ कुल आलममें नूर उसीका उसके नूरमें कुल आलम ॥ दम हम दममें० ॥ ३ ॥

नूरमें उसकी पेशानी नूर उसकी पेशानीमें है॥ जिगरमें जानी मेरा ये जिगर मेरा जानीमें है॥ जिन्दगानी उसमें मेरी वोः मेरी जिन्दगानीमें है॥ नूरानी है सब उसमें वोः हर नूरानीमें है॥ बनारसी कहे इसमें फर्क नहीं मुझको अपने सरकी कसम॥ दम हम०॥ ४॥

खुदाकी तस्वीर अपने दिल आईनेमें खींचना—बहर खडी।

करे अगर मन मुसौवरी तो यारकी अब तस्वीरको खैंच॥ सानी उसकी तू बनजा दिलदारकी अब तस्वीरको खैंच॥ जैसे आबसे हुबाब बन जाय पानीकी तस्वीरको खैंच॥ फिर पानी पानी कर ले उस जानीकी तस्वीरको खैंच॥ नूर वोही बनता है जो ले नूरानीकी तस्वीरको खैंच॥ हक भी लेता है आशके हक्कानीकी तस्वीरको खैंच॥ बाग बाग हो दिल तेरा गुलजारकी अब तस्वीरको खैंच॥ सानी उसकी तू बन जा०॥ १॥

शमयसे हुई शमय रोशन जब उस लौकी तस्वीरको खैंच॥ तू भी रोशन खुदासे हो अब उस लौकी तस्वीरको खैंच॥ फिर पायेगा ओ नादां कब उस लौकी तस्वीरको खैंच॥ इस जामें से खिचेगी जब तब उस लौकी तस्वीरको खैंच॥ शोलय नार हुआ रोशन उस नारकी अब तस्वीरको खैंच॥ सानी उसकी तू बन जा०॥ २॥

बनी मूर्त गिलकी गुल हुई उस गिलकी तस्वीरको खैंच॥ टूटी तो मिट्टी हो गई गिलके दिलकी तस्वीरको खैंच॥ पत्थर शिल हो जाय जो लेवे उस शिलकी तस्वीरको खैंच॥ कत्ल होके मिल जा उसमें उस कातिलकी तस्वीरको खैंच॥ देख ले तू इस पारसे अय उस पारकी अब तस्वीरको खैंच॥ सानी उसकी तू बन०॥ ३॥

कर दिलको आइना औ इसमें ले उसकी तस्वीरको खैंच॥ बताओ इसके सिवाय किसमें ले उसकी तस्वीरको खैंच॥ जिस्मसे मत

रख काम तू जिसमें ले उसकी तस्वीरको खैंच ॥ बनारसी अब तू जिस तिसमें ले उसकी तस्वीरको खैंच ॥ फारगे गम हो जा ऐ दिल गफ्फारकी अब तस्वीरको खैंच ॥ सानी उसकी तू बन जा० ॥ ४ ॥

नसीहत बंदेको समझानेकी—बहर छोटी।

तू जिस्म जिगर औ जान नहीं जाना ना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा जो है तू दाना ॥ किसने तुझको बांधा है बना जो बंदा ॥ और कौन पेंचका पडा है तुझपर फंदा ॥ तू अपने आपको देख न हो मत मंदा ॥ है कौनसी वोः बदबू जो हुआ तू गंदा ॥ गर तूने अपने तईं जिस्म नहीं जाना ॥ फिर क्यों नहीं कहता खुदा० ॥ १ ॥

ये हाथ पांव औ सरभी नहीं कुछ तू है ॥ सीना औ बाजू पर भी नहीं कुछ तू हैं ॥ जनखा औरत औ नरभी नहीं कुछ तू है ॥ जिन् देव परी पैकरभी नहीं कुछ तू है ॥ तू अपने बीचमें आपी आप समाना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥ २ ॥

रोना औ तडपना आह नहीं कुछ तू है ॥ मुँह जबां चश्म वल्लाह नहीं कुछ तू है ॥ काबा किबला दर्गाह नहीं कुछ तू है ॥ औ हरामकीभी राह नहीं कुछ तू है ॥ मसजिदभी नहीं तू बना न है बुतखाना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥ ३ ॥

तकदीर और पेशानीभी तू नहीं है ॥ आतिश औ हवा गिल पानीभी तू नहीं है ॥ अरवाह और गिलमानीभी तू नहीं है ॥ इस जिस्मकी जरा निशानीभी तू नहीं है ॥ ये बनारसीका समझ सखुन मस्ताना ॥ फिर क्यों नहिं कहता खुदा० ॥ ४ ॥

ख्याल होलीका इश्क मार्फत—बहर छोटी।

आतेही इश्कने यहां मचा दी होली ॥ वोः आतिश और तन फूस जलादी होली ॥ चश्मोंसे बरसने लगा खूने रंग पानी ॥ और इश्कभी करने लगा वोः ऐंचातानी ॥ मैं हँसूं तो गाली दे मुझे दिलजानी ॥ ओ

लोग बजावें ताली सुनो कहानी ॥ नहिं देखी थी सो मुझे दिखादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस जलादी होली ॥ १ ॥

गमके गुलालने ऐसी धूल उडाई ॥ अब सिवा खुदाके कुछ नहिं देय दिखाई ॥ तन वदनमें जीतेही जी आग लगाई ॥ जो होनी थी सो होली मेरे भाई ॥ शावाश इश्कने खूब लगादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥ २ ॥

जिस वक्त वोः आया दिलमें इश्क रँगीला ॥ था चेहरेका रँग लाल सो पड गया पीला ॥ औ जामा जो था खिचा वो हो गया ढीला ॥ तिसपरभी दोस्तोंने कर दिया यह गीला ॥ हजरते इश्कने मुझे खिलादी होली ॥ वो आतिश औ तन फूस० ॥ ३ ॥

दिल तडप तडपके अपना नाच दिखाये ॥ वोः इश्क न अपने कुछ खातिरमें लाये ॥ दिल आह आह कर शोर औ धूम मचाये ॥ पर इश्क न इसकी मुतलक सुने सुनाये ॥ लो सुनो दोस्तो तुम्हें सुना दी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस० ॥ ४ ॥

थक गये इश्कको कबीर गाते गाते ॥ जिसको देखा वोः आये ढोल बजाते ॥ कोइ सरपर डाले खाक कोई चिल्लाते ॥ कहें बनारसी हम इश्कमें हैं मदमाते ॥ जो हक कुल्लः थी मैंने गादी होली ॥ वोः आतिश औ तन फूस जलादी होली ॥ ५ ॥

मतलब तौहीद खुदाका सरापा-रंगत खडी।

जितने दिन है इस दुनियामें किसीका नहिं मजहब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ बुतखाना बनवाया किसीने मसजिदकोभी चुनवाया ॥ अपने अपने दीनका देहरा सबने सबको दिखलाया ॥ उस मालिकको भूल गये जिससे ये नर जामा पाया ॥ इसमें उसको नहिं देखा है जिसको ये कंचन काया ॥ मैं अपने तनमें देखों हर घडी कि मेरा रब है वो ॥ सबमें है और अलग

है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥१॥ हिन्दू तो बुतखानेमें पत्थरसे टकराते सरको ॥ मुसलमान मजजिदमें गिरके सिजदा करते हैदरको ॥ और सुनो अंगरेज बडा कहते अपने गिरजा घरको ॥ इसी तरहसे हरेक भूले पर नहिं पाया उस हरको ॥ मुझे इसीमें मिला और जा मिल किसीको कब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ २ ॥ कोई ढूंढता पोथीमें और कोई देखता किताबमें ॥ लाख तरहसे देखो पर वो आता है कब हिसाबमें ॥ उसे जो देखा चाहे तो वो है इस जामे नयाबमें ॥ इसीके भीतर देखे तो फिर पहुँचे आलीजनाबमें ॥ बहुत सख्त है मंजिल ये औ राह बडी बेढब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ ३ ॥ बेसमझी इस कदर जहांमें है कि खुदाको समझें गैर ॥ सरेने बांधी मुश्कें और तौहीदसे रखते बिलकुल बैर ॥ करें फकीरोंसे झगडा किस तरहसे उनका होगा खैर ॥ अपना आपा नहीं देखें है जिसमें चौदा तबककी सैर ॥ जैसा देखो वैसा दीखे दिल आईना हलब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥४॥ सुनो सरापा उसका तो वह जुल्फमें उसके खमभी है ॥ नागिनभी हैं सांपभी हैं अमृतभी है और समभी है ॥ माथेपर है मेहर तसद्दुक चश्ममें जामे जमभी हैं ॥ अबरूमें जुल्फिकार है शमशीर और तेगे दूदमभी है ॥ रहम करे तो रहीम है और कहर करे तो गजब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥५॥ मिजेमें उसके तीर भरे हैं और कारी नश्तरभी है ॥ चितवनमें है चोट दूरकी जादूभी और सहरभी है ॥ बीनीमें अल्लाह अलिफ है इल्मभी है और हुनरभी है ॥ तडफन बिजुलीमें ऐसी नथुनोंकी फडक इस कदरभी है ॥ दहनमें गुंचालाल लबे शीरींभी और बेलब है वो ॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो ॥ ६ ॥ दंदामें मोती हैं बेबहा और हीरोंकी कनीभी हैं ॥ कहूं मैं अपनी जबांसे

क्या क्या जो जो उसमें मनीभी हैं॥ उन्हींमें है खान ये खुदा और कहीं कहींपर अनीभी हैं॥ अगर्चे पीसें दांत तो वो इस दुनिया ऊपर गनीभी हैं॥ नाम मेरे दिलबरके लाखों इसीसे तो बेलकब है वो॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥ ७॥ जबांसे उसकी जो निकले वो सच्च है ऐसी जबां है वो॥ जकनमें उसकी चाहसे डूबा यूसुफ ऐसा कुआं है वो॥ सीनेमें आईना साफ बाजुओंमें ताकत तमा है वो॥ पंजेमें पंजये अली है और पंजे मरजां है वो॥ नाखूनोंमें हिलाल है और शिकममें नर्मी सब है वो॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥ ८॥ नाफमें है वो भमरके चक्करमें आये आशकका दिल॥ कमरमें तो है राजे निहों राज वो हुआ किसको हासिल॥ जानूमें बिल्लूरकी शाखें नूर पिंडलियोंमें कामिल॥ कदम कदम पर नाजो करशमां आशकोंको करता बिस्मिल॥ जिस्मभी है बेजिस्मभी है क्या लिखूं कि कैसी छब है वो॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥ ९॥ हुये हजारों बली जहांमें लिखीं किताबें वह तौहीद॥ कह कहके थक गये सभी पर खतम हुई नहिं गुफ्ते शुनीद॥ कटाके सरको लिखीं मसनवी जान बेचकर पाया दीद॥ बनारसी रो रोके हुआ खुश तब हासिल हुई उसको ईद॥ कहना सुनना कुछ नहिं बनता मुझको तो एक सबब है वो॥ सबमें है और अलग है सबसे देखा मैंने अजब है वो॥ १०॥

ख्याल मार्फत तौहीद अपनेको पहिचानना-बहर शिकस्ता।

हुआ जो आनेसे अपने वाकिफ तो मैं अनलहक यों कह पुकारा॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा॥ अजब तमाशा ये देखा मैंने कि पारा पारा हुआ जो पारा॥ मिलाया उसको तो एक होकर मिला वो आपीसे अपना प्यारा॥ इसी तरहसे

जुदा मैं उससे हुआ मिला उसका फिर सहारा ॥ तो वस्ल होकर हुआ मैं एकता दुईसे मैंने लिया किनारा ॥

शेर–लड गई आंख वो मारा जो नजारा उससे ॥
दमबदम साफ अब होता है इशारा उससे ॥
छिपाके आंखमें मैं चुरा लिया उसको ॥
हुआ रोशन मेरी पुतलीका ये तारा उससे ॥

समझ तुम्हें गर हो तो समझ लो ये मन खुदा है सखुन हमारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका उसमें है क्या इजारा ॥ १ ॥ ये जिस्ममें दमदमा है दमका के एक दम है यहां गुजारा ॥ हुआ जो कोई वहांसे वाकिफ न उसको हरगिज किसीने मारा ॥ यहां तो मर गये मुफ्तमें कितने हुये सिकंदर वो शाह दारा ॥ रहा वो कायम मरा न हरगिज कि जिसने छोडा बलख बुखारा ॥

शेर–किसीने उसके लिये तखत हजारा छोडा ॥
किसीने मालो महल मुल्क ये सारा छोडा ॥
मैं तुमसे पूंछता हूं तुमने यहां क्या छोडा ॥
ये सुनके मर गये अश्कोंका तरारा छोडा ॥

कई मर्तबा कहके अनलहक ये सरको मैंने दिया खुदारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥ जो समझ आई कुछ अपने ताईं तो मैंने फिर ऐसाही विचारा ॥ मैं जिस्म मैं तो नहीं हौं मुतलक ओ नूर हूं जिसका कुल पसारा ॥ किया ये दिलके तईं आइना और नक्शा उसका यहां उतारा ॥ लगा वो कहने कि मैं खुदा हूं कहो फिर इसमें क्या मेरा चारा ॥

शेर–जामये वहदत जो दिया उसने दुबारा मुझको ॥
दिखाया आलमे मस्तीका शरारा मुझको ॥

शराब वस्लकी पीतेही मैं बेहोश हुआ ॥
सरहकी बात नहीं शेख गवारा मुझको ॥

मैं गमसे दूर और जहांमें एकता और लामकांमें रहूं विचारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥ ये पेट भर भरके तुमने अपना बनाया है दुनियामें पेटारा ॥ अगर्चे भूखे रहो तो पाओ अजीब लज्जतका वो छोहारा ॥ न उसमें गुठली न जिसमें छिलका न वो मुलायम न वो करारा ॥ भरा सारासर है उसमें अमृत वो खाये जो है खुदाका प्यारा ॥

शेर–शिकमको तुमने जहांमें न जो मारा होगा ॥
किस तरहसे वो खुदा यार तुम्हारा होगा ॥
हाले तौहीद न समझे तो खिसारा होगा ॥
मौतके बादभी मर मरके तुम्हारा होगा ॥

बनारसी कहता मैं वही हूं ये जिस्म मैंने उसीपे वारा ॥ तुम्हें जो मालूम हो कहो तुम किसीका इसमें है क्या इजारा ॥

ख्याल खुदासे जुदा न होनेका–बहर शिकस्ता।

जुदा न तुझसे हुआ मैं हरगिज न मुझसे तेरी जुदाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥ औ फौज मौजे बहर जो उलफतकी लहर इस दिलपर आई होगी ॥ तो चश्मके चश्मेसे वो दरिया बहाके दुनिया बहाई होगी ॥ औ अश्क गौहरकी माला मैंने गलेमें अपने पिन्हाई होगी ॥ सदफकी तो आगे मेरेही आंखोंके वो कैसी बुराई होगी ॥

शेर–दीदये तरसे मेरे ऐसी तराई होगी ॥
चर्ख पर बारिसे मौसमकी चढाई होगी ॥
जिक्र रोनेका जो आये तो मैं तूफां कर दूं ॥
न रोउँ इतना तो फिर मेरी हँसाई होगी ॥

न अब तकब्बुर रहा दुई का दुईभी देती दोहाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥ जो दस्तमें मेरे उस सनमकी ओ पहुँची आकर कलाई होगी ॥ तो हाथ मलते ओ होंगे दुश्मन कहां फिर उनको कलाई होगी ॥ औ हाथ डाले गलेमें मेरे अदा जो उसने दिखाई होगी ॥ तो बाजू टूटेंगे वो रकीबोंके और न उनकी दवाई होगी ॥

शैर—आंख तुझसे जो किसीनेभी लडाई होगी ॥
तो फतेयाब इ्यां उसकी लडाई होगी ॥
देख तो उसको जरा खोलके चश्मे दिलको ॥
आंख फिर तुझसे किसीने न मिलाई होगी ॥

न दीनो मजहबका अब घमंड है तो क्यों न मेरी सफाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे इ्यां अब खुदाई होगी ॥ अगर्चे उस शमये नूरसे ह्यां किसीनेभी लौ लगाई होगी ॥ तो नाम रोशन उसीका होगा ओ बात उसकी बनाई होगी ॥ औ कूचये जाना कि किसीने करी अगर्चे गदाई होगी ॥ तो पादशाहतसेभी सल्तनत जहांमें उसकी सवाई होगी ॥

शैर—पास जबतकसे खुदा के न रसाई होगी ॥
रूबरू मौतके फिर उसकी हँसाई होगी ॥
अब कमां हाथ कजाके है निशानेसे बचो ॥
गोशये यारमें छिपनेसे रिहाई होगी ॥

कहाँ यहाँ जिस्मका गुरूर है ये मैंने शोहरत मचाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥ है राह उल्फतकी सख्त मुस्किल भला किसीने जो पाई होगी ॥ तो मंजिले जाना पर पहुँचके उतारी उसने थकाई होगी ॥ ऐ देवीसिंह अब ये रूह जिसकी खुदामें जाकर समाई होगी ॥ तो आना जाना न होगा वाँसे वो बात उसकी बनाई होगी ॥

शैर—बे वजह लावनी जिसने कहीं गाई होगी ॥
अपनी फिर आपही खाक उसने उडाई होगी ॥
हाले तौहीदसे वाकिफ जो हुआ एक हुआ ॥
बात उसको न दुईकी कभी भाई होगी ॥
बनारसीने सदा अनलहक खुदा या तुझको सुनाई होगी ॥ किया जो तूने खुदीसे बाहर तो मेरे ह्यां अब खुदाई होगी ॥

बागे बहिस्त औ बागे दुनिया दोनोंकी सिफत—बहर शिकस्ता।

ओ बागे जिन्नत ये बागे दुनिया है दोनों बागोंका एक माली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ वहां वो हूरें यहां ये परियां वहां मलक यां वशर जलाली ॥ वहां वो रिजवां यहां ये गुलची खुशी वहां है यहां बहाली ॥ वहां है तूबां यहां सनोबर झुकाई जिसने गुलोंकी डाली ॥ वहां अजायब हैं मुर्ग नगमां सरा यहां बुल-बुलें हैं आली ॥ किसीकी रंगत सफेद हैगी किसीकी जर्द और किसीकी काली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ वहां जो तसनीम सुल सबील है बनाई उम्मांकी हत्यां पनाली ॥ वहां मोहैया है जामे कौसर यहां है लालेकीभी पयाली ॥ वहां जो गुंचा शिगुल्फा ताजा भरी शिगुल्फोंसे हत्यां लबाली ॥ वहां जो सरसब्ज है शजर सब हरे यहां नख्ल है न खाली ॥ कोई शिगुल्फा तरी किसीपर कुबूद कोई किसीपै लाली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ वहां जो मेवे अजायब हैंगे तो फल यहां हैं लगे जमाली ॥ जो खास बातें वहां तो आम हैं सखुन यहां कुछ नहीं है जाली ॥ वहां जो सकले हैं सबकी नादिर तो सूरतें हैं ह्यां भोली भाली ॥ वहांके गुलसे खिजल जो लाला तो सांवलीसे यहां कलाली ॥ खिजां न उसके बहारको है न इसके गुलकों है पाय-

माली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये कि सब गुलोंमें है बू निराली ॥ हैं ऐसे पानीसे बाग सींचे हरे हुए गुलसमे जवाली ॥ ये कहते हैं देवी सिंह कुलसे वही है दोनों जहांका वाली ॥ जो अपनी दिखलाये शाने गुलको तो वो उठे बुलबुले नेहाली ॥ हरेक अदा है अजायब उसकी हरेक तरा है नई निकाली ॥ बनारसीका सखुन ये सच्चा और मार्फ-तकी है बोलाचाली ॥ अजब करश्मेके तुख्म बोये के सब गुलोंमें है बू निराली ॥

ख्याल तौहीद-बहर शिकस्ता।

सबाभी चलनेमें थर थराये न दिलको ताकत न ताब दमको ॥ भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ जहां फरिश्ताभी दम न मारे वहां कोई क्या धरे कदमको ॥ गुजर न माहो मेहरका मुतलक न बार है साहबे इसमको ॥ बुलंदी पस्ती दिखाइ उसने बनाया हस्सीको और अदमको ॥ सबोंसे रुतबा है उसका अफ-जल कहूं मैं क्या फजल औ करमको ॥ हजार बुलबुल करे इरादा गुलोंसे फेर अपने चश्मे नमको ॥ भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ वोही हुआ मौजूदे परिस्तां तेरी उसीसे गुले इरमको ॥ न जुल्फ हूरो परी कि पहुँचे हैं उसके काकुलके पेंच खमको ॥ कहींमें खाक और बादे आतिश कहीं पै जारी किया है जमको ॥ उसीसे अर्वा अनासार हैंगे वहम भूल हर गमो अलमको ॥ हरेक फरदे शबर खुदा हैं गवाह कहता हूं खा कसमको ॥ भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ इसी तमन्नामें हाथ मलते हैं जिनके कोई पहुँचा दे हमको ॥ बराये अल्लाह उसीके दरतक करेंगे क्या हम दरों दिरमको ॥ बरहमन और शेख उसीकी उलफतमें भूले बुतखानये हरमको ॥ औ रब्बे है वे चूं और चरावस न दख्ल कुछ वां है वेश कमको ॥ हो सुस्त जबरीलकाभी झहपर हजार उडे वो बता

हममको ॥ भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥ सरवे वहदतमें मस्त होंगे जो उसके समझे मजामें जमको ॥ जहां कि कैफियत उनको हासिल उसीके देखेसे भूले गमको ॥ समझते अमृतसेभी हैं बढके जो सादिक आशिक हैं उसके समको ॥ रहीम है वो करीम है वो बनारसी रोक ले कलमको ॥ मकान है लामकां उसीका तू याद रख दिलमें इस रकमको ॥ भला वहां किस तरहसे जाये और कौन पाये मेरे सनमको ॥

तकलीफमें घबराना नहीं चाहिये यह सच्चे आशकका काम है—बहर लंगडी।

जरा आह ना करी इश्कमें सब आफत भाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा कहीं नजर पडी खाई मुझको ॥ किसीने अपना संग दिया नहिं हम तो आप हैं अकेले ॥ जहां न कोई मिला उस जापै किये हमने मेले ॥ लाख वजहके सदमें औ गम सब अपने दिलपर झेले ॥ सरको काटके हथेलीपर रखके सरपर खेले ॥ बिन मुर्शिदके नहीं हैं हम और नहीं किसीके हैं चेले ॥ जिसे इश्कका मजा लेना हो वो हमसे ले ले ॥ इश्क बहुत मुश्किल है फिर आता ये नंगे पाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

और सुनो अहवाल इश्कमें कही पेहन बैठे जंजीर ॥ ऐसा फसाया यादमें उसकी ये दिल किया असीर ॥ देखके मेरा हाल शर्ममें आई शीरी लैला हीर ॥ मजनूं रांझा हुआ फरहाद बहुत सुनके गमगीर ॥ औरभी जो आशक थे उनको लगा मेरे वो गमका तीर ॥ लगे मचाने शोर ए आशक हैं कोई अजब फकीर ॥ जो आशक थे पाक उन्होंने बातें बतलाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

एक वक्त हुआ ऐसा इश्कमें यारो हम बीमार हुये ॥ बेतावीसे बात करनेकोभी दुशवार हुए ॥ गया तन बदन सुख जिगरपर लाख वज-

इके गार हुये ॥ मरहम लगाया तो उससे और जख्म पुरकार हुये ॥ बहुत दवाई करी मेरी वोह तबीब सब लाचार हुये ॥ मेरी सूरत देखकर जिन्देभी मुर्दार हुये ॥ मैं तो बिस्मिल रहा लगी नहीं लाखों वो दवाई मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा० ॥

यहां तलक होगया हाल तिसपर नहिं मैंने आह करी ॥ अपने दिलको किया मजबूत औ यह सल्लाह करी ॥ उस दिलबरका दीदार करनेकी इस दिलसे चाह करी ॥ और रास्ते छोडकर पाक इश्ककी राह करी ॥ देवीसिंहने उसके सिवा नहिं किसीकी कुछभी ख्वाह करी ॥ खुशी हुआ वोः तो उसने रहमकी भला निगाह करी ॥ बनारसी ये कहे इश्कने कर दिया गोसाईं मुझको ॥ कहीं चाहमें गिरा कहीं नजर पडी खाईं मुझको ॥

पानके खानेकी सिफत—बहर लंगडी।

पानके खातेही उस सनमके दहनमें क्या क्या रंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ एक रंगमें चार रंग जब हुये तो क्या क्या रंग खिला ॥ जिसने देखा उसीने कहा इन्हें क्या रंग मिला ॥ वो है जिला दांतोंमें किये तो जिलाकोभी देती है जिला ॥ चमक दमकसे तो जिसकी हरदम ये तडपे है दिला ॥

शैर—किसी जा पर तो उजलीसी है वो कुछ इनमें तैयारी ॥
किसी जापर तो सुर्खीने करी है क्या गुलेनारी ॥
किसी जापर तो सब्जीने वो है सब्जेकी जां मारी ॥
कहीं रंगत गुलाबी है गोया चारोंकी वां यारी ॥

देखके चारों रंग जवाहर लड लडके चौरंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ पहले पिया पानोंका लहू और पीछे किया आशकोंका खूं ॥ गजब हैं दंदां लिखे कोई क्या ताकत इनका चश्मको सब कहते हैं खूनी मैं इनको खूंखार लिखूं ॥ ये क्या घाट हैं खून करनेमें यही हैं अफलातूं ॥

शैर–अगर देखा जो तुम चाहो तो कोई तोफा गिलौरी लो ॥
हो जिस्में नूर मौलाका कहो उससे कि तुम खावो ॥
जो ओ खाये तो फिर उसके दहनको तुम जरा देखो ॥
करो टुकडे जिगर अपना न आशक हो तो आशक हो ॥

देखके इन दंदांका जौहर आशके जौहरी दंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ अजब तरहका तिलिस्म देखो उसके उस दन्दानमें है ॥ ये तो सफाई कहां हीरे मोतीकी खानमें है ॥ लाले बदक्शांमें क्या कीमत जो कुछ इनकी शानमें है ॥ कहां बिके ये बताओ बात ये किसके ध्यानमें है ॥

शैर–इन्हें परखे वही जौहरी हो जिसकी पाक बीनाई ॥
नजर नापाक करनेसे तो हो फिर उसकी रुसवाई ॥
खुदाके घरसे तो इज्जत उन्होंने इस कदर पाई ॥
इन्हींसे देख लो बिल्कुल है इस चेहरे कि जेबाई ॥

किया सितमपर सितम ये मुसक्याकरके जिस दम नंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजां औ जमुर्रद संग हुये ॥ ये दंदां हैं उसके जिसके माहो मेहर अखतर हैं बने ॥ आमाल अपने हुये वाला तो मेरे दिलगर हैं बने ॥ अब मुझको क्या कमी रही ये पास मेरे गौहर हैं बने ॥ लालभी अपने पास इल्मासकेभी जेवर हैं बने ॥

शैर–ये वो नग हैं हकीकत इनके आगे क्या नगीनेकी ॥
ये वो मीना हैं जिससे जेब हो दुनिया में मीनेकी ॥
खुदाने इनको तो रंगत वो दी है इस करीनेकी ॥
मिले लज्जत इन्हींसे तो भला खाने औ पीनेकी ॥

बनारसीको खुदाने बरब्से कभी न जरसे तंग हुये ॥ हीरे मोती लाल मरजाँ औ जमुर्रद संग हुये ॥

खुदाकी तारीफ जिस तरह कुरानमें लिखी है–बहर छोटी।

कायम है खुदा एकजा वोह न आये जाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ नहिं चले फिरे नहिं खाय न पीवे पानी ॥ नहिं घटे बढे है ज्योंका त्यों रब्बानी ॥ मैंने देखा आंखोंसे वह मेरा जानी ॥ ओ वहां है और मैं उसकी यहां निशानी ॥ जो वगैर देखे कहे वो बात कहानी ॥ देखे तो नूरमें मिले नूर नूरानी ॥ नहिं हिले न डोले बोले नहिं बतलाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ शोलये नूर कुछ उसके नहीं बदन है ॥ दिलजांसे मेरी उसकी लगी लगन है ॥ मैंनेभी यही समझा कि न मेरे तन है ॥ कुछ सहल नहीं ये समझभी बहुत कठिन है ॥ नहिं मिलता उसका किसीकोभी दर्शन है ॥ ओ आपी आप अपना देखे जोबन है ॥ एकता है दुईकी बात न सुने सुनाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ वोः आपी हाकिम आपी वही गवाह है ॥ आपी है बंदा आपी वोह अल्लाह है ॥ आपी है बना वो मेहर और आपी माह है ॥ है सबमें सबसे अलग ये उसकी राह है ॥ बेगम है उसको किसीकीभी नहिं चाह है ॥ बेचश्म है देखे सबको अजब निगाह है ॥ लामकां है वोह नहिं हटे किसीके हटाये ॥ हर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥ मशरकसे मगरिबतक सबमें शामिल है ॥ पर अलग है मेरा खुदा बडा कामिल है ॥ नहिं अकल है पर वो अकलसेभी आकिल है ॥ नहिं अदल है वो पर अदलकाभी आदिल है ॥ नहिं आबो हवा आतश और नहीं वो गिल है ॥ कहे देवीसिंह बस उसीमें मेरा दिल है ॥ और बनारसी कुछ गाये नहीं बजाये ॥ पर कुदरत उसकी हरजा झलक दिखाये ॥

माशूक और आशिकके पैहरनकी तारीफ–बहर लंगडी।

तुझको तो ऐ गुल गुलशनमें फर्श इतरसे तर चहिये ॥ मुझको

प्यारे खाकका उस जापर बिसतर चहिये ॥ गिर्द तेरे चेहरेके हरदम उस महका हाला चहिये ॥ तेरे दरकी खाक मेरे मुँहपर आला चहिये ॥ तेरे गलेमें गजमुक्ता और लालोंकी माला चहिये ॥ मेरे गलेमें वो लपटा चौतरफा काला चहिये ॥ तुझे तख्त सल्तनतका चहिये मुझको मृगछाला चहिये ॥ तेरे कदममें पदम पावोंमें मेरे छाला चहिये ॥ तुझे सोनेको पलंग हमे पडनेको तेरा दर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका० ॥

तेरे दस्तमें छडी फूलकी चढनेको घोडा चहिये ॥ मेरे हाथोंमें अजदहेका उस दम कोडा चहिये ॥ तुझको तो ऐ जान हमेशा करना नकतोडा चहिये ॥ मुझको जालिम कभी नहीं तुझसे मुँहमोडा चहिये ॥ तेरे वास्ते शाल दुशालेका तोफा जोडा चहिये ॥ मेरे वास्ते फटासा कम्बलभी थोडा चहिये ॥ तुझे चाहिये रङ्गमहल हमें तेराही कूंचा घर चहिये ॥ मुझको प्यारे ० ॥

तेरे तो खासेमें खूब तोफा मेवा हरदम चहिये ॥ मेरी गिजा है मुझे खानेको हरदम गम चहिये ॥ तुझको तो ऐ नाच रंग यक आलमका आलम चहिये ॥ मेरे दिलको हमेशा तुही एक जालिम चहिये ॥ तेरे वास्ते परी हूर महेताब और शबनम चहिये ॥ मेरी सदा है मुझे अब तुही फक्त हमदम चहिये ॥ अब तो आरजू यही तेरे कदमोंमें मेरा सर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तू तो है सरदार तुझे करनेको सरदारी चहिये ॥ हमें हमेशा तेरी करना ताबेदारी चहिये ॥ तुझको तो अपने जोवनकी करना तैयारी चहिये ॥ हमको अपने बदनकी जरा न हुसियारी चहिये ॥ तुझको डंके निशान और हाथीपर अम्बारी चहिये ॥ मुझको करना तेरी अब फरमाबरदारी चहिये ॥ जलेबमें हरदम तेरे सब फौजोंका लश्कर चहिये ॥ मुझको प्यारे० ॥

तेरे बदनपर यार सुनहरी मीनेका गहना चहिये ॥ अपने तन-

पर हमें सेली कफनी पहना चहिये ॥ तू चाहे झटकार मुझे दावन तेरा गहना चहिये ॥ जहां रहे तू तेरी खिदमतमें मुझे रहना चहिये ॥ देवीसिंह यों कहे तेरे सब जोर जुल्म सहना चहिये ॥ बहरे इश्कमें गर्क हो बिना आब बहना चहिये ॥ बनारसी ये कहे मेरे अब दिलको तुही दिलबर चहिये ॥ मुझको प्यारे खाकका उस जापर बिस्तर० ॥

रंज और राहत दोनोंको एक समझना चाहिये-बहर लंगडी

ऐ गुल तेरी उल्फतमें गुलजारभी है और खारभी है ॥ बडा लुत्फ है इश्कमें भारभी है और प्यारभी है ॥ कभी इशारा अबरूका है और कभी तलवारभी है ॥ कभी वस्लका हमसे इकरारभी है इनकारभी है ॥ कभी गालियां झिडकी हैं और कभी शीरीं गुफ्तारभी है ॥ कभी खिजा है कभी गुलशन है बाग बहारभी है ॥ बोला ये मंशूर दारपर दारभी है दीदारभी है ॥ बडा लुत्फ है० ॥

कभी तौक गर्दनमें पडा और कभी फूलोंका हारभी है ॥ कभी बरहना बदन है कभी तनपै शृंगारभी है ॥ कभी सेर सहराकी है और कभी कूंचा बाजारभी है ॥ कभी है राहत कभी रञ्जीदा दिल बीमारभी है ॥ कहा लैलासे मजनूने अब सुलःभी है तकरारभी है ॥ बडा लुत्फ है० ॥

कभी हँसी दिल्लगी कभी रोना अश्कोंका तारभी है ॥ कभी नजरका छिपाना कभी मिगाहे चारभी है ॥ कभी गलेसे लगे कभी वो करता दारो मदारभी है ॥ कभी जिलाये कभी यक अदासे डाले मारभी है ॥ कभी करे ऐयारी वो औ कभी वो बनता यारभी है ॥ बडा लुत्फ है० ॥

कभी जख्म पुर होंय जिगरके कभी बदनपर गारभी है ॥ कभी करे खुश कभी वो करता दिल बेजारभी है ॥ देवीसिंह ये कहै मेरा वो: शोख सितमगर गारभी है ॥ जो चाहे सो करे अब वही दिलका मुख-

तारभी है ॥ बनारसी कहे नेकी बदी दोनोंका उसे अख्त्यारभी है ॥ बडा लुत्फ है० ॥

होली जिस्मकी मतलब तौहीद–बहर लंगडी।

बनी मेरे इस जिस्मकी होली लगी इश्ककी आग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ भर भरके चश्मोंमें अश्क कर दूं आंखें रंगीन भला ॥ सुर्ख गुलाबी और केसरिया रंगत तीन भला ॥ रो रोके जामेको मवत्तर करूं बजाऊं बीन भला ॥ लौमें शोले नूरके रहूं सदा लवलीन भला ॥

शैर–बनाया उसने मुझे वोः फकीर होलीमें ॥
के आये बेन वाँ ले ले अबीर होलीमें ॥
उन्हींमें मिल गये मुझको कबीर होलीमें ॥
सुनाये मैंने उन्हें वो कबीर होलीमें ॥

लडूं भिडूं गालिया खाऊं नहिं रक्खूं दिलमें लाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ प्यारा कि पिचकारीसे उसने किया मुझे रँगलाल भला ॥ खुशी हुई वो तो उड गया गमका सबी गुलाल भला ॥ अनहद बाजे बजें मगजमें कई वजहकी ताल भला ॥ राग वो दीपक सुने जो हो साहबे कमाल भला ॥

शैर–लिया है अबके भला मैंने योग होलीमें ॥
मैं अपने योगसे करता हूं भाग होलीमें ॥
लगा है इश्कका ऐसा हो रोग होलीमें ॥
जिगरभी जल गया करके वियोग होलीमें ॥

नींद कहां आती है मुझे मैं रहों रातों दिन जाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ मैं अपने दिलमें देखूं है इसीमें उसका नूर भला ॥ उसीसे खेलूं मैं होली उडा दूं तनकी धूर भला ॥ हाथ पांव लकडियां हैं इनको मुझको नहीं गुरूर भला ॥ ये मैं नहीं हूं और हूं इनमें पर इनसे दूर भला ॥

शेर–ये मैंने पीरसे सीखा है खेल होलीमें ॥
अब अपने यारसे रखता हूं मेल होलीमें ॥
मलूं मैं यादका इतरो फुलेल होलीमें ॥
कि जिसकी बूसे मिटे कुल झमेल होलीमें ॥

गिरे नहीं मेरे सरसे इज्जत हुरमतकी पाग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥ ऐसी होलीओ खेले हो जिसको कुछ फहमीद भला ॥ कहै देवीसिंह ये है होलीभी और तौहीद भला ॥ इसीमें देखूं नाच रंग है इसीमें उसका दीद भला ॥ इसी जिस्ममें करूं मैं खुदासे गुफ्त शुनीद भला ॥

शेर–उडा दे दिलसे खुदीकी तू खाक होलीमें ॥
तो होवे दममे तेरा जिस्म पाक होलीमें ॥
ये अबकी मान ले मेरी तू साक होलीमें ॥
तर्क दुनियाको तू कर तो हो धाक होलीमें ॥

बनारसी तेरी होलीमें है इश्क ज्ञान वैराग भला ॥ लगा गलेसे सनमको तनमें खेलूं फाग भला ॥

परमेश्वरके यादमें रोनेकी तारीफ–बहर छोटी।

अश्कोंसे मेरे गौहरकी लडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ कभी मीजयकी नोकों पर यों अश्क खुलते हैं ॥ इलमासके टुकडे काटोंपर तुलते हैं ॥ जिस वक्त ये आंसू सीने पर ढुलते हैं ॥ तो दाग जिगरके साफ मेरे धुलते हैं ॥ इस धारसे दुरदानेकी छडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ कभी खूने अश्क अश्कोंसे मिल बहता है ॥ तो लालका दिलभी गौहरमें रहता है ॥ बेबहा है इनका मोल न कोइ कहता है ॥ जो आश्के जौहरी है वोइ इन्हें चहता है ॥ इस कदर मेरे चश्मोंसे झडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ फुरकते यारमें दिलको बेकरारी है ॥ सब

इसीसे रातो दिन गिरिया व जारी है ॥ अश्कोंसे मेरे गौहरने जो की यारी है ॥ बस इसीसे उसने पाई आबदारी है ॥ दोनों आंखोंसे मेरे दुलडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥ वो देवीसिंहने तुख्म मुहब्बत बोया ॥ तो रोजे हश्रको बडी चैनसे सोया ॥ और बनारसी उस खुदाके यादमें रोया ॥ अश्कोंसे गौहर बेबिधेका हार पिरोया ॥ आंखोंसे मेरे बारिस हर घडी लगी है ॥ ये दुकान अब मोतियोंकी बडी लगी है ॥

ख्याल इश्कके दर्दका—बहर छोटी।

आशकके दर्दको आशक हो सोइ जाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके पांवोंमें कभी न जाय बेवाई ॥ वो क्या जाने दुनियामें पीर पराई ॥ ये मसल है मैंने सुनी सो तुम्हें सुनाई ॥ आशक मरीजकी कहां है लिखी दवाई ॥ मजनूंकी तबीबोंने जो फस्त कराई ॥ लैलाके निकला खून तो ओ घबराई ॥ आशकका दुखडा जाने आशक स्याने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ फरहादने अपने सरपर तेशा मारा ॥ ये सदमां शीरींको नहीं हुआ गवारा ॥ वो मुवा वोभी मर गई हाल सुन सारा ॥ वो उसकी प्यारी हुई वो उसका प्यारा ॥ रांझेने इश्कमें छोडा तख्त हजारा ॥ तो हीरने उसपर तन मन धन सब वारा ॥ हो खाकसार सहराकी खाक जो छाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिस आशकने है अपना जिगर जलाया ॥ तो इश्कमें उसका रोशन नाम कराया ॥ आशकने रंजमें तो राहतको पाया ॥ यह गैरसे सदमा कभी न जाय उठाया ॥ जिसके दिलमें है खुदाका इश्क समाया ॥ वो खुशी हुआ गर किसीने उसे सताया ॥ ये इश्क कोई पूरा दुनियामें ठाने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥ जिसके दिलमें है दर्द वही है दाना ॥ ये दर्दका तो दुनियामें नहीं ठिकाना ॥ बेरहम जे हैं आशकको कहे दीवाना ॥ इस जहांमें

उनका बेहतर है मरजाना ॥ जिसके दिलमें लिदबरका इश्क समाना ॥ वो खुदाको देखे देखे नहीं जमाना ॥ देवीसिंहकी बातें सब रुस्तमजी माने ॥ हीरेकी खानको कोई जौहरी पहचाने ॥

ख्याल खुदाके फजलका—बहर खडी।

मेहर जो उसकी होवे तो वह मार मोरसे डरे नहीं ॥ चींटीपर हाथी चढ बैठे तो ओ चींटी मरे नहीं ॥ वह चाहे तो शराबको आबेहयातका जाम करे ॥ खुशी जो उसकी होवे तो वो कुफुरकोभी इस्लाम करे ॥ नवाजियोंसे खफा रहे रिन्दोंके साथ कलाम करे ॥ बुतखाने मसजिदको तोडकर मैखाना सर्नाम करे ॥ ऐसे ऐसे काम तो उसके सिवा और करे नहीं ॥ चींटीपर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥ डाले कोई बारूदमें आतिश औ वो दारू जले नहीं ॥ हजार मनकी चक्की हो पर एक मूंगको दले नहीं ॥ पानीपर तैरे वो बतासा लाख वर्षतक गले नहीं ॥ उसके कुदरतके आगे कुछ जोर किसीका चले नहीं ॥ सब उसके नजदीक है और कोई बात तो उससे परे नहीं ॥ चींटीपर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥ बांधे कच्चे सूतसे जिसको वो कैदी क्योंकर छूटे ॥ मदद जो उसका हो तो आहनकी संगल दममें टूटे ॥ बडे बडे रुस्तमको कायर मारके सरतापा लूटे ॥ पत्थरपर राई देमारे तो पहाड दममें फूटे ॥ सब कुछ वो करता है पर अपने जिम्मे कुछ धरे नहीं ॥ चींटीपर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥ गलियोंके पत्थरको वो चाहे हीरे मोती लाल करे ॥ बना दे वो कोयलोंकी मोहर एक दममें माला माल करे ॥ देवीसिंह कहे बनारसीके ख्यालपै कोई खयाल करे ॥ क्या ताकत है कालकी जो फिर उसका बांका बाल करे ॥ ऐसा सबुन सुननेसे दिल हरचन्द किसीका भरे नहीं ॥ चींटीपर हाथी चढ बैठे तो वो चींटी मरे नहीं ॥

तथा।

खुदा फजूल जो करे तो बंदा किसीसे मुतलक डरे नहीं॥ मौतभी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ अदनाको आला कर दे वो अपनी जबां हिलानेसे॥ लिखा हुआ तकदीरकाभी मिट जाये उसके मिटानेसे॥ बुतखाना काबा है बना अब उसीके देख बनानेसे॥ उसके काम हैं अलाहिदा इस दुनिया और जमानेसे॥ कुल उसका अख्तियार जहांमें और कोई कुछ करे नहीं॥ मौतभी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ राईको पर्वत कर दे औ पर्वतसे राई कर दे॥ दुई हो जिसके दिलमें वोः चाहे तो यकताई कर दे॥ दोस्तको वो दुश्मन कर दे और दुश्मनको भाई कर दे॥ बेवकूफको अकल दे और स्यानेको सौदाई कर दे॥ मेरा दम तो सिवा खुदाके किसीकाभी दम भरे नहीं॥ मौतभी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ क्या जाने क्या लिखा है इस तकदीरमें और क्या लिखेगा वो॥ रोजे अज्लका किसे हाल मालूम इसे तुम बतला दो॥ जो तुम इससे नहीं हो वाकिफ तो इसपर कायम न रहो॥ जो चाहे सो करे वही हर वक्त उसीकी याद करो॥ वोःसबके नजदीकभी है और कोई तो उससे परे नहीं॥ मौतभी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥ खाकको वोः अकसीर करे और आबको वोः गौहर कर दे॥ पत्थरको पारस कर दे और लोहे पर जौहर कर दे॥ देवीसिंह ये कहे वोः बँधुयेको सबका अफसर कर दे॥ बनारसी बे पढा है उसकी जबांपै कुल दफ्तर कर दे॥ अकल और तकदीरकाभी बिन खुदा काम कोई सरे नहीं॥ मौतभी उसका कुछ न कर सके कभी वो हरगिज मरे नहीं॥

ख्याल खुदाके ढूंढन का-बहर छोटी।

हम तेरे इश्कमें यार बहुत दिन भटके॥ अब मिला सनम तू हमें

खुले पट घटके ॥ कई बार गया सर तेरे इश्कमें कटके ॥ फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ किये रंज अलम मंजूर जरा नहिं ठटके ॥ दिलकी दहसत सब निकल गई छट छटके ॥ कई लाख वजहके दिये हैं तूने झटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ जिस वक्त तेरी वह जुल्फ नागनी लटके ॥ कोई इधरसे हो जाय उधरसे चटके ॥ गर देखे काला नाग तो सरको पटके ॥ चढ जाय जहर जुल्फोंका वो घरको सटके ॥ हम आशक हैं मजबूत कहां जांय हटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ लैलासे लगाया दिल मजनूने डटके ॥ तन बदन दिया सब काट उसीसे अटके ॥ शूलीपै चढा मंशूर उसीपर मटके ॥ नहिं जरा नोक सूलीकी जिगरमें खटके ॥ देखा जो मुझे दिल गया जहांसे फटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥ जब खुले किवांडे यार कपटके पटके ॥ दिलमें पाये दीदार वो वंशीवटके ॥ शिर मोर मुकुट कटि कसे जरीके पटके ॥ कहै देवीसिंह है अजब खेल नटखटके ॥ कहे बनारसी हम आशक नागर नटके ॥ अब मिला सनम तू हमें खुले पट घटके ॥

ख्याल खुदाकी यादका—बहर छोटी।

हर जगपै देखा कहीं नहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ गये बिहिश्तमें हम वहां न तुझको पाया ॥ बुतखानेभेंभी नहीं नजर तू आया ॥ काबा किबला मक्का मसजिद ढुंढवाया ॥ काशी मथुरामें बहुत दिनों भरमाया ॥ जा जाकर गंगासागर सिंधु नहाया ॥ मैं तेरे इश्कमें चारों तरफ उठ धाया ॥ नहिं मैंने प्यारे और कहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ जंगल वस्ती सब उजाड हमने छाना ॥ नहिं देखा तुझको देखा रे सभी जमाना ॥ कोई मतवाला कहता है कोई मस्ताना ॥ जो जो कुछ जिसने कहा वो हमने माना ॥ कूबकू फिरा दर दरका हुआ दिवाना ॥ नहिं पाया प्यारे तेरा कहीं ठेका-

ना ॥ अब याद करी तो दिलमें यहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ सर पटक पटककर पहाडपर दे मारा ॥ और आह आह कर करके बहुत पुकारा ॥ देखा देवल देहरा और ठाकुरद्वारा ॥ सरतापा सबको देख देखकर हारा ॥ घर बार तजा आलमसे लिया कनारा ॥ जैसी कुछ गुजरी वैसे किया गुजारा ॥ ये बातें हमको याद रहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥ सब देखा हमने गुलशन और गुल्लाला ॥ बन फर्कीर बन बन फिरा पहन वनमाला ॥ देखा पत्ता पत्ता औ डाली डाला ॥ है सबमें तू औ सबसे रहे निराला ॥ यह बनारसीका कलाम रसका ढाला ॥ है अरज मेरी यह सुनो नंदके लाला ॥ तुझ दिलबपर आशक हूं यहीं तू देखा ॥ जहां याद है तेरी वहीं वहीं तू देखा ॥

इश्ककी दावत–बहर डेवढी, राग सारंग ।

इश्क हजरत नेकी हमपै मेहर्बानी ॥ करों मैं क्या क्या मेहमानी ॥ नजर देनेको दिल मैं अपना लाया ॥ इसके बहुत पसंद आया ॥ इश्कने मेरा जब लख्ते जिगर खाया ॥ तो मैंने औरभी बतलाया ॥ खून आशकका ये है ताजा पानी ॥ पीजिये इश्क मेरे जानी ॥ अश्क गौहरका जब गले हार डाला ॥ इश्कने कहा ये है आला ॥ चश्ममें भर भरकर वो मैं गुल्लाला ॥ इश्कके तईं दिया प्याला ॥ बन पडी मुझसे जो कुछ कि कदरदानी ॥ इश्ककी सबी बात मानी ॥ जिगर पर मेरे जो थे उल्फतके गार ॥ देखाया इश्कको वोः गुलजार ॥ और सीनेपर गुल खाये कई हजार ॥ दिखाई इश्कके तईं बहार ॥ माल जर सारा देकरके यही ठानी ॥ किया तन अपना उरयानी ॥ और एक तोफा जो था सबमें भारी ॥ जान होती सबको प्यारी ॥ इश्कके ऊपर वोःभी देने वारी ॥ न जी देनेसे हुआ आरी ॥ कहूं मैं इसके आगे अब क्या बानी ॥ इश्कके हाथ है जिंदगानी ॥ कि मैं हूं

आशक है इश्क मेरा सरदार ॥ हम हैं उसके फरमाबरदार ॥ वजुज आशकी के कुछ और न मेरा कार ॥ इश्कके सिवा न कोई यार कहै देवीसिंह है बनारसी ज्ञानी ॥ हरेक छंद जिसका हक्कानी ॥

इश्कके आनेकी खातर और दावत-
बहर मेरी जानकी ।

आवो आवोजी मेरे महाराज इश्क आवोजी मेरी जान ॥ आज तुम यहीं करो आराम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥ देखा तो लिबासे नंग बदन नाजुक है मेरी जान ॥ तेरा जामा है तने उरियां ॥ यहीं तेरा मेरा है हमेशा रहूं लबे विरिया ॥ गर दीदये तर हैं आप तो मैं रोता हूं ॥ मेरी जान रहे हर वक्त चश्म गिरियां ॥ आप देखे हूरोंको मेरी आंखोंमें बसे परियां ॥

तोडा-मेरा तेरा दो नहीं एकही दिल है ॥ जख्मी है जिगर तेरा तो मेरा घायल है ॥ मेरी जान दुईका मेरा न तेरा कलाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

तू जख्म जिगर खा खाके खून पीता है मेरी जान ॥ तो मैं गम खाके जिऊं जानी ॥ प्यास अगर्चे लगे तो फिर रो रोके पीऊं पानी ॥ तू बियाबान सहराकी सैर करता मेरी जान ॥ मुझे भाती है वीरानी ॥ मुझमें तुझमें कुछभी फर्क नहीं है है मेरे दिलजानी ॥

तोडा-तू राजेनिहां है तो मैं छिपा हूं तनमें ॥ तू मेरे दिलमें बसा मैं तेरे मनमें ॥ मेरी जान न भूलूं तुझे मैं आठों जाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

मालूम हुआ गर्दिश तुझको भाती है मेरी जान ॥ तो मैं खुश हूं हैरानीमें ॥ तूने गुल खाये तो दाग मुझे दिये निशानीमें ॥ तू मजनूकी सूरत है आशके लैला मेरी जान ॥ लिखा तेरी पेशानीमें ॥ मैंभी बहुत लाग रहूं इश्क लग गया जवानीमें ॥

तोडा–तू गदा हुआ दुनियाकी खाक उडाई ॥ मैंनेभी खाकसारीमें धूम मचाई ॥ मेरी जान हुये हम तुम दोनों बदनाम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

वे खोफ है तुझको नहीं किसीका डर है मेरी जान ॥ तो मुझकोभी है नहीं खटका ॥ मेरा तेरा दोनोंका दिल उसीसे है अटका ॥ मंशूर है तू तो मैंभी शम्स तबरेज हूं मेरी जान ॥ आशकीका है यही लटका ॥ खाल उतारी दार चढे ये प्यारका है झटका ॥

तोडा–कहे बनारसी नहीं मरे किसीके मारे ॥ के लाख दफा गर्दनपर फिर गये आरे ॥ मेरी जान जिस्मसे मुझे तुझे नहिं काम ॥ आज तुम्हें देखा है बहुत दिनसे था नाम सरनाम ॥

तकलीफमें बहुत आराम है आशकके वास्ते–मार्फत मेरी जानकी।

आफत है इश्क आफत है इश्क आफत है मेरी जान ॥ पर है इस आफतमें आराम ॥ आशक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ अव्वल है इसमें जानो मालका खोना मेरी जान ॥ कि दोयम जिगर जलाना है ॥ सोयम अपने सरपै कोह गम अलम उठाना है ॥ जो जो इसमें तकलीफ हैं मुझसे सुन लो मेरी जान ॥ मुझे यह सभी सुनाना है ॥ कोई कहे हवसी और कोई कहता दीवाना है ॥ जंजीर तौक यह सब इसका जेवर है मेरी जान ॥ आशकोंका यही बाना है ॥ और कहांतक कहूं इसमें जीतेही मर जाना है ॥

तोडा–जो इसे करे मंजूर तो फिर क्या डर है ॥ आशकको मरनेका कहां खौफ खतर है ॥ मेरी जान वो तो चाहता है जहांमें नाम ॥ आशक हो सोइ जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ जिस जिसके पीछे पडा इश्क यह आकर मेरी जान ॥ उसे मिट्टीमें मिलाया है ॥ किसीको सूली दिया किसीका सर कटवाया है ॥ और किसीको

इसने तनसे खाल उतारी मेरी जान ॥ फिर उसमें भुस भरवाया है ॥ उसी खालको उसने फिर कोडोंसे उडाया है ॥ लिया तख्त ताज सब लूट बादशाहोंका मेरी जान ॥ फिर उनको गदा बनाया है ॥ बियाबान सहरामें उन्हें कांटोंपै घुमाया है ॥

तोडा—जिसको ये रंज सहना वो वो इसमें आये ॥ आये तो नहीं इस आफतसे घबराये ॥ मेरी जान तो फिर हो दुनियामें सरनाम ॥ आशक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ जालिम हैं इश्कके और जुल्म लाखों हैं मेरी जान ॥ सरपे आरेभी चलते हैं ॥ बहरे इश्कमें जो डूबे वो नहीं उछलते हैं ॥ हिंदू या मुसल्मां शेख बरहमन सारे मेरी जान ॥ अपने हाथोंको मलते हैं ॥ इसकी राहमें जो आये वो नहीं निकलते हैं ॥ यह वो आतिश है जिससे आग पैदा हो मेरी जान ॥ जिगरमें शोले बलते हैं ॥ जैसे आपसे जले सती आशकभी जलते हैं ॥

तोडा—जो जले तो उनकी हुई रोशनी आला ॥ मशरिकसे तामगरिब उनका उजियाला ॥ मेरी जान पिये वो मैं वहदतका जाम ॥ आशक हो सो जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥ कह चुके अब हम अदनाभी हाल कहते हैं मेरी जान ॥ इश्कमें गया मेरा सब दीन ॥ मुफ्तमें उस माशूकने जबरन्से ये लिया दिल छीन ॥ नाहिं इधरके हम नाहिं उधरके कहो किधरके मेरी जान ॥ रहे जंगलके तिनके बीन ॥ दोनों जहांमें इश्कने मुझको कर दिया तेरह तीन ॥ सोलहों कला जब उसने मुझे दिखाई मेरी जान ॥ हुआ फिर उसीमें मैं लवलीन ॥ रंजको हम राहत समझे ये दिलसे हुआ यकीन ॥

तोडा—कहे बनारसी राहत है रंज राहत है ॥ मुझको तो हमेशा इसीकी कुछ चाहत है ॥ मेरी जान इश्कमें मिला मुझे गुलफाम ॥ आशक हो सोई जाने फासिक क्या जाने यह काम ॥

इश्कमें सब्र करना तकलीफमें घबराना नहीं
मार्फत–बहर मेरी जानकी।

अय दिल तू अब गया तो क्यों घबराता मेरी जान ॥ सब्र कर मिलेगा तेरा यार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा कि मैं हूं आशक मेरी जान ॥ जरा नहीं होय सब्र हमसे ॥ बेताब हुआ सीमावसे ज्यादा जालिमके गमसे ॥ कोई लगादे मेरे पर तो उडूं इस खातर मेरी जान ॥ मिलूं मैं अपने हम दमसे ॥ बेचैन हुआ इस कदर मेरा दम घबराया दमसे ॥

तोडा–जल्दीसे मुझे कोई वहां तलक पहुँचा दे ॥ यक नजर रहमकी जरा मुझे दिखला दे ॥ मेरी जान मुझे दीदार सिर्फ दरकार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर मैंने दिलसे कहा अरे बेसब्रे मेरी जान ॥ सब्र है बडी चीज प्यारे ॥ उसीको दिलवर मिले जो कि अपने दिलको मारे ॥ जो आशक हैं वोह जरा आह नहीं करते मेरी जान ॥ चले चाहे गर्दनपर आरे ॥ इश्क किया मंशूर मारे सूलीपर नजारे ॥

तोडा–फिर ओही शम्स तबरेज हुआ मस्ताना ॥ है जिसके इश्कको कुल आलमने जाना ॥ मेरी जान किया अपने दिलको हुशियार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर दिलने मुझसे कहा बहुत बेकल हूं मेरी जान ॥ याद उस दिलबरकी आये ॥ रह रहके रोता हूं रातो दिन यह दिल घबराये ॥ किस तरह ताम्मुल करूं सब्र नहिं आता मेरी जान ॥ बात नाहिं किसीकी अब भाये ॥ इश्क आग लगी तनमें गमसे जिगर जला जाये ॥

तोडा–दिल खाकसार कर दिया खाकमें मिलके ॥ अब जरा चैन नाहिं पडती बिन कातलके ॥ मेरी जान मिलेगा कब हमको दिलदार ॥

जिसकी झलक है फलक मलक और खलक तलक गुलजार ॥ फिर मने दिलसे कहा बात यक सुन तू मेरी जान ॥ सब्र है आशकका खाना ॥ जो चाहे सो होवे इश्कमें गमपर गम खाना ॥ कइ लाख वजहसे बहुत तरह समझाय मेरी जान ॥ कहा सब आशकोंका माना ॥ सुनके इश्कका हाल मेरा कहना दिलने माना ॥

तोडा–फिर इसे सब्र होगया मिला वोः हमदम ॥ ये कहे देवीसिंह दूर हुआ दिलका गम ॥ मेरी जान कहे छंद बनारसी ललकार ॥ जिसकी झलक है फलक मलक और खलख तलक गुलजार ॥

खुदाके नूरको अपने दिलमें देखना मतलब तौहीद–बहर मेरी जानकी।

वोः झलक तेरी है फलक मलक नाहिं पाये मेरी जान ॥ मेहर तकसे शरमाया जी ॥ नहीं देखाई देता है नजरोंमें समाया जी ॥ क्या गजब हैं तेरी शान जान कुरबान मेरी जान ॥ ठानकर दिलपर अपने जी ॥ सभी काम दिये छोड लगे अब तुझको जपने जी ॥ भरपूर नूर जहूर हूरसे बेहतर मेरी जान ॥ मुझे वोः आये सपने जी ॥ तुझे ख्वाबमें देख गये हम वनको तपने जी ॥

तोडा–कुछ दीनों तलक तप किया किये बहुतेरा ॥ पर वहां ठिकाना हमें लगा नाहिं तेरा ॥ मेरी जान मुल्क दर मुल्क फिर आया जी ॥ नहीं दिखाई देता है नजरोंमें समाया जी ॥ है अजब चाहकी आह दाह नाहिं बुझती मेरी जान ॥ राह जो इश्ककी आते जी ॥ लाखों वजहके रंजो अलम गम सितम उठाते जी ॥ हैरां बीरां मैदांमें बहुत फिरते हैं मेरी जान ॥ पास गैरोंके जाते जी ॥ उन्हें नहीं तू मिले कोई घर बैठे पाते जी ॥

तोडा–हर दम दम दम रह रहके घबराता है ॥ वल्ला तेरा गम मुझे रोज खाता है ॥ मेरी जान इश्कने खूब सताया जी ॥ नहीं देखाई

देता है नजरोंमें समाया जी॥ हम दम तेरा गम अलम रहा करता मेरी जान॥ हुआ दिल पारे पारे जी॥ तेरे इश्कमें मरा मुझे अब कोई न मारे जी॥ दुशवार यार दीदार तेरा हरवार मेरी जान॥ मिले नहीं सदा नजारे जी॥ आह बडा अफसोसके तेरे जुल्फ इशारे जी॥

तोडा–क्या कुसूर मेरा है तू मुझे बतला दे॥ यक नजर रहमकी जरा हमें दिखला दे॥ मेरी जान मेरा अब दम घबराया जी॥ नहीं देखाई देता है नजरोंमें समाया जी॥ है कहर इश्ककी लहर जहर नहीं उतरे मेरी जान॥ ठहरते इसमें पूरे जी॥ वोः आशक नहिं मिले तुझे जो रहें अधूरे जी॥ एक आनमें तेरी आन आन मिलती है मेरी जान॥ तुझे जाने मनशूरे जी॥ कहे देवीसिंह मस्त मेरा दिल तुझको घूरे जी॥

तोडा–कहे बनारसी में बहुत हुआ हैरान॥ पर और न देखा कहीं तेरा मक्कान॥ मेरी जान तुझे इस दिलमें पायाजी॥ नहीं देखाई देता है नजरोंमें समाया जी॥

इश्कके आनेकी दावत–बहर डेवढी, राग सारंग।

इश्क आवो जी मैं सरपर बिठलाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥ जो निमकी चाहो तो पियो हमारा खूं॥ चरपरा कहो तो दिल सेकूं॥ अगर मैं मांगो तो अभी अश्क भर दूं॥ जो तुम लैला हो तो मैं मजनूं॥ काट दूं बोटी दिल अपना परखाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥ मगर शीरींको कुछ चाहे तबीयत अब॥ तो मेरे मिला दो लबसे लब॥ आज आये हो फिर आओगे तुम कब॥ ये जी चाहता है लुटा दूं सब॥ भला मैं ढूंढूं तो कहां तुम्हें पाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥ बना दूँ कपडे सब उतार तनकी खाल॥ तुम इनको पहर रहो रँग लाल॥ तुम्हें ख्वाहिश हो गर कुल दुनियाका माल॥ तो दंदां बना दूं गौहर लाल॥ मुझे गर बेचो तो अभी मैं बिक जाऊं॥

कहो सो खातिरको लाऊं॥ जो जेवर पहरो तो मेरी उस्तखाका॥ मकां हाजिर है लामकांका॥ शौक गर तुमको कुछ होवे गुलिश्तांका॥ मेरा तन बना बोस्तांका॥ मैं इसके ऊपर अब लाखों गुल खाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥ सुनो गर गाना तो ऐसी हिचकियां लूं॥ मैं इसमें सबी राग कह दूं॥ जानतक मांगों तो कभी करूं नहिं चूं॥ तसहुक तनो बदनसे हूं॥ मैं तुमपर वारी हर तौरसे होजाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥ कहा ये मैंने तो इश्कभी यों बोला॥ तू आशक है बाला भोला॥ भेद सब उसने अपना मुझसे खोला॥ तो दोका एक हुआ चोला॥ कहे काशीगिरि अब आगे क्या गाऊं॥ कहो सो खातिरको लाऊं॥

जहरकी आबे हयात समझाना इश्कमें मतलब तौहीद–बहर छोटी।

इस कदर इश्कमें हुई मुझे तलमलियां॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां॥ कौसरके धोखे पिया जहरका प्याला॥ मसनदको समझ खारोंपर बिस्तर डाला॥ काकुलपै हाथ पहुँचा तो निकला काला॥ मन मारके मैंने भरा आहका नाला॥ दिल धडका तो दरियामें तपीं मछलियां॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां॥ इस्लाम समझके दीनो मजहबको छोडा॥ और इमां समझके कुफरसे नाता जोडा॥ समझा था जिसको बहुत वो निकला थोडा॥ इसलिये ये मुँहको कुल जहानसे मोडा॥ मालूम हुआ जो इश्कमें थी छलबलियां॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां॥ अब खुदा समझकर नजर बुतों पर डाली॥ और अजां समझके दिलमें आह निकाली॥ समझेथे जिसको भरा वो निकला खाली॥ जाहर करनेको हुआ तो बात छिपाली॥ है मेरे इश्ककी अर्श तलक झल झलियां॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां॥ दो समझके पाया एक एक खो बैठे॥

लौ लगा सनमकी यादमें जो जो बैठे ॥ हम दुईसे इस दुनियामें हाथ धो बैठे ॥ अब तनहाईमें आपी आप हो बैठे ॥ कहे बनारसी उल्फतकी बातें भलियां ॥ खागया समझके कंद जहरकी डलियां ॥

सब काम छोडके पाक इश्कको करो तो जल्द खुदा मिले—बहर लंगडी।

नेम धर्म औ कर्म दीन ईमानको दूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ तसबीको तोडो मालाको छोडो हाथ प्यारेका गहो ॥ गले सनमके लगो कुछ हाले दिल दिलबरसे कहो ॥ टीका तन मन क्या करना मत पढ नमाज रोजे न रहो ॥ गमके भोजन करो जो गुजरे वो इस दिलपे सहो ॥ तीरथ बरत सभी छोडो दरियाये इश्कके बीच बहो ॥ इसीमें गंगा और यमुना काशी मक्का तुरत लहो ॥ मिला चाहो उस यारसे तो तुम इश्क जरूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ आचारका डालो अचार इस बातका जरा विचार करो ॥ पाक मुहब्बत करो और जहांमें कोई यार करो ॥ दिलसे दिल और मिला जिगरसे जिगर खूबसा प्यार करो ॥ लडा नजरसे नजर उस दिलबरका दीदार करो ॥ पिवो मुहब्बतकी शराब दिलका कबाब तय्यार करो ॥ बनो वैष्णो जो तुम यह मेरा कहा अखत्यार करो ॥ घोटके भंग छानो औ नशेका खूब सरूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ वेद पुरान कुरानकी बातोंसे है इश्ककी बात बडी ॥ ब्राह्मण सैयदकी जातोंसे है इश्ककी जात बडी ॥ और जहांके फन हैं जितने सबसे इश्ककी घात बडी ॥ आफते जाँ है इश्ककी राहमें है आफात बडी ॥ जितने घाट है जहांमें सबसे इश्ककी बिसरात बडी ॥ बारिसे मौसमसे तो है रोनेकी बरसात बडी ॥

लडो इश्कके मैदांमें यह मन मनसूर करो बाबा ॥ आशके सादिके बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥ कथाको क्या कथते हो छोड दिवानोंको दिवाना हो ॥ गाने बजानेका है वोः मजा जो कोई गाये रो रो ॥ हमने इश्कमें धरा कदम सर दिया जान अपनी दी खो ॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझा जो ॥ बनारसी ये कहे इश्क करते हैं इस जहांमें जो जो ॥ मिलें वो हकसे रहें लामकांमें उसके साथमें सो सो ॥ इश्क किया चाहो तो यारसे नहीं जरूर करो बाबा ॥ आशके सादिक बनो दिल इश्कमें चूर करो बाबा ॥

दवा इश्ककी जिससे मुर्दा जीता है–बहर लंगडी।

मिलाके लबसे लब उसने कितनोंहीकी लाश जिलाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥ मैं हूं मरीजे इश्क मुझे ईसा किस तरह आराम करे ॥ जबां यारकी जबांसे मिले तो ओ कुछ काम करे ॥ गुंचे दहन गर बोसा मेरा ले तो काम तमाम करे ॥ मुझ मरीजको जिलाये जहांमें अपना नाम करे ॥

शेर–बजुज इसके कहां जीनेकी अब उम्मीद है मुझको ॥
लबे शीरींमें बिलकुल लज्जते तौहीद है मुझको ॥
येही मेरी दवा और इतनीही फहमीद है मुझको ॥
मिला दे लबसे लब मेरे वोही फिर ईद है मुझको ॥

ये इलाज मेरा है और कुछ इसीमें सफा सफाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥ न कुछ कीमियेमें कीमत और न ये बात अकसीरमें है ॥ नहीं हिकमतमें नहिं कुछ हुक्माकी तदबीरमें है ॥ अगर जिलाये मुझको तो ये ताकत कहां फकीरमें है ॥ जीस्त हमारी उस लबे यारकी वोः तासीरमें है ॥

शेर–मिले उसके दहनसे जब दहन मेरा तो जी जाऊं ॥
तमाशा इश्कका तुमने न देखा हो तो दिखलाऊं ॥

दहाने यारकी लज्जत अगर्चे कुछभी मैं पाऊं ॥
तो उट्ठे लाश मेरी कब्रसे जिंदा मैं कहलाऊं ॥

यही आशकोंकी है दवा उस इश्कने मुझे बताई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥ मिलाके मुँहसे मुँह मेरे और हँसके वोः कुछ बात करे ॥ मुझ मरीजको जिलाये मौतकोभी फिर मात करे ॥ क्या ताकत है कजाकी जो फिर मेरे ऊपर घात करे ॥ अगर सामने आये बेजा अपनी औकात करे ॥

शेर—वोः उसके होठमें अमृत है के मुर्दाभी जी जाये ॥
जो कुश्ता इश्कका होवे तो उसमें जान फिर आये ॥
सदा ये कुम्बेजनी जब वोः अपने मुँहसे फरमाये ॥
तो उसके हुक्मसे उठूं वही जांबख्स कहलाये ॥

वही खुदा है मेरा औ कुछ उसीके यहां खुदाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥ जिसके इश्कमें मरा हूं मैं वोः चाहे तो फिर जिला सके ॥ खुशी जो उसकी होवे तो जामें बस्लभी पिला सके ॥ क्या ताकत यह लाश मेरी कोई बगैर उसके हिला सके ॥ उसीमें कुदरत ये है कि दिलसे दिलको मिला सके ॥

शेर—बुलाओ उस मसीहाको मेरी अब जान जाती है ॥
जिलाये जल्द मुझको वोः नहीं तो शान जाती है ॥
मैं आशक हूं उसीका इश्ककी अब आन जाती है ॥
मिला दे लब नहीं तो जान और पहचान जाती है ॥

बनारसीने दवा आशकोंकी यह अजब बनाई है ॥ लबे यारको लिखो मुर्दोंकी यही दवाई है ॥

ख्याल मय वहदतका जो वलियोंने पी है—बहर छोटी।

बिन पीये जहांके बीज जीऊं मैं कैसे ॥ भर दे प्याला लबरेज

साकिया मैसे ॥ मैं वहदतका मुस्ताक हूं यह मुद्दतसे ॥ वाकिफ हूं मैं कुछ मस्तानोंकी आदतसे ॥ जिस वक्त नशा सरसार हुआ शिद्दतसे ॥ बेहोश हुआ इस दुनियाकी विद्दतसे ॥ हर वक्त जबांसे कहा करूं मैं ऐसे ॥ भर दे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ शोलये नूर दिलमें मेरे भबके है ॥ अशरतकी मैं हरदम उसमें टपके है ॥ लौ लगी है और दिल उस लौमें लपके है ॥ इस नशेसे अब कब आंख मेरी झपके है ॥ आती है यही आवाज हर जगह नैसे ॥ भर दे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ मालूल हुआ मैं मौत कि येः दारू है ॥ हर गुलोंकी रूह हैं खिंची ये वोः गुलरू है ॥ रिन्दानोंकी महफिलमें यही महरू है ॥ और इससे बेहतर नहीं कोई खुशबू है ॥ तू पिला दे मुझको यार बन पडे जैसे ॥ भर दे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ यक रोज सामने मेरे मुहतसिब आये ॥ बोले मैं पीना कौन तुझे सिखलाये ॥ औ देख करावे मैके वोः घबराये ॥ बोला मैं यह क्या खुदाने नहीं बनाये ॥ फिर कहने लगे मुहतसिबभी मुझसे ऐसे ॥ भर दे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥ बीनो रबाब मिरदंग कि तैयारी हो ॥ मीनेमें मीनेकी मीनाकारी हो ॥ गुल पासमें बैठे हों और गुलजारी हो ॥ कहे बनारसी उस वक्त वोः मैं जारी हो ॥ हरवक्त राग फिर बजा करै इस लैसे ॥ भर दे प्याला लबरेज साकिया मैसे ॥

ख्याल शराब अंतहूरा जो हम पीते हैं—बहर छोटी।

मै वोह है इसे क्या पियेंगे ऐसे वैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ मिल गया जब उसके रंगमें रंग गुलाबी ॥ आगया नशा वहदतका मुझे शिताबी ॥ है जिगर यह मेरा जला औ भुना कबाबी ॥ हुई दिलको सेरी गई वोः सब बेताबी ॥ क्या जाने शेख मस्तीके है प्याले कैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ यह सफेदभी और सुर्ख जाफरानी है ॥ हो रुखपे आब पीनेसे यह वोः पानी है ॥ मज-

हब इसका रिन्दाना लासानी है ॥ टपके है नूर चेहरे पें वो पेशानी है ॥ जो बेताले हैं वाकिफ नहीं इस लैसे ॥ वो पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ यह फकीर इसकी लौ सबसे दूनी है ॥ मैखानेमें जगती जिसकी धूनी है ॥ लडनेमें शूरमां है और येः खूनी है ॥ है वगैर इसके जो बस्ती सूनी है ॥ यही सदा कन्हैयानेभी बजाई नैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥ दारुये शफा है इसीसे हम पीते हैं ॥ पीते हैं बहुत पर ऐसी कम पीते हैं ॥ रम रहे हैं उसमें हम वोः रम पीते हैं ॥ और देवीसिंहभी दमपर दम पीते हैं ॥ गाये बनारसी इसीकी ध्वनिमें लैसे ॥ वोः पियेंगे जो मै होके मिले हैं मैसे ॥

ख्याल शराबके पीनेमें जो लुत्फ है वो मुझे मिला—बहर छोटी ।

वोः मजा मिला मुझको इस मैनोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ मैंने कुछ इरादा किया न मै पीनेका ॥ वोः काम जो देखा मीनेमें मीनेका ॥ था नकशा उसमें खिचा सदा जीनेका ॥ औ रंगभी उसमें भरा था रंगीनेका ॥ पीतेही जबां आई खुद खामोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ लेतेही जाम अंजाम वोः उसका पाया ॥ गफलतने होशियारीका मजा दिखाया ॥ जिस वक्त नशा वो मेरी आंखमें आया ॥ बन्दसे खुदाने मुझको खुदा बनाया ॥ आगया जमाना मुझे फरामोशीमें ॥ छुटी गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ मौसम तो गुलाबीसे न कोई आला है ॥ दिल इसी इश्कमें मेरा मतवाला है ॥ चश्मोंने रंग अब लालीपर डाला है ॥ जामे जमसे बढकर मैका प्याला है ॥ ये संखुन जबांसे कहा गर्मजोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥ आबे है वामें कहां भला यः आब है ॥ दो जहांमें आला सबसे बनी शराब है ॥ वेद औ पुरान कुरानका यही जवाब है ॥ आजाब न इसको कहो ये बडा सबाब है ॥ पी बना-

रसीने सनमकी आगोशीमें ॥ छुट गई ये दुनिया आपसे बेहोशीमें ॥

ख्याल खुदाके दीदारकी शराब मैं पीता हूं–बहर छोटी।

शाकिया पिला सागरे दीद उस मुलका ॥ वहदत हो जिसमें भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ अब मये मुहब्बत आकर मुझे पिलादे ॥ और जाम तू अपनी दीदका मुझे दिला दे ॥ दिलसे दिल अपने जिगरसे जिगर मिला दे ॥ दीदार किदारुसे तू मुझे जिला दे ॥ गुल हो गुलशनमें मचे शोर कुल कुलका ॥ वहदत हो जिसमें भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ शौके शराबका भरके पैमाना ला ॥ इश्ककी सुराही हाथमें जाना नाला ॥ मय पिला मुझे उस नूरका मैखाना ला ॥ गुलशनमें गुलाबी रंग तू शहाना ला ॥ मालूम हाल हो नशेमें आलम कुलका ॥ वहदत हो जिसमें भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ मैं तुझे पिलाऊं तू मै मुझे पिलाये जब लुत्फ इश्कका खूब दूबदू आये ॥ मैं कहूं और दे तूभी यही फर्माये ॥ वोः बात हो जिसकी बात न कोई पाये ॥ कुदरतका करावा मेरे जाममें ढुलका ॥ वहदत हो जिसमें भरी वस्ल तुझ गुलका ॥ शीशे दिलमें भर दे तू मेरे अंगूरी ॥ इसलिये कि होवे दिलकी दूर कदूरी ॥ वो जलवा अपना दिखादे मुझको नूरी ॥ कहे बनारसी दिलकी मुरादको पूरी ॥ मै पीके चहकता रहे येः दिल बुलबुलका ॥ वहदत हो जिसमें भरी वस्ल तुझ गुलका ॥

ख्याल जो मेरे आखोंसे शराब टपकती है मस्तीमें वोः मैं पीता हूं–बहर छोटी।

चश्मोंमें भरा है रंग गुलाबी गुलका ॥ अश्कोंके पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ ये आंस मेरी वहदतका पैमाना है ॥ अब इसीको हमने समझा मैखाना है ॥ चश्मोंसे ज्यादा कोई न मस्ताना है ॥ देखो तो इसमें क्या रंग शाहाना है ॥ है भरा नशा आंखोंमें आलम कुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ जब चुयेंगे आंशू मेरी

चश्म गिरियांसे ॥ मै समझके हम पीवेंगे इन्हें जीजांसे ॥ मैखोरीका नहीं लेंगे नाम जबांसे ॥ रो रोके पियेंगे अश्क लबे बिरियांसे ॥ हुचकियोंसे मेरे होगा शोर कुलकुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ बादामभी ये हैं नरगिसके प्याले हैं ॥ देखा हमने ये पूरे मतवाले हैं ॥ ये नैन हमारे गुलशन गुलाले हैं ॥ मैके इनमें भर रहे नदी नाले हैं ॥ जब चाहे खुमके खुम दममें दे ढुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥ उस परीके आलम आंखोंमें छाया है ॥ इस बादेकशीसे अब दिल घबराया है ॥ मैसे ज्यादा अश्कोंमें मजा पायाहै ॥ मजमून ये देवीसिंहने नया गाया है ॥ है यही सखुन आशक सादिक बुलबुलका ॥ अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका ॥

ख्याल शराबका मुझको अपने हाथसे खुदा पिलाता हैं—बहर लंगडी।

मेरा जाम हर वक्त हरघडी दमपरदम शाकी भर दे ॥ मैखानेमें जो कुछ अब रहा है वोः बांकी भर दे ॥ इसीका मैं प्यासा हूं मेरे सागरमें कुल सागर भर दे ॥ और जहांमें जहां कुछ मिले वो तू लाकर भरदे ॥ मैं तो नहीं करनेका नहीं दिल खोलके तू दिलबर भर दे ॥ प्यारसे अपने मेरे प्यालेमें परी पैकर भर दे ॥

शैर—करूं मैं इसके तई जिस घडी खाली भर दे ॥
प्यारसे अपने मेरी आके तू प्याली भर दे ॥
जहांतक होवे तेरे पास कलाली भर दे ॥
सफेद जर्द गुलाबीमेंभी लाली भर दे ॥

रहूं सुर्खरू तेरे रूबरू अपनी मुश्ताकी भर दे ॥ मैखानेमें जो कुछ अब रहा है वोः बाकी भर दे ॥ अब तो दौर आया है मेरा तू जाये बिल्लूरी भर दे ॥ भर दे केतकीकी मै और इसीमें अंगूरी भर दे ॥

शीशे दिल दे साफ मेरा तू इसीमें मय नूरी भर दे ॥ भर दे कराबा सुराहीभी मेरी पूरी भर दे ॥

शेर–मरीजे इश्क हूं प्यारे मुझे दारू भर दे ॥
जिऊं मैं जिसके पियेसे मुझे वह तू भर दे ॥
खिचे हों जिस्में हर एक गुल वोः तू गुलरू भर दे ॥
रूह हो जिस्में तेरी मुझको वोः महरू भर दे ॥

करूं धूप कुल आलममें वो शोरये अशफाकी भर दे ॥ मयखानेमें जो कुछ अब रहा है वह बाकी भर दे ॥ रँगूं मैं अपना दिल मयसे तू इसीकी रंगीनी भर दे ॥ तलखभी भर दे तुर्श और तोफा शीरीनी भर दे ॥ लगाके दस्तरखान तू उसमें गिजा वोः नमकीनी भर दे ॥ शौक हो दिलमें मेरे तू इसीकी शौकीनी भर दे ॥

शेर–मैं तुझसे कुछ नहीं मांगूं शराब तू भर दे ॥
मिलाके उसमें वोः थोडा गुलाब तू भर दे ॥
आब जिस आबमें होवे वोः आब तू भर दे ॥
झलक हो दिलमें मेरे आफताब तू भर दे ॥

बनी रहे लाली दुनियामें अपनी अशफाकी भर दे ॥ मयखानेमें जो कुछ अब रहा है वह बाकी भर दे ॥ पास न आये गैर मेरी महफिल तू रिंदानी भर दे ॥ मस्त रहूं मैं सोहबते यारब मस्तानी भर दे ॥ बनारसीकी जबानमें बातें हक्क तू हक्कानी भर दे ॥ चश्ममें उसकी नूर तू अपना नूरानी भर दे ॥

शेर–मये वहदत जो तेरे पास है मुझको भर दे ॥
जो मांगूं एक मैं प्याला तो मुझे दो भर दे ॥
फिर तीसरा जो मैं मांगूं तो खुशी हो भर दे ॥
न दे तू गैरको प्यारे ये मुझे तो भर दे ॥

जो कुछ मेरा निकले वो आज तू सबकी बेबाकी भर दे ॥ मयखानेमें जो कुछ अब रहा है वो बाकी भर दे ॥

मय अंतहूरा जो जन्नतमें लोग पीते हैं वो मुझे खुदा यहां पिलाता है—बहर लंगडी ।

जन्नतमें जो सुना तो ह्वांपरभी वो सदाये हैं कुलकुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ मस्ताना मैं बनूं और मौला बने मेरा आकर साकी ॥ तो शीशेमें मैं एक कतराभी नहीं छोडूं बाकी ॥ बेहोशी आलमसे हो और उधरकी होवे मुश्ताकी ॥ कुल जहानमें मेरा फिर मचे वोः शोरे आफाकी ॥

शेर—खुमार उम्रभर उतरे नहीं आंखोंसे मेरे—नशेमें चूर रहूं ॥ सुरूर इस कदर होवे कि आसमांपे चढे—खुदीसे दूर रहूं ॥ जामें वहदत जो तू भरकर वोः मुझे आपसे दे—तेरे हुजूर रहूं ॥ मयकदेमें कभी जाऊं तो बैठूं पास तेरे—न तुझसे दूर रहूं ॥ जबां मेरी हर वक्त दहनसे यही करे है शोरो गुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ अजब खुदाकी कुदरत यह तलखी है बनी शीरिंनीसे ॥ जबांपे लज्जत ये देती हैं मिलकर नमकीनीसे ॥ और सुनो यक सखुन ये मैंने कहा है नुक्तेचीनीसे ॥ हैरां है सब रंग मय वहदतकी रंगीनीसे ॥

शेर—मरीजे इश्क जो हो तो उसकी जान है ये—ये है दारूये सफा ॥ करे जो हकका तसव्वर तो पूरा ध्यान है ये—ये देवे लौ उससे लगा ॥ दीनो दुनियाको बना है बडा ईमान है ये—सुनो तो मुझसे जरा ॥ न गब्र है और न हिन्दू न मुसल्मान है ये—ये तो है जाते खुदा ॥ करे सुर्ख रूह खुदाके आगे खिचे हैं जिसमें हरेक गुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ बहिश्तका चश्मा है और कौशरका पानी शराब है ॥ लाजवाब है कहां आवे है वांमें ये आब है ॥ खराब है वोः शख्स जो कोई इसको कहता खराब है ॥ आफताब है रोशनी इसकी आली जनाब है ॥

शेर–शीशये दिलमें इसे भरके तू आखोंसे मिला–देख इस रंगको तू ॥ बनाये जिसने जहांमें भला हैं रंग क्या क्या–वोही है तेरा गुरू ॥ कहे वो तुझसे कि मय पी तो उससे मुंह न चुरा–उसीसे कर ले वजू ॥ पीतेही इसको नजर आये वोः उसका जलवा–मिले गुलजारकी बू ॥ जाफरान केतकी मुश्क अंबर सब इसमें रहा है घुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वोः बिल्कुल ॥ हाथसे अपने गुलं-दाम तू मुझे गुलाबी भर भर दे ॥ किसीको होवे नहीं मालूम बात रहे दर परदे ॥ ये है बात पोशीदा इसके तईं तू जाहिर मत कर दे ॥ कहे देवीसिंह हम आशक रिंद तेरे हैं आवरदे ॥

शेर–जाम वो देके बुराईका कुछ अंजाम न हो–पिला तो ऐसी पिला ॥ नाम वो देके जहांमें कहीं बदनाम न हो–न करे कोई गिला ॥ दाम वो देके मेरा हाथ ये बेदाम न हो–मै दूँ मस्तोंको खिला ॥ काम वो देके जहांमें कोई बदकाम न हो–मोहतसिबसे न मिला ॥ बनार-सीको राजे निहां सब इसी सबबसे रहा है खुल ॥ पिऊं न क्यों मुल जो मुझको खुदा पिलाये वह बिल्कुल ॥

ख्याल तौहीद मयका आफताब मुझे पिलाता है–बहर खडी ।

जिधरको देखूं उधर रोशनी आफताबकी तमाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ चश्म नहीं हैं हमें खुदाने आप गुलाबी जाम दिये ॥ मये दीदके प्याले भरभर मुझे बरसरे आम दिये ॥ चली वह बादे सबा इस कदर हाथ हमारे थाम दिये ॥ तौभी परी पैकरने मेरे मुँह लगा वो आठों जाम दिये ॥ कहे जो इसको हराम उसका खाना पीना हराम है ॥ पिऊं न मय मैं क्यों कर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ एक तरफ आतिश भडके औ एक तरफ बारिश आब है ॥ मेरे दिलके मयखानेमें दोनों तरहका हिसाब है ॥ जिगरमें

शोला उठे और चश्मोंसे टपके शराब है ॥ जबां यही कहती है मेरी लज्जत इसकी लाजवाब है ॥ कुल जहानमें सुना हो तुमने मस्ताना मेरा नाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्यों कर जिंदा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ दिलमें गौर कर देखा तो फिर दौर हमारा आया है ॥ आज हमें शाकीने दुबारा सागर आप पिलाया है ॥ देख मेरी बदमस्तीको मोहतसिबने यह फर्माया है ॥ यह जोशे वहशत कहांसे तेरी नजरों बीच समाया है ॥ कहा ये मैंने आंख हमारी मय वहदतका गुदाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥ सुना सखुन मोहतसिबने यह तब उसके दिलमें होश हुआ ॥ या तो मने करता था मुझे या आपी वोः मयनोश हुआ ॥ चढा नशा जब इश्कका उसको जहांसे वोः बेहोश हुआ ॥ कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कहकर खामोश हुआ ॥ बनारसी कहे हमें तो इस दारूका पीना मुदाम है ॥ पिऊं न मय मैं क्योंकर जिन्दा रहूं मेरा यह कलाम है ॥

अपने जिस्मका मयखाना मये तौहीद वह मुझे पिलाता है—बहर खडी।

आतिश इश्ककी भडक रही है इस दिलके मयखानेमें ॥ मये मुहब्बत पिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ यकताईका आलम हो और वहदतका हो रंगभरा ॥ तुझ गुलकी हो खुशबू जिस्में वोः शराब तू पिला जरा ॥ गमकी होवें गिजा साथमें बहु खासा हो पास धरा ॥ और मार्फतका हो मीना करामातका काम करा ॥ आफताबकी होवे रोशनी मेरे दिल दीवानेमें ॥ मये मोहब्बत पिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ मस्तीका हो सुरूर हरदम बादे सबाभी चलती हो ॥ और गुलाबी मौसम हो रह गुलसे महक निकलती हो ॥ बजे बीन और रबाब वोः काफूरी शमांभी बलती हो ॥ जिस महफिलको देखके हर मोहतसिबकी छाती जलती हो ॥ भडक उठे शोलये नूर पहलूमें

मेरे शानेमें ॥ मये मुहब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ पास हमारे दिलबर हो फिर और सदाये कुल्कुल हो। जोशे दिलमें हो कह-कहाभी हो शोरोगुल हो ॥ शीशा सागर सुराही हो और गुलिस्तान गुंचे गुल हो ॥ हाथमें हो दिलबरका हाथ हर बातमें वो जिकरे मुल हो ॥ कबाबकी लज्जत हुई हासिल अपना जिगर जलानेमें ॥ मये मोह-ब्बत पिलादे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥ दीदार तेरा दारूसफा है जिसे मिला वो मस्त हुआ ॥ बदमस्तोंमें बेठ बेठकर बनारसी अल-मस्त हुआ ॥ चांदसा चेहरा देखतेही तेरा वो सूरज अस्त हुआ ॥ दस्तगीर वो हुआ के जिसका तेरे दस्तमें दस्त हुआ ॥ कहा ख्याल तौहीद मजा है इस्क मार्फत गानेमें ॥ मये मोहब्बत पिला दे साकी उल्फतके पैमानेमें ॥

मुझे कुलजहानमें अपने सिवा और नहीं दिखाई देता है—बहर लंगडी ॥

कहो किसे मैं देखूं देखा आलममें कुल हमीं तो हैं ॥ कहींपे गुल हैं कहींपर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं अनलहक बने कहीं मंशूर कहीं परदार हैं हम ॥ कहींपे सरमद कहीं सरलेनेको तलवार हैं हम ॥ कहीं शम्स तबरेज कहीं खुर्शीद उसीके यार हैं हम ॥ कहीं एक हैं पर देखो विना शुमार हैं हम ॥

शेर—कहीं लेला बने हम और कहीं मजूनकी सूरत हैं ॥
कहीं फरहाद बन बेठे कहीं शीरींकी मूरत हैं ॥
कहीं मसजिद कहीं मंदिर कहीं काबा कहीं किबला ॥
कहीं हम हैं नजूमी और कहीं ज्योतिष मुहूर्त हैं ॥

कहीं बने खामोश किसी जापर शोरो गुल हमीं तो हैं ॥ कहींपे गुल हैं कहींपर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ किसी जगहपर शरय कहीं बेशरयमें बोले हमीं तो हैं ॥ ॥ कहींपे स्याने कहींपर बोले भोले

हमीं तो हैं ॥ कहींपै आतिश आब कहींपर पडे फलोले हमीं तो हैं ॥ कहींपै रत्ती कहींपर माशे तोले हमीं तो हैं ॥

शेर—कहीं माह हैं कहीं अख्तर कहीं पर अब्र नैसां हैं ॥
कहीं हिन्दू हो बुत पूजें कहींपर हम मुसल्मां हैं ॥
गरज जिततेही दीन हैं कुल जहांमें अपनेहीं समझो ॥
मकां हैं लामकां हैं हम तो जाहरभी और पिनहाँ हैं ॥

कहीं बने मयखोर किसी नापर साकी मुल हमीं तो हैं ॥ कहींपै गुल हैं कहींपर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहींपै बन्दे बने कहींपर खुदा खुदाका नूर हैं हम ॥ कहींपै मूसा कहीं जलवा और कहीं कोहतूर हैं हम ॥ कहीं किसीके पास रहैं और कहीं किसीसे दूर हैं हम ॥ कहीं मलायक कहींपर परिस्तान और हूर हैं हम ॥

शेर—कहीं तनपर रमाये खाक हम बन बनमें फिरते हैं
कहीं सुमरण हैं हम और हम कहीं सुमरणमें फिरते हैं ॥
तुम अपने दिलमें मुझको गौर कर देखो तो मैं क्या हूं ॥
हमीं दम हैं हमीं हमदम हमीं हर मनमें फिरते हैं ॥

कहीं बने पेशानी कहीं उस रुखपर काकुल हमीं तो हैं ॥ कहींपै गुल हैं कहींपर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥ कहीं बादशाह बने कहीं पर आकर हुये फकीर हैं हम ॥ मुरीदभी हैं किसी जा और कहीं पीर हैं हम ॥ कहीं निशाना बने कहींपर कमां कमांके तीर हैं हम ॥ कहीं शमा हैं कहींपर परवाना गुलगीर हैं हम ॥

शेर—जिधर देखो उधर हमको हमीं हरजापै रहते हैं ॥
कहीं दरिया हैं हम और हम कहीं दरियामें बहते हैं ॥
तबक चौदाके ऊपर यक मकां है लामकां अपना ॥
वहां कायम हैं और हम वे ये सखुन इस जापै कहते हैं ॥

बनारसी कहे मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तो हैं ॥ कहींपे गुल हैं कहींपर आशके बुलबुल हमीं तो हैं ॥

जो सच्चा आशक है उसका मकां लामकां है—बहर छोटी।

लामकां आशकोंका नहीं कहीं मकां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ मालूम है मुझको जोके चीज निहां है ॥ वाकिफ हूं और कहता हूं वो यार कहां है ॥ हूं जईफ पर दिल मेरा बडा जवां है ॥ नाताकत हूं पर मुझमें बडी तवां है ॥ जहां फना है मेरे लेखे वोही अहां है ॥ जहाँ खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जहां खामोशी है वहीं पे शोरो फिगां है ॥ जहां सर्द है नारा वहीं आतिस सोजां है ॥ जहां हिज्र हैं उल्फतकाभी वहीं सामां है ॥ जहां लहर बहर है वहीं बडा तूफां है ॥ क्या कहूं मैं कहती मेरी यही जबां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ हूं लिबास पहने पर यह तने उरियां है ॥ बस्तीको समझता हूं मैं ये वीरां है ॥ जहां मुसल्मीन है वहींपे हिन्दुस्तां है ॥ मसजिदमें मेरे उस बुतका बना निशां है ॥ आशककी आह है यही तो एक अजां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥ जिन्दा है वही जो जानसेभी हेजां है ॥ करता है सैर वोः इश्कमें जो हैरां है नादानकोभी कहता हूं मैं वोः इंसाँ है ॥ येः अक्ल है मेरी और यह फहम कहां है ॥ कहे बनारसी हर मिसरा कुरां है ॥ जहां खुदा है मस्तोंका दिल सदा वहां है ॥

अपना जो जिस्म है वही अव्वल देहली शहर चलता फिरता है—बहर लंगडी।

शहर है देहली एक जगह मैंने चलती फिरती देहली ॥ ये है वो देहली कि जिससे रोशन है बिल्कुल देहली ॥ चश्मा गोश बीनी मुह

दन्दाँ जबां ये इसकी वस्ती है ॥ शिकम वो सीना दस्त पा दुरुस्त मनमें मस्ती है ॥ यादे इलाहीमें जिस जिसकी यारो चश्म बरसती है ॥ आंख उसकी हमेशा करती हक परस्ती है ॥ आदमके दमसे रोशन गुलजार ये बागे हस्ती है ॥ बेश है कीमत इसीकी और जिन्स सब सस्ती है ॥

शेर–ये वो देहली है इसकी सेर कुछ फुकराही करते हैं ॥ औ दुनियादार जितने हैं वो उनका दमही भरते हैं ॥ फकीरी वोः है इसमें जो कदम दमभरभी धरते हैं ॥ मिले मौलासे अपने फरत्रमें पूरे उतरते हैं ॥ इसी वास्ते मैंनेभी सूरत फुकराओंकी यह ली ॥ ये है वो देहलीके जिससे रोशन है बिल्कुल देहली ॥ आदमका है जिस्म इसे तू समझ ये दिल्लीका दिल है ॥ करे इबादत नहीं तो येभी पत्थर औ सिल है ॥ अकलसे इसको देख तो ये तन आब हवा आतिश गिल है ॥ इसीमें मौला है बैठा अलग और इससे शामिल है ॥ विना इबादतके तो जिस्म ये बना छछूंदरका बिल है ॥ बडी है बदबू और इसमें लाख वजहकी किलकिल है ॥

शेर–है जिसके पासमें कुछ धन वो तो गफलतमें सोता है ॥ जो मुफलिस है वो तो खानेही और पीनेको रोता है ॥ कोइ कहता ये बेटा है ये नाती है ये पोता है ॥ कोई कहता मेरे आगे तो कुछ नहीं है न होता है ॥ कर सद्गुरुका भजन जो तूने काया कंचन गेहली ॥ ये है वो देहली के जिससे रोशन है बिल्कुल देहली ॥ ऐसी देहली कहां मिलेगी फिर तुझको हरबार भला ॥ अब जो मिली है तो तू कर दे इसको गुलजार भला ॥ तुरुम वोः इसमें बोके जिसमें पैदा नहीं हो खार भला ॥ यादे इलाही तू कर और इसकी देख बहार भला ॥ छोड

कुटुंब परवार तू हो जा फकीर और मनमार भला ॥ भला ये ना हो तो दिलमें रहम तो कर वो यार भला ॥

शैर—ये दो बातें हैं नेकीकी जो करना है तो तू कर ले॥ नहीं चल छोड दिल्लीको निकल अपना अलग घर ले ॥ जो मरना है तुझे तो मौतके पहलेही तू मर ले ॥ न कर दिलमें गुरूरे जिस्म तो इसका तू दुख हरले ॥ उसके नामकी अपने तनपर पहर ले अब कफनी सेहली ॥ ये है वो देहली के जिससे रोशन है बिल्कुल देहली ॥ खुदाने इस देहलीका बनाया है वो शाहनशाह तुझे ॥ बख्शा तुझको है ये तन तख्त बताई राह तुझे ॥ तू इसको पहचान अगर्चे हो कुछ खूब निगाह तुझे ॥ इसीमें उसका है जलवा देख जो हो कुछ चाह तुझे ॥ नहीं तो ये लुट जायगी करदेगी खूब तबाह तुझे ॥ बिना इबादत करे क्या जाने क्या अल्लाह तुझे ॥

शैर—बिना उससे तसव्वर फिर तू चौरासीमें जायेगा ॥ कहां जायेगा क्या जाने वोः तुझको क्या बनायेगा ॥ काल जिस वक्त आकरके तुझे धक्का लगायेगा ॥ जडी बूटी दवा हुक्मां न तेरे काम आयेगा ॥ बनारसी कहे हर हर भज इसलिये ये है उसकी देहली ॥ यह वो देहली के जिससे रोशन है बिल्कुल देहली ॥

सिफत खुदाके फकत चेहरेकी—बहर शिकस्ता।

वो नूरे रोशन कमरसे बेहतर तबक तबकपर खिला उजाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥ वो जुल्फ उसका अगर्चे देखे तो पेंच खाये चमनसे सम्बुल ॥ हरेक बलमें हैं उसके छलबल वो दामे उल्फत है उसकी काकुल ॥ वो गेसू उसके तो मुश्के चीं हैं गोया गुलिस्तांमें सोसने गुल ॥ या हैं वो अबरेसिया फलकपर या हैं आयते कुराने बिल्कुल ॥ फसा है उसमें यह तायरे दिल अजीब फंदा है मुझपे डाला ॥ क्या ताबो ताकत गर

उसको देखे मेरा वोः दिलबर है सबपै बाला ॥ है नौजवानीमें वो पेशानी और उसका माथा मेहरसे रोशन ॥ वो चीने उसकी किरन हैं खुरकी चमक दमकमें कमरसे रोशन ॥ और वो सफाई हुस्न खुदाई हरेक जिन और वशरसे रोशन ॥ औ वो पसीना गोया नगीना हरेक आबे गौहरसे रोशन ॥ सुनी है उसकी सिफत ये जिसने झुकाके माथा जमींपै डाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥ वो अबरू दोनों झुके हैं उसके गोया कमां यकता है खिंचीसी ॥ औ तीरे मिजगां चढे हैं जिसपर नजर ये किसपर है अब कहरकी ॥ अगर खफा होकर उस सनमने जराभी अपनी वो भौं सिकोडी ॥ तो गिर पडे लाखों सर जमींपर लगी न यक पलभी उसमें देरी ॥ या हैं वो तेगे दुदम चमकते या खंजरे बुरां है निकाला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥ वोः चश्म आहू अगर्चे देखे तो आंख हरगिज न हो मुकाबिल ॥ औसर झुकाकर खडा हो नर्गिस उसीकी आंखों पै होके माइल ॥ वो खूनी नैना और टेढी चितवन पडे जिधरको तो क्या हो हासिल ॥ कोई हो मुर्दा कोई तडपता कोई सिसिकता औ कोई बिस्मिल ॥ औ मस्त दोनों पिये हुये मय भरे नशेमें लिये हैं प्याला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वोः मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥ वो बीनी उसकी अलिफकी सूरत जो उसको देखे कहे हो अल्ला ॥ फडक वो नथुनोंकी इस कदर है कि दिल तडपता है मेरा वल्ला ॥ लभाये शीरींमें है वो लज्जतके ओठ चाटें हरेक शौदा ॥ वो बातें उसकी हैं भोली भाली न ऐसी बोली कहीं हो पैदा ॥ सुने अगरचे जो गोश करके औ उसके बातोंकी फेर माला ॥ क्या ताबो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥ कभी अगर्चे वो हँसके बोले तो चमके उस गुलके ऐसे दंदां ॥

जिगर गोहरका छिदे जो देखे औ दांत पीसे लाले बदकशां ॥ ये सिफत सुनतेही खून सूखा विका बेकदर जहांमें मर्जा ॥ और बर्क ऐसी गिरी तडप कर कि होश उसका हुआ परेशां ॥ बयां क्या करूं दहनका उसके हुआ तंग दिल न बोला चाला ॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥ ये फकत चेहरेकी यक सिफत है जो अक्ल अपनीमें कुछ था आया ॥ बयां वो मैंने किया जबांसे पै भेद उसका जरा न पाया ॥ कोई किताबें बनाके थक गये किसीने सीखा किसीने गाया ॥ हजारों मुल्लां करोडों स्याने कोई इमतहां न उसकी लाया ॥ फजल उसीका हुवा तो देखा बनारसीने वोः वारी ताला ॥ क्या तावो ताकत गर उसको देखे वो मेरा दिलबर है सबपै बाला ॥

ख्याल उलटा मतलब सीधा मुश्किल-बहर लंगडी ।

बुतासे मैंने कुरान सीखा काबेमें पोथियोंकी बात ॥ दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥ जब मुझसे आ पडी लडाई भाग गये तो जीता जंग ॥ जख्म जिगरके हुये आराम लगे जब तीरो तुफंग ॥ बेहोशी हुई दूर लगा मय पीने मयखोरोंके संग ॥ अजब इश्कका रास्ता उलटा और सीधा है ढंग ॥ जोरू खसम मर गये तो शादी हुई खुशीसे चढी बरात ॥ दीनसे जब मैं बना बेदीन हुआ फिर खुदाकी जात ॥ गदा हुआ तो भीख न मांगी लुटाय सबी खजानेको ॥ पादशाह जो बना मुहताज रहा हरदानेको ॥ जहांको जिसने तर्क किया तो पाया असल ठेकानेको ॥ जीते जी जो मरा वह जीता सबी जमानेको ॥ मिली ऐश अशरत मुझको जबसे अपनी खोई औकात ॥ दीनसे जब मैं बना बेदीन हुआ फिर खुदाकी जात ॥ मसजिदमें नाकूस बजाऊं मंदिरमें देता हूं अजां ॥ बुतखानेमें करूं सिजदा तो हो दंडवत वहां ॥ जिसकी कुछ सूरतही नहीं देखा

तो वही है नूरे जहां ॥ इसके मायने कहूं किससे यह है राजे निहां ॥ हुआ मुझे आराम उठाली सरपर जबसे कुल आफात ॥ दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥ सरको अपने बेचके उस आफते इश्कको मोल लिया ॥ सौदाई मैं बना तो वो सौदा अनमोल लिया ॥ देवीसिंह कहे बनारसीने भेद इश्कका खोल लिया ॥ यक राईसे कोह दर कोहको बिल्कुल तोल लिया ॥ हुये जमानेसे जो जिच्च तो की बाजी शतरंजकी मात ॥ दीनसे जब मैं हुआ बेदीन बना फिर खुदाकी जात ॥

खुदाकी नजरमें सब कुछ है वो जो चाहे सो करे—बहर लंगडी।

एक नजरमें शम्स है उसके और कमर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें है आतिश आबेतर एक नजरमें है ॥ एक नजरमें अमृत उसके और जहर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें कहर और लहर बहर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें सितम है उसके और मेहर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें है मोहनी और सेहर यक नजरमें है ॥ यक नजरमें पीरो पयम्बर जिनो बशर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें है आतिश आबेतर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें बेखतरी और खौफ खतर यक नजरमें है ॥ यक नजरमें नफा है और जरर यक नजरमें है ॥ यक नजरमें काबा है और बुतोंका घर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें इशारा तेगोतबर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें खफगीभी है नेक नजर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें है आतिश आबेतर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें जेर है उसके और जबर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें नातवां जोरावर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें गफलत है बो और खबर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें मुफलिसी जहांका जर यक नजरमें है ॥ यक नजरमें जिंदगानीभी मौतका डर यक नजरमें है ॥ यक नजरमें है आतिश आबेतर

यक नजरमें है ॥ एक नजरमें भुला दे वोः दिखला दे दर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें जीस्त है और महशर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें देवीसिंह उसका दफतर यक नजरमें है एक नजरमें कुल जहां दिल दिलबर एक नजरमें है ॥ एक नजरमें बनारसीभी मिनो चेअर यक नजरमें है ॥ एक नजरमें आतिश आबेतर यक नजरमें है॥

इश्क जो है सो दुःखका घर है परन्तु इस दुःखमें सुख बडा है–बहर लंगडी।

इश्क है खानये रंजपर इस खानये रंजमें राहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ इश्कमें जी जाना मैंने समझा है यही जी जाना है ॥ जाना जानाके दरपर जान बेचकर जाना है ॥ उल्फतमें रुसवा होना बस यही आबरू पाना है ॥ नादांको दिल दिया जिस जिसने वोः आशके दाना है ॥

शेर–फसे जो इश्कके फँदेमें वो दुनियासे कुल छूटे ॥
मजे लूटे उन्होंने जिनके सब घर दर गये लूटे ॥
हमें वो खार देते हैं जो गुलशनमें है गुल बूटे ॥
खटकते हैं मेरे दिलपर वो कांटे लगके जो टूटे ॥

इश्कके बीमारोंकी रोशन आलम बीच शबाहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ जिगर जलाना आशकके हकमें ये बडी तरावट है ॥ आतशे गमसे अब अपनी आठों पहर लगावट है ॥ तनकी उरियानीको हम समझे ये खूब सजावट है ॥ इश्कमें बिगडे जो आशक उन्हींकी बनी बनावट है ॥

शेर–हुआ चो इश्कमें मुफालिस वही जरदार होता है ॥
कटाये सर जो उल्फतमें वही सरदार होता है ॥
जो दिलको छीन ले दिलबर वही दिलदार होता है ॥
और आंखें बंद कर देखे उसे दीदार होता है ॥

जोरावर है वही इश्कमें जो के हुआ न काहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ कैद जहांसे छूटे वही जो दामे मुहब्बतमें फस जाय ॥ निकले दोजखसे वोः जो इश्ककी आतिशमें धस जाय ॥ किसीके वशमें कभी न हो गर वो दिलवर दिलमें वस जाय ॥ करे उसीसे रसाई कभी न जिस गुलका रस जाय ॥

शेर–मुहब्बतमें जो दिल दागे वही बेदाग होता है ॥
नफा होता है उसको जो के जर उल्फतमें खोता है ॥
वो हँसता है सदा जो उस सनमके गममें रोता है ॥
मिलाये तनको मट्टीमें वो अपने मनको धोता है ॥

मजा इश्कका यही कभी राहत है कभी कराहत है ॥ लुत्फ उसी को हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥ गम खाना आशकके हकमें ये न्यामतसे बेहतर है ॥ हर यक मकां हैं उसीके जिसका कहीं न घर दर है ॥ उसे खोफ नहीं किसीका है जिसको उस दिलवरका डर है ॥ अपने आपको जो पहचाने वही अल्ला अकबर है ॥

शेर–पढे नहीं इल्मका दफतर अलिफ बे ते न हम सीखे ॥
न तख्ती हाथसे पकडी न कुछ छूना कमल सीखे ॥
फकत इस इश्कके मकतबमें हम नामे सनम सीखे ॥
सिवा उल्फतके और हम कुछ नहीं अपनी कसम सीखे ॥

देवीसिंह कहे बनारसी तेरी जबांमें बडी फसाहत है ॥ लुत्फ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है ॥

इश्कमें रंज न हो तो कोई इसको न करे–बहर लंगडी।

गर्चे इश्कमें रंज न होवे तौ कोई इसका नाम न ले ॥ आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ लाखो सदमे सहे जिगर पर जबांसे निकले आह नहीं ॥ चाहनेवालेको रंजके सिवा किसीकी चाह नहीं ॥ गममें खुशी होवे सोई आशक किसीकी रक्खे ख्वाह नहीं ॥ सिव

इश्कके दूसरी तरफको करे निगाह नहीं ॥ जो कि लुत्फ है रंजमें ऐसा मजा कोई वल्लाह नहीं ॥ वोः क्या जाने जो इसकी लज्जतसे आगाह नहीं ॥ जफाको समझे वफा अलमको छोड और कोई काम न ले ॥ आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ जिसने इश्कको चाहा उसने गम खाना अखत्यार किया ॥ सिरपर आरे चले तिसपरभी इन्कार नहीं किया ॥ आशक उसीको कहिये जिसने दिलो जान निसार किया ॥ दाग इश्कसे जिगर सोना अपना गुलजार किया ॥ दममें दमको दम करके अपने दमको दमदार किया ॥ जिगर जलाया तो उससे रोशन दिल दिलदार किया ॥ चाहे मरे चाहे जिये इश्कसे अलग कहीं विश्राम न ले ॥ आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ दर्जा इश्कका हुआ रंजसे गर इसमें कुछ रंज न हो ॥ फिर कोई इसको करे क्यों यह जवाब तुम हमको दो ॥ आशक था मनशूर दारपर चढा जान आपनी दी खो ॥ लुत्फ उठाया इश्कका रंजको राहत समझा जो ॥ आह इश्कने किये हैं क्या क्या सितम कहूं मैं क्या इसको ॥ गमके दरियामें जिसने लाखों आशक दिये डुबो ॥ मुझसेभी कहता है यही तू चैन सुवः और शाम न ले ॥ आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥ मजा इश्कका रंजसे है गर इसमें रंज नहीं हो होता ॥ फिर कोई आशक अश्क अपनेसे मुँह क्यों कर धोता ॥ क्यों मरता शीरीं-पर कोहकन और मजनूं क्यों कर रोता ॥ अपने सरको हाथसे वो सरमदभी क्यों खोता ॥ बनारसी गर मजा न पाता तुख्म मोहब्बत क्यों बोता ॥ बहरे इश्कमें लहर देखी तो फिर मारा गोता ॥ मैं सलाम करता हूं रंजको चाहे वो मेरा सलाम न ले ॥ आशक वो है रंजके सिवा कहीं आराम न ले ॥

मैं ये कहता हूं कि तुम आपेको पहचानो तो तुम्हीं सब कुछ हो—बहर लंगडी।

मैंने ये पूंछा के बताओ मियांजी आप कहांके हो ॥ किस

बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो ॥ नामां आपका क्या है कौनसे दीन और किस ईमांके हो ॥ जरा तो बोलो आप दीवाने किस दीवांके हो ॥ हिन्दू हो या मुसल्मीन देहली या तुरकस्तांके हो ॥ पण्डित हो या मोलवी या तुम हाफिज कुरांके हो ॥ चीनके हो या महाचीनके या ईरां तूरांके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो ॥ इस दुनियामें आये कहांसे जमींके या आसमांके हो ॥ चश्मके घायल या मायल तुम जुलफे पेंचांके हो ॥ किसपर दिल है फिदा तुम आशक हूरके या गिलमांके हो ॥ सच तो कह दो के जख्मी तुम तीरे मिजगांके हो ॥ आपने कुछ नहीं किया बयां तुम जबांके या बेजबांके हो ॥ किस बस्तीके और किस गांवके कौन मकांके हो ॥ फिक्र आपको क्या है बयां कुछ करो या तुम बे बयांके हो ॥ किस गुलशनके हो गुल या खार कोई बीरांके हो ॥ सरसे पैर तक देखा तो तुम अजब सरो सामांके हो ॥ शक्लभी आदमकी हो फरजंद कोई इंसांके हो ॥ ये मैं पूछता हूं तुमसे कुछ वाकिफ राजे निहां के हो ॥ किस बस्तीके और किस गांवके कौन मकांके हो ॥ खुदा है तुममें तिसपरभी तुम वाकिफ नहीं दो जहांके हो ॥ मिलो जो उससे तो फिर तुम मालिक कौनो मकांके हो ॥ ऐसी करनी मत करना जो यहांके हो न वहांके हो ॥ देवीसिंहका कहा मानों तो नामो निशां के हो ॥ जवाब इसका दो जो लडनेवाले उस मैदाँके हो ॥ किस बस्तीके और किस गाँवके कौन मकांके हो ॥

जिसके दिलपर हर वक्त खुदाकी याद रहती है उसका रास्ता दुनियासे है–बहर छोटी।

जिसके दिलपर दिलबरका नाम बस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ सर्दीमें आशक पीते हैं सरदाई ॥ गर्मीमे शंखिया खाय रहे गर्माई ॥ बारिशमें सूखें धूपमें हो हरियाई ॥ ऐसे

मस्तोंसे सबी बात बनि आई ॥ वो दागको समझें दिलपर गुलदस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ वो दिनको सोवें सारी रात भर जागें ॥ शूरोंसे लडें गिदीकों देखकर भागें ॥ नहीं मिले तो मांगे भीख मिले तो त्यागें ॥ ऐसे शाहोंसे हरेक बादशाह मांगें ॥ अनमोल है सौदा वोभी उन्हें सस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ मंदिरको तोडकर मसजिदको चुनवावें ॥ मसजिदको तोडके मयखाना बनवावें ॥ खेतीको सुखा ऊपरमें अन्न उपजावें ॥ आशक सादिक जो चाहे कर दिखलावें ॥ ऐसे मस्तोंको कोई नहीं हँसता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥ जब पेट भरे तब खानेको मँगवाते ॥ और भूख लगे तो कुछ भोजन नहीं खाते ॥ मूरखसे सीखें पण्डितको समझाते ॥ कहे बनारसी हम नई नई बातें गाते ॥ इस कदरसे जो कोई अपना दिल कस्ता है ॥ उन मस्तोंका देखो उलटा रस्ता है ॥

जो खुदाका आशक हो और उसपर खुदाभी आशक हो तो बंदा खुदा एक है—बहर छोटी।

आशकपर आशक जब वो सनम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः नूर है तो आशकभी जलवेगर है ॥ वोः दीद है तो दिल अपना उसकी नजर है ॥ लामकां हैं वोः तो मेरा कहीं न घर है ॥ वोः दिल है तो ये दिल उसका दिलबर है ॥ जिस वक्त कयामतमें वोः बहम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः गुलशन है तो आशक उसका गुल है ॥ वोः हर जा है तो आशकभी बिलकुल है ॥ वोः सुरूर आशक बहदतकी मुल है ॥ वोः धूम है तो आशकभी शोरो गुल है ॥ जिस वक्त यह दम उसका हमदम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः जहां है तो आशकभी जहां तहां है ॥ वोः कलमा है तो आशकभी कुरआं है ॥ जहां जिक्र है आशककाभी वहीं बयां है ॥ वोः निहां है तो

आशक हर जा पिनहां है ॥ आशकका दम जब उसमें दम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥ वोः बेरुबाहिश तो आशक बेपरवा है ॥ वोः मिला है तो कुछ आशक नहीं जुदा है ॥ वो दुई नहीं तो आशकभी यकता है ॥ ये देवीसिंहका सखुन बडा सच्चा है ॥ कहे बनारसी जब उसका करम होता है ॥ दोनोंका रुतबा एक रकम होता है ॥

कलियुगकी स्तुति जो जैसा करे वो वैसा पावे—बहर छोटी।

इस कलियुगमें कल देगा कल पावेगा ॥ कल पावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥ नरदेही पाकर ध्यान सांईका धरना ॥ दो दिनका जीना देख अंत है मरना ॥ तज बुरे काम भवसागर पार उतरना ॥ दुःख देगा तुझकोभी होगा दुःख भरना ॥ नेकोंको मजा नेकीका नेकी करना ॥ मत करे बदीकी बात खुदीसे डरना ॥ करनीका फल संसार सकल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

जो कुवां किसीके खातर खोदे भाई ॥ हो उसके लिये तैय्यार फलक्से खाई ॥ गुल न कर पराया चिराग अरे सौदाई ॥ रही उसकी रोशनी जिसने उधर लौ लाई ॥ कर साधु संतकी टहल तो मिले भलाई ॥ कि जिसने खिदमत उसने अजमत पाई ॥ जो सेवा करेगा मेवा तू कल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्यों कर कल पावेगा ॥

क्यों गफलतमें रहे भूल उसे पहिचानों ॥ मत बुरा किसीका करना दिलमें ठानों ॥ मैं कहूं बात नसीहतकी भवें क्यों तानों ॥ अब करो भलाई आगे खाक मत छानों ॥ यह कलियुग नहीं इसको करयुग कर जानों ॥ यहां मिले हाथका हाथ सत कर मानों ॥ जो आज करेगा वैसा कल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

जो करें किसीकी मुश्किलको आसान ॥ उनकी मुश्किल आसान करें भगवान ॥ नुकसान पराया करके करें गुमान ॥ उनका नहीं रहत

जगमें नाम निशान ॥ जो मिला चाहो साहबसे छोड अभिमान ॥ पांचो इंद्री वश करके लगावो ध्यान ॥ उस मारगकी जब तू अटकल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

तप कालियुगका है बडा यह राज कमाया ॥ किया ऐसा अदल जुलमी नहीं रहने पाया ॥ वोः तुर्त मिटा है जिसने जिसे सताया ॥ मनशा फलती है जबसे कलियुग आया ॥ है श्रीकृष्णकी देवीसिंहपर साया ॥ यह कलयुग नहीं करजुगका ख्याल है गाया ॥ इन नुकतोंको क्या बे अकल पावेगा ॥ कलपावेगा वोः क्योंकर कल पावेगा ॥

हर घडी परमेश्वरको भजना इसीमें भला है—बहर छोटी।

दमपर दम हर भज नहीं भरोसा दमका ॥ एक दममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ है जब तकसे दममें दम भज हर हर तू ॥ दम आवे ना इसकी आस मत कर तू ॥ एक नाम प्रभूका जप हिरदेमें धर तू ॥ नर इसी नामसे तर जा भवसागर तू ॥ बल करता थोडे जीनेके खातर तू ॥ वोः है साहब जल्लाल जरा तो डर तू ॥ वहां अदल बडा है हिसाब हो दम दमका ॥ एक दममें निकल जायगा दम आदमका ॥ जीनेका फल यह रामनाम जपना है ॥ जब घेरे काल तो कहां जाय छिपना है ॥ इस नरको एक दिन आतिशमें तपना है ॥ दम जाय निकल तन मट्टीमें खपना है ॥ एक दमका बसेरा दुनिया रैन सपना है ॥ टुक देखो आंखें खोल कौन अपना है ॥ सब झूठा माया मोह कुटुंब हमदमका ॥ एक दममें निकल जायेगा दम आदमका ॥ जो आया जगमें अमर नहीं रहनेका ॥ नरमदा घाघरा अटक नहीं बहनेका ॥ कर लाख जतन तू मायाके गहनेका ॥ पर मिले वही जो है तेरे लहनेका ॥ हरभक्त कभी नहीं जमका दंड सहनेका ॥ कर नेकी कोई बुरा नहीं कहनेका ॥ इस जगमें नाता हैगा बोलते

दमका ॥ एक दममें निकल जावेगा दम आदमका ॥ एक दममें दम आदमका निकल जावेगा ॥ फिर पीछे हाथ मलमलके पछतावेगा ॥ जब श्रीकृष्णकी शरणागत आवेगा ॥ तो जीवन मुक्ति इस जगमें पावेगा ॥ कहे देवीसिंह जो हरके गुण गावेगा ॥ वोः प्राणी जगबंधनसे छूट जावेगा ॥ कुछ कयाम जगमें नहीं सुनो इस दमका ॥ एक दममें निकल जावेगा दम आदमका ॥

इस जगत्में सबसे बुरा मांगना है समझके मांगे तो भला—बहर छोटी।

इस जगमें जब लग अपनी पार बसाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ इस जगमें मांगना बडी पापकी पोटे ॥ मांगन गये बलके द्वार राम भये छोटे ॥ सुना और मांगना दुबले होगये मोटे ॥ मांगनकी बराबर और कर्म नहिं खोटे ॥ इस नरको मांगना जो चाहे कहलाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ मरना बेहतर यह बात भूल नहीं कीजे ॥ सब जाय बडप्पन बोझ बकर सुन लीजे ॥ जप जोग तपस्या पुन उस दम सब छीजे ॥ जब नरने मुखसे कहा हमें कुछ दीजे ॥ है पूरा मौतका वक्त आंख शरमाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ जब गर्जबंदने अपनी शर्म गमाई ॥ काला मुँह करके गया मांगने भाई ॥ जो होते उसके उसने राह बताई ॥ उसकी तो होती इस जगमें रुसवाई ॥ फिट मारा होके चला मनमें पछताये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ जब वक्त पडे तो जांय मांगने सूरे ॥ हो जांय निवाणें बडे दिलके मगरूरे ॥ जो हैंगे आशना धनी बातके पूरे ॥ अपनेसे जादा समझें उसकी जरूरे ॥ परस्वारथको कोई विरला शीश कटाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ दुनियामें देना मर्दोंका साखा है ॥ देकर प्राणीने अंत प्रेम चाखा है ॥ है बुरा मांगना वेदोंने भाषा है ॥ मैं मांगू हरसे मेरी यह अभिला-

षा है ॥ तूं मांग देख पर विना भाग नहिं पाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये ॥ मेरी अर्ज सुनों तुम श्रीकृष्ण शुभ रास ॥ मत भेजो मांगने मुझे किसीके पास ॥ अपने घरसे मेरी पूरी कर दे आस ॥ यह कहे देवीसिंह मैं हूं तेरा दास ॥ सालगकी मीठी बानी सभा मन भाये ॥ मत कोई किसीके द्वार मांगने जाये॥

ख्याल शुद्ध वेदांत त्यागका त्यागदेह अभिमान छोड-बहर खडी।

देहभाव गया छूट आत्मारामको जबसे पहिंचाना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥ अहंग आत्मा स्वरूप है कुछ नहिं देहसे काम मेरा ॥ शरीर तो है जड वस्तू चैतन्य आत्मा नाम मेरा ॥ रवी शशी अग्नी आकाशसे है परे निरंतर धाम मेरा ॥ अनंत अव्यय अविनाशी अद्वैत रूप शिव राम मेरा ॥ काया कर्मको त्यागके मैंने सत्य आत्माको माना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥ जीव ब्रह्म एकी स्वरूप है परंतु है अज्ञानका भेद ॥ अज्ञानी तो जीव बने औ ज्ञानी बनता ब्रह्म अभेद ॥ त्रैगुणसे जो रहित हैं उनकी कौन विधि और कौन निषेध ॥ जो चाहे सो करें वोः हैं वेदांतके कथिता ग्रथिता वेद ॥ चाहे वोः बोलें चाहे हँसे औ चाहे लगें गाने गाना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥ सत् आत्मा शरीर मिथ्या इस विधिकर है जिसको ज्ञान ॥ वोः प्राणी है आपी ईश्वर ब्रह्ममें उसमें भेद न जान ॥ काम क्रोध मन लोभ मोह अहंकार कपट तज मान गुमान ॥ मिले ब्रह्ममें ब्रह्मरूप होय करके सब छोडा अभिमान ॥ ज्यों पानीसे उठे बुलबुला फिर जलमाहीं समाना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥ जल तरंग है एक नाम हैं दो इनको एकै जानो ॥ इसी तरहसे अपने जीवको पारब्रह्म कर पहिनाचो॥ जीव ब्रह्ममें भेद नहीं है वेद वाक सुन लेव कानो ॥ द्वैतभाव

देव छोंड रहो अद्वैत कहा मेरा मानो ॥ काशीगिर ज्योतिःस्वरूपने तत्त्व ज्ञान यह बखाना ॥ निराकारमें निराकार हो मिले छुटा आना जाना ॥

प्राणायाम महायोगसिद्धांतदर्शन निराकारका-बहर खडी।

योगी वही जो सकलमें बैठे देखे दसवें द्वारको वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ नाचे गावे गाल बजावे ध्यान आत्मामें धरके ॥ सबमें रहे और सबसे न्यारा पूरण होय योग करके ॥ निर्भय होके विचरे निशिदिन कबहूं नहिं चले डरके ॥ अपने आपमें आपको देखे धन भाग हैं वानरके ॥ जब वह काया त्यागे तब फिर पहुँचे परले पारको वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ प्रसन्न चित्त और बुद्धि निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने ॥ द्वैत भावसे अलग रहे अद्वैत ज्ञानको बखाने ॥ समदर्शी और शुद्ध समाधी अपनेको आपै माने ॥ जीव ब्रह्ममें एक भाव कर अपने मनमें पहिचाने ॥ भूमि भार उतारन कारन धरे आप अवतारको वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ त्रैगुणको जीते और चवथे पदपर अपनी करे मती ॥ संपूरण सृष्टीको भोग जो करे वही है बालजती ॥ चर अचरमें अपने आपको देखे उसकी होय गती ॥ आपी पिता और आपी पुत्र है आप स्त्री आप पती ॥ चाहे करे वोः प्रलै और चाहे रचे सकल संसारको वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥ पुण्य पापसे अलग रहे दुःख सुखका नहीं विचार करे ॥ ब्रह्मज्ञानकी चर्चा अपने मुखसे वारंवार करे ॥ आतमदर्शी होय तो अपने सब कुलका उद्धार करे ॥ देवीसिंह यह कहे वोः जो चाहे सो आप करतार करे ॥ चाहे करे वोः नर पैदा

और चाहे बताये नारको वोः ॥ कारज करे जगत्के सब और लखे अलख करतारको वोः ॥

ख्याल अमरनाथजीका-बहर लंगडी ।

अमरनाथने अमर कथा जब कही सुने थी पार्वती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन बैठे कैलासपती ॥ अविनाशी कैलाशी काशी उत्राखंडमें बसाई ॥ बैठ गुफामें गवरको अमर कथा जब सुनाई ॥ अमृत वाणी सुनी उमाके नेत्रमें निद्रा भर आई ॥ वही कथा तब एक तोतेके बच्चेने सुन पाई ॥ दिया हुँकारा शिवजीको शिव कहे अर्थ सब समझाई ॥ सुवा सुनेथा और ओ सोती थी गौरा माई ॥ पारब्रह्मका खेल उस घडी उस तोतेकी बढी रती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ हुई कथा संपूर्ण शिवने पार्वतीको बुलाया ॥ उठीं गौरजा कहा शिव मैंने कछु नहीं सुन पाया ॥ फिर शिवजीने कहा हुंकारा मुझको किसने सुनाया ॥ और तीसरा यहांपर कौन विधी करके आया ॥ चढा क्रोध शिव शंकरको करसे त्रिशूलको उठाया ॥ उसी घडी फिर वोः तोतेका बच्चा उडकर धाया ॥ दौडे शिव उसके पीछे वोः निकल गया कर सुमत मती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ तीन लोकमें उडा वोः तोता कहीं मिला नहीं ठिकाना ॥ उडते २ बहुतसा अपने मनमें घबराना ॥ पतिव्रता थी खडी करे स्नान उसीको पहिचाना ॥ दौडके तोता जाय फिर उसके मुखमें समाना ॥ वहां किसीका जोर चले नहिं क्योंकर हो उसका पाना ॥ फिर शिवजीने दिया वरदान कहा ये है स्याना ॥ वही हुये शुकदेव व्यासके पुत्र बडे थे यती सती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ अमर कथाका बडा महातम है जो कोई सुनने जावे ॥ श्रवण कियेसे होय वोः अमर नहीं मरने पावे ॥ चार वेद षट् शास्त्र अठारह पुराण सब इसमें आवें ॥ अमर कथाको आप शुकदेव सदा मुखसे गावें ॥ वोः पण्डित हैं

बडे कि जो कोई अमर कथाको सुनावें ॥ एक एक अक्षर सदा उस कथाके मेरे मन भावें ॥ जिस दिन शिवने कही कथा यह कौन बार तिथि कौन हती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन० ॥ काश्मीर है स्वर्गपुरी काश्यपकी अव्वल है काशी ॥ अमर द्वीपमें विराजें अमरनाथ शिव अविनाशी ॥ साल भरेमें लगता मेला श्रावणकी पूरणमासी ॥ करते दर्शन ऋषी और मुनि साधू और संन्यासी ॥ वही पुरुष जाने पाते हैं जिनकी करनी है खासी ॥ कहे देवीसिंह नहीं फिर वोः नर भुगतें चौरासी ॥ बनारसीने किये हैं दर्शन अब इस तनकी हुई गती ॥ उत्राखंडमें लगा आसन बैठे कैलासपती ॥

शरीरमें काशी आदि लेके सब तीर्थ हैं–बहर बराबरकी राग सोरठा।

ये कंचन काया काशी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ जहां ज्ञान गंगकी धारा ॥ जाको अंत न वारा पारा ॥ यामें गोविंदगुरू हमारा ॥ धर मनमें ध्यान विचारा ॥

तोडा–नाम नांव तैरें गंगामें केवट कृष्ण मुरार ॥ दंड डांड खेवें नौकापर हो जाय बेडा पार ॥ मन तो है सुन मणिकरणिका मनमें करो विचार ॥ इस तनमें हैं ताडकेश्वर ताडो होय उद्धार ॥

दोहा–जस जल साईं घाटपर शिवका जगे मशान ॥ आनंदकी अग्नी बले है ज्योतिरूप भगवान ॥ सुन मंत्र मुक्त होय खासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ है पूजा प्रयाग अक्षय वट ॥ कर पुण्य पाप जावें कट ॥ तू सुमती संकटाको रट ॥ कटें जन्म मरणके संकट ॥

तोडा–इस तनमें है भाव सोई है भैरवका थाना ॥ दया सोई है दुर्गा मैंने मनमें पहिचाना ॥ अगम निगम है अन्नपूरणा सब जगने जाना ॥ धर्म सोई धर्मेश्वर उनका सदा भजन गाना ॥

दोहा–शील सोई है शीतल कर हित चितसे पूजा ॥ विश्वरूप हैं

विश्वेश्वर और कोई नहिं दूजा ॥ है कृपा सोइ कैलाशी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ तुम बुद्धिविनायक जावो ॥ तन मनसे ध्यान लगावो ॥ और सुमति सामग्री लावो ॥ चित चंदन चरच चढाओ ॥

तोडा–इस मुखमें है वेद सोई है ब्रह्माकी बानी ॥ पांच इन्द्री पांच कोशमें वसी अवादानी ॥ पच्चीस तत्त्वका पचकोशीमें फिरते नर ज्ञानी ॥ दशों द्वारकी सैर करें हैं पूरे सैलानी ॥

दोहा–हाथ पाँव त्रैकोन है त्रयगुण है त्रैशूल ॥ सुमरणकी शक्ती बडी जिन रची सृष्टि मखमूल ॥ संतोष सोई संन्यासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥ इस तनमें बोध गया है ॥ कोइ ज्ञानी पुरुष गया है ॥ जिसे ब्रह्मका ज्ञान भया है ॥ वोः निशि दिन नित्य नया है ॥

तोडा–तेतिस कोटि देई देवते तन काशीमें रहें ॥ संत बडे गुणवंत अंत जो मन काशीका लहें ॥ सुनो इधर धर ध्यान छंद ये देवीसिंहजी कहें ॥ रामनामका सुमरण कर कर चरण प्रभुके गहें ॥

दोहा–कहांलों मैं वर्णन करूं तनमें है त्रयलोक ॥ वनारसी बैठा इसमें पढे गीताके श्लोक ॥ लगी हरीके भजनकी गासी ॥ यामें बोलत शिव अविनाशी ॥

सखियां श्रीकृष्णसे अपनी मनकी कामना करती हैं–बहर छोटी।

मन झोंके खा रहा झुमकोंकी झोंकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ तुम पारब्रह्म हो निराकार अविनाशी ॥ शिर देह धार क्यों हुये श्याम ब्रजजासी ॥ ओ प्रेम प्रीतिकी डाल गलेमें फासी ॥ सब मोहित कीं ब्रजवनिता कर लई दासी ॥ तुम तो कहते हम बाल यती संन्यासी ॥ फिर हमरे संग क्यों बने हो भोग विलासी ॥ नहिं लगता मन गीताके श्लोकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ तुम परमेश्वर हो हमसे भोग करो हो ॥ तुम कालके

काल और मृत्युसे नहीं डरो हो ॥ जिस वक्त वह मुरली अधरन बीच धरो हो ॥ सब ब्रजवनिताका पलमें प्राण हरो हो ॥ तुम प्रेम प्रीत रस रीतिसे हमें वरो हो ॥ अपनी गौको तुम हमरे पाँय परो हो ॥ हम तुम्हें छोडकर जाँय न परलोकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ वह विश्वकर्म्माने कंचन मंद्र बनाये ॥ तुम आप नचे औ हमको नाच नचाये ॥ शिव बनके गोपिका रहस देखने आये ॥ तुमने उनको लिया चीन्ह तो बहुत लजाये ॥ तुम अंतर्यामी सब घट घटमें छाये ॥ तुमरी मायाका पार न कोई पाये ॥ तुम विन अपना मन पडे बडे शोकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥ हम सब ब्रज बनिता गोलोकते आई ॥ सब हैं वेदोंकी श्रुती वेदने गाई ॥ तुम आदि अंतसे कृष्ण हमारे साईं ॥ है धन्य हमारे भाग्य जो कंठ लगाई ॥ कहे देवीसिंह और काशीगिरि गोसाईं ॥ हम बारबार श्रीकृष्ण तेरे बल जाईं ॥ कोई ऐसा हुआ अवतार न त्रैलोकोंमें ॥ दिल बिधा कृष्ण तेरी बालीकी नोकोंमें ॥

ख्याल निर्गुण—बहर छोटी।

जो धुनियां होय तो अपनी धुन तू धुनवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥ मा कहे कि बेटा मैंने तुझको जाया ॥ तू कैंहु उससे मैं आपमें आप समाया ॥ और बाप कहे मैंने तुझको सिखलाया ॥ दे जवाब यह सब जगत् है मेरा बनाया ॥ जो मैं कहता हूं इसी बातको गुनवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥ गर बहिन कहे के तू है मेरा भाई ॥ दे जवाब तू है कौन कहांसे आई ॥ सब झूठा कुटुंब परिवार और लोग लुगाई ॥ कोई नहीं है अपना सब उसकी प्रभुताई ॥ जो मेरा कहा तू मान तो हो निर्गुण वे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥ ले राम नामकी रुई उसे कर माफ ॥ भर

तनमें अपने यही है तेरा गिलाफ ॥ सौं तत्त्वके तागेसे मत समझ खिलाफ ॥ फिर लाख गुनः तू करे सब होवें माफ ॥ तू बाद बिनो-लेको इस दिलसे चुनवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥ धुनकी धुनकीमें तेजकी तांत चढाना ॥ ॥ धुन अपनी धुन हर वक्त कृष्णगुण गाना ॥ यह देवीसिंह और बनारसीका बाना ॥ जहाँ कलँगी तुर्रेका नहिं लगे ठिकाना ॥ वही वासुदेव वही निर्गुण वही सिरगुनवे ॥ कोई लाख कहे मत और किसीकी सुनवे ॥

कुरानके जो मायने हैं वह खुदा जानता है या हम जानते हैं–बहर छोटी, मायने बहुत मुश्किल।

पैदा ये जमाना किया तो कह दिया कुनवे ॥ गर फना करूं तो कह दूंगा फैकुनवे ॥ मैं आप बना और आप बनानेवाला ॥ आपीहूं बंदा आपी मैं हक्कताला ॥ है मेरे नूरसे शम्समेंभी उजियाला ॥ और माहो मुनव्वरको रोशन कर डाला ॥ मैं झूंठ नहीं कहता हूं इसे तू सुनवे ॥ गर फना करूं तो कह दूंगा फैकुनवे ॥ मेरी कुदरतसे जमीं आसमां रोशन ॥ मेरी कुदरतसे मकां लामकां रोशनसे ॥ मेरी कुदरतसे गुलों गुलिस्तां रोशन ॥ मेरी कुदरतसे जहां दो जहां रोशन ॥ जो मैं कहता हूं समझ येः मेरी धुनवे ॥ गर फना करूं तो कह दूंगा फैकुनवे ॥ मैं अपनी इबादत आप किया करता हूं ॥ ना पैदा हूं मैं और कभी नहिं मरता हूं ॥ बेगम हूं मैं और किसीसे नहीं डरता हूं ॥ मैं अपनाहीं दम आप भछ करता हूं ॥ हैं सब गुण मुझमें महीं तो हूं निर्गुण बे ॥ गर फना करूं तो कह दूंगा फैकुनवे ॥ हूं हमाँ वोस्त कुछ दुई न मेरे दिलमें ॥ मैं पहाडमेंभी और हूं राई तिलमें ॥ मैंही आबो हवा आतिश औ मेहीं हूं गिलमें ॥ येः देवीसिंह कहे बनारसी महफिलमें ॥ मेराही बनाया कुरां वेदकी धुनवे ॥ गर फना करूं तो दूंगा फैकुनवे ॥

बहुत मुश्किल मायने शम्सतबरेज होता तो समझता–बहर लंगडी।

कुनसे पैदा किया और कुनहीं कहके फना कर दूंगा तो क्या ॥ ना·पैद हूं मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूं तो क्या ॥ तुम तो कहते खुदा नहीं पैदा होता ना पैद है वोः ॥ मुझको देखो तो मेरे बीचमें तो मुस्तैद है वोः ॥ चाहे पैदा हो या न होवे खुदा नहीं कुछ कैद है वोः ॥ अपने बंदे की तो पूरी करता उम्मेद है वोः ॥

शेर–उसे अख्तियार है चाहे सुबहको शाम कर देवे ॥
वोः काफिरको मुसल्मां कुफ्रको इसलाम कर देवे ॥
किया कुनसे जहां पैदा औ कुनहींसे फना कर देवे ॥
तुम्हारा क्या इजारा वोः जो चाहे काम कर देवे ॥

तुम तो मायने और कहमें और । लिखूं तो क्या ॥ ना पैद हूं मैं औ चाहे जहांमें पैदा हूं तो क्या ॥ जितनी किताबें दुनियामें तौहीद बयां सब मेरा है ॥ मैं हूं लामकां अगर पूछो तो मकां सब मेरा है ॥ नहीं मेरा कुछ नामो निशां और नामो निशां बस मेरा है ॥ तुम नहीं वाकिफ हुवे येः जहां दो जहां मेरा है ॥

शेर–जबांसे मैं कहूं तू बन तो वह दममें बिगड जाये ॥
अब इसके मायने पूछूं तो मुझको कौन बतलाये ॥
कुरांके मग्जकी लज्जत तो मेरी इस जबांपर है ॥
और हड्डी फेंक दीं मैंने उसे कुत्ता हो सो खाये ॥

तुम तो कुरांसे वाकिफ नहीं मैं तुमसे सुनूं ना सुनूं तो क्या ॥ ना-पैद हूं मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूं तो क्या ॥ मुर्शदने जो बात बताई वही पढूं और कुरां नहीं ॥ कुल कुरानके मायने इसीमें तो खुल जाँय वहीं ॥ जितने मायने कुरानके मैं जानूं और कहीं सुने नहीं ॥ जिसका रु वा हिश अगर कुछ हो तो फिर कह दूं मैं यहीं ॥

शेर–अगर मेरी खुशी हो तो मैं उसको साफ बतलाऊं॥
जो बंदा हो खुदाका तो खुदा मैं उसका कहलाऊं॥
न बंदेमें खुदामें फर्क है मुझसे यः तुम सुन लो॥
शरयको फाडके फेंको तो फिर मैं तुमसे मिल जाऊं॥

कभी न खटके जिगरपै कांटा लाख दारपर चढ़ूं तो क्या॥ ना पैद हूं मैं औ चाहे जहां मैं पैदा हूं तो क्या॥ जैसे पोस्तका खेत कि उसमें कहीं कोई गुल्लालय फाम॥ इसी तरहसे आदमी बहुत हैं पर कोई सरनाम॥ कुरानको पढते हैं बहुत पर खुदासे कुछ नहिं रखते काम॥ घरमें जोरू जो व्याह लाये ओः उसीके बने गुलाम॥

शेर–सुबह होतेही उनको फिक्र रोजीका हुआ भारी
हुई जब शाम तो समझे कि जोरू है मेरी प्यारी॥
उसीके साथ सोये और करी उससे बहुत यारी॥
तो आखिरको कजाने एक दिन उनकी वोः जां मारी॥

बनारसी कहे उनसे काममें रक्खूं या ना रक्खूं तो क्या॥ ना पैद हूं मैं०॥

इश्क पाक बुतोंका मार्फत–बहर डेवढी।

भेद कोई बुतोंका क्या पावे॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे॥ अगर ये चाहे करें दिल संग॥ तू कर दिलको मोम तो येः फिर हो जांय तेरे संग ये लेके तेग करें चौरंग॥ तू दे सरक झुका तो फिर देखे उल्फतका रंग॥ ये गर हैं शमां तो तू हो पतंग॥ लगा दे लौमें लौ अपनी मत रख इस दिलको तंग॥

दोहा–अव्वल तो यः जला जलाकर करें तुझे ताजीर॥ फिर पीछे हो रोशन तेरा नाम बने अकसीर॥ तू मत इस दिलमें घबरावे॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे॥

ये दिलबर हैं मेरे दिलके॥ खुदा मिला पीछे हमको पहिले इनसे

मिलके ॥ हाल सुन इस दिल बिस्मिलके ॥ कत्ल हुये तौभी शिकवे नहीं किये उस कातिलक ॥ ये गुल है अजब आबो गिलके अव्वल थे गुंचे गुंचेसे गुल हुये खिल खिलके ॥

दोहा–बागे इश्कमें ऐ दिले बुलबुल गुलोंकी देख बहार ॥ खार अगर्चे चुभे तो उन कांटोंपर आसन मार ॥ वही फिर गुलशन हो जावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ वोः है जुल्फोंमें जहर इनके ॥ इसे जहर मत समझ यही है लहर बहर इनके ॥ लगे हैं वोः वोः इतर इनके ॥ हर यक तरावटसे बेहतर है गेसू तर इनके ॥ पेंचमें पडे अगर इनके ॥ हरएक फंदसे वाकिफ होवे वही मगर इनके ॥

दोहा–जिसका दिला दिलदारकी जुल्फोंमें बिखरे ॥ देखे निखरे बाल निरखके तो ये दिल निखरे ॥ वही उलझावे सुलझावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ हैं इनके अजब कटील नैन ॥ करें चोटपर चोट बने हैं गजब चोटीले नैन ॥ बुतोंके छैल छबीले नैन ॥ काले गोरे लाल रंगमें रंग रंगीले नैन ॥ बहुत रस भरे रसीले नैन ॥ सबके ऊपर उनकी नोक है वोः हैं नुकीले नैन ॥

दोहा–जो कोई इनको पाक निगहसे देखे आशक आन ॥ उसे दिखाई इन्हीं बुतोंमें दवे उसको ज्ञान ॥ रूप वो अपना दिखलावे ॥ पाक मुहब्बत करो तो जलवे खुदा नजर आवे ॥ जिसने इन बुतोंको जाना है ॥ उसीको जाना मिला हुआ जिसका वहां जाना है ॥ इनका लामकां ठिकाना है ॥ वहांसे उतरा नूर वह इनके बीच समाना है ॥ सखुन मेरा आशकाना है ॥ जिसने सुना एतकादसे वोः आशक मस्ताना है ॥

दोहा–समझ आशकोंकी रमूजें और कर दिलको हुसियार ॥ देवीसिंह येः कहे हुआ तौहीद छंद तय्यार ॥ मार्फत बनारसी गावे ॥ पाक मुहब्बत करे तो जलवे खुदा नजर आवे ॥

रुबाल जिस्मकी मसजिदका मय तौहीद पीते हैं–बहर लंगडी।

आज दुगाना पढूंगा मैं मसजिदमें मस्तो चलो वहां ॥ शीशा

सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ मयसे करके वजू मुसल्ले-कोभी मयसे नर कर दो ॥ खुदा है राजी दूर अब कुल दुनियाका डर कर दो ॥ शेखो मुहतासिब मिलें वहां तो पकड उन्हें बाहर कर दो ॥ छीन लो मसजिद तुम उनसे अपना वहांपै घर कर दो ॥

शैर—जो तुमसे बोलें वोः कुछ बात तो तुम उनसे कहो ॥ खुदाका घर है यहां हमभी रहें तुमभी रहो ॥ मस्त हो करके फिरो छोडदो इस दिलपै सहो ॥ पियो मय साथ हमारे न रंज जीपै सहो ॥ चलो जरा मसजिदके भीतर यही लिखा है पढो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ करके शुक्र अलहमदुलिल्ला झुकाके सर और उठाके जाम ॥ लगा लो मुँहसे खुदाकी वहां इबादत करो मुदाम ॥ लाइलाह इलल्लिल्लाः अल्लाः हु अकबरका लेके नाम ॥ यही है कलमा कुरांमें लिखा खुदाका यही कलाम ॥

शैर—पढो न इसके सिवा तुम करो न गुफ्ते सुनीद ॥ गलेसे उसको लगा लो खुशीसे देखो ईद ॥ खुदाने तुमको येः मस्जिद जो दी है जिस्म वहीद ॥ इसीमें उससे मिलोहै इसीमें उसका दीद ॥ पहिले दिलको साफ करो फिर पीछे उससे मिलो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ बडे बडे वलियोंने मय पीकर दिलको शेरी है करी ॥ अबकी दोर है हमारा और बारी मेरी है करी ॥ ऐ दिल तूझसे कहूं तू पी झटपट अब क्यों देरी है करी ॥ खुदाने मसजिद ये तनकी तौफा अब तेरी है करी ॥

शैर—बनाये उसके सिवा कौन यह मीनारोंको ॥ और वख्शे उसके सिवा कौन गुनःगारोंको ॥ बुरा कहते हैं जो ऐसे भला मय खारोंको ॥ खुदा दोजखमें तो भेजे उन्हीं हजारोंको ॥ अयय मस्तो तुम डरो नहीं मसजिदमें चलो मय पियो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥ हाथ उठाकर करो शुक्र जो तन मसजिदमें आये हो ॥ साथमें अपने नूर तुम हकतालाका लाये हो ॥ मयभी उसीकी बनाई

और तुम उसहीके तो बनाये हो ॥ पिवो ना पिवो बुरा मत कहो जो भले बनाये हो ॥

शैर–बदी करनाहीं बडा ऐब है इनसानोंको ॥ आदमी पीते हैं मिलती नहीं हैवानोंको ॥ बात यह मेरी सुनो खोलके जो कानोंको ॥ बुरा कहो न जबांसे भला दीवानोंको ॥ बनारसी कहे खाली हाथ मत जा मसजिदमें गिरो वहां ॥ शीशा सागर सुराही मीना और मय धरो वहां ॥

होली मस्तीमें शराब अंतहूराकी शेखजी और हम खेलें तौहीद–बहर लंगडी।

आज शेखजी खेला होली मस्जिदमें ले चलो शराब ॥ जिगरको अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ कोई शीशमें सुर्ख गुलाबी किसीमें केशरका रंग हो ॥ खुशीसे खेलो तुम होली कभी न इस दिलसे तंग हो ॥ जो उसकी मस्तीमें खेले होली खुदाभी फिर उसके संग हो ॥ ऐसा दंगा मचे मुहतसिबकीभी अक्ल दंग हो ॥

शैर–लगा दो आग जहांके सभी मयखानेमें ॥ औ लावो भरके सुराही पिवो पैमानेमें ॥ तुम उसकी मस्तीमें खेलो हमारे संग होली ॥ धूम ऐसी मचे देखें सबी जमानेमें ॥ कोई आपको देवे गालियां उसकोभी मत कहो खराब ॥ जिगरको अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ और शौक गानेको हो तुमको मैं ले आऊं बीनो रबाब ॥ डफ ढोलकभी बजे और शरावमें हो मिला गुलाब ॥ उसकी खुशबू दिमागमें पहुँचे तो वोः हो चश्मोमें आब ॥ जिसकी लाली देखकर प्यालेसे शिर पडे शहाब ॥

शैर–ये रंग वोः है के चढ जाय तो उतरे न जरा ॥ ये यह प्याला वोः है कि खाली न हो कुदरतका भरा ॥ ये वोः मस्जिद है जिस्मकी के इसमें है वोः खुदा ॥ देखा जिस जिसने उसे इसमें वोः हरगिज न मेरा ॥ इसीमें खेलो उससे होली शेखजी मैं कहता हूं शिताब ॥ जिगरको अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥ साकी तुमको

भरके जाम दे रंगो उसीसे अपना दिल ॥ वही खुदा है तुम उससे लपट झपट खेलो हिल मिल ॥ ऐसे प्याले पिओ कि जिससे बेहोशी हो जा कामिल ॥ तो मैंभी शेखजी आपके हो जाऊं शामिल ॥

शैर—यह दुनिया कुछ नहीं झूंठा अजब तमाशा है ॥ कोई रत्ती कोई तोले औ कोई माशा है ॥ जिस तरह होलीमें उठते हैं यारो यह सवांग ॥ उसी तरहसे उठेगा ये सबका लाशा है ॥ जो कुछ खाना पीना हो सो खालो और लुटा दो सब अस्बाब ॥ जिगरको अपने जलाओ भूनके उसका करो कबाब ॥ ऐसी होली किसीने खेली नहीं जो खेले हम औ तुम ॥ मय वहेदतके किसीको कहां मयस्सर हैं ये खुम ॥ उसकी खुमारीमें किसीसे कुछ न कहो तुम हो जाव गुम ॥ अगर कहो तो फक्त इस जबांसे कहो अपनी कह दो कुम ॥

शैर—चले वोः गोरसे मुर्दे निकलके जो हैं मरे ॥ तो खेलें फिरसे वोः होली रहें हरे वोः भरे ॥ सदा यह कुमकी है ऐसीके ऐसी और नहीं ॥ कि जिस्से मुर्दाभी जीता है फिर कभी न मरे ॥ देवीसिंह कहे बनारसी है शेखजी ये दुनिया सब खाब ॥ जिगरको अपने जलावो भूनके उसका करो कबाब ॥

इश्क जिस जिसने किया सबके नाम पाक
मुहब्बत—बहर लंगडी।

इश्क बहुत मुश्किल है तुम इसका करना मत समझो आसान ॥ पूंछो उससे कि जिसने खपाई है उल्फतमें जान ॥ अव्वल मजनूसे पूंछो वो इश्कका क्या करता है बयान ॥ दोयम लैलासे पूंछो लगाके उसकी बातपे ध्यान ॥ सोयम सीरींसे पूंछो और सुनो तुम अपने खोलके कान ॥ और चहारुम कोहकनकी कहती है यही जबान ॥ जान गई तो बलासे पर दुनियामें बना रहा नामो निसान ॥ पूंछो उससे कि जिसने खपाई है उल्फतमें जान ॥ और पूंछो मंसूरसे जिसका दारके ऊपर बना विमान ॥ सर्मदका सर कटा देहलीमें लगा झूंठा

तूफान ॥ और शम्स तबरेजने मुर्दा जिलाके डालो उसमें जान ॥ तिसपर अपनी उतारी खाल किया नहिं कुछ अरमान ॥ आशक तो है वही जान देकेभी करे नहिं मान गुमान ॥ पूंछो उससे कि जिसने खपाई है उल्फतमें जान ॥ रांझेनेभी छोड सल्तनत इश्कका ओ पकडा मैदान ॥ और हीरने इश्क रांझेमें इश्कको डाला छान ॥ हाफिज भी गर सुने कानसे दिवान हाफिजका वोः दिवान ॥ तौ सब भूलें उसीपर लायें वह अपना ईमान ॥ मैं तो यही कहता हूं इश्क नहिं जिसे वह है मिस्ले हैवान ॥ पूंछो उससे कि जिसने खपाई है उल्फतमें जान ॥ मैंभी एक आशक हूं इश्कमें रातो दिन रहता गलतान ॥ लाख इबादतसे बढकर एक इश्कको लिया है मान ॥ देवीसिंह ये कहे इश्क तुम करो वोह है मौलाकी शान ॥ जिसने इसको किया फिर मला उसे वह हक सुभान ॥ बनारसीका इश्क है कलमा पढे तो हो जावे मस्तान ॥ पूंछो उससे कि जिसने खपाई हैं उल्फतमें जान ॥

मसनवीदर सिफत काशमीर जन्नते बेनजीर।

धरा मैं प्रथम शारदाजीका ध्यान। हुआ उससे मनमें मेरे ब्रह्म ज्ञान ॥ उपासिक हूं मैं तो सदा शक्तिका। मिला उस्से रुतवा मुझे भक्तिका॥ बिना भक्तिके मुक्ति होती नहीं। सिवा ब्रह्मके और योती नहीं ॥ निराकारमें देखो आकार है। चराचर उसीका यह विस्तार है ॥ बनाये उसीने यह शम्शो कमर। जिधर देखा उस्को वह है जल्वेगर ॥ हुई चश्मोंसे जिसके रोशन निगाह। उसीको मिले है फिर घरकी राह ॥ दया अपनी जिसपर करे कृष्ण राम। बसे उसको दिलमें वही आठों जाम॥ रहे उस्को दुनिया नदीकी खबर। रहे नूर यह उसके पेशो नजर ॥ जमानेके फिक्रोंसे बेफिक्र हो। जबांपर न उसके कोई जिक्र हो ॥ अजलसे सुना जो है बन्दा नमाज। अबदतक रहेगा वोही कारसाज ॥ उसीके करमसे हुआ मैं फकीर। गदाईमें पहुँचे न मुझको अमीर ॥ के हैं लोगजरें मैं हूं आफताब। उसीने यह दी मुझको है आबो ताब॥

केजल्वा है फैला मेरा चारसू। जो बुलबुल हैं शैदा मेरे लालरू॥
उसीने किया मुझको है बेनजीर। दिखाया है एक आनमें काशमीर॥
नहीं मैंने देखी थी ऐसी जमीं। फलक चर्खमें देख नकाशो नगीं॥
हैं जर्रे वहांके तो सब आफताब। चकोरोंपे मायल सदा माहताब॥
वहां जातेही दिलको ताकत हुई। जो ताकत हुई तो इबादत हुई॥
किया बैठकर खुदा वहां मैंने जाप। तो आपेमें देखा वोःअपनाही आप॥
हुई दिलकी जाती रही एकवार। नजर मुझको आया वह परवर दिगार॥
जिधरको नजर की उधर है खुदा। खुदा तो न मुतलक है मुझसे जुदा॥
वही राम है और वोही है रहीम। वोही कृष्ण है और वोही है करीम॥
वोही हममें तुममें है बैठा निहां। फलकपर वोही और वोही है यहां॥
वोही अर्क गरदनसे हैगा करीब। वोही सबका आशिक वोही है हबीब॥
पर एक बात इसमें है मुशकिल बडी। दुईकी है चादर नजरपर पडी॥
हटे बिन न उसके कोई सूझता। न अपने परायेको है बूझता॥
जो उसको हटावे तो होवे फकीर। नहीं तो है दुनियामें जीना हकीर॥
भलागर फकीरीन हो तो यह हो। कि दिलसे करे उसकी कुछ याद तो॥
भला हो इसीमें यह वह बात है। न हो जिसमें यह वह बद औकात है॥
फकीरीका है दूर हरचंद राज। नहीं कुछ जो हो मेहरबाँ वे नियाज॥
फकीरीभी करना न आसान है। जो वह चाहे खालिककी बसशान है॥
यहांतक किया मैंने इसको तमाम। सुनो इसके आगे मेरा अब कलाम॥

तारीफ काशमीरके आबो हवाकी।

पिला मुझको वहदतकी साकी शराब। कि जिससे यह दिल हो मेरा आफताब॥ रहूं सुर्खरू सबके आगे मुदाम। लबालब तू भर दे मेरा आके जाम॥
वह पीतेही हो दिलमें जोशे जनू। के आये नजर रंग वस गूं ना गूं॥
गमे दीनो दुनिया फरामोश हो। जो देखे मुझे मस्त मदहोश हो॥
हो जब फूलसे दिल मेरा लाला गूं। तो यह शेर अपना रकम मैं करूं॥
बनाया खुदाने अजब काशमीर। वहिशते वरीं हैं न जिसका नजीर॥

न देखा सुना और न होगा कहीं। कहीं मुल्क ऐसा नहीं है नहीं॥
जहां सर्द है गरमिये आफताब। खिजल माहरूयोंसे है माहताब॥
हसीनोंकी हर सिम्त जलवेगरी। हरएक जर्रे जूं जोहरे मुशतरी॥
इबादत की जाहे फकीरीका घर। गरीबोंका दाता तवंगरका सर॥
लडकपनमें कुछ रोग होता नहीं। जवानीमेंभी सोग होता नहीं॥
बुढापेमेंभी कुछ न खौफो खतर। वह उत्तरकी धरती न मरनेका डर॥
हकीमोंकी हाजत किसीको कहां। मर्सीहाको पूंछे न कोई वहां॥
वह मोतीसे पानीमें तासीरे शीर। उसी आबपर है बसा काश्मीर॥
है पानी वहांका वह आबेहयात। पिए नीमजां तो करे उठके बात॥
वहां जाय कैसाही बीमार हो। वह पानी पिये दूर आजार हो॥
जबां साफ हो जाय गर हो जईफ। तैयार कैसाही गोहो नईफ॥
करे खिज्रभी वांके सब्जी सैर। न दिल माने हर रोज जाये बगैर॥
गिजावां जो खाये सो तहलीलहो। ताकत वह पैदा खिजलफील हो॥
फिर आजार उसके न नजदीक आय। पियेआबऔर वांके मेवे जो खाय॥
बदन आईनासाभी चमके तमाम। करे गुश्ल हम्माममें जो मुदाम॥
नहा धोके खाये जो जरदा पुलाव। कभी जिसमें उसके आवे न ताव॥
किसीको जो उससे वोः परहेज हो। तो मेवेमें खुशका वह आमेज हो॥
उसीको शबो रोज खाया करे। सदा बहेर तफरीह जाया करे॥
हकीमोंका कोई नवाँ यार है। कोई नामकोभी न बीमार है॥
न वैद्योंकी गोलीका कुछ काम है। सदा वाँ मरीजोंको आराम है॥
तपेदिकसे दिक कोई होता नहीं। कोई दर्द सरसेभी रोता नहीं॥
न खांसी न खुर्रा न सरसाम हो। जो बीमार जाय तो आराम हो॥
बनफशेंके गुल वर्ग गाओ जुवाँ। सदा गाएँ खायँ मैं देखा वहा॥
हर एक शख्स पीता है उस शीरको। कहो किसतरह कोई बीमार हो॥
वहां वेदमुश्क इस कदर है लगा। मरीजोंको वांकी हवा है दवा॥
करें बुलबुले गुलपे वस चहचहे। कहीं कुमारियोंके मचे कहकहे॥

गमो रंजसे सर्व आजाद सब । जो देखा तो मुर्गे चमन शाद सब ॥
खिजाँका किसी गुलको हरजिन न खार । रहे हर चमनमें हमेशा बहार ॥
वहांका जो है हाल जाहिर किया । यह किस्सा यहां मने आखिर किया ॥

दास्तान सिफतमें हुस्न काशमीरकी ।

पिला साकिना भरके वह जामेनूर । कुदरतका आये नजर बसजहूर ॥
अयाँ जलवा हो हर तरफ नूरका । समा भूले मूसाभी बस तूरका ॥
गया जबसे मैंजानिबे काशमीर । लगा दिलपे मेरे एक उलफतकातीर ॥
जहांके नखूबाँमें ऐसी फबन । है जो माहरूयोंके बाँका चलन ॥
वह मैलेसे कपडोंमें उजलासा तन । गोया अब्रमें माह चरखे कोहन ॥
फटे पैरहन हैं मैं क्या दूं मिसाल । छुपा जिस तरह होवे गुदडी ये लाल ॥
न जेवर बदनमें न कपडे दुरुस्त । मगर हुस्न खूबीसे चालाँको चुस्त ॥
न चोटी न कंघी न मिस्सी न पान । बनावट नहीं कुछ मग अशांशान ॥
वहां गर बनावटका होता चलन । तो फिर हुस्न अपनी दिखाता फबन ॥
बिगाडसेभी कुछ बिगडता नहीं । बनावट वह रखते हैं बाँमह जबीं ॥
न चादर दोपट्टे न महरमसे काम । फकत एक चोलेमें चोला तमाम ॥
बदन नाजनी उसपे कुरता है एक । यह खूबी है उनमेंके सब हैं बहनेक ॥
जो बैठे कोई तो बिठांये उसे । कभी आपसे ना उठांये उसे ॥
न फूलोंके गहने न सरमेंभी तेल । न पावोंमें मेंहदी न अतरो फुलेल ॥
उसपर हरएककी वह बांकी अदा । केउनकी अदपर अदाहै अदा ॥
बुरासा लिबास और भलासा बदन । भलोंको लगे सब भला पैरहन ॥
बिगडनमेंभी उनका दूना बनाव । भली बात हर एक अच्छा सुभाव ॥
बुरा कोई होवे भलोंके जो साथ । भले उम्रभर उसका छोडें न हाथ ॥
जिसे हुस्नकी कुछ परख हो अगर । वह कपडोंपै मुतलक न डाले नजर ॥
हर एक पैरहनमें वोः रशके कमर । केजो अब्रमें माह हो जलवेगर ॥
न जेवरको देखो न पोशाकको । जो देख तो उस सूरते पाकको ॥
के यूसुफभी जिसका खरीदार हो । बस ज्यों हुस्नका गर्म बाजार हो ॥

वह चेहरे पे सुर्ख़ीभी जो आफताबानहया मेहर निकला उलटकर नकाब ॥
अगर सर खुला रुखपे बिखरे हैं बाल। तो है काकुले हुस्न परसाफ जाल ॥
फसाया है वां शोलये नूरको । रखा दामनमें शमये तूरको ॥
जहांनें न ऐसा कोई है दयार । के है हुस्नका खुदबखुद वां गुजार ॥
है चींने जबीं मेहर कीया किरन । हुई दूनी कदर जिसको उसपर फबन ॥
जबीं माहे तावां तो कशका है चांद। किया हुस्न यूं उसको भी जिसने मांद ॥
जिसे देख बेताब पुरदर्द हो । सदा चन्दन तार रंगे रुख जर्द हो ॥
किसीका है माथा सफाईके साथ । जहां मेहर देखेसे मलते हैं हाथ ॥
बरेहमन कोई और मुसलमां कोई । नमाजी कोई बूतका साजद कोई ॥
वोः चेहरेपे दोनोंके हैं खूबियां । भुलाया अबुहासे नहूखूबियां ॥
झुके हैं वो अबरू अजब आनसे । किसे जैसे तेग हो चढ़ा म्यानसे ॥
तअज्जुब हुआ जो किया मने दीद । कि चार दुइपर कहूं माहे ईद ॥
जबीं और अबरूसे खुद हो कमाल । के माहल्म हुये देखे जदूराहि लाल ॥
नई है ये निसबत नई मानवी । वह समझे इसे जो हो आवरकी ॥
मिजे हैं नुकीली वहन शातरसे तेज । वह आंखें कटीली हैं खंजरसे तेज ॥
जो खूनी हैं आंखें मिजे तीर है । जो पल खूर दनी तो पद तीर है ॥
कनखियोंसे जिसको इशारा करें । सदा जीतेजी उसको मारा करें ॥
सिया पुतलियोंनें वह जादू भरा । न जीता बचे जिसको देखें जरा ॥
सफेदीनें डोरे गुलाबी अयां । कहे मस्त जिनको शराबी अयां ॥
वह रुखसार देखे जो शम्सो कमर । तो हैरत जदा बस फिरे उमरभर ॥
वह बीनी के खुरवी रहे नाकमें । और आजाय जरा के दम नाकमें ॥
दहन साफ गुंचेसेभी बसके तंग। वह लब जिससे लाले यमनभी है दंग॥
जबां बर्ग गुलसेभी है नर्मतर । वह दन्दां किये नाज जिससे गोहर ॥
चमक उनसे इल्मासकी है बनी । न क्यों हीर हारेकी खाय कनी ॥
वह बातें हैं उनकी के क्या बात है । है ये जाज याके करामात है ॥
सखुन उनका शीरीं जो शीरीं सुने । सदा फीकी होके वह सरको धुने ॥

कर्वा जकनसे जो चमक माहमें। कुंयें झाँके यूसुफ सदा चाहमें॥
वहमीनासी गरदन जो आये नजर।सुराही वोः मीना न हो जलवे गर॥
वहहे दस्तनाजुक सखावतके साथ। के हरगिज किसीकेभी आये न हाथ
किसीकी जो पहुँचीपे पहुँची नजर। तोजूं माही तडपा करे उम्र भर॥
कलाई जो देखे कल आये नहीं। दिल उसका उन हाथोंसे जाये नहीं॥
हरएकशाखमरजाँसे अंगुश्तलाल। हैनाखूंभीसवरशकवेदरो हिलाल॥
शिकमनर्ममखमलसेभी वहसिवा। हैमाहताबभी जिसपे दिलसेशिदा॥
कभी भूलके सीनये साफका। जो आईना देखे तो हैरान हो॥
चमकतीहै तारासीभीउसमेंनाफ। वहवहरेनजाकतका गिरदाब साफ॥
कमरसेभी शरमाये चीता सदा। जबांसे सिफतभी न होवे अदा॥
वह रानेभी बिल्लोरके हैं सितूं। जो देखे वह हैरान हो और जुनूं॥
अगरमाहीकी शक्लमें पिंडलियां। वह याशमें फानूसमें हैं अयां॥
सिफतपाय नाजुककी मैं क्या करूं। रुका सरकलम हाथसे बस धरूं॥
थी एडीमें सुर्खी अजब आनसे। किलाली हो कुरबान जी जानसे॥
सरापा है उनका अजब नूरका। कि कुरबान दिल जिसपे है हूरका॥
अब आगे जबां मेरी खामोश है। बयां क्या करूं कुछ नहीं होश है॥

दास्तान महाराज रंजीतसिंह सच्चे बादशाहकी बहादुरीमें।

पिलासा किया बाद ये हो मन्द। कि बाद फलकपर मैं फेकूं कमंद॥
जरा जल्दी भरके तू दे जामें वीर। फतह कर ले रंजीतसिंह काश्मीर॥
तजल जुलहो रुस्तम दिलोंको यहां। लिखूं कारनामा कुजा दास्तां॥
कि रंजीतसिंह था जो शाहे जहां। जमानेमें मशहूर था बेगुमां॥
कोई उसके सानी न पैदा हुआ। जो पैदा हुआ उस का शैदा हुआ॥
हुआ माहको उसके दरसे कमाल। सदा माहरूयां थीं जरेंह मिसाल॥
फलकभी रहे सरपे साया किये। मलक चूमने पांव आया किये॥
कहूं क्यामेंअबउसकीजुर्रतकाहाल। कियाउसनेरुस्तमकोभीपीरजाल॥

सखावत वह हातमसेभी कम नथा। गदाओंको बस शाह करता सदा॥
नसमझा जरा वह किसी वीरको। सुना ले लिया दममें कशमीर को॥
बहादुर वह ऐसाही जुर्रतका रंग। के जिता न उससे कभी कोई जंग॥
वह पंजाबका शाह आली जनाब। सुनोउसकाथाशाहवाला खिताब॥
सभी उसको कहते थे सच्चा है शाह। जहां परवरिश शाह करती पनाह॥
फक्त अपनेदमसेकियाउसनेराज। बहुत शाह देते थे उसको खिराज॥
किया फतह बस मुल्क लाहौरका। लिया छीन गढ उसने फुल्लौरका॥
मची उससे मुल्तानमें फिर वह जंग। हुई खाने जंगी पठानोंके संग॥
हजारोंको मारा भगाया उन्हें। हर एक मोरचेसे हटाया उन्हें॥
किया फतह फिर मुल्क मुल्तानका। लिया लूट गढ उसने सुल्तानका॥
लिया छीन इल्मास वह कोहनूर। के जिसकावडा हिन्दमें है जुहूर॥
हुआ जबके गालिब वह लाहौर पर। चढाई फिर उसनेकी पेशौर पर॥
लिये साथमें अपने पैदल सवार। वह हाथीके हलके शुतरकी कतार॥
थे वह तोपखानेभी बस आलीशां। जिसे देख हैरतमें सारे पठां॥
वहकुल फौज पहुँचीअटकके जोपास। वहां उड गये सबके होसो हवास॥
वह दरिया कहर और पानीकाशोर। वहेइसकदरवां चले कुछ न जोर॥
जो रंजीतसिंह उसके पहुँचा करीब। कहा दिलमें मेरा है मौला हबीब॥
किया याद हकको किनारे ठहर। दिया डाल फिर उसमें बस सीमो जर॥
औरअपनाभीघोडादियाउसमेंडाल। नुमायांकियाथाजीअपनाकमाल॥
वह दरिया जो बहता था बस थम रहा। बडी देरतक फिर न पानी बहा॥
उतरने लगे फिर तो पैदल सवार। खुदाके करमसे हुये सब वह पार॥
जो निकला वहरंजीतसिंहकातुरंग। तो दरियामें उडनेलगे सब सुरंग॥
जो पीछे रहे वह बहे और मरे। बचे वह अटकसे जो पहुँचे परे॥
जहां शाह काबुलकी थी धूम धाम। पडाथावहीउसकालशकरतमाम॥
इधरसे यह वाखरों फर अहलेशां। वहीं जाके पहुँचा जहां थे पठां॥
सवारोंका पैदलका ना था शुमार। बँधीथीकई कोसतक एक कतार॥

जमीं थी न खाली धरेजोंके तिऊ। सवार और पियादे गये ऐसे।भऊ॥
हवाको न मिलतीथी जानेकी राह। हुआ गर्द उडनेसे गरदुं सियाह॥
वह लशकर जो दोनों मुकाबिल हुए। सोमतलवदिलोंकेबतहासलहुये॥
मैं दोनोंके दलकाकरूं क्या बयां। इधर सिक्ख थे और उधर थे पठां॥
उधर नोजवां तेज असवार थे। इधर सिक्ख घोडोंपे तैयार थे॥
उधर तोपखानोंके थे मोरचे। तो यह घुडचढी तोपें लेकर चढे॥
थीं आगे जो तोपें तोपींछे सवार। थी फिर पैदलोंकी बँधी एक कतार॥
पठानोंका था उसतरफ मोरचा। इधर लशकरे जंगी इसका खडा॥
बिगुल जब हुआ दोनों सूं जंगका। तोफिरजंगीबाजाभी बजनेलगा॥
लगा मारने यह इधरसे गिराब। कहा फिर सवारोंसे पहुँचे शिताब॥
कहा पैदलोंसे के आगे बढो। किलेपर तो पेशौरके जा चढो॥
गिरे जबके गोलोंसे लाखों जवान तोकरतेंगे नंगीदियाफेकामियान॥
हुई वा जदालो कतल इस कदर। कि लाशोंसे मैदां गया साफ भर॥
गिरे धडपे धड और सरपरभी सर। जमीं खूनसे हो गई तरबतर॥
सुनो खूनके ऐसे दरिया बहे। हबाब आसासर उसमें बहते रहे॥
फिरआखिरको रंजीतसिंहके सवार। घुसे इसतरह जैसे सावनमें तार॥
लिया छीन दम्मे वह पेशौरको। दिखाया फिर उसने तो इस तौरको॥
के जिससे डरेसब मुगल और पठान। गये भाग काबुलको सारेजवान॥
बहुत शाह काबुलने तारीफ की। कहा सबसे रंजीत सिंह है वली॥
न उससे कभी कोई जीतेगा जंग। के पीरो पयम्बर हैं सब उसके संग॥
वह दुश्मन जो तारीफ करने लगा। तो रंजीतसिंहनेभी दिलमें कहा॥
सखावतसे हैगा बहुत यह बईद। शुजा अतसेभी बात यह है शदीद॥
के लेलूं तमामी मैं मुल्को जमीं। कहेंगे भला क्या मुझे नुकते चीं॥
तसव्वर यही करके एक बार फिर। गयाथा जो वोःशाह फौजोंमेंघिर॥
दिया उसको काबुलवह खानेको छोड। वहांसे दियाफौजको अपनीमोड॥
वहाँ कुछ रिसालोंको तानातकर। कियाखुश उन्हें और दियामालोजर॥

रअय्यत फिर आरामसे सब बसी। कमर फिर वह रंजीतसिंहने कसी॥
कहा फौजसेअब चलो काश्मीर।हुये सब वह हाजिरजो थे खुदी पीर॥
लिया फौजने घेर सारा पहाड । दिये मोरचे उनके दममें उखाड ॥
तो रंजीतसिंहने सवारोंके संग । वहकी हर तरफ उन पहाडोंपे जंग॥
के हैरां हुये साकिने काश्मीर । परेशां थे दिलमें सगीरो कबीर ॥
थे पंडित जो एक फिर वह आकर मिले।गुलस्तान रनमें अजबगुलखिले॥
बताया उन्होंने हर एक रास्ता । जो लश्कर था जंगी वह आरास्ता ॥
पहाडोंकी थीं घाटियाँ जा बजा । दिखाई वह सिक्खोंको सुबहो मसा॥
वहां दख्लसिक्खोंनेजबकरलिया । तोपंडितकोबसमालओरजरदिया॥
पहाडोंको वां लोग कहते हैं पीर । उसीके हे अंदर बसा काश्मीर ॥
बहुत सख्त वांक जो था रास्ता । वह उन पंडितोंने दिया सब बता॥
तो रंजीतसिंह शाह आली मुकाम। वह पहुँचावा इज्जतो एहत शाम॥
जो अफसर बडे एक थे कृपाराम । दियाहुक्मउनको यांवांधो लाम ॥
कहा यहभी वा शोकते इज्जो जाह । करो अपनी तैयार सारी सिपाह ॥
जो सरदार हैं फौजके साथ लो । करो जल्द तुम फतह कश्मीरको॥
तुम आवोगे जब फतहकरकाश्मीर । तो जानूंगा तुमहो बडे शूरवीर॥
यह सुन बात वाँसे चला कृपाराम । किया झुक्के रंजीतसिंहको सलाम ॥
कहा फौजने जब वहम वाह गुरू । लगे करने आपसमें यहगुफ्तगू ॥
जो पंडित हैं उनकोभी हम राह लो । पहाडोंके ऊपर चढो और चलो ॥
पहाडोंपे दुसमनकालशकरजोथा । वह उस रास्तेको चले सब बचा ॥
चढे जब वह उस कोहपर फेरसे । बचे दुश्मनोंके तो सब घेरसे ॥
लिया उनकोसिक्खोंनेफिरदम्मेंघेर । भगायाउन्हेंऔर लगीकुछनदेर॥
हर एक सिम्तहंगामये जंग था । लहुंसे तोतर साफ हर संग था ॥
चढे सिक्ख जब पीर पंजालपर । वहाँ बरफसे थी जमीं तरबतर ॥
वह सरदीके जिससे उठे नाकदम । हवा वो चली जिससे हो सर्द दम ॥
वहाँसे तो जोतों वह आगे चले । कदम उनके पडने लगे लटपटे ॥

थका इस कदर उनका सारा बदन । गये अपनावस भूलचालोचलन ॥
तो इतनेमें आई नजर एक सराय । वहांपरमिली उनको रहनेकोजाय॥
लगे सेकने हाथ और अपने पाउँ । बसे फौजसे दम्मे वां कितने गाउँ॥
किया वाँपे एक रात सबने गुजर । फजर होतेही सबने बांधी कमर ॥
किसी जा उतरना था चढना कहीं । जोकुछआगेदेखा था देखा नहीं ॥
हुआ सब पहाडोंका तह रास्ता । तो मैदानें लश्कर वह जाके पडा ॥
खबर इसकी सुनके वहाँका अमीर । यह बोलाबचेकिसतरहकाशमीर॥
दिया हुक्म लश्करको तैयार हो । कहां फौजसे सारी यह तुम सुनो॥
अगर कोई भागेगा मैदानसे । तो मारूंगा उसको मैं जी जानसे ॥
यह सुन फौज वाँसे जो आगे चली । कहा सबने अब जो करेसो अली॥
जो जीते तो दौलत लुटायेंगे हम । मरे गरतो जन्नतमें जायेंगे हम ॥
गरजअपनेदिलमेंयहलीसबनेठान । केआखिरतोएकरोजजायेगीजान ॥
उधरफिरयहसिक्खोंनेदिलमेंकहा । गुरू जो करे सो करे कोई क्या ॥
जो देखा तो आये नजर वहनिशान । के हैं उनमें जंगी सरासर जवान॥
हैं घोडोंके ऊपर हजारों सवार । के टापोंसे जिनके है गरदो गुबार ॥
जमीं छाय रही आठ हुआ आसमाँ । पहाडोंपे अंधेर था एक अयाँ ॥
खबर दी किसीने कृपारामको । वह सुनतेही बोलाके आने तो दो ॥
करो अपनी तैयार तोपें शितार । यहाँपर जो आयें तो मारो गिराव ॥
कहा पैदलोंसे परादो मिला । सवारोंका आगे जो था सिलसिला ॥
हर एक तौरसे दुश्मनोंको लो घेर । न हो फतह होनेमें जिनहार देर॥
फिरइतनेमेंतुरकोंकीभीआईफौज।औरअपनीभीसिक्खोंनेदिखलाईफौज॥
लगे मारू बाजे वह बजने वहाँ । हुआखूंनकारंग सब आसमाँ ॥
हुआ फिरदोतरफाजोरोंकाशोर । तोयों घोडे कूदें के जानाचे मोर॥
योंही पहुँची नौबत जो तलवारपर । सबोंको रखा तेगकी धार पर ॥
वह पैदलसे पैदल लडे इस कदर । सवारोंसे असवार दो दो पहर ॥
लहूका सुनो बहर बहने लगा । हर एक अपना खूं पीके रहने लगा ॥

फिर इतनेमें आयेवहांसिक्खऔर। पठानोंने दिलमें किया अपने गौर॥
न जीतेंगे इनसे लडाईमें हम। लगे सबके पीछेको हटने कदम॥
लिया साफ मैदान सिक्खोंनेजीत। मरेभी बहुत तिसपे गातेथे गीत॥
कईदिनलडाई लडा वह अमीर॥फिरआखिरकोकुलछुटगयाकाश्मीर॥
गया फिरतो वाँसेवहकाबुलचला। इसीमें कुछ होता था उसका भला॥
जो पंडित थे बाँके हुये सब मगन। वह पूरी हुई दिलमेंजो थी लगन॥
सुनी जब यह रंजीतसिंहने खबर। लुटाया वह लाहोरमें मालो जर॥
लगी फिरसलामीकी चलनेवहतोप। लगी पडने डंकेपे अशरतकी चोप॥
कहांतक कहूं उसकीखूबीकाहाल। वह रंजीतसिंहजोथासाहबकमाल॥
अदब उसका करतेथे अहले फरंग। मुकाबिलमें कोईनकरताथा जंग॥
है अबतक उसीका जो डंकाबजा। सुनो वह है रनवीर सिंहकोमिला॥
किसीकीनताकत जो लडके वहले। वहांके बहुत सख्त हैं रास्ते॥
जो देखा सुना वह किया है बयां। सखावतका उसकी सुनो दास्ताँ॥
वह जैसाही लडनेमें था शूरवीर। सखावतमें वैसाही वह था अमीर॥
सखावतमें हातमसे वह कम नथा। शुजाअतमेंरुसतमसेवहकमनथा॥
किया उम्र भर कुछ न उसने गुरूर। अजबसाहब अक्ल थाजो शहूर॥
किसीनेजोउससेकियाकुछसवाल। दिया जरउसेऔरकियामालोमाल॥
फकीरोंको देता था लेता कदम। खुदाने बनाया अजब उसका दम॥
किसीकेभी दिलको दुखाना नहीं। खुदाके सिवा कुछभी जाना नहीं॥
खुदाके दिलानेसे देता था वह। उसीका सदा नाम लेता था वह॥
हमेशाथायहउसकेदिलमेंखयाल। मेरा कुछ नहीं यह उसीकाहै माल॥
वह हिन्दू मुसलमांको एकी नजर। हमेशा रहा देखता उम्र भर॥
वह लाखोंकी कितनोंको जागीरदी। वह जम्बूकीभीऔरकश्मीरकी॥
सिपाहीको सरदार उसने किया। है पैदलको असवार उसने किया॥
है नंगोंको उसने दुशाले दिये। गदाओंको मसजित सिवाले दिये॥
हैं अमृतसर उसके गुरूका मकाँ। जो देखा तो जन्नतका है वहनिशाँ॥

लगाया जर उसमें हैं बस बेशुमार। बनाहै वह अबतकजवाहरनिगार॥
तिलाका बना उसमें सब काम हैं। वह सातों विलायतमें सरनाम हैं॥
वह दरबार तालावमें है बना। अजब आब है आबमें है बना॥
जिया जबतलक तोकियाखूबनाम। जबआई अजल तो कहा रामराम॥
यहकहकरमराथाकेदशसालतक। नओलादको मेरी कुछहोगी जक॥
हुआ उसकाकहनाजोवह कहगया। यहनामउसकादुनियामेंतोरहगया॥
किया दस बरस उसके बेटोंने राज। हवा ऐसी आईके बिगडा समाज॥
हुई इसकदर उसके घरमें वह फूट। लिया माल उसकाखजाने वहलूट॥
अब है एक फरजन्द उसका दलीप। कजैसेहोस्वातीकीप्यासीवहसीप॥
सो लंडनमें मलकाके वह पास है। भरी दीलमें उसके अभी आस है॥
पिदरकी तरह वहभी है नेक नाम। गरीबोंका करता हरएक काम॥
सखावतशुजाअत वहहै आशकार। पिदरकावहअपने है एकयादगार॥
है दरिया दिलीउसके खासोंमें आम। सखावतके दरिया बहाये तमाम॥
सुना दादरस अदल गुस्तर है वह। जमानेमें बस बन्दापरवरहै वह॥
हरएक सख्सका है बडा कद्रदां। सखुन संजदानाओआकिल अयां॥
खुदाईमें जोहै बडा कारसाज। बनाया है वह मेहर जर्रे नमाज॥
अब आगे मैं उसका करूं क्या बयां। खुदाका न मालूम राजे निहां॥
करेगा वह क्या और करताहै क्या। उठायेगा क्या और धरता है क्या॥
खुदाकी है बातें खुदाईके साथ। वह हरगिज किसीकेनहींआये हाथ॥
गदाको वह दममें करे बादशाह। करे बादशाहको गदा दम्में आह॥
वह जर्रेको चाहे करे आफताफ। करे मेहरको जर्रह बा आबो ताब॥
हमेशहस उसकी यही राह है। बनाया जो एक मेहर एक माह है॥
हुई खत्म यांसे है सब दास्तां। शिगुफ्ता है यहकाशीगिरकाबयां॥
मेरे दिलके अन्दर बसा काशमीर। वहां हैं अमीरोंसे बेहतर फकीर॥
हुआ है यही अबतो लेलो नेहार। रखे उसको आबाद परवर दिगार॥
हैं यह मसनवी यांसे पूरी हुई। करो याद रबकी जो जाये दुई॥

सब अहबाब मेरे रहें शाद काम । मिले आरजू से दिली सुबह शाम ॥ पढे जो इसे वह रहे निहाल । और हो खैरकेसाथउसका अमाल ॥

ख्याल सबसे अव्वल फारसीमें जिसमें दीवान शम्स तबरेज मौलाने रूमने जो बाराम पी है उसका हाल लिखताहूं—बकुल फारसी ।

मनमें नोशम ओमय वहदत बिनीं साकिया शुवः हो शाम ॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ जिहे शराबे साफके दूर दिल खेश खुदाराम बीनम ॥ हलक गरदिशे पयालां हरदो शराराम बीनम ॥ अफ्जल के कायम खुदा मह हाना फना बकाराम बीनम ॥ दर मीनाये दिले खुद शम्स जुहाराम बीनम ॥

शेर—चे जामे जम् बपेशे मनके मन ओ जाममें दारम ॥ कजो यारे खुदा बूदम बोः बूदा सब खुदा यारम ॥ नमें दानम जिरांचे रोश नसतो चे शबे तारम ॥ कुनम बरबे नयाजे नाज बोशा दर दिलम आरम ॥ बराये ओः मय निहम बोः मीना सुराही ओ हम शीशो जाम ॥ कजनश ये वो नजरमें आयप नूरे खुदा मुदाम ॥ हरसू जिनूरे बादे वहदत आफताब शुद जिलवा गर ॥ हर जर्रा शुद मसाने मुश्तरो जोहरा शम्शो कमर ॥ जिलवा नमूदा हरचुना मायम अजां रहा के चूं अख्तर ॥ खाने मन शुद कयामे जात पाक रब्बे अकबर ॥

शेर—पसन्दीदा चूं चश्में मन शुदा मल बूस उरयानी ॥ नमें दानम खुदारा बूदई हम शाने रब्बानी ॥ जनूरे जिलवये रब्बुल उला शुद चश्म नूरानी ॥ जबां मन मज कुजा आरमूदमें साजम सना ख्वानी ॥ जबांने हक्क मन जबाने दारम नाम खुदा मन दारम नाम ॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ हिंदू हस्तम ओ ना मुसलमां यहूद तर्साना गबरम ॥ साकिर बरब मन हस्तम गहे न चन्दाबे सबरम ॥ अयां रंग यकताई दारम् गूनागूं न मिस्ले अबरम ॥ राजे इलाहीरा दानम शुवह मिसा दारद ॥

शेर–शराबे शौकमें नोशम वो मुश्ताके खुदा हस्तम ॥ बकब्जा गंज वहदत दारमौना वातही दसतम ॥ जनशये बादे एकताई वो खालिक मन बसा मस्तम ॥ खुदा बूदः बमन शामिल यह मनवा हक्क पेवस्तम ॥ लुत्फ बादे वहदत दानद आंके शवद चूँ लाले फाम ॥ कजनशय ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥ दवाये दर्द मरीज शुदा अजरोजे अजल बादे वहदत ॥ हरके बिनाशद नजर वल्लाह चुना आयद कुदरत ॥ न जूल साजद साफ वर्साना पाक अयां रब्बुल इज्जत ॥ दुर्या नमानद जनूरे खुदा बसद शानो शौकत ॥

शेर–बशमये रोशने नूरे खुदा हस्तम परवाना ॥ नाजनूरे खुदामन दारमों वल्लाह नबेगाना॥शुदा रोशन बसमये बादये पुरनुरका शाना॥खुमों मीना सुराही ओ सुबूओ जामों पैंमाना ॥ देवीसिंहमें नोशद आँमें अजां मवत्तर शुदह मशाम ॥ कज नशये ओ नजरमें आयद नूरे खुदा मुदाम ॥

ख्याल श्रीजगन्नाथजीकी स्तुतिमें जो पढेगा सो घर बैठे दर्शन पावेगा–बहर खडी ।

महोदधी सागरके किनारे पुरी वेदोंने बखानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ॐकार और निरंकार वोही निर्भय और वोही निरंजन ॥ वोहि हैं अन्तर्यामी वोहि हैं स्वामी वोही हैं दुखभंजन ॥ ब्रह्म वोही और ब्रह्मा वोही विष्णु वोही वोही भवमोचन ॥ वोही हैं अपरम्पार पार नहिं पावे उनका त्रैलोचन ॥ और वोही हैं षट दर्शन ॥

तोडा–वोही शेष वोही शक्ती है वोही कैलासी ॥ वोही इन्द्र है नारद मुनी वोही अविनाशी ॥ हो रहे आय पुरुषोत्तम पुरीके वासी ॥ वो महिमा उनकी खासी मगन रहते हैं जहां सब प्राणी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १ ॥ रत्नसिंहासनपर धर आसन विराजते दोनों भाई ॥ जगन्नाथ बलभद्र बीचमें खडी सुभद्रा जगमाई ॥ शंख चक्र और गदा पद्मकी शोभा नहिं वरणी जाई ॥ मस्तकपर झलकत हीरा सूरजसे ज्योति है सवाई ॥ है सांची जहां प्रभुताई ॥

तोडा–शिर मोर मुकुट और गल फूलोंके हारे ॥ केसर चन्दनका तिलक शीशपर धारे ॥ नाना प्रकारके होते हैं शृंगारे ॥ मैं कहां तलक कहुँ विस्तारे रूप थक हारे मन नहीं जानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥२॥ श्यामवर्ण है जगन्नाथकी छबि सुन्दर लगती प्यारी ॥ श्वेत वर्ण बलभद्र सुभद्राके चरणोंकी बलिहारी ॥ बाहर है चन्दनका लकडा जहां खडे सब हितकारी ॥ हाथ जोड दंडवत् करे श्रीजगन्नाथको नर नारी ॥ सब खडे है वहां पुजारी ॥

तोडा–वो वक्त वक्तपर पूजा प्रभुकी करते ॥ कोई करवावे स्नान कोई जल भरते ॥ कोई चन्दन घिसके हार फूल ला धरते ॥ कोई ले ले अपने करते करते पूजा सब मन मानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ३ ॥ उस मंदिरके ऊपर बैठे जगन्नाथ और बलभद्र ॥ बीच सुभद्रा आन विराजी दोनों भाई इधर उधर ॥ मुख दक्षिणकी ओर किये और पीठ किये बैठे उत्तर ॥ लंकामस राज बिभीषण रोज आरती लेता कर ॥ दे दरश उसे वांपर ॥

तोडा–है भक्तके वश भगवान् वेद यों गावे ॥ लंकासे दरशन रोज बिभीषण पावे ॥ और उसको वहांसे नजर वोः मंदिर आवे ॥ स्वामीसे ध्यान लगावे राजा लंकाका है ध्यानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ४ ॥ महा प्रभूके बायें मदनमोहन घोडेपर असवारे ॥ मथुरा वृन्दावनको छोड पुरुषोत्तम पुरीको सिधारे ॥ ग्वालनका दधि खाया ग्वालन खडी हाथको पसारे ॥ तिरलोकीनाथ अंगूठी देते हाथसे उतारे ॥ सुन वहांका चमत्कारे ॥

तोडा–जहां अनेक डयोढी अनेक हैंगे द्वारे ॥ हैं गरुड खंभपर गरुडरूपको धारे ॥ क्या कहूं मैं वहांके जैसे हैं विस्तारे ॥ वोः हैं स्वामीको प्यारे उनकी महिमा मुश्किल पानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥५॥ महाप्रभूके दहिने अक्षयवट मारकण्डे औ वटे कृष्णा ॥ जिनके दर्शन करनेसे छुट जाय जन्मभरका

पिसना ॥ और बना चन्दन घर वहांपर पंडोंको चन्दन घिसना ॥ बडे भाग्य हैं उनके जिनकी जीतेजी मिट गई तृपना ॥ उनको व्यापे विष ना ॥

तोडा–एक ओर वोः मन्दिरमें है विमला देवा ॥ जिनके दर्शन करनेसे पार हो खेवा ॥ चढें पान सुपारी हार फूल और मेवा ॥ तू कर ले उनकी सेवा वोहीहैं कुब्जाजी महारानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ६ ॥ महाप्रभूके पीछे है नरसिंह रूप विकराल बडा ॥ अपने भक्तके कारण मारा हरणाकुश था दैत्य कडा ॥ निश्चय थी प्रहलाद भक्तको सेवामें वो रहा अडा ॥ सब संकट हर लिये प्रभूने जो था उसपे दुः पडा ॥ रहे सदा सामने खडा ॥

तोडा–हर रोज वो दर्शन पाता स्वामीजीका ॥ उनके चरणोंकी रजका देता टीका ॥ है मीठा रामका नाम और सब फीका ॥ सुन यही काम है नीका ॥ पिताकी आज्ञा कुछ नहीं मानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ७ ॥ और सुनो बयान अजब स्थान स्वर्गसे है आला ॥ चारों तरफ हैं सभी देवता ऐन बीचमें शीवाला ॥ सबके ऊपर नीलचक्र है ध्वजा फडकती गुलाला ॥ और देवते देवलपर हैं हर एक तरहके सब वाला ॥ वो पहिने गलेमें माला ॥

तोडा–श्रीजगन्नाथ जाप करें वो मनमें ॥ हरवक्त खडे रहैं स्वामीके सुमरनमें ॥ दिन रात ध्यान रहैं प्रभूजीके चरणनमें ॥ सब रहैं उनकी शरणनमें ॥ वर्णन करते सुनते ज्ञानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ८ ॥ और सुनो अहवाल वो मन्दिर कंचनका है रत्न जडे ॥ कलियुगमें पत्थरका हमको तुमको सबको नजर पडे ॥ चारों तरफ देवलपर देवते हाथ उठाये रहैं खडे ॥ और राक्षस असुर वो मन्दिरपर शिर उनके कटे पडे ॥ हैं उनके भागभी बडे ॥

तोडा–जिन्हें स्वामीने अपने हाथों संहारा ॥ और पकड पकड कर गदा चक्रसे मारा ॥ उन्हें मारा नहीं कर दिया उनका निस्तारा ॥ मिला उन्हें स्वर्गका द्वारा ॥ हो गये स्वामीके अगवानी ॥ जगन्नाथ

जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ९ ॥ और बना वैकुंठ जहांपर सभी यात्री आते हैं ॥ जो जिसकी है यथा शक्ति वो अटका वहां चढाते हैं ॥ चार वर्ण एकीमें भोजन करें और नहीं घिनाते हैं ॥ महाप्रसाद श्रीजगन्नाथका पावें सब तर जाते हैं ॥ सब एकीमें खाते हैं ॥

तोडा–जहां ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र नहीं कोई ॥ और चार वर्णकी एकमें होय रसोई ॥ वहां द्वैतभाव नहीं एक जात सब कोई ॥ और एकादशी हैं सोई अपने मनमें अति हर्षानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १० ॥ चारों फाटकपर है चौकी चार वीरकी सुन भाई ॥ पूरब दरवाजेपर पतितपावनकी फिरती दुहाई ॥ बाहर दोनों सिंह गर्जते संतोंपर रहें साहाई ॥ अरुण खंभके दरशन करते जिनकी सुफल है कमाई ॥ तू पहुँचे वहांपर जाई ॥

तोडा–है पश्चिम दरवाजेपर श्रीहनुमाने ॥ वीरोंमें वीर हैं महावीर बलवाने ॥ गये फांद वो सागर एक छिनके दर्म्याने ॥ तिरलोकी उनको जाने अंजनीनन्दन है बलवानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ ११ ॥ दक्षिण दरवाजेपर चौकी गणेशजी देते दाता ॥ जिनके दरशन करनेको सारा आलम् है गा जाता ॥ महादेवके पुत्र और श्रीगौराजी जिनकी माता ॥ चतुर्भुजी मूरत सुन्दर तनु दरश किये नर तर जाता ॥ वो परम धामको पाता ॥

तोडा–एक हाथमें डमरू एक हाथ त्रिशूल ॥ और एक हाथमें लिये कमलका फूल ॥ एक हाथमें लाडू लम्बी सूंड रही झूल ॥ वो जडें दुश्मनको हूल उत्तर फाटकपर उत्राणी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १२ ॥ भोग शास्त्रकी महिमा उस मन्दिरके भीतर है सारी ॥ और कोकर्की लीला उसमें लिखी है सब न्यारी न्यारी ॥ कोई पुरुष हैं नगन और कोई निर्लज्जित बैठी नारी ॥ महा-काममें आतुर ऐसी बहुत मूरतें हैं प्यारी ॥ हैं वोः तो सब ब्रह्मचारी ॥

तोडा —जो ब्रह्म विचारके भोग करे वोः जोगी ॥ उसको मत समझो भोग वो बडे वियोगी ॥ रहे सदा सर्वदा उनकी देह निरोगी ॥ मत उन्हें कहो संयोगी आत्मा जिसने है पहिचानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १३ ॥ सुबह शाम स्वामीके आगे आवें दासी निरत करन ॥ सुन्दर सुन्दर कहें विष्णु पद अच्छे २ गावें भजन ॥ बडे भाग्य हैं उनके जिनकी जगन्नाथसे लगी लगन ॥ अष्ट प्रहर हर वक्त हमेशां अपने मनमें रहें मगन ॥ और येही है उनका परन ॥

तोडा—हररोज आय स्वामीके आगे गाना ॥ अपने स्वामीको खूबी तरह रिझाना ॥ हँस २ के मुसक्याना और भाव बताना ॥ और सभी वो राग सुनाना श्रीपति सारंग और कल्यानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥१४॥ पंचकोशमें बना भैरवीचक्र वहांका सुनो मथन ॥ बडे २ जहां सिद्ध [illegible] करें तपस्या रहें मगन ॥ [illegible] दुर्गाकी पूजन करते दशों द्वारसे लगी लगन ॥ प्राणायाम करें वोः जोगी जोग जुगत है बडी कठिन ॥ कोई जाने विरला जन ॥

तोडा—आतममें परमातमके दरशन पावें ॥ जो जगन्नाथसे मनमें ध्यान लगावें ॥ वो आवागवनसे छूट ब्रह्म हो जावें ॥ और सगुणके गुण गावें निर्गुण होते हैं वो प्राणी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १५ ॥ कर्माबाईकी खिचडी और दूध मलाईकी पकवान ॥ भोग लगें नाना प्रकारके बडे बडे होते सामान ॥ खैर चूरके लाडू टुकडा मलूकका पावें भगवान ॥ उखडी मूरीका चरवन और कहांतलक मैं करूं बखान ॥ दिनरात उतरते घान ॥

तोडा—अटकेपर अटका चढे पकावें पण्डे ॥ सबसे पहिले ऊपरके पकते हण्डे ॥ है महिमा जिनकी सात द्वीप नौ खण्डे ॥ सब उन्हींका है ब्रह्मण्डे अजको वेदोंकी धुन गानी ॥ जगन्नाथ जगतारण कारण बोधरूप भये निर्वानी ॥ १६ ॥ शुक्ल पक्ष तिथि दूज महीना आषाढका जब

आता है ॥ रथपर हो असवार प्रभू सुसराल जनकपुर जाता है ॥ लाखों आलम खींचे रथ नहीं चले वो जब अड जाता है ॥ तो पंडा हँस २ कर और गाली उन्हें सुनाता है ॥ और मनमें मुसक्याता है ॥

तोडा—सब पंडे मिलके बात कहे ये प्रभुको ॥ नन्द और वसुदेव पिता तुम्हरे दो ॥ तुम अहीरके घर पले बात ये सुन लो ॥ ये कर्म किये जो तुमने वेदके बाहर सो हम जानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ १७ ॥ ग्वालनके संग किया भोग और भिलनीभी झूठन खाई ॥ मित्र तुम्हारे अति पुनीत रहे दास सदनसे कसाई ॥ धन्ना छीपी बडा भक्त और सैन भक्त तुम्हारा नाई ॥ घर घर चोरी करी प्रभूजी जरा शर्म तुम्हें नहिं आई ॥ अब रथको दे औ चलाई ॥

तोडा—सुसराल चलनमें काहे देर करो हो ॥ मालूम हुआ बरवालीसेभी डरो हो ॥ चाहे कोई जात हो सबको तुम्हीं वरो हो ॥ गोपियोंके चीर हरो हो ऐसी मनमें तुम क्यों ठानी ॥ जगन्नाथ जग० ॥ १८ ॥ हुई यात्रा पूरी फिर अपने पंडसे लई सुफल ॥ चरण धोये आ पुरीके बाहर लेके श्वेत गंगाका जल ॥ और स्वामीके दर्शन पाये हुआ मुक्ति होनेका फल ॥ ध्यान धरा प्रभुजीका मनमें छिनमें कटी सारी कलमल ॥ हुई पहिली सुनो मंजिल ॥

तोडा—चलते २ साखी गुपालपर आये ॥ दी उनके चरणमें शीश नवाये ॥ और घरमें आके ब्राह्मण खूब जिमाये मनमांगे ॥ सो फल पाये छन्द कहे काशीगिर ब्रह्मज्ञानी ॥ जगन्नाथ जगता० ॥ १९ ॥

भजन निर्गुण वेदांत उपासना ।

तोहिको रटत रटत सब हारे ॥ शेष थके तेरो नाम अनंता कोटिन पद उच्चारे ॥ ब्रह्मा वेद बनायके थाके विष्णु लीन अवतारे ॥ शिव निशि दिन तेरो ध्यान धरत हैं और कौन हैं विचारे ॥ तोहिको रटत रटत सब हारे ॥ ध्रुव प्रह्लाद व्यास नारदमुनि वाल्मीकी तन धारे ॥

ज्ञान भयो ताहूपर देखो अलखै अलख पुकारे ॥ तोहिको रटत रटत०॥ योगी यती तपसी संन्यासी कोउ गोरे कोउ कारे ॥ या रसनासे जो कोई सुमरे सो सबही तेरे प्यारे ॥ तोहिको रटत रटत स० ॥ आपहीको तू आप भजत है आपइ आप विचारे ॥ काशीगिर तोहि सब कुछ दीखत अब घट भयो उजियारे ॥१॥ प्रभु तुम सबही पतित बनाये ॥ पुण्यको नाम लियो नहीं कबहूं पाप अधिक मन भाये ॥ प्रथम पतित तो काम बना वा द्वितिय क्रोध उपजाये ॥ त्रितिये लोभ और मोह चतुर्थे सो सब अंग समाये ॥ प्रभु तुम सब० ॥ सृष्टिके कारण किये चतुरानन सो पुत्रीपर धाये ॥ विष्णुसे कहा पालना कारि हो सो बालको छलि आये ॥ प्रलय करनको कीन महेशा हाथ त्रिशूल धराये ॥ ये तीनों गुण बने पातकी जक्तको कौन बचायें ॥ प्रभु तुम० ॥ तोहिमें पुण्य पाप नहिं कोउ धर्म अधर्म विलाये ॥ रज तम तामस पास न आवत आपमें आप समाये ॥ प्रभु तुम० ॥ जो जो पाप करे सो तरहीं पुण्य करे पछताये ॥ याको अर्थ काशीगिर जाने कोउके लगै न लगाये ॥

इति काशीगिरबनारसीकृत संपूर्ण ख्याल लावनी ब्रह्मज्ञान समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुम्बई.

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
L B S National Academy of Administration, Library
मसूरी
MUSSOORIE
यह पुस्तक निम्नांकित तारीख तक वापिस करनी है।
This book is to be returned on the date last stamped

दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No	दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No

GL H 294 551
KAS

121362
LBSNAA

294.551 13252
LIBRARY
LAL BAHADUR SHASTRI
National Academy of Administration
MUSSOORIE

Accession No. 12367

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving